बनजारा लोकगीत : कथ्य, संरचना एवं शिल्प

हैदराबाद विश्वविद्यालय की पी-हेच०डी० (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध

शोधार्थी

वी० रामकोटी

1999

निर्देशक

आचार्य वें० वेंकटरमण राव

एम०ए० (हिन्दी), एम०ए० (तेलुगु), पी-हेच०डी०

डीन, मानविकी संकाय एवं आचार्य हिन्दीविभाग,

हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद-५०० ०४६ ।

अध्यक्ष

आचार्या नूरजहाँ बेगम

एम०ए० (हिन्दी), एम०ए० (संस्कृत), पी-हेच०डी०,डी०लिट०

अध्यक्ष हिन्दी विभाग,

हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद-५०० ०४६ ।

DECLARATION

Name of the Research Scholar : **Mr. V. Ramakoti**

Department/Cener : Department of Hindi

University of Hyderabad

*This is to Certify that I, V. Ramakoti, have carried out the research embodied in the present Thesis "**Banjara Lok-geet : Kathya, Sanrachana Evam Shilp**" for the full period prescribed under the Ph.d. ordinances of the University.*

I declare that no part of this thesis was earlier submitted for the award of any degree or diploma to any University.

Date 5-11-1999.

Hyderabad

V. Ramakoti
Signature

(Research supervisor) 5-11-1999

(Head of the Department) 5-11-99
Prof. & Head, Dept. of Hindi
School of Humanities
University of Hyderabad
HYDERABAD-500 134

(Dean of the School) 5-11-99
DEAN
SCHOOL OF HUMANITIES
University of Hyderabad.
Hyderabad-500 134.

समर्पण

जिन्होंने विश्व से किया
मेरा परिचय
जिनके स्नेह और ममता
की छाया में
पलकर बड़ा हुआ
जिनके द्वारा प्राप्त शक्ति तथा मार्ग दर्शन से
मुझे धैर्य मिला
उसी स्वर्गीया माँ पट्नी याडी
को

सादर

वी० रामकोटी

विषयानुक्रमणिका

विषयानुक्रमणिका

प्राक्कथन

प्रथम अध्याय

बंजारा जाति, संस्कृति: ऐतिहासिक परिदृश्य 1-62

1.0 प्रस्तावना

1.1 बंजारा शब्द : उत्पत्ति और संधारणा

1.1.1 गोर

1.2 बंजारों का निवास स्थान

1.2.1 बंजारे उत्तर भारत से दक्षिण भारत की ओर

1.3 बंजारा परिवार

1.3.1 पिता

1.3.2 माता

1.3.3 बेटा या पुत्र

1.3.4 बेटी या पुत्री

1.3.5 भाई

1.3.6 बहन

1.3.7 जमाई (दामाद)

1.4 बंजारों का व्यवसाय

1.4.1 गूणी का व्यापार

1.4.2 भाट-ढाडी बंजारों का व्यवसाय

1.4.3 नाई बंजारों का व्यवसाय

1.4.4 सनार (सुनार) बंजारों का व्यवसाय

1·5 बंजारा जाति और उनके गोत्र

1·5·1 चौहाण गोत्र का विवरण

1·5·2 पमार या पवांर

1·5·2·1 बाराह गोत पमार

1·5·3· राठोड गोत्र का विवरण

1·5·3·1 भूक्या राठोड

1·5·3·2 बाणोत गोत्र

1·5·4 वड्‌त्या गोत्र

1·5·5 एक जात तुरी जात

1·6· बंजारा टाँडा

1·7· देश व्याप्ति कब और कैसे

1·7·1 बंजारा सेना के रूप में

1·7·2 बंजारा व्यापार के रूप में

1·7·3 बंजारा घुमंतू जाति के रूप में

1·8· वेश-भूषा और आभूषण

1·8·1 बंजारों की वेश-भूषा

कुँवारी लड़की की वेश

1·8·2· आभूषण

1·9·3 बंजारा महिला-वेश

1·8·4· आभूषण

1·8·5 विधवा बनजारिन

1·8·6 बंजारा पुरूष - वेश

1·8·7 आभूषण

1.9. खान - पान

1.9.1 मिठाई पदार्थ

1.9.2 निरामिष भोज्य पदार्थ

1.9.3 सामिष भोज्य पदार्थ

1.9.3.1 जल जन्तु (माछी-मछली)

1.9.3.2 पालतू और जंगली पशु-पक्षी-बोटी (मांस)

1.9.4. सुरापान

1.10 देवी - देवता

1.10.1 देवी

1.10.2 दिव्य पुरुष

1.10.3 हाथी राम बावाजी

1.10.4 प्रसिद्ध साद (साधु)-सेविया साद

1.10.5 लालिया साद या लोका-मसंद

1.11 त्यौहार

1.11.1 आटम (उगादि)

1.11.2 सीतला

1.11.3 तीज

1.11.3.1 दमोली

1.11.3.2 गणगोर

1.11.3.3 तीज वेरावणो (तीज विसर्जन)

1·11·4· दसराओ §दशहरा§

1·11·5 दवाळी §दिवाली§

1·11·6 संक्रांति

1·11·7 होळी §होली§

1·12· जन्म संस्कार

1·12·1 शिशु जन्म

1·12·2 दळिया धोकायेर कार्य

1·13 विवाह संस्कार

1·13·1 सगाई

1·13·2 केल्डार सगाई

1·13·3 वासळीर सगाई

1·13·4 गोळ खाणो §सगाई संपन्न करना§

1·14 विवाह

1·14·1 गुरूर दाग देणो

1·14·2 साडी ताणिरो कार्य (वर के घर में साडि के सभी लोगों को भोजन)

1·14·3 वेतडू §वर§ का पहनावा

1·14·4 विवाह संपन्न

1·15 अंत्योष्टि संस्कार

1·16 निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय

बंजारा साहित्य के प्रकार 63-85

2•0 प्रस्तावना

2•1 नाटक

2•1•1 गीत नाटक: श्री कृष्ण भगवान

2•2 कहानी

2•2•1 सेविया साद जी की कहानी

2•2•2 रायमल कांजी की कहानी

2•3 गीत

2•4 निष्कर्ष

तृतीय अध्याय

बंजारा लोकगीतों में कथ्य: एक विश्लेषण 86-114

3•0 कथ्य: सामान्य विश्लेषण

3•1 बंजारा साहित्य में कथ्य

3•2 कथ्य का आधार

3•3 बंजारों के संदर्भ: कथ्य

3•4 सामान्य जीवन से संबंधित गीत और उनका कथ्य

3•4•1 पढाव संदर्भ का कथ्य

3•4•2 सार्वजनिक मिलन

3•4•2•1 विवाह का प्रथम अनुष्ठान: कथ्य

3•4•3 विशेष संदर्भ में मिलन

3•4•4 यात्रा

3·5 जीवन के संस्कारों से संबंधित गीत और उनका कथ्य
3·5·1 जन्म संस्कार
3·5·2 विवाह संस्कार
3·5·2·1 सगाई
3·5·2·2 विवाह
3·5·2·3 कौतलो घरेमा लेणो
3·5·2·4 घोटा
3·5·2·5 छोरीन रपया मानणो
3·5·2·6 हल्दीर टीको
3·5·2·7 वधु को नहलाना
3·5·2·8 वर को नहलाना
3·5·2·9 सप्तपदी
3·5·2·10 घोटीर पाणी
3·5·2·11 गोट
3·5·2·12 चूडो तीपणो
3·5·2·13 बिदाई
3·6· मृत्यु संस्कार
3·7· त्यौहार और उत्सव
3·7·1 भवानी पूजणो
3·7·2· तीज
3·7·3· गणगौर
3·7·4· होली
3·7·5· मेरामा याडी-सेवा-भाया
3·8· अन्य लोक गीत
3·9· निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय

बंजारा लोक गीत: सरंचना

115-131

4·0 प्रस्तावना

4·1 बंजारा गीत सरंचना: चरण

4·2 गीत और टेक

4·2·1 एक चरण वाला टेक

4·2·2 दो चरण वाला टेक

4·2·3 बिना टेक के गीत

4·3· कथ्य सरंचना

4·4 याडी-बापूर मडणी (माँ-बाप की हवेली)

4·5 भवानीर वींती (देवी की अर्चना करना)

4·6 निष्कर्ष

पंचम अध्याय

बंजारा लोक गीत: शिल्पगत विशेषताएँ

132- 168

5·0 प्रस्तावना

5·1 शैली के तत्व

5·1·1 विपथन अथवा अतिक्रमण

5·1·1·1 व्याकरण संबंधी विपथन

5·1·1·2 शब्द की अक्रमता

5·1·1·3 अर्थ की अक्रमता

5·1·1·4 प्रोक्ति उल्लंघन

5·1·2 समानान्तरता

5·1·3 अस्पष्टता

5·1·4 असंगतता तथा विरोधाभास

5·1·5 भाषिक संरचना में विभिन्नता

5·1·6 संरचनात्मक संक्षिप्तता

5·1·7 अर्थद्योतक ध्वनिप्रयोग,गति(लय),यति और तुक

5·1·7·1 अर्थद्योतक ध्वनिप्रयोग

5·1·7·2 गति (लय)

5·1·7·3 तुक

5·1·8 अप्रस्तुत विधान

5·1·9 चयन

5·2 बंजारा सामान्य भाषा

5·2·1 हिन्दी-बंजारा भाषा

5·2·2· बंजारा-हिन्दी भाषा

5·3 भाई-बहन वार्तालाप

5·4 प्रश्नात्मक वाक्य

5·5 नकारात्मक वाक्य

5·6 उपदेशात्मक वाक्य

5·7 बंजारा गीत:शैली के तत्व

5·7·1 समानान्तरता

5·7·2 असंगतता अथवा विरोधाभास

5·7·3 संरचनात्मक - संक्षिप्तता

5·7·4 अर्थद्योतक ध्वनि प्रयोग, गति (लय), यति और तुक

5·7·5 अप्रस्तुत और चयन

5·8 निष्कर्ष

6· उपसंहार

परिशिष्ट

(अ) गीत संकलन - 169-379

(आ) गीत: शब्दार्थ - 380-388

(इ) सहायक ग्रंथ - 389-392

प्राक्कथन

प्राक्कथन

भारतीय उपखंड में अनुसूचित जन जातियों की संस्कृति समग्र संस्कृति का एक अभिन्न अंग है । लोक जीवन एवं लोक संस्कृति का एक अटूट अंग वन्य जातियों की भाषा, साहित्य एवं संस्कृति से जुड़ा हुआ मिलता है । इनमें बंजारे ऐसे प्रमुख समूह के अंतर्गत आते हैं, जिसमें शारिरिक श्रम से देश की संपत्ति बढ़ाई है । बंजारा जाति में जन्में मेरे मन में अपनी जाति के साहित्य पर शोध करने की स्वाभाविक जिज्ञासा उत्पन्न हुई । हैदराबाद विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग में जब मुझे शोध छात्र के रूप में प्रवेश मिला तभी मैने बंजारा लोक गीतों पर शोध करने की कामना व्यक्त की थी । इससे पूर्व भी हिन्दी विभाग में बंजारे साहित्य से संबंधित दो शोध प्रबंध प्रस्तुत हुए थे । उनमें §1§ बंजारा जाति, भाषा और लोक साहित्य -- डॉ पाण्डु एल, §2§ बंजारा जाति, समाज और संस्कृति,डॉ. यशवंत जाधव । इन दोनों से परे अलग दिशा में शोध करने की मेरी इच्छा थी । उसी के अनुरूप मेरा विषय बना है--- "बंजारा लोक गीत: कथ्य, संरचना, एवं शिल्प" । इस क्षेत्र में काम करने के लिए सबसे पहला आधार गीतों का चयन है । इस दिशा में 154 गीतों का चयन किया गया और उनके आधार पर अध्ययन योजना बनाई गयी है ।

प्रस्तुत अध्ययन की योजना पाँच अध्यायों में बनी और अध्ययन का सार उपसंहार में प्रस्तुत किया गया है । अध्ययन अध्याय योजना इस प्रकार है--

प्रथम अध्याय " बंजारा जाति,संस्कृति:ऐतिहासिक परिदृश्य " में विभिन्न प्रान्तों में बसे हुए बंजारों के निवास स्थान और बंजारा, लंबाडा-सुगाली शब्द से उनका संबंध विवरण दिया गया है । भारत के विभिन्न प्रान्तों

में निवास करनेवाले बंजारा समुदायों के भिन्न-भिन्न नामों का भी विवरण दिया गया है । बंजारों की भाषा,वेश-भूषा,रीति-रिवाज,तीज-त्यौहार उत्सव-पर्व और विभिन्न संस्कारों का भी सामान्य परिचय इस अध्याय में अभिप्रेत रहा है ।

द्वितीय अध्याय "बंजारा साहित्य के प्रकार" में बंजारा साहित्य में प्रचलित मौखिक कहानी,कथा,गाथा,नाटक आदि का विवेचन किया गया है । उदाहरण के लिए परियों की कहानियाँ, देवी-देवताओं की कहानियाँ, भूत प्रेतों की कहानियाँ, जानवरों की कहानियाँ, उपदेशात्मक कहानियाँ, धार्मिक कहानियाँ, राजा-महाराजाओं की कहानियाँ और बंजारा वंशावली की कहानियाँ आदि हैं । उसी प्रकार से नाटकों में धार्मिक नाटक, उपदेशात्मक नाटक, वीर रस प्रधान नाटक, करूण रस प्रधान नाटक, गीत नाटक, नृत्य नाटक आदि हैं । परन्तु गीत नाटक के रूप में भगवान श्री कृष्ण से संबंधित नाटक मिलता है । बंजारा साहित्य में गीतों का स्थान प्रमुख है । मानवीय व्यवहारों से संबंधित सभी क्रिया-कलापों को गीतों के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है । इस सब का एक विवेचन इस अध्याय में किया गया है ।

तृतीय अध्याय "बंजारा लोक गीतों में कथ्य: एक विश्लेषण" में बंजारा लोक गीतों से संबंधित कथ्य का विश्लेषण है। बंजारों के कथ्य संदर्भ निश्चय ही वर्तमान के यथार्थ से साक्षात्कार कराते हैं । मिथकीय गीतों के सहारे उन पौराणिक प्रसंगों को आधुनिक संदर्भों में प्रस्तुत करते हैं । बंजारे अपने इतिहास,अपनी आस्थाएँ,अपनी परंपरा,तीज-त्यौहार,सगाई-विवाह,उत्सव-पर्व के कथा-वृतों से व्यापक भाव-बोध के साथ अभिव्यक्त करते हैं । इस प्रकार कथ्य के विश्लेषण पर इस अध्याय में प्रकाश डाला गया है ।

चतुर्थ अध्याय "बंजारा लोक गीत: संरचना" में बंजारा लोक गीतों की सरंचना का विस्तृत अध्ययन किया गया है । सरंचना शब्द को लेकर कई विद्वानों ने अपने-अपने मत व्यक्त किये हैं । इस भूमिका में बंजारा गीतों का विश्लेषण इस अध्याय का लक्ष्य रहा है । इस के अंतर्गत सामान्य संरचना टेक, चरण आदि से संबंधित और कथ्य सरंचना का एक विवेचन प्रस्तुत है ।

पंचम अध्याय " बंजारा लोक गीत: शिल्प गत विशेषताएँ " में बंजारा लोक गीतों की शिल्पगत विशेषताओं का परिशीलन किया गया है । शिल्प को लेकर विविध विद्वानों के मतों को प्रस्तुत किया गया है । बंजारा लोक गीतों में भाव पक्ष एवं कला पक्षों का समान महत्व होता है । कला पक्ष की दृष्टि से गीतों का भी अत्यंत महत्व होता है । गीतों की भाषा-शैली आदि से उनकी श्रेष्ठता व्यक्त होती है । शैली की भव्यता के अनुसार ही बंजारा लोक गीतों को वैशिष्ठ्य प्राप्त हुआ है । इसी तरह शैली के तत्वों का अध्ययन प्रस्तुत इस अध्याय में किया गया है ।

अंत में उपसंहार के अंतर्गत शोधक्रम में प्राप्त निष्कर्षों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है तथा परिशिष्ट के रूप में {अ} गीत संकलन {आ} गीत शब्दार्थ और {इ} सहायक ग्रंथों की सूची संलग्न है ।

"बंजारा लोक गीत: कथ्य, संरचना एवं शिल्प" के चित्रण को प्रस्तुत करने में मैं कहाँ तक सफल हुआ हूँ, इसकी परख विद्वान गण ही कर सकते हैं । प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के निर्देशक परम आदरणीय गुरूवर श्रद्धेय आचार्य वे॰वेंकटरमण राव जी के प्रति मैं हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके योग्य निर्देशन से यह कार्य सुचारु रूप से संपन्न हो सका है । प्रबन्ध के प्रारम्भ से लेकर समापन तक मुझे उनका पूर्ण सहयोग निरन्तर मिलता रहा है ।

विभागाध्यक्ष प्रो नूरजहाँ बेगम जी के प्रति और इनके साथ-साथ विभाग के समस्त प्राध्यापकों के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ । जिनकी प्रेरणा से यह कार्य प्रकाश में आ सका है ।

इससे पूर्व बंजारा जाति को लेकर इसी विभाग में दो शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किये गये हैं । उन शोध प्रबंधों से भी मुझे बहुत सहायता मिली है, अत: डा॰पाण्डु,एल और डा॰यशवंत जाधव को भी आभार प्रकट करता हूँ ।

मेरे अनुज श्री के. रामुलु नाईक, श्री. भीमा प्रसाद, श्री. के॰होम सिंह, रविकुमार, डा. विजय कुमार जाधव, युवराज धवन, बाबु आडे, रमेश झाडे, नारायण राठोड, मारुती, सी॰एच बापु रेड्डी आदि का सहयोग मिलता रहा है, जिनके प्रति आभार प्रकट करना पर्याप्त नहीं है, कामना करूँगा कि वे अपने-अपने कार्यों में सफल होते रहें ।

मेरे परिवार और मेरी धर्म पत्नी श्रीमती कमला बाई का हार्दिक सहयोग और स्नेह हमेशा मिलता रहा हैं । मैं उनके प्रति आभार व्यक्त क्या करूँ वे तो मेरे अपने ही हैं ।

---------- अस्तु ।

वी॰रामकोटी

प्रथम अध्याय

बंजारा जाति, संस्कृति : ऐतिहासिक परिदृश्य

लावड्या मंगी बाई चौदर पल्ली, नलगोण्डा जिला

प्रथम अध्याय

बंजारा जाति, संस्कृति : ऐतिहासिक परिदृश्य

1·0· प्रस्तावना

भारत एक विशाल देश है । समतल प्रान्तों में वास करने वाले भारतीय समुदायों के साथ-साथ इस भूखंड में अनेक वन्य जाति के लोग और घुमन्तू समुदाय आदि भी रहते हैं । भारतीय संविधान में प्रस्तावित सामासिक संस्कृति की अवधारणा के लिए इन सब को ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य का आकलन एक समसामयिक आवश्यकता है । प्रस्तुत अध्याय में,जो इस अध्ययन की एक प्रवेशिका है, बंजारा जाति एवं संस्कृति का एक ऐतिहासिक परिदृश्य प्रस्तुत करना अभिप्रेत रहा है । यह बंजारा लोक गीतों के कथ्य, एवं उसकी संरचना तथा शैलि परक अध्ययन के लिए सहायक होगा ।

1·1· बंजारा शब्द : उत्पत्ति और संधारणा

बंजारा शब्द की उत्पत्ति के संबंध में अनेक विचार है । कई वर्षों से व्यापार करनेवाली इस जाति के लोगों को बंजारा कहा गया ।

ग्रियर्सन ने बंजारा शब्द का सम्बन्ध, विकास की दृष्टि से इस प्रकार देखा है --

(संस्कृत) वाणिज्यकार --> (प्राकृत) वाणिज्ज आरो --> (हिन्दी) बनजारा / " बंजारा अनाज लाने-ले जाने वाली प्रसिद्ध घुमन्तू-खानाबदोश जाति है ।"[1] राजस्थान में वाणिज्य का तद्भव रूप बिणज प्रचलित है । वणिजना बिणजना का तात्पर्य है, व्यापार करना ।

बंजारा लोग भारत के विभिन्न प्रान्तों में ही नहीं दूसरे देशों में भी जाया करते थे । बंजारे अपने आपको राजस्थानी मानते हैं । इस वर्ग के कई लोग रोजी रोटी के लिए राजस्थान छोड़कर देश में दूर-दूर तक चले गये हैं । कहा जाता है, कि बंजर शब्द से भी बंजारा शब्द की उत्पत्ति हुई । बंजर भूमि को जोतने वाला, सींचने वाला, वनों में घूमने वाला, बंजर भूमि का मालिक बंजारा कहलाया ।

बंजारा आन्ध्र प्रदेश में लम्बाड़ा के नाम से प्रसिद्ध हैं । कहा जाता है, कि अंग्रेजों के शासन काल में लम्बे कद के इस जाति के पुरुषों को देखकर अंग्रेजों ने इन्हें " लम्बा म्यान " (LONG MAN) कहकर पुकारा । लम्बा म्यान से व्यवहृत पदबन्ध ही कालान्तर में लम्बा म्यान से " लम्बाड़ा " हो गया । इस शब्द की उत्पत्ति के सम्बन्ध में यह भी कहा जाता है, कि इस जाति के लोग मुगलों की सेना में लाम्बा तानना करते थे । अर्थात् " तम्बू " तानने का कार्य किया करते थे । अतः

---

1. बंजारा समाज - डॉ. श्रीराम शर्मा - पृ. 2.

इन लोगों को " लाम्बा वाला " नाम पडा, बाद में लाम्बा वाला → लम्बाडा हो गया ।[1] भारत के विभिन्न प्रांतों में निवास करने वाले बंजारा समुदायों के भिन्न-भिन्न नाम इस प्रकार है -- [2]

(1) बंजारा	(2) गोर बंजारा	(3) लम्बाडा
(4) लम्बाडो	(5) लभान	(6) सुगाली
(7) सिर्को बंजारा	(8) ढालिया	(9) डफडिया
(10) ढाडो	(11) भाट	(12) नाई
(13) सनार	(14) जांगड	(15) अठरादेसिया
(16) ओसारिया	(17) जाट बंजारा	(18) धन कूटे बंजारा
(19) कंगो बंजारा	(20) कापडी बंजारा	(21) ग्वारिया
(22) गुजरिया	(23) चुगारिया	(24) चांदेसिया
(25) चारण बंजारा	(26) मथुरिया	(27) बामणिया
(28) बामणिया	(29) गुर्को	(30) रोमा बंजारा
(31) मारू बंजारा	(32) लदेणिया	(33) संभाडिया
(34) फनाडी	(35) रोहिदास	(36) ढोरक्या
(37) नौदेसिया	(38) बठदिया	(39) त्रिंजारो
(40) लमानो बंजारा ।		

इन नामों से पता चलता है, कि --

व्यापार के कारण > बंजारा
ढोर चराने के कारण > ढोरक्या
मथुरा में वास करने के कारण > मथुरिया

---

1. बंजारा जाति, भाषा और लोक साहित्य - डॉ. पाण्डु एल. - पृ. 21.
2. बंजारा जाति, समाज और संस्कृति - य. जाधव - पृ. 5.

ढोल या डफडा बजाने वाले	>	डफडिया
आभूषण बनाने वाले	>	सनार (सुनार)
क्षौर कर्म के लिए	>	नाई बंजारा
पूर्वजों की कहानियाँ सुनाने वाले	>	भाट कहलाया ।

गोर

बंजारों के मुख्य समुदाय के लिए " धारण शब्द के अतिरिक्त " गोर " या " गोर माटो " शब्द का प्रयोग भी होता है ।[1]

बंजारे स्वयं के लिए " गोर " इतर लोगों के लिए " कोर " शब्द का प्रयोग करते हैं । गोर शब्द के साथ सामान्यतया - गोर, गोर भाई, गोर माटो, ग्वारिया, गोरिया, ग्वार आदि शब्द भी जोडा जाता है । गोर शब्द का विकसित रूप --

गोर > गोरा > ग्वाला > गोला > गोपाल गोला मुरख वाला आदि । गुरू नानक जी ने " गोर " शब्द को गोर्ह (माननीय) कहा । उसी समय से कहा जाता है कि गोर्ह से गोर शब्द प्रचार में आ गया । उदाहरण के लिए बंजारा बोली में स्वयम् के लिए इतर लोगों के लिए और हिन्दी में बोले जाने वाले कुछ शब्द इस प्रकार मिलते हैं --

----

1· बंजारा समाज - डॉ· श्रीराम शर्मा - पृ· 12·

बंजारा लोगों के लिए	इतर लोगों के लिए	हिन्दी में
1. छोरी	कूंडी	लडकी
2. छोरा	कूंडा	लडका
3. टांड़ी या गेरणी	कोरी	महिला
4. टांडेर या गेरिया	कोर	पुरुष

यहाँ गोर के अलावा इतर लोगों को (जो गोर या बंजारा न हो) " कोर " के नाम से पुकारा गया । इसके अतिरिक्त बंजारा बोली में कुछ शब्द [5]--

1.	याडी	माँ
2.	बाप या बा	पिता
3.	नवलेरी	वधू
4.	वेतड़ू	वर
5.	वाटचालू	राहगिर
6.	वाट जोवणो	राह देखना
7.	गावडी	गाय
8.	बळद	बैल
9.	गोरली	भेड
10.	ढाब	बावडी, जलाशय, बावली

5. वांकुडोत ठाकुरू नाईक - गाँव : लक्ष्मक्का पील्ल, मंडल : वोडकन्इला - जिला : वरंगल ।

इस से स्पष्ट होता है, कि बंजारा शब्द घुमंतू जाति के संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है और इस जाति कीअवधारणा के लिए उस जाति के वर्गों के द्वारा किये जाने वाले कर्म, व्यापार, आदि को ध्यान में रखकर कुछ अन्य नाम भी प्रचलित हुए हैं। व्यापार और अन्य समाजोपयोगी कर्मों से युक्त घुमंतू जाति होने के कारण इसमें भाषा और संस्कृति में एक सामासिकता को समाई है। यह भी इस जाति के संदर्भ में सर्व स्वीकार यह है, कि इसकी व्याप्ति सर्व देशीय है।

1·2· बंजारों का निवास स्थान

बंजारे अपने मूल निवास स्थान राजस्थान को मानते हैं। बंजारों की भाषा, वेश-भूषा, रीति-रिवाज, तीज-त्योहार और विभिन्न संस्कारों के आधार पर भी इन लोगों का निवास स्थान को निर्धारित किया जा सकता है।

बंजारों के मूल निवास स्थान के बारे में कुछ विद्वानों का मंतव्य इस प्रकार है --

" कर्नल टाड " के अनुसार बंजारे विदेशी हैं। वे शक, हूण, यवन, कुषाण, पार्थियन और गूजर भारत में स्थिर निवास बनाकर राजपूत बन गये हैं।

" श्री सी·वी·वैद्य " और " गौरी शंकर ओझा " के अनुसार बंजारे भारतीय हैं। वे विदेशी नहीं हैं। वे सूर्य और चन्द्र के वंशज हैं।[6]

6· बंजारा (लंबाडी) वंशावली - नून्सावत जीवला नाईक - पृ· 1·

" टी॰ए॰ स्मिथ और सत्यनाथ ऐय्यर " के अनुसार बंजारे स्वदेशी (भारतीय) के साथ-साथ विदेशी भी हैं । [7] इनमें राजपूत वंशज, चौहान, पमार, प्रतीहार, चंदेल और राठोड मुख्य हैं।

एक विद्वान ने कहा है कि बंजारों के पूर्वज द्रविड थे ।

समाजशास्त्री " वान फ्यूरर हेमिनड्राफ " ने बंजारों के मूल निवास स्थानों के बारे में लिखा है, कि " बंजारों ने विशेष भूक्षेत्र में अपने को सीमित नहीं रखा ।" [8] जिस भूक्षेत्र को अपना मूल निवास स्थान मान ले ··· शारीरिक बनावट, भाषा, वेश-भूषा, कर्मठ शरीर, उनके व्यवसाय के आधार पर वह (बंजारे) राजस्थान के निवासी हैं । हैदराबाद में रहने वाले बंजारा, लम्बाडा या मथुरा आदिवासी लोगों का निवास स्थान भी राजस्थान है ।

" प्रो॰ श्रीराम शर्मा जी ने बंजारों का मूल स्थान राजस्थान को माना हैं।

और कुछ विद्वानों का मत है, कि बंजारे भारत की आदिम जातियों के वंशज हैं । वे विदेशी नहीं है । भारत से ही कुछ समूह अपनी रोजी-रोटी के लिए दूसरे देशों में गये हैं ।

7· ए सोशियो - पोलिटिकल एनालिसिस आफ बंजारास इन आन्ध्र प्रदेश ए केस स्टडी आफ भोनगिरी मंडल - केतावत सोम्ला - पृ· 12·

8· बंजारा समाज - प्रो· श्रीराम शर्मा - पृ· 87·

बंजारों की धारणा है कि प्राचीन राजस्थान की जातियों में एक वर्ग बहुत पिछड़ा हुआ था। इसी पिछड़ी हुई जाति को " बंजारा ", " गोर ", " लंम्बाडा " या सुगाली के नाम से बुलाया गया। दक्षिण भारत में आनेवाले बंजारे राजस्थान के पाँच क्षेत्रों से संबन्धित थे।[9]

पहला समूह जोधपूर से आया।
दूसरा समूह जैसलमेर से
तीसरा समूह जयपूर और उसके आस-पास के क्षेत्रों से आया है।
चौथा समूह कोटा से आया।
पाँचवाँ समूह अजमेर से आया।
कुछ समूह सीधे राजस्थान से आया।

राजपूत बंजारे उत्तर हिन्दुस्थान में शासन किये थे। वे इस प्रकार हैं --

राजा भोज परमार	(पमार या पंवार)	सन् 950 - 1055
जयचन्द्र राठोड	(राठौर)	सन् 1085 - 1202
पृथ्वीराज चौहाण	(चौव्हाण)	सन् 12 C.A.D (दिल्ली)

आदि ने उत्तर भारत पर शासन किये थे।[10] इसके अतिरिक्त शासक सिथार गढ को लौहेड पमार, आल्या-पूर्या गढ को रत्ना राठोड, राणा प्रताप सिंह, मानसिंह राठोड ने भी शासन किये थे।

---

9. बंजारा समाज - प्रो. श्रीराम शर्मा - पृ. 104.
10. दी पोलिटिकल एनालिसिस आफ बंजारास - ए केस स्टडी आफ भोनगिर मंडल - केतावत सोमला - पृ. 14.

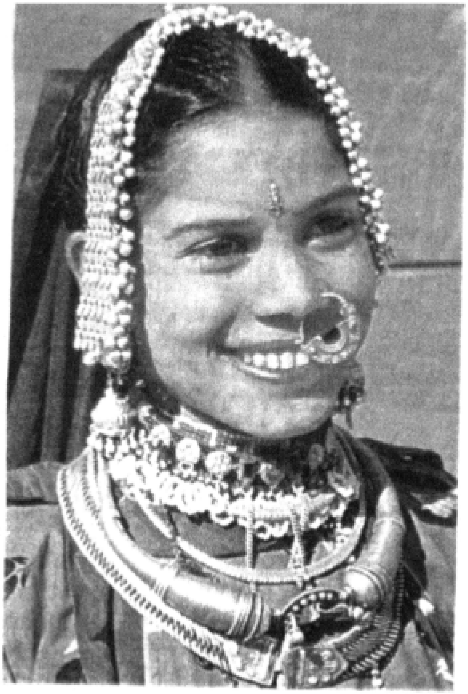

राजस्थान की बंजारा महिला

राजस्थान बंजारा महिलाओं की घुमर नृत्य

1-2-1 बंजारे उत्तर भारत से दक्षिण भारत की ओर

सन् 1574 ईसवीं के हल्दी घाटी के युद्द में राणा प्रताप सिंह और मानसिंह राठोड अक्बर से पराजित हुए । उस समय कुछ बंजारे उत्तर भारत से दक्षिण की ओर आये ।

इनमें कुछ बंजारे मुगलों के साथ जाकर अलग हो गये हैं । अन्य राजपूत बंजारे युद्दों में हार कर अपने बचाव के लिए जंगलों में जा बसे ।

चित्तौड गढ पर मुसलमानों के अधिकार के बाद ये लोग दूर-दूर तक चले गये हैं । इस प्रकार बंजारे पूरे भारत में फैल गये हैं और अपना व्यवसाय अपने-अपने प्रदेशानुसार बना लिए ।

पृथ्वी राज चौहान ने (जय चंद्र राठोड के दामाद) मुहम्मद गोरी को 14 बार पराजित कर दिया था । परन्तु मुहम्मद गोरी ने पन्द्रहवीं बार पृथ्वीराज चौहान को पराजित कर दिया और उसे बन्दी बना लिया । मुहम्मद गोरी, पृथ्वीराज चौहाण और चांद भाट दाये की मृत्यु एक ही समय हुई । इन महान नेताओं के मृत्यु के बाद बंजारा सैनिक, मुसलमान सैनिकों से डरकर राजस्थान, दिल्ली से दक्षिण की ओर जंगलों में, पहाडियों में, तराईयों में भाग गये थे । तब से उन्होंने अपना नाम और वेश-भूषा बदली । लगातार युद्दों के कारण वे उत्तर भारत से दक्षिण और अन्य प्रान्तों की ओर निकले । तब ऐसे राजपूत भी बंजारा के नाम से प्रसिद्द हुए ।

नट बंजारों का आकर्षक नृत्य

उत्तर भारत से (आन्ध्र प्रदेश) काकतीय साम्राज्य को हस्तगत करने के लिए और राजा प्रताप रुद्र देव को बन्दी बनाने के लिए अफजल खाँ के सेना में कई बंजारे (राजपूत) सैनिक आये थे । परन्तु राजपूत सैनिकों से सभी काम कराया करते थे । इन लोगों को उचित स्थान नहीं देते थे । वे अन्य सैनिकों के लिए लाम्बा तानते थे । लाम्बा का अर्थ है, तम्बू । अतः लाम्बा तानने वाले इन सैनिकों को " लम्बाडा " कहने लगे। वे लोग प्रताप रुद्र देव को बन्दी बनाने के पश्चात दिल्ली की ओर रवाना होते समय वरंगल के जंगलों में भाग गये और यहीं बस गये ।[1]

वरंगल जिला, कोडकंडला मंडल, लक्ष्मक्का पल्लि गाँव जोग्या नाईक टांडे का बुजुर्ग श्री वांक्डोत तार्या नाईक ने लग भग 400 वर्ष पूर्व का इतिहास सुनाया है । उसके अनुसार उनका मूल निवास स्थान कोटा (राजस्थान) माना गया । इनके पूर्वज कांजी पमार हैं । उनके निवास स्थान और वंशावली इस प्रकार हैं--

वांक्डोत कांजी पमार
↓
कलान पत्तर पमार
↓
येर्रा भोजु पमार
↓

येर्रा भोजु पमार को बंदूक धारी, येराकु कहते हैं । वे कोटा से आते आते कई गाँव छोडकर कांकराई, रुपूर आये थे । इनके दो पुत्र हैं--

---

1. बंजारा (लम्बाडी) वंशावली - नूनसावत जीवला नाईक पृ. 2.

येर्रा भोजु पमार

↓

लक्का — खीमा

लक्का के 4 पुत्र थे ।	खीमा के 4 पुत्र थे ।
1. रामजी	1. कसना
2. नोमा	2. कोका
3. झोलू	3. रामचंद्रु
4. राजू	4. रामा

इनके परिवार में रामचंद्रु नाईक पमार के पास बंदूक, ढाल, कटारी, तलवार आदि हत्यार थे । वे घोडे के ऊपर सवार करते थे । इनके परिवार के लोग कांकराई, रूपूर से वरंगल आये थे । वरंगल से लक्ष्मक्का पल्लि आकर अपना निवास स्थान बना लिया । इनके तलवार के ऊपर " रामचंद्रु नाईक पमार " के नाम लिखकर उस समय के राजा ने दिया था । इन्होंने सैनिक के रूप में काम किया था । रामचन्द्रु नाईक को " वेराकूर पोतो येराळु " कहते थे । रामचन्द्रु नाईक के दो पुत्र हैं । वेंकटी और जोग्या नाईक पमार । जोग्या नाईक पमार के पाँच पुत्र हैं --

वांकडोत जोग्या नाईक पमार

|

पांड्या — तार्या — सोम्ला — रामू — लच्छू

बंदूकधारी वाँकडोत तार्या नाईक

जोग्या नाईक के परिवार में तार्या नाईक के पास भी बंदूक हैं। यह बंदूक आन्ध्र प्रदेश सरकार की ओर से मिली है, जो आज भी मौजूद है।

इससे पता चलता है, कि बंजारों का मूल निवास स्थान राजस्थान माना जाता है। इनके परिवार के लोग कोटा → स्पूर → कांकराई → वरंगल → लक्ष्मक्क पल्लि। इस तरह से अपना मूल निवास स्थान का इतिहास श्री तार्या नाईक ने बताया है।[12]

1.3. बंजारा परिवार

समाज का संबन्ध परिवार से जुडा हुआ है। भारतीय संस्कृति के अनुसार भारत में रहने वाले विविध जातियों के परिवार संबन्धी संस्कृति भिन्न-भिन्न हैं। उसी प्रकार से बंजारा समाज के परिवार का अपना स्थान है। इनके परिवारों की भी विशेषता है। अन्य परिवारों की तरह, बंजारा समाज के परिवार में "याडी-बापू (माता-पिता), बेटा-बोडी (बेटा-बहू), भाई-बहन, बेटी-जमाई" मुख्य हैं। परिवार के अन्य संबन्धी लोग इस प्रकार हैं।

पर दादी	- पर दादा	पर नानी	- पर नाना
दादी	- दादा	नानी	- नाना
बूड याडी	- बोडो बाप	मोट मामी	- मोटो मामा
(दादी)	(दादा)	(माँ की बडी भाभी)	(माँ के बडा भाई)

---

12. वांक्डोत तार्या नाईक पमार - लक्ष्मक्का पल्लि, कोडकंड्ला मंडल - वरंगल जिला।

मोट याडी	-	मोटो बाप	नाण की मामी	-	नाणका मामा
[पिता की भाभी	-	पिता के बडे भाई]	[माँ की छोटी भाभी		माँ के (छोटे भाई)]
याडी (माँ)	-	बापू (बा) (पिता)	सासु (सास)	-	ससरो (ससुर)
काकी	-	काका	मासा (मौसा)	-	मासी (मौसी)
फूफी	-	फूफा	समधण (समधिन)	-	समधी (समधी)

गोर - गोरणी : बेटी - बेटा → पोता - बोडी

भीया - भोजाई : भीयार बेटी - बेटा → (बडे भाई के लडकी - लडका)
(बडे भाई) (भाभी)

भाई - बोडी (साली) → भाईर बेटी - बेटा
[छोटा भाई - छोटे भाई की पत्नी] भतीजी-भतीजा

बाई - बहनोई → भाणजी - भाणजो
(बडी बहन) ( )

भ्यान - बहनोई → भाणजी - भाणजो
(छोटी बहन)

नणद - नणदोई → नणदेर बेटी - बेटा
(ननद) - (ननद के पति)

देवर - दरवाणी → देवरेर बेटी - बेटा
(देवरानी)

जेठ - जठाणी (जेठानी) → जेठेर बेटी - बेटा

बेटी - जमाई → नाती - पोत

बेटा - बोडी (बहू) → पोती - पोतो (पौत्री-पौत्र)

बाई साडू ﴾पत्नी की बडी बहन﴿ साडू → साडूर बेटी - बेटा

साळी - साडू ﴾साली﴿ साळी या → साडूर बेटी - बेटा

साळो - भ्यान ﴾साला﴿ - ﴾बहन﴿ साळेर बेटी → बेटा / आदि

भारतीय परिवार में जिस प्रकार सम्बन्धों को मान्यता है, उसी प्रकार की मान्यता बंजारा परिवारों में भी है । जहाँ तक सम्बन्धों की पहचान की बात है, यह देखा जाता है, कि सम्बन्ध की स्थिति को और स्पष्टतः सूचित करने के लिए विशेषण शब्द प्रयुक्त हुए हैं, ये विशेषण दो प्रकार के मिलते हैं । एक - हिन्दी से जुडे परम्परिक सम्बन्ध स्थापक विशेषण और दो - बोली में प्रचलित विशेषणों से युक्त, जिनसे बिरादरी की व्याप्ति और स्पष्ट होती है ।

3-1 पिता

संसार के सभी वर्गों में पिता का स्थान महत्वपूर्ण हैं । उसी प्रकार से बंजारा समाज में भी पिता का स्थान सर्वोच्च है । वह परिवार का प्रमुख व्यक्ति माना जाता है । परिवार से संबंधित सभी निर्णय वही लेता है ।

परिवार को चलाने का कार्य भार भी पिता ही संभालता है । पिता की आज्ञा से ही बंजारा समाज में उनके परिवार के सभी सदस्य काम करते हैं । बंजारा समाज के पुत्र और पुत्रियाँ पिता को सम्मान से देखते है । वृध्द पिताओं की देख-रेख और पालन-पोषण भी सम्मान के साथ किया जाता है । माता-पिता की मृत्यु के पश्चात भी पुत्र और पुत्रियाँ उनको पूजा करते हैं । वर्ष में एक बार बडे धूम-धाम से उनको समाधि पर मिष्ठान्न चढाकर भगवान से प्रार्थना करते हैं कि मृतक की आत्मा शान्त रहे । इस प्रकार से बंजारा समाज में पुत्र और पुत्रि के लिए पिता का स्थान महत्वपूर्ण हैं । इसके अतिरिक्त घर की बहु, दामाद भी उन्हें पिता का मान सम्मान देते हैं ।

1.3.2 माता

बंजारा समाज में पिता की तरह माता का स्थान भी महत्वपूर्ण हैं। पुत्र और पुत्रियाँ माता को बहुत ही प्रेम से और सम्मान से उनकी देख-भाल करते हैं । कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता है कि पिता से भी अधिक माँ को चाहते हैं । माँ घर की सब कुछ होती है । माँ के बिना घर सूना लगता है । एक बार माँ न कहने पर बेटा-बहु, बेटी-दामाद या नाती-पोते संभल जाते हैं । आज्ञा मिलने के पश्चात ही वह अपने कार्य आरम्भ करते हैं। अत: बंजारा समाज में "माता" का स्थान भी सर्वोच्च हैं और पिता से समतुल्य है ।

1-3-3 बेटा या पुत्र

बंजारा समाज में माता-पिता अपने पुत्र को वंशोध्दारक समझते हैं। इसलिए वे पुत्र को अपना वारिस मानकर उनके पश्चात सारी सम्पत्ति उसे सौंप देते हैं । माता-पिता कीमृत्यु के पश्चात दहन संस्कार पुत्र ही करता है । सभी क्रिया-करम भी पुत्र ही करता है । अत: इस समाज में पुत्र का वही स्थान है जो सामान्य भारतीय परिवार में पाया जाता है ।

1-3-4 बेटो या पुत्रो

बंजारा समाज में पुत्र की तरह पुत्री का स्थान भी सर्वोच्च है। उसे घर की लक्ष्मी मानते है। पुत्री को कभी उसका मन दुखाते और न कभी उसके आँखों से आँसू टपकने देते। घर की बेटी दु:खी होने से परिवार के सभी सदस्य विचलित हो जाते हैं। बंजारा समाज में यह भावना प्रचलित है, कि बेटी के दु:खी रहने से घर का नाश हो जाता है।

1-3-5 भाई

बंजारा समाज में छोटे भाई का स्थान लक्ष्मण की तरह और बडे भाई का स्थान राम की तरह हैं। इस समाज के भाई मिल जुलकर रहते हैं। कभी झगडते नहीं, यदि पारिवारिक समस्याओं के कारण कहीं अन-बन हो जाती है, तो भी झगडा नहीं करते परन्तु बात करना छोड देते हैं। बडा भाई यदि किसी मुसीबत में है तो छोटा भाई उसकी सहायता करता है। उसी प्रकार से छोटा भाई किसी समस्याओं में फंसा हुआ है, तो बडा भाई उसे अपना साथ देता है। छोटा या बडा भाई अपनी बहनों को बडे प्यार से देखते हैं। ससुराल में उनकी बहन दु:खी हो तो वे उसकी समस्या को सुलझाने के लिए प्रयत्नशील होते हैं। अन्य समाजों की तरह बंजारा समाज में भी भाई माता-पिता के साथ रहते हैं, और बंटवारा होने पर नसाब {पंचायत} के निर्णय के अनुसार अलग भी रहते हैं। अलग रहकर भी वे मिलजुल कर रहते हैं।

1-3-6 बहन

बंजारा समाज में बहनों का रिश्ता बहुत ही पवित्र माना जाता है। इस समाज की बहनें भाई को बडे प्यार से देखती हैं। भाई बचपन से विवाह तक उसका साथ देता है। उसके पश्चात जब वह ससुराल जाति है, तब भी भाई "साया" की तरह उसका कुशल मंगल देखते रहते हैं। जब कभी उसका भाई

उसे देखने के लिए आता है, तो वह बडे सम्मान और प्यार के साथ मिष्ठान्न बनाकर उसे खिलाती है । कुछ दिन रहने के लिए कहती है । इस प्रकार से बहन भाई को ही नहीं बल्कि उसकी छोटो और बडो बहनों के साथ बडे प्यार से पेश आती है । बंजारा समाज की बहन का स्थान इस समाज में महत्वपूर्ण हैं। बहन को देवो या दुर्गा का प्रतिरूप मानते हैं । इसलिए इस समाज की महिलाएँ बंजारा संस्कृति के लिए अनोखी हैं ।

1-3-7 जमाई (दामाद)

इस समाज का जमाई अर्थात् दामाद पुत्र के समान होता है । उसे पुत्र से भी अधिक सम्मान दिया जाता है, ताकि जमाई अपनी पुत्री को जीवन भर सुख संतोष दे । अत: जब भी जमाई जो कुछ भी माँगता है, तो सास और ससुर अपनी शक्ति के अनुसार उसे कुछ न कुछ देते ही रहते हैं । जमाई के साथ ससुराल के लोग बडो मर्यादा से बर्ताव करते हैं । उसे एक घर का जमाई नहीं मानकर सारे टांडे का जमाई मानते हैं । उसो प्रकार से जमाई भी अपने ससुराल वालों को सम्मान के साथ देखता है । उतना ही नहीं सास और ससुर को माता-पिता के सम्मान साले और सालियों को भाई-बहन की तरह प्यार करता है । अत: बंजारा समाज में जमाई का महत्वपूर्ण स्थान ही नहीं अपितु उसके लिए बहुत बडा सम्मान भी है । टांडे के लोग भी जमाई को बहुत ही मर्यादा के साथ उनके घर लेजाकर मिष्ठान्न खिलाते हैं । कभी-कभी मधु-पान भी कराते हैं। बोडो (पुत्रवधु, बहु) बेटी की तरह बंजारा समाज में पुत्रवधु का स्थान भी सर्वोच्च है । दूसरे घर को बेटी सास-ससुर के घर में (पति के घर में) भी वैसे हो रहती है, जैसे वह अपने माँ-बाप के घर में रहती थी । परन्तु इस घर में उसकी जिम्मेदारी बढ जाती है । कभी-कभी सास-ससुर बूढे होने पर उसे पति के साथ घर का पूरा कार्य भार संभालना पडता है । इसके

अतिरिक्त बंजारा समाज की बोडी जमाई [दामाद] की तरह एक घर की न होकर सारे टांडे की होती है । तभी तो संदर्भानुसार गाँव के छोटे-बडे और सभी लोग उसे अपने टांडे की मर्यादा मानकर हमारे टांडे की बहु के नाम से संबोधित करते हैं । इस प्रकार से इस समाज में टांडे के सभी बहुओं को बडी मर्यादा से देखते हैं । बंजारा समाज में नारी का स्थान बहुत ही ऊँचा है । [1]

1.4. बंजारों का व्यवसाय

राजस्थान में बीहड, रेतीली और निर्जल भूमि के कारण, भयानक अकाल में फंसे हुए बंजारे वर्ष के बारह महीने देश-देशान्तर में घूमते रहते हैं । परिवहन और यातायात के काम से घूमने वाले बंजारों के समूह को "टांडा" कहते हैं ।

बंजारों के व्यवसाय अलग-अलग हैं । प्राचीन काल में बंजारे वाणिज्य-कार [व्यापारी] के रूप में खाद्य-पदार्थों और अन्य सामाग्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाने का कार्य सामूहिक रूप से किया करते थे । बंजारों, को देश के चारों दिशाओं में दूर-दूर तक यात्रा करने के बाद अपने मूल स्थान पर लौटना सम्भव नहीं था । उनके लिए शीत और ग्रीष्म दोनों ऋतुएँ विकराल होती हैं । बंजारा स्त्री-पुरुष अपने व्यापार के लिए बैल, बैलगाडी, ऊंट और अश्व का उपयोग करते थे । बंजारे किसी भी काम के लिए सामूहिक रूप से जाते थे । [2]

---

1. धारावत वाच्या नाईक - गाँव - रूपूर, मंडल - गूडूर, जिला - वरंगल
2. बंजारा समाज - डॉ. श्री राम शर्मा - पृ. 156.

बंजारे मौर्य और सातवाहनों के समय दक्षिण भारत में पहुँचने लगे। तरह-तरह के मसालें, रेशमी वस्त्र, विविध प्रकार की खाद्य-सामग्री के बदले वे लोग अपार सम्पत्ति इकट्ठा कर लेते थे। समुद्र से आयात किये गये पदार्थों को बंजारे आन्तरिक भाग में ले जाते थे। उत्तर भारत से दक्षिण भारत के बंजारों का नाता रेल आने से पहले से भी संपर्क बना हुआ था।

मुगलों के शासन काल में बंजारे सैनिक के रूप में काम करते थे। मुगल शासन काल के बाद भी बंजारे हैदर अली, टीपू सुल्तान, पेशवा और निज़ाम के शासन काल में भी सेना की आपूर्ति तथा वितरण-प्रणाली पर एक मात्र अधिकार रहा। बंजारों ने खाद्यान्न पहुँचाने में सेना की बहुत सहायता की। सैनिक आपूर्ति ही उनका व्यवसाय था। राजाओं ने सैनिकों के लिए खाद्यान्न प्राप्त करने के लिए बंजारों की राह देखते थे। बंजारे अपना पडाव अलग डालते थे। रक्षा का प्रबन्ध स्वयम कर लेते थे। बंजारे दोनों पक्ष (पक्ष-प्रतिपक्ष) के लिए सामान बेचते हुए तटस्थ रहते थे। उसी लिए बंजारों का बहुत बड़ा मान-पान रहा। बंजारों के मुखिया धन्ना, दुर्गा, मोती और नानू बंजारों को जोधपुर के राजा ने अन्न लाने पर मोतियों के हार से सम्मान किया था। क्योंकि युद्ध में राजाओं की हार-जीत इन ही लोगों के ऊपर आधार थी।

बंजारे उत्तर भारत से दक्षिण भारत की ओर आते समय हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश) के निकट गोलकुण्डा, बंजारी पहाडी में अपना पडाव डालते थे। गोलकुण्डा में आठ द्वार हैं। इसमें एक द्वार का नाम बंजारा दरवाजा, दूसरा फतेह दरवाजा तीसरा मक्का दरवाजा और चौथा जमाली दरवाजा, अन्य चार दरवाजे बहुत दिनों से बंद पडे हैं। आज भी लोग "बंजारा दरवाजा" से ही गोलकुण्डा में प्रवेश करते हैं।

खाद्य-सामग्री पहुँचाने वाले बंजारों में "जंगी और भंगी" मुख्य थे। इन्हें इस पहाडी पर रुकने की अनुमति दी गयी थी। उस समय बंजारों के लिए रहने का स्थान, खाने पीने की सुविधा, उनके बैल चरने के लिए अनुमति दे दी थी। इसीलिए व्यापारी बंजारे गोलकुण्डा प्रान्त में किसी भी घर से पीने के लिए रंजन का पानी, बैलों को खिलाने के लिए किसी भी खेत से या छप्पर से घाँस ले सकते थे। यदि उन पर कोई चोर या अन्य लोग आक्रमण करे तो उन्हें आत्म रक्षा के लिए एक दिन में तीन लोगों को मार देने की अनुमति गोल-कुण्डा के नवाब से मिली थी। कहा जाता है कि एक राजपूत बंजारा अपने साथ एक लाख बैलों को लेकर निकला था, वही लाखा बंजारा कहलाया।[15]

बंजारा महिलाएँ कसीदाकारी (रंग-बिरंग रूप में कपडों को सजाना) का काम करती हैं। ओढनी, चोलियाँ, लहंगे और विभिन्न कपडों को बंजारा शैली में तयार करती हैं। साथ-साथ काँच के टुकडे, लालडी, क्वाडी (कौडियाँ) झुंडा, खमक्या घूगरा (बहुत छोटे घुँगुरू), आनी (एक पैसे, दो पैसे के सिक्के), और रंग-बिरंग दागे से बंजारिने बहुत सुन्दर से बनाती हैं। इनकी शैली देश-विदेश के कोने-काने में फैली हुई हैं। देश-विदेश के सभी शैलियों में से बंजारा शैली उच्च स्थान प्राप्त कर चुकी हैं।

1-4-1 गूणी का व्यापार

बंजारे सन को कातकर बहुत लम्बा डोर बनाते हैं। उससे गूणी (थैले के आकार में रहता है) बनाते हैं। यह गूणी का उपयोग विवाह के समय माँ-बाप अपनी बेटी (नवलेरी-वधू) को दहेज के रूप में जो नया लत्ता (कपडा) दिया जाता है। उसे इस गूणी में भर कर देते हैं, यह गूणी बहुत

---

1. बंजारा (लंबाडी) वंशावली नूनसावत जीवला नाईक - पृ. 6.

पवित्र होती है । क्योंकि इस गूणी में सीतला भवानी, मेरामा याडी और देवी-देवताओं के पवित्र पूजा सामग्री भी इसी में रखते हैं ।

धारपेतर बंजारों का व्यवसाय अलग है। जिनमें प्रमुख --

.-4-2 भाट-ढाडी बंजारों का व्यवसाय

गोर या चारण बंजारों को भाट-ढाडी बंजारों का बहुत उपयोग था । ये लोग गानों के साथ-साथ पूर्वजों के इतिहास, पूर्वजों की वीर गाथा और मनोरंजक कहानियाँ आदि सुनाते थे । इनका व्यवसाय गाना-बजाना ही है । वे बंजारों को बहुत उत्तेजित करते थे । वरंगल जिला, जगन्नाथ पल्लि में भाटों का बहुत बडा टांडा है।

-4-3 नाई बंजारों का व्यवसाय

नाई बंजारों का व्यवसाय मुख्यत: क्षौर कर्म के साथ-साथ जन्म संस्कार, सगाई-विवाह संस्कार, मृत्यु संस्कार आदि सभी कार्यों के लिए नाई महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । किन्तु नाई बंजारों की संख्या बहुत कम है । नाई बंजारा और चारण बंजारों का रीति-रिवाज, रहन-सहन में कोई अंतर नहीं है । नाई बंजारे वरंगल जिला, तोर्रूर मंडल के पिट्याला गाँव में बहुत बडा टांडा है।

-4-4 सनार {सुनार} बंजारों का व्यवसाय

सुनारों का मुख्य व्यवसाय विविध प्रकार के गहने, आभूषण गढना । वे बंजारों की शैली में आभूषण गढते हैं । वे लोग भी संख्या में बहुत कम है । वे लोग आभूषण के साथ-साथ बंजारा देवी-देवताओं की मूर्तियाँ भी गढते हैं । सुनार बंजारा देवी का उपासक है । गोर बंजारा और सुनार बंजारों के

रीति-रिवाज, रहन-सहन में बहुत अंतर हैं । बंजारों का विवाह ब्राह्मणों के बिना हो सकता है । परन्तु सुनार बंजारों का विवाह ब्राह्मणों के बिना नहीं हो सकता । ज्यादातर सुनार बंजारा शाकाहारी होते हैं । गोर बंजारा सुनार का बना हुआ भोजन कर लेते हैं । परन्तु सनार बंजारा गोर बंजारों का बना हुआ भोजन नहीं खाते हैं । वरंगल जिला, पालकुर्ती मंडल, मैलारम गाँव में बहुत बडा सुनारों का टांडा हैं।

समय के अनुसार बंजारा लोग अपने मूल व्यवसाय से हटकर समाज के अन्य व्यवसायों को अपना रहे हैं ।

आन्ध्र प्रदेश के कुछ जिलों में बंजारा स्त्री-पुरुष अपनी गरीबी के कारण बीडी बनाने के लिए काम आनेवाले तेंदू के पत्ते जमा करके उसे कट्टा (एक कट्टे में सौ पत्ते) बनाकर बेचते हैं और अपना परिवार चलाते हैं । इसके अतिरिक्त बंजारे जंगल से सूखी लकडी बीनकर छोटा-छोटा कट्टा बांदकर पास के गावों में जाकर उसे बेचते हैं । जडी-बूटी-वन-संपदा आदि से भी अपना आजीविका चलाते हैं ।

देहातों में रहनेवाले बंजारे खेती का काम करते हैं । खेती के काम में स्त्री-पुरुष समान रूप से काम करते हैं । जिन बंजारों के पास खेती नहीं हैं, वे मजदूरी का काम करते हैं । गाँवों में मज़दूरी नहीं मिलने पर सुदूर प्रान्तों में काम की तलाश में जाते हैं ।

बहुत से बंजारा परिवार अस्थायी रूप से हैदराबाद आ रहे हैं। गाँवों में मज़दूरी नहीं मिलने पर हैदराबाद में आकर सैकिल रिक्षा चलाने का काम, मकान बनाने का काम, सडक बनाने का काम आदि कर रहे हैं। बनजारिन भी अपने काम के तलाश में जाती हैं । कुछ बंजारे आज भी

वाणिज्य के कार्य में व्यस्थ हैं । आज भी बंजारे दाल, मिर्चो, हल्दी, अदरक-लहसन, जीरा, काली मिर्च, दारचीनी, काजू, मसाले, आदि खाद्य सामग्री को हैदराबाद के गलियों में बेचते हुए दिखाई देते हैं । दस पन्द्रह बरसों से बंजारे छोटे-छोटे उद्योग भी शुरू किये हैं । सरकारी नौकरियों में उनकी नियुक्ति होने लगी । और कुछ बंजारे राजनीति में भी अपना कार्य संभाल रहे हैं । राजनीति को अपना व्यवसाय बनाकर बंजारा समाज की सेवा कर रहे हैं ।

बंजारा लोग समाज के साथ जो भी काम मिलता है, तो आज का बंजारा उसे करने के लिए पीछे नहीं हटता । अत: आदि काल से लेकर आधुनिक काल तक बंजारा समाज का मुख्य व्यवसाय वाणिज्य ही रहा । परन्तु वातावरण और देशकाल की परिस्थिति के प्रभाव से उसे अन्य व्यवसायों को भी अपनाना पड़ रहा है ।[1]

1·5· बंजारा जाति और उनके गोत्र

बंजारा समाज अनेक जातियों-उपजातियों में बंटा हुआ है । बलिराम पाटिल ने गोर बंजारों को "6" कुलों में विभाजित किया -- 1· भूक्या 2· बडत्या 3· चवाण 4· बाणोत 5· पवार 6· तुवर ।[2] डॉ· श्रीराम शर्मा जी का वर्गीकरण बंजारों के कुलों पर आधारित हैं । बंजारों के सभी वर्ग, उपवर्ग, प्रान्त तथा उनके व्यवसाय के आधार पर उच्चारण के कारण विविध रूप धारण कर लिया है । उसी लिए समाज सेवी राम सिंह भानावत बंजारा समाज को एक ही जाति मानते है ।

1· लाकावत जग्या नाईक – गाँव : बंडरामारम मंडल : तुंगातुर्ती
जिला : नलगोण्डा

2· बंजारा जाति, समाज और संस्कृति – डा·यशवन्त जाधव – पृ· 6

बंजारा एक जाति नहीं बल्कि एक समूह हैं। बंजारा समूह को पाँच वर्गों में बंटा जा सकता है, जो इस प्रकार हैं--

बंजारा गोत्र

1. चौहाण 2. पमार 3. राठोड 4. वडत्या 5. तुरी

-5-1 1. चौहाण गोत्र का विवरण :- (छो गोत चौहाण कहते हैं)

1. कोर्रा चौहाण 2. सपावट चौहाण 3. केळूत चौहाण 4. मूड चौहाण 5. लावड्या चौहाण और पालतिया चौहाण।

-5-2 2. पमार या पवाँर :- (इन लोगों को बारा गोत पमार कहते हैं) वे इस प्रकार है --

1. लोहेड पमार 2. गेडा पमार 3. कुंभराणी पमार 4. अंध पमार 5. थंत पमार 6. राज पमार 7. वजियाजीत पमार 8. जगत पमार 9. रतभाणी पमार 10. अब्बु पमार 11. पूणा पमार और 12. हात्या पमार।

कहा जाता है कि लोहेड पमार, वजियाजीत पमार, जगत पमार, कुंभराणी पमार, रतभाणी पमार, अब्बु पमार और हात्या पमार के "12" पुत्र पैदा हुए थे। इन्हीं 12 पुत्रों से ही, बारा गोत पमार कहलाया आजकल यह 12 गोत्र ही व्यवहृत हैं। वे इस प्रकार हैं--

.2-1 बारा गोत पमार

1· रैता पमार 2· पैता पमार 3· लोका पमार 4· बाणी पमार 5· तरभाणी पमार 6· मुंजवाणी पमार 7· इस्लावत पमार 8· आमगोत पमार 9· झरपला पमार 10· वांकूडोत पमार 11· नूणसावत पमार 12· इन्द्रावत पमार या इन्जरावत पमार ।

.5-3 3· राठोड गोत्र का विवरण

रत्ना राठोड के दो पुत्र हैं । 1· बाला और भीका । बाला से बाणोत और भीका से भूक्या कहलाये ।

राठोड

1· भूक्या 2· बाणोत

.5.3·1· भूक्या राठोड

1· खेतावत 2· आळोत 3· खाट्रोत 4· खोला 5· कळू 6· खड्डू 7· खदवा 8· खेतासी 9· कोदयासी 10· करमटोत 11· खोक्रोचा 12· गीदावत 13· गोकळ्या 14· मोद्रेचा 15· सिरोचा 16· पूळ्या 17· मुधाळो 18· मडू 19· हर्का 20· पींपा 21· पातळसी 22· रांम्सी 23· नेव्यासी 24· धेन्यासी 25· मेघावत 26· घेमावत 27· हापावत 28· उपासी 29· मेरावत 30· मेराजोत 31· राजपत 32· उदावत और जेमावत ।

वास्तव में राठोड के "27" (सत्ताईस पाडा भूक्या कहते हैं) गोत्र ही हैं। परन्तु उसमें उपनाम (गोत्र) भी हैं। उपरोक्त बत्तीस गोत्रों में सत्ताईस गोत्रों के अतिरिक्त और कुछ उप गोत्रों के भी नाम दिये गये हैं। और कुछ उपनाम भी होंगे।[1]

1.5.3.2. बाणोत गोत्र : (बाला राठोड से बाणोत)[2] :-

1. जाटोत राठोड 2. आडोत राठोड 3. लाओरी राठोड 4. धीरावत राठोड 5. मूणोत राठोड 6. कुन्तावत राठोड 7. बांडावत राठोड 8. भोजावत राठोड 9. धरमसोत राठोड 10. मूना राठोड 11. कानावत राठोड 12. कर्नावत राठोड 13. पानावत राठोड 14. धानावत राठोड 15. रुपावत राठोड 16. सब्दासोत राठोड।

1.5.4. वडत्या गोत्र :-

वडत्या को जाधव भी कहते हैं। अपने नाम के अंत में जाधव जोडते हैं। जैसे धारावत चंदूलाल जाधव।[3]

1. एमुलोत जाधव
2. धारावत जाधव
3. लाकावत जाधव
4. नूणावत जाधव

---

1. भूक्या बालसिंह नाईक राठोड - मालोपुरम तांडा - तहसिल : तिरुमलगिरि जिला : नलगोन्डा
2. बंजारा (लम्बाडी) वंशावलि - नूणसावत जीवला नाईक पमार - पृ. 22 श्रीराम पुरम तांडा - पिडुगुराळ्ळा - जिला - गुंटूर
3. धारावत चंदूलाल जाधव - सुकारी गड्डा तांडा - गांव - मोन्ड्राई तहसिल कोडवंड्डला - जिला - वरंगल।

5· तेजावत जाधव

6· बमर्वित जाधव

7· नेतावत जाधव

8· बादावत जाधव

9· तिलावत जाधव

10· माळोत जाधव

11· बोडा जाधव

12· जळोत जाधव

13· कुणसोत जाधव

14· हरकावत जाधव

15· हालावत जाधव

16· जेट जाधव

17· भरोत जाधव

18· पाड्या जाधव

19· अजमेरा जाधव

20· पोरिका या पोरिवाक जाधव

21· हाजावत जाधव

22· पीतावत जाधव

23. आडे जाधव

वड्त्याओं का "52" (बावन पाडा वड्त्या कहलाये) पाडा हैं। परन्तु आजकल सभी पाडों का जानकारी नहीं मिलती हैं।

1.5.5· एक जात दुरी जात

दुरी जात के चार गोत्र हैं। वह इस प्रकार है[1] --

1· बंजारा (लम्बाडी) वंशावली नूणसावत जीवला नाईक - पृ· 28
श्रीराम तांडा पिडुगु राळ्ळा जिला - गुंटूर

1· सामा ललाणी

2· मेहा ललाणी

3· जोगा ललाणी

4· हेमा ललाणी

इससे यह स्पष्ट होता है कि बंजारा समूह ने गोत्रों के आधार पर भी अपनी विशिष्टताओं को कायम रखते हुए अपना विस्तार पाया है । गोत्रों से संबंध समूह चुने हुए व्यवसायों के साथ भी जुडे थे । समूह को गोत्र के आधार पर अपनी अस्मिता को और सामूहिक विकास को बनाए रखना भारतीयता से जोडता है ।

1·6· बंजारा – टांडा

भारत के सभी घुमंतु जातियों में से गोर या बंजारा जाति एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घुमंतू जाति हैं । इस घुमंतू जाति के समूह को " टांडा " कहते हैं । टांडे की रचना एक सुदृढ राज्य की तरह है । घुमंतू बंजारे पहाडियों में, जंगलों में, घाटियों में, गाँव से दूर अपना टांडा बसा लेते हैं । जहाँ पर पीने का पानी हो, पशु पालन के लिए चारा हो और खेती के लिए उपजाऊ भूमि हो, जहाँ यह साधन नहीं होते वहाँ टांडे की रचना नहीं होती । बंजारे अपने घर के द्वार पूर्व दिशा की ओर रखते हैं । बंजारे लोग घर को "झूपडा" कहते हैं । कई टांडे एक ही परिवार के सदस्यों के भी हैं । उन्हें उनके गोत्र के नाम से संभोधित करते हैं । जैसे वांक्डोतेर टांडो, भूक्यार टांडो, मूडेर टांडो, धारा-वतेर टांडो आदि ।

कई टांडे अलग-अलग परिवार के सदस्यों के भी हैं । उन्हें किसी प्रान्त या किसी अन्य नाम से संभोधित करते हैं । जैसे पिंतल कुन्टार टांडो, बोडम कुन्टार टांडो, दुब्बा टांडो, सुकारी गुड्डा टांडो, गटली दंईर टांडो आदि

कुछ ऐसे टांडे भी हैं जो उनके नायक के नाम से चलते हैं । जैसे जोग्या नायकेर टांडो, टीक्या नायकेर टांडो, जेत्या नायकेर टांडो, सोम्ला नायकेर टांडो आदि ।

टांडे में रहने वाले सभी सदस्य नायक की बात को नहीं टालते और जब कभी टांडे का कोई सदस्य किसी प्रकार का अपराध करे तो नायक पंचायत (नसाब) के सुझाव से दंड देता है । सभी त्योहार, उत्सव और धार्मिक संस्कार विवाह संस्कार, जन्म संस्कार, मृत्यु संस्कार भी नायक के नेतृत्व में ही किये जाते है ।[1]

1·7· देश व्याप्ति कब और कैसे

बंजारा जाति के लोग अपने मूल स्थान से रवाना होकर भारत के कोने-कोने में घुमंतू के रूप में फैले हुए हैं । घुमंतू जीवन बिताते हुए, बंजारा एक समूह की तरह बन गये हैं । इस बंजारा समूह को "टांडा" कहते हैं । यह टांडा गोत्र और नायक के नामों पर आधारित है और सुदृढ राज्य की तरह होने के लिए विभाजित हैं । ऐतिहासिक दृष्टि से विचार करने से उस जाति का घुमक्कड प्रवृत्ति के सम्बन्ध में पता चलता है, कि -- वे सेना के रूप में, व्यापार के रूप में और घुमंतु के रूप में, तीन प्रकार से विभाजित किये जा सकते हैं ।

1-7-1 बंजारा सेना के रूप में

बंजारा समाज के लोग 9 वीं सदी में लोहेड पमार, 10 वीं सदी में जय चंद्र राठोड, 12 वीं सदी में पृथ्वीराज चौहान और सन् 1193 से मानसिंह राठोड के शासन काल में बंजारे सैनिकों के रूप में काम किये थे । सन् 1192 में

1· खेतावत रामुलू नाईक - गाँव : आलेर, जिला - नलगोण्डा

पृथ्वी राज चौहान की मृत्यु के बाद राजपूत शासन समाप्त हो गया था और राजपूत सैनिक,मुसलमानों की सेना में काम करने लगे । बंजारा सैनिक युद्धों में भाग लेने लगे । युद्धों में कई राजपूत सैनिक मारे गये । मुसलमान नवाब ने राजपूत सैनिकों को तंग करते थे । बंजारा समाज के लोग भारत में हुए लगातार युद्धों के कारण अपने मूल निवास स्थान को छोडकर भटक गये और विविध प्रकार के व्यवसायों को अपनालिए । [1]

-7-2 बंजारा व्यापार के रूप में

15 वीं शताब्दी में मुगलों ने भारत की बागडोर संभाली । उस समय छोटे-मोटे राज्य और रजवाडे समाप्त हो गये थे । अत: राजपूत बंजारे बेरोजगार होने के कारण उन्होंने अपने व्यवसाय बदल दिये । कुछ राजपूत बंजारे व्यापार को अपना व्यवसाय बना लिया । रसद तथा आयात-निर्यात का माल लाने ले जाने वाले बंजारा जाति के लोगों ने सेनाओं की बहुत मदद की । बंजारों ने मुसलमान शासकों को 1500 के आस-पास रसद की व्यवस्था की थी ।

17 वीं शताब्दी में बंजारे भारत में ही नहीं विदेशों में भी जाया करते थे । जैसे मक्का, मेडागास्कर, मनीला और अराकान आदि । इसके अतिरिक्त बंजारे दमन, बसई, राजपूर चोल, वेनरगुला और डाभोल तक पहुँचते थे । बंजारे गोलकुण्डा में पडाव डालते थे । बंजारा व्यापार के लिए दूर-दूर तक निर्भय आते जाते थे ।

---

1. खेतावत सोमला - दी पोलीटिकल एनालिसिस आफ बंजाराास - ए केस स्टडी आफ भोनगिर मंडल - पृ. 14.

मैसूर की तीसरी और चौथी लडाई में भी बंजारों ने अंग्रेजों, मराठों और निज़ाम की संयुक्त सेना को अनाज और खाद्य-सामग्री पहुँचायी थी । इसी लडाई में टीपू सुलतान को पराजित करना उनका कर्तव्य था । इसलिए सन् 1791 के अगस्त मास के 26 वें दिन अपने हाथ से लिखा और अपनी मुद्रा से अंकित यह अधिकार-पत्र दिया, हस्ताक्षर कार्नवालिस, एल.एस ।

इस प्रमाण पत्र को भंगी के भाई सोमा नायक को सेनापति कार्नवालिस ने दिया था और बंजारों के नायक भंगी को लडाई के मैदान तक अनाज पहुँचाने के लिए पेशगी रुपये दिया करते थे । खाद्य-सामग्री को गूणों (जूट का बोरा) में भर कर व्यापार करने वाले बंजारों का नाम आदर से लेते हैं । इसी प्रकार बीजापूर, गुलबर्गा, रायचूर, पूना, औरंगाबाद, दौलताबाद, सतारा, पिंपलनेर देवगाँव, नांदेड, हैदराबाद, वरंगल आदि क्षेत्रों में भी बंजारे व्यापार में प्रसिद्ध हैं ।[1]

1-7-3 बंजारा घुमंतु जाति के रूप में

भारत की यायावर जातियों में बंजारा जन जाति प्रमुख स्थान रखती है । मुगल साम्राज्य का पतन होते हुए भारत में राजनीति संघर्ष से भारी फेर-बदल हुआ । उससे बंजारों के व्यवसाय पर बहुत असर पडा । बंजारे लोग उस समय सारे भारत में भटक गये । उनमें से कुछ लोग व्यापारी, बनगये, कुछ लोग पशुपालक बन गये, और कुछ लोग खेती का काम करने लगे । इस प्रकार से बंजारे घुमंतू बने । वनों में घूमने वाला वनवासी बनगया, व्यापार के लिए घूमने वाला व्यापारी बन गया और पशुपालन करने वाला बंजारा सुगाली बन गया ।

---

1. बंजारा समाज - डा. श्रीराम शर्मा - पृ. 166.

आभूषण खरीदती हुई बंजारा महिलाएँ

इसी तरह घुमंतु समाज के कई नाम इस प्रकार हैं -- लम्बाडा, लभाण, सुगाली, ढाडी, भाट, सुनार, जांगड, ढालिया आदि । उपरोक्त सभी नामकरण उनके व्यवसाय के आधार पर रखा गया है । अत: यह सभी वर्ग के बंजारे आज भी भारत के कोने-कोने में फैले हुए हैं । वे सभी लगभग घुमंतू हैं तथा इन्हें घुमंतू बंजारा कहते हैं ।[1]

1.8. वेश-भूषा और आभूषण

बंजारों की संस्कृति राजस्थान प्रान्त के होने के कारण आज भी बंजारों की वेश-भूषा, रीति-रिवाज़, रहन-सहन और विविध संस्कार, राजस्थानी संस्कार से मिलते-जुलते हैं । बंजारा स्त्री को आदर के लिए उसके नाम के साथ "बाई" शब्द जोडा जाता है । यदि बंजारा महिला बडी आयु की होती तो उसे "याडी" (माँ) कहते हैं । उसी प्रकार किसी बंजारा पुरुष का नाम ज्ञात न हो तो उसे सम्मान के साथ "भीया" (बडे भाई) कहते हैं । वृद्ध बंजारा को बापु (पिताजी) कह कर संबोधित किया जा सकता है । बंजारा समाज में भाभी ने देवर को "भया" ननद को बाई, सास को माँ, ससुर को वडारी कहकर संबोधित करती हैं ।

बंजारे गाँव से दूर आंचल में टांडा (बस्ती) बसाकर निवास करते हैं । बंजारा बोली आज भी अपनी पहचान रखती है । सारे भारत के बंजारे अपनी बोली में ही बात करते हैं । बंजारों के न्यायालय को नसाब कहते हैं । लडाई-झगडा होने पर तलाक के मामलों को निपटाने के लिए टांडे का नायक नसाब (सभा) बिठाता है । उस नसाब में न्याय का निर्णय होता है । उस नसाब का अध्यक्ष टांडे का नायक होता है । और अन्य सदस्य भी नसाब में न्याय करने

---

1. करमटोत पंत नाईक - गाँव - मक्कराज पेट - जिला - मेदक

बंजारा वेश-भूषा खरीदती हुई महिलाएँ

के लिए भाग लेते है । बंजारे किसी भी विषय को लेकर कोर्ट-कचहरी तक नहीं जाते, परन्तु वे नसाब के माध्यम से ही इनके फैसले होते है ।[1]

1-8-1 <u>बंजारों की वेश-भूषा</u>

बंजारा महिला श्रृंगार प्रियता के लिए प्रसिद्ध है । बंजारों की वेश-भूषा बहुत ही आकर्षक होती है ।

<u>कँवारी लडकी</u>

<u>वेश –</u>

सादा-सीदा घागरो (लहंगा) जाकिट (चोली) और फडकी (ओढनी) पहनती है । फडकी के एक छोर पर (जो दाएँ हाथ के नीचे (कांके) से दोनों स्तनों को ढंकती हुई बाँए कंधे के ऊपर से पीछे की ओर पडती है) कशीदाकारी वाली तीतरी (इस तीतरी को काचे, आरसी, मूँगा, पारा, घूगरा, लालडी, आदि चीजों से श्रृंगार से तैयार किया जाता है) भी पहनती है ।

1-8-2 <u>आभूषण</u>

माथे के दोनों ओर कानों के बीच चांदी का टोपली, केशों में फूंदा, कान के ऊपर से गाल तक दोनों ओर चांदी का टीकी, पटडी और कन्या (जो हार की तरह होती है) पहनती हैं । गले में कशीदाकारी चाकडी, चांदी का हँसली, हार, नाक में फूली (नथनी) हाथों की अंगुलियों में फूला, पाँव में घूघरा (घुँघरू) बांधती हैं और झांझरिया (झांजर) भी पहनती हैं ।

1· कोर्रा होमसिंग – गाँव – हनमन्ता पूर – मंडल – नर्मेटा – जिला – वरंगल

-8-3 बंजारा महिला

वेश -

बत्तीस हाथ घेरे का फेटिया (लंहगा) घुंघट वाली टूकरी (चुनरी), कशीदाकारी वाली कांचकीया काँळी (चोली) पहनती हैं ।

-8-4 आभूषण

माथे के दोनों ओर भौंहों और कानों के बीच "चोटला" (इसमें, घूगरी, टोपली और चोटला तीनों एक रस्सी से बंधा हुआ रहता है । सबसे ऊपर घूगरी, घूगरी के नीचे टोपली चोटला-तीनों को मिलाकर चोटला कहते हैं) लटकाता है । माथे पर टीकी, (चाँदी का), दाएँ नाक में सोने की फूलो (नतनी) बाँए नाक में सोने की भूरिया (गोलाकार से-चूडी जैसा रहता है), गले में कशीदा-कारी वाली च्वाकडी चाँदी के हाँसली, हाँस (हाँस के साथ तीन तीतरी रहती हैं) और चंदर हार, रुपयार हार धारण करती है । हाथों में बलिया, कोनी से ऊपर भुजदंण्ड में पहना हुआ बलियाओं को "चूडो" कहते हैं । यह चूडो केवल सुहागिन ही पहन सकती है । कोनी के ऊपर चांदी के बाजूबन्द, बाजूबन्द के नीचे बलोटिया और हाथ में बलिया से नीचे काँसे की माटली धारण करती है । हाथों की उँगलियों में फूला, वींटी अंगूठे में करपरी पाँव में तांबे का झांझरिया (झांजर), कस्से और वाँकडी पैर की उँगलियों में घटकी (बिछवा) आदि गहने पहनती हैं ।

-8-5 विधवा बनजारिन

कोनी के ऊपर "चूडो" (बलिया), माथे के दानों ओर चोटला से जुडी हुई घूगरी " पाँव में "वाँकडी" पैर की उँगलियों में घटकी (बिछवा) नहीं धारण कर सकती । अतिरिक्त सुहागिन की वेश-भूषा पहनती हैं । डॉ॰ श्रीराम शर्मा ने लिखा है कि घूघरी कँवारी लडकी और विधवा स्त्री भी धारण कर सकती है,

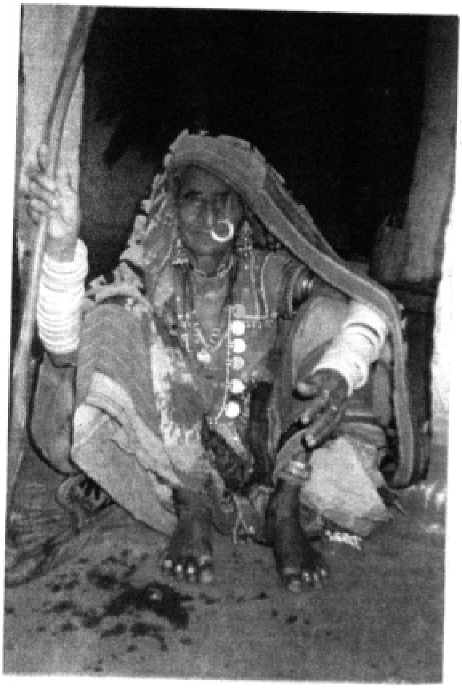

बंजारा वृध्द महिला

किन्तु टोपली केवल सुहागिन ही धारण करती है । यहाँ पर डॉ· श्रीराम शर्मा ने घूघरी का स्थान टोपली को और टोपली का स्थान घूघरी को दिया है । घूघरी को कँवारी लडकी और विधवा स्त्री नहीं पहन सकती हैं । किन्तु टोपली पहन सकती हैं ।[1]

3-6 बंजारा पुरुष

वेश

बंजारा पुरुष धोती, कुरता और रुमाल/पगडी (विवाह के समय वर साठ हाथ की पगडी) पहनता है ।

-8-7 आभूषण

कानों में सोने की मर्की, या बाली दाएँ हाथ में कोनी के ऊपर चांदी का कोलडा, (बंजारा बोली में इसे पोलो कोल्डा कहते हैं) दोनों हाथ में एक-एक कोल्डा (कडे), दोनों हाथ में कुल तीन कोल्डा पहनते हैं । कमर पर चांदी का कणदोरो (कमर पट्टी), हाथ की उंगलियों में छल्ला (ऍंटी) दाएँ पैर में चांदी का तोडा (कडा) भी पहनते हैं ।[1]

1·9· खान-पान

बंजारों का खान-पान अन्य समाज से भिन्न हैं । किन्तु खाद्य पदार्थों में बंजारों की रूचि और राजस्थानियों की रूचि एक ही है । आज भी बंजारे उनके पूर्वजों की रूचि से दूर नहीं हैं । भारत में किसी भी कोने में वास करने वाले बंजारा लोगों का आहार लग-भग एक ही प्रकार है । बंजारे लोग घर की

1· बाणोत धीमा प्रसाद - गाँव - बालाजी नगर - मंडल - कोदाडा
जिला - नलगोण्डा

पूर्व दिशा की ओर, पालथी न मारकर गोलाकार बैठकर भोजन करते हैं। क्योंकि उस दिनों में कोई भी शत्रु उन पर हमला भी कर दें तो उसे निपटने के लिए तुरन्त उठकर उसका मुकाबला किया जा सकता है। बंजारों की भोज्य पदार्थों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है और इसके अतिरिक्त मिठाई पदार्थ भी खाते हैं।

1-9-1 मिठाई पदार्थ

1· निरामिष भोज्य पदार्थ (मांस रहित, मांस न खाने वाला)

2· सामिष भोज्य पदार्थ (मांस से युक्त)

मिठाई पदार्थ —
- लापसी
- काडो या कडाओ
- मोई
- चूरमो
- खीरा-पोळी
- गलकापी

जच्चा औरत को "काडो" (पेय पदार्थ) और "लापसी" (खाद्य पदार्थ) दिया जाता है।

बंजारा (लंबाडा या गोर) बोली में भोज्य पदार्थ को तीन प्रकार से सम्बोधित करते हैं। 1· बाटी (रोटी) 2· दळ्या (खिचडी) 3· धान (चावल)

1-9-2 1· निरामिष भोज्य पदार्थ --

- मकई, ज्वार, बाजरा, गेहूं, चावल आदि के आटे से बाटी बनाते हैं।
- मकई, ज्वार, बाजरा, मंडुवा, कोर्रा, भल्हू आदि को कूट कर दलिया (खिचडी) बनाते हैं।
- चावल से धान पकाते हैं।

उपरोक्त भोज्य पदार्थों को, भाजी, लगावण, खोडी, राबडी, चोळ्या (छाज), धई (दही), घी और फलहू आदि से मिलाकर बडे चाव से खाते है।

1-9-3 <u>सामिष भोज्य पदार्थ</u>

सामिष भोज्य पदार्थ को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

1· जल-जन्तु -- माळी (मछली)

2· पालतू और जंगली पशु-पक्षी -- बोटी (मांस)

1-9-3-1 जल-जन्तु (माळी (मछली))

- झींगा
- भडते
- दोगळ्या
- कन्ट्रा
- पारले

जल-जन्तु
माळी (मछली)

- गेगडा
- वामे
- मल्डा
- लोडे
- मोटो माळो (समुन्दर की मछली) आदि।

इसके अतिरिक्त काबजो, जळ कुकडो और केंकडों भी जल जन्तु हैं।

1.9.3.2. पशु-पक्षी पालतू और जंगली

बंजारा (लंबाडा या गोर) बोली में मांस को "बोटो" कहते है

- सळोई
- नरमी बोटी
- खारी बोटी
- ओकाळी बोटी
- भूंजी बोटी
- सूकी बोटी
- हडका (हड्डी)

ऊपर दिये गये निरामिष भोज्य पदार्थ के तीन प्रकार बाटी, दळ्या और धान से "बोटी लगावण" (सामिष भोज्य पदार्थ) मिलाकर बडे चाव से खाते हैं। पालतू और जंगली दोनों प्रकार के पशु-पक्षी का मांस को बंजारे सेवन करते हैं। प्रमुख पक्षी --

जंगली पक्षी

बतक, बडबुंगा, काळी कुकडी, टोल्या, कमेडी, तीतर, लावी, मोर, कोन्गा (मोटे कोन्गा या कंपर कोगा) आदि।

पालतू पक्षी

कुकडी (मुर्गी) कुकडो (मुर्गा) बतक, काळी कुकडी (तेलुगु में चीमा कोळ्ळू कहते हैं।)

पालतू पशु

छेळी (बकरी, बकरा) गोरली - (भेड) गोरला (भेड), सुर्री (सुअर) आदि।

जंगली पशु

सस्या, मुंगेसा, हण्णी (हिरणी), शेल्डो, मरनागी, सालगडो, भेडया, गोई, गर्लो, सूर (जंगल का सुवर) आदि। गाय की मांस को बंजारे छूते नहीं। गाय को गोमाता कहते हैं। गाय को देवी-देवताओं के समान पूजते है। देवी-देवताऊं र भोग लगाइणो (देवी-देवताओं को पूजा-पाठ करने का कार्य) करते समय गाय की मूत को घर में छिडकते हैं। और गाय की मूत को पानी में

मिलाकर छोटे बच्चों को भी स्नान कराते हैं। इतना ही नहीं सामिष भोजन में गाय की दूध, दही, घी आदि पदार्थों को मिलाकर भी नहीं खाते हैं। क्योंकि गाय को देवता के रूप में पूजते हैं।

1-9-4 सुरापान— सींदो (सेंदी या ताडी)

दारू (मद) इसके अतिरिक्त बीडी, चुट्टा, हुक्का, भांग आदि भी पीते हैं।[1]

1·10· देवी देवता

बंजारे भारतीय संस्कृति के एक अंग हैं। उनके देवी-देवता भी भारतीय समाज की मान्यताओं के साथ जुडकर ही मान्य हैं। बंजारों का मूल स्थान राजस्थान कहा गया है। वहाँ के "मेरामा थाडी" को बंजारों के प्रधान देवता मान सकते हैं। किन्तु आगे चलकर बंजारे जैसे-जैसे भारत के अन्य प्रान्तों में बस गये वैसे ही उनकी प्रधान देवता भवानी होती गई। इनके साथ-साथ स्थानीय देवी-देवताओं की भी बंजारों ने परिकल्पना की। उनके बीच में कुछ बाबा भी उभरे। इन सब की एक सामूहिक मान्यता ने बंजारों की देवी-देवता सम्बन्धी अवधारणा के रूप में प्रतिष्ठा पाई।

1· लावड्या हरिया नाईक गाँव - धोंदर पल्ली जिला - नलगोण्डा

-1 देवी :-

बंजारे मुख्य रूप से देवी के उपासक हैं । बंजारे "देवी" को "याडी" भवानी, (माँ) कहकर संबोधित करते हैं । देवी की पूजा सार्वजनिक रूप से भी करते हैं, और व्यक्तिगत रूप से भी । बंजारा समाज में कोई पूजारी वर्ग नहीं होता, स्वयं ही पूजा कर लेते हैं । सब तरह की विपत्तियों में भवानी याडी (माँ) शरण देती है । जन्म, सगाई, विवाह, लडाई-झगडा और पशुओं की बीमारियों को दूर करने के लिए और अन्य किसी प्रकार की विपत्तियों से मुक्त होने के लिए बंजारे भवानी की पूजा करते हैं, और याडी उनकी सहायता करती है । देवी की पूजा घर में या घर की आंगन में और घर के बाहर खेती में किया जाता है । उदाहरण के लिए "सीतला" देवी त्योहार के संबंध में आगे त्योहारों के अंतर्गत विवरण दिया गया है ।

मावली को घर के आंगन में धान्य से भरे बोरों पर "तांगडी" (मावली देवी को रखने का पवित्र बोरा) रख कर, तांगडी के सामने गाय की गोबर से लीपकर, ज्वार या गेहूँ के आटे से च्वाको (गेहूँ या ज्वार के आटे से गोलाकार रंगते हैं इसे च्वाको कहते है ।) पूरते हैं और उसके ऊपर "मावली" की मूरत रखकर पूजा करते हैं । इस मावली पूजा को टांडे के लोग एक ही दिन में मनाते हैं । यह अनुष्ठान मंगलवार के दिन ही किया जाता है । मावली की पूजा एक घर में (जोडार बकरा) दो बकरे की बली चडाई जाती है । "मावलीर बकरा मारनो " कहते है । इस दिन कम से कम टांडे में 80 से 100 तक बकरों की बली चडाई जाती हैं । टांडा बडा रहता है तो बकरों की संख्या और भी ज्यादा बड सकते हैं । यह पूजा मध्याह्न एक, दो बजे से प्रारंभ होकर शाम 5, 6 बजे तक सम्पन्न होती हैं । मावली की मूरत के सामने लापसी, चूरमो और बकरे का कोळजो (कलेजा) मोट हडका (बडी हड्डियाँ, पकाये हुए) चडाके भोग लगाते हैं । टांडे के लोग वींती मावली की पूजा अर्चना करना) करके

खुशियाँ मनाते हैं । सींदी-दारू (ताडी, दारू) आदि पीकर नाचते हैं, गाते हैं । रात भर मावली को सूना नहीं रहने देते हैं । मावली के सामने बैठकर रात भर गीत गाते हुए दूसरे दिन, बुधवार के प्रातःकाल लगभग छः बजे तक गाते रहते हैं । छः बजे के बाद गीतों की समापन गीत गाकर मावली को तांगडो में रख दिया जाता है । तांगडो को वहाँ से हटाकर घर में रख देते हैं । इस प्रकार यह अनुष्ठान संपन्न किया जाता है ।[1]

10-2 <u>दिव्य पुरुष</u>

बंजारा समाज में सेवा भाया का स्थान सर्वोपरि हैं । यह दिव्य पुरुष देवताओं के समान हैं । मेरामा याडी (मरियम्मा) की कृपा से एक सामान्य बंजारा परिवार में सेवा भाया का जनम हुआ । उनके पिता का नाम रामावत भीमा नायक राठोड और माता का नाम धर्मणी बाई । भीमा नायक, धर्मणी बाई के चार पुत्र थे, सेवा लाल, हापा, बद्दू और पूरा । चार भाईयों में सेवा लाल बडा है । बंजारा बोली में "भाया" का अर्थ है, ब्रह्मचारी (अविवाहित) होने के कारण सेवालाल को "सेवा भाया" के नाम से संबोधित करते हैं । मेरामा याडी ने सेवा भाया को अलौकिक शक्ति प्रधान की । इसलिए "समटेरो सेवा भाया" कहते हैं । अर्थात साधना के कारण उन्हें देवत्व प्राप्त हुआ । श्री सेवा भाया का निधन 04 फरवरी, 1739 सोमवार के दिन पोहरा गाँव, अकोला, महाराष्ट्र में हुआ । पोहरा में सेवा भाया के मंदिर का निर्माण हुआ । इस समय असंख्य बंजारों के लिए पोहूर गाँव काशी बना हुआ है ।[2] आज कल इस मंदिर का पूजारी सेवा भाया के वंशज तपस्वी श्री रामराव महाराज (अविवाहित, जीवित) है ।

1· धारावत लाक्या नायक एपूर, गूडूर मंडल वरंगल जिला

2· बंजारा समाज - डॉ· श्रीराम शर्मा - पृ· 242·

1-10-3 हाथी राम बावाजी

हाथी राम बावाजी को, हाथी राम बालाजी के नाम से भी संबोधित करते हैं। बंजारा बोली में तपस्वी या भक्त को "बावा" कहते हैं। इस्लावत वंश, पमार गोत्र के श्री हाथी राम बावा जो ने भगवान श्री वेंकटेश्वर के दर्शन के लिए तिरुमला पर्वत पर आकर बरसों तप किया। आहार भी त्याग दिया था। बावा के तप से प्रसन्न होकर श्री वेंकटेश्वर भगवान एक ब्राह्मण के रूप में दर्शन दिया था। कहा जाता है, कि उस समय के राजा ने बावा की परीक्षा ली। बावा को आदेश दिया था, कि कोठे में भरे सारे गन्ने को रात भर खा लो। बावा ने श्री वेंकटेश्वर का स्मरण किया और हाथी के रूप में भगवान ने रात भर पूरा गन्ना खा लिये। उसी दिन से बावा का नाम हाथी राम बावाजी पड़ा। हाथी राम जी वेंकटेश्वर स्वामी के साथ चौखट भी खेलते थे। हाथी राम बावाजी का मंदिर तिरुमल पर्वत पर श्री वेंकटेश्वर मंदिर के दाएँ हाथ की तरफ बनी हुई है। यहाँ प्रतिवर्ष बंजारे हजारों की संख्या में आते जाते हैं।

1-10-4 प्रतिष्ठ साद (साधु) - सेविया साद

बंजारे देवी-देवताओं के अतिरिक्त साद (साधु) को भी पूज्य मानते हैं। सेविया साद को भगवान से भी ज्यादा पूज्य मानते हैं, और वे बंजारों का देव (भगवान) हैं। नागार्जुना कोण्डा के पास रंगामा गुंडु नामक गाँव, नल्गोंडा जिला में श्री सेविया साद के मंदिर हैं। आमगोत वंश के पमार गोत्र का श्री सेविया साद को बुडया बापु भी कहते हैं।

---

1. जाटोत वाच्या नायक - गाँव - बोम्मावल जिला - वरंगल

सेविया साद भगवान श्री वेंकटेश्वर के भक्त थे । बाबा हाथी राम, और सेविया साद एक ही गोत्र के हैं । कहा जाता है, कि श्री वेंकटेश्वर के साथ हाथी राम बाबा चौखट खेलते समय सेविया साद उनकी बगल में खडे रहते थे । बाद में तिरुपति छोडकर रंगामा गुंट्टु गाँव आ गये, और यहीं पर उनका देहान्त हुआ ।[1] सेवा भाया के मंदिर पर बंजारे हजारों की संख्या में आते हैं । इस साद को पैसे, रुपये, सोना, चाँदी आदि भेंट चढाते हैं और केल्डा [बछडा] भी साद के नाम से छोड देते हैं । उस केल्डा को "सांड्या" कहते हैं । मंदिर में भोग लगाकर वींती [पूजा अर्चना] करते हैं, और उस मंदिर में बंजारे कम से कम एक रात सोकर आते हैं । इस मंदिर का पुजारी श्री लच्छू साद [लच्छोराम नायक] जीवित हैं ।

-10-5 लालिया साद या लोका मसंद

लोका मसंद जी का मंदिर कोडंगल के पास गोकुल नगर गाँव, महबूब नगर जिला में हैं । लोका मसंद गुरु नानक के अनुचर थे, और गुरुद्वारे में 10 वर्ष तक गुरु की सेवा की थी । लोका मसंद की सेवा से संतुष्ट होकर गुरु जी ने चार "वर" दिये -- तुम्हारा वचन झूठा नहीं होगा, जयगुरु कहते ही इच्छा पूरी होगी, इच्छानुसार तुम्हारा घोडा गन्तव्य पहुँच जाएगा, सदैव विजय प्राप्त करोगे । वहाँ से लोका मसंद कोडंगल आये थे । उन्होंने अपना शेष जीवन इसी गाँव में बिताया । महाकाली मंदिर में साधना करते थे । इस मंदिर में बंजारों का मेला होता है । हजारों की संख्या में बंजारे इस मेले में भाग लेते हैं । इनके वंशज ही यहाँ पर पुजारी के रूप में काम कर रहे हैं । आन्ध्र प्रदेश में सबसे बडा बंजारा मेला लोका मसंद की मंदिर में ही होता है ।

---

1. वइत्या मोतीलाल नाचारम रंगा रेड्डी जिला ।
2. एक बंजारा बुजुर्ग लोका मसंद मंदिर

1·11· त्योहार

बंजारे अपने पूर्वजों के पर्वो, उत्सव और त्योहारों को बडे धूम-धाम से हिन्दू धर्म के अनुसार मनाते हैं । पर्वो, त्योहारों से मानव जीवन को परंपरागत जीवन जीने की प्रेरणा प्राप्त होती है ।[1] इनके त्योहारों में मुख्य, आटम् {उगादि}, सीतला {बंजारों की देवी, इस देवी को त्योहार के रूपमें मनाया जाता है ।}, तीज, दसराओ {दसहरा}, दवाळी {दिवाली}, संक्रांति, होळी {होली}, आदि ।

1-11-1 आटम {उगादि}

चैत्र पडवा के दिन हर वर्ष उगादी पर्व मनाया जाता है । बंजारे अन्य वर्गों की तरह आटम {उगादि} का त्योहार बडे आनन्द से मनाते हैं। भोजन में खास करके पुरण-पोळी, लापसी, बनाकर खाते हैं। टांडे वाले पुरण-पोळी को एक दूसरे के घर प्रसाद के रूप में भेजते हैं । उगादि के दिन बंजारे अपना पालतू जन्तुओं गावडो {गाय} बळद {बैल}, गोरलो-छेळो {भेड-बकरो}, आदि को तलाब में लेजाकर स्नान करते हैं । सभी लोग नए कपडे पहनते हैं। और इस नये वर्ष की ऋतुओं के बारे में ब्राह्मण के पास जाकर विचार करते हैं, और लेन-देन का भी विचार करते हैं । बंजारे उगादि त्योहार के गीत गाकर नाचते हैं, खुशियाँ मनाते हैं । क्योंकि बंजारों का नया वर्ष उगादि से ही आरम्भ होता है ।

1· बंजारा जाति, समाज और संस्कृति - यशवन्त जाधव - पृ· 89·

1-11-2 सीतला

सीतला माता बंजारों की देवी है । सीतला को त्योहार के रूप में मनाते हैं । सीतला को चेचक की देवी और पशुओं की देवी के रूप में भी मानते हैं । सीतला सात बहनों में से एक है, और सब से बडी हैं । सीतला की पूजा के समय उसकी छः बहनों को भी पूजना है । सीतला कभी अकेली नहीं रहती । सात बहने इस प्रकार हैं--

1. सीतला 2. तोळजा 3. हिंगळा 4. दवांळगर
5. वेंकाळी 6. मसूरी 7. अंबा भावनी ।

देवी को "भवानी" भी कहते हैं । सीतला भवानी को और उसकी बहनों की पूजा करते समय, सात पत्तरों को क्रम से गाडा जाता हैं । इसमें सीतला भवानी की पत्तर सभी पत्तरों से लम्बा रहता है और बीच (मध्य भाग) में गाडा जाता है । यह देवियों को टांडे के बाहर खेत या जंगल में झिंझर के पेड के नीचे स्थापित किये जाते हैं । वहीं देवियों के सामने तीस-पैंतीस कदम पर एक पुरूष (लम्बा पत्तर) बैठाया जाता है, उसे लूंकड कहते हैं। पूजा समाप्त होने पर भी यह पत्थर वहीं पर गाडा रहता है, फिर अगले साल वहीं पर पूजा करते हैं । सीतला केवल मंगल वार के दिन ही मनाया जाता है । अर्थात सात देवियों की अर्चना करना ।

सोमवार के शाम को टांडे का नायक कार्भारी द्वारा टांडे के सभी लोगों के घर-घर जाकर सीतला करने का खुश खबर देने का आदेश देता है । टांडे वाले उसी दिन लापसी (गुड और चावल मिलाकर पकाते हैं।) चूरमों (गेहूँ की रोटी और गुड मिलाकर चूरते हैं, उसे चूरमों कहते हैं।) और घूघरी (सात प्रकार के धान्य, ज्वार, मकई, बाजरा, मूंग, तुवर आदि) तयार करके, मंगलवार के दिन (पूजा के दिन) सबेरे सात-आठ बजे से सीतला

भवानी की पूजा प्रारम्भ होती है । टांडे के स्त्री-पुरुष नये कपडे पहनकर खुशियाँ मनाते हुए, गीत गाते हुए, डफडा-नंगारा के साथ सीतला माता की मंदपर जाते हैं । साथ-साथ घर का एक मुर्गा टांडे का बकरा और बाँसी लापसी, घूघरी आदि लेजाते हैं । टांडे के सभी लोग समूह से नाचते हुए सीतला माता की मंद पहुँचते हैं । पूजा के दिन नायक उपवास रखता है । नायक को टाडे वाले बकरे की मूंडी और चारों पैर आदर से देते हैं । नायक सीतला माता की मूर्तियों (पत्थर) के सामने गाय की गोबर से लीपकर "च्वाको पूरते" हैं (अर्थात् गेहूँ या ज्वार के आटे से गोलाकार रंगते हैं । पत्थरों को गेरु से लाल रंगते हैं) और भोग लगाकर देवी के सामने बकरे की बली देते हैं। देवी के सामने बकरे की मूंडो, लापसी, घूघरी और चूरमों रखते हैं । बकरे की आंतर निकालकर देवी के सामने से लूंकड (जो देवी के सामने लम्बा पत्थर गाडा गया) तक फैला देते हैं । आंतर के ऊपर से गावडी (गाय) बळद (बैल) गोरली-छेळी (भेड-बकरी), भ्याँसी (भैंस) आदि को दौडाते हैं । भागते हुए पशुओं की पीठ पर घूघरी (घूघरी को बकरे की रक्त से घोलते हैं) फेंकते हैं; और घर का मुर्गा काट कर फेंकते हैं । इस से पशुओं की पीठ रंग जाती हैं, और पशु रोग मुक्त रहते हैं। कहा जाता है, कि पशुओं को दौडाने से गोधूली टांडे की ओर आती है, इसे शुभ माना जाता है । इस प्रकार से सीतला माता (भवानी) की त्योहार नंगारे के चोट पर कांसे की थाली के झंकार पर गाये जाने वाले भजनों से समाप्त होता है । यह अनुष्ठान समाप्त होते ही टांडे की लडकियाँ "तीज बोरावणो" (बुवाना) के लिए नायक से प्रार्थना करती हैं । जब टांडे का नायक पंचों से पूछता है, कि किस दिन तीज मनाई जाए । उनके विचार होने के बाद नायक लडकियों को आशीर्वाद देकर "तीज" के लिए अनुमति दे देता है ।

आन्ध्र प्रदेश के बीदर पल्ली टांडे की बंजारा (लंबाडा) महिलाएँ नृत्य करती हुई

1-11-3 तीज

तीज त्योहार कार्तिक मास में मनाया जाता है ।। जिस दिन तीज त्योहार प्रारंभ होता है, उसके दसवें दिन उसका समापन होता हैं । मुख्यत: यह कुंवारी लडकियों का सब से प्रिय त्योहार हैं । सर्व प्रथम कुंवारी लडकियाँ टांडे का नायक के घर इकत्रित होती है, और "तीज बोरावणो" ‌(तीज बुवाना) के लिए अनुमति लेती है, या सीतला भवानी पूजते समय ही तीज की अनुमति ले लेती हैं । अनुमति मिलने के बाद तांडे के लोग तीज से संबंधित कार्यों में जुटते हैं । टाडे की लडकियाँ और लडकें मिलकर "डपडा" (ढप) बजाते हुए नाचते, गाते हुये गेहूँ और चना खरीदने के लिए पास के गाँव जाते हैं । गाँव से गेहूँ, चना लाकर नायक के घर में उसे भिगोते हैं । तीज का पहला दिन टांडे के लोग "ओलड़ी" (टोकरियाँ) खरीदते है, या स्वयं बनालेते हैं । लडके और लडकियाँ मिट्टी लाने के लिए टांडे से नाचते, गाते हुए डपडा के साथ रवाना होते हैं । लडकियाँ भिगोये चनें अपने साथ ले जाती हैं । उसे सबसे पहले बेर के पेड की सात बार प्रदक्षिणा करती है, और भिगोये चने को बेर की काँटों में अटकाती हैं। वहाँ से उपजऊ तीज की मिट्टी लाते हैं । उस मिट्टी में खाद भी डालते हैं । भीयाओं (बडे भाईओं, अविवाहित) ने टोकरियों में मिट्टी, खाद डालकर उसमें गेहूँ, और चने का 4-5 दाने भी डालता है । उसके साथ घडक्ला (पलाश के पत्ते में भी मिट्टी, खाद, डालकर गेहूँ बोते है उसे घडक्ला कहते हैं ।) भी रखते हैं । इन टोकरियों को रखने के लिए टांडे के लोग एक "डाकळो" (चबूतर) तयार करते हैं । उस डाकळो पर सभी टोकरियों को क्रम से सीधे रखते हैं । सेवा भाया (दिव्य पुरुष) की टोकरियाँ सबसे आगे रखी जाती है । सभी टोकरियाँ डाकळो पर सुधारने के बाद लडकियाँ सेवाभाया, डंडीयाडी (बंजारों की देवो) के गानें गाती हुई ओल्डीयों (टोकरी) में पानी छिडकती हैं । तीज बोने वाली लडकियाँ चबूतरे के सामने नीचे धरती पर सो जाती हैं । सवेरे ही

उत्सव-पर्व के अवसर पर नृत्य करती हुई बंजारा (लंबाडा) महिलाएँ

लडकियाँ उठकर सीधे खाळ्या (नदी), तळाओं (तालाब), या किसी कुवले पर (कुआँ) स्नान करती हैं। लडकियाँ हाथों और पाँवों में मेहंदी लगाकर चमकियों से हाथ पाँव की उंगलियाँ और उनकी गोलाकार के मुख मंडल, रंग-बिरंग कपडे पर इंद्र धनुषी चुनरियाँ तीतरी, फूँदा, आरसी के साथ (कशीदाकारी) ओढकर बिजली की तरह चमक, चमक जाती हैं। वहाँ से लडकियाँ घडे में पानी भर कर टांडे में लौटती समय गीत गाती हुई आनन्द के साथ आती हैं। एक ही दिन में गेहूँ के बीजों से अंकुरोत्पत्ति हो जाती हैं। इसी तरह लडकियाँ प्रति दिन टोकरियों में तीन बार पानी डालती हैं। गेहूँ के अंकुर बडे होकर हरि हो जाती है। इस हरि को ही "तीज" कहते हैं। किसी भी हालत में तीज का स्वास्थ्य बिगडने नहीं देता। लडकियाँ बहुत सावधानी, भक्ति, श्रद्धा से तीज की रखवाली करती हैं।

1-11-3-1 ढमोळी

ढमोळी कार्यक्रम तक तीज लम्बी हो जाती हैं। सतवें दिन यह ढमोळी मनाई जाती है। ढमोळी के दिन लडकियाँ गेहूँ के आटे में गुड मिलाकर या बाजरा के आटे में गुड मिलाकर उसे उबालकर अच्छा पकने के बाद उसकी लड्डु बनाती हैं। इन लड्डुओं को ही "ढमोळी" कहते हैं। इस दिन लडकियाँ देवी की पूजा-पाठ करने के बाद ढमोळी का भोग लगाती हैं। टांडे की सभी स्त्रीयाँ लडकियों के साथ थाली में लड्डु रखकर नाचती-गाती हुई हाँसी-मस्करी से टांडे में ढमोळी बाँटने जाती हैं। इसे "ढमोळी टपांटेन जामा" कहते हैं। इसमें पुरुष भाग नहीं लेते। ढमोळी बाँटने के साथ यह कार्यक्रम संपन्न होता है।

1-11-3-2 गणगोर

तीज के नवें दिन गणगोर का कार्यक्रम संपन्न किया जाता है । इस दिन कुंवारी लडकी ﴾बडी आयु की कुवांरी लडकियाँ﴿ उपवास रहती है , और टांडे का नायक भी उपवास रखता है । गणगोर के दिन "गौरी" पूजा होती है । इसे "ऊजळी गणगोर" भी कहते हैं । अर्थात स्त्री-पुरुष की "संयुक्त नग्न प्रतिमा" ही गणगोर कहलाती हैं। यह प्रतिमा कीचड से बनाई जाती हैं। टांडे के लोग उस दिन बकरे को बली देते हैं । इस दिन स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध, सभी बहुत आनन्द से गौरी पूजा में भाग लेते हैं । भाई-बहनें प्यार से धडकुला ﴾जो पलाश की पत्ते में गेहू, चाना बोये हैं﴿ के साथ खेलते हैं और गीत गाते हैं । इसके बाद उपवास लडकी शाम को गौरी की भोग लगाकर पूजा-पाठ करने के बाद उपवास तोडती है और तीज की आखिरी दिन मनाते हुए गणगोर का कार्यक्रम ﴾अनुष्ठान﴿ संपन्न होता है ।

1.11-3-3 तीज वैरावणो ﴾तीज विसर्जन﴿

कुंवारी लडकियों के लिए यह दिन बहुत दु:खात्मक होता है क्योंकि "नौ" दिन से बडी लगान से तीज का पालन-पोषण किया था । यह दिन तीज का अंतिम दिन हैं । किसी काम पर जाने से भी तीज के लिए सब कुछ भूलकर आनन्द के साथ लौटती थीं । दिन भर नाच-कूद होता था । व्रत-पर व्रत रखे जाते थे । खुशियाँ मनाती थीं । इस तरह की यादों से लडकियों के कोमल हृदयों को पीडा होती हैं। उस दिन सायंकाल के समय 5, 6 बजे के आस-पास टांडे के सभी छोटे-मोटे, स्त्री-पुरुष तीज की मंद पर इकीत्रत होते हैं। टांडे की लडकियाँ और महिलाएँ सभी मिलकर सेवाभाया और डंडीवाडी की पूजा करती हैं, और टांडे वालों की कुशल कामना के लिए अर्चना करती हैं।

गणगौर §तीज§ के अवसर पर पानी भरती हुई बंजारा लड़की

स्त्रीयाँ सभी ने मिलकर गोलाकार से डंडोथाडी-सेवा भाया की गीत गाती हुई नाचती हैं । उसके बाद "डाक्ळे पतरी ओल्डी हेट उतारनो" [कबूतर से टोकरियों को उतारना] का कार्य किया जाता है । टांडे की लडकियाँ, महिलाएँ छोटो-मोटो सभी मिलकर टोकरियों से तीज [हरि] को निकालकर छोटे-मोटे, बाल-वृद्ध पुरुषों को माथे पर पगडी पहनाती हैं और उन लोगों को गोलाकार बिठाकर पगडी में तीज के 4,5 हरी तिनकों को रखती हैं। बाद में तोज को पगडो से निकालकर "तांगडी" [जूट का बोरा उसमें पवित्र मावली देवी रखी जाती हैं] में रख देते हैं । उसके बाद टांडे के लोग खाली टोकरियों को उठाकर नाचते, गाते तालाब की ओर जाते हैं । टांडे के पुरुष अंधेरी रात होने के कारण "डिम्की" [पलाश की लंबी लक्डी को एक ओर चीर कर उसमें सूखी छोटी- छोटी लकडियों से कट्टा बांधते हैं ।] और जलाते हैं । टांडे के लोग उस डिम्की के उजाले में तालाब तक पहुँच जाते हैं। टांडे की झुंड गीत गाकर टोकरियों को तालाब में बहा देते हैं । उसके बाद तालाब के किनारे छोटे-बडे भाई बहनों के पैर "पीडिया" [चक्ले से बनाते हैं] पर रखकर छोते हैं । क्योंकि बंजारा समाज में बहनों का स्थान लक्ष्मी देवी के समान हैं।[1] बहनों की पैर धोने का कार्य होने के बाद टांडे वाले लौट आते हैं और इस से "तीज" का अनुष्ठान संपन्न होता है ।

1-11-4 दसराओ [दशहरा]

डॉ॰ यशवन्त जाधव ने लिखा है कि "महाराष्ट्र में मराठवाडा क्षेत्र में कुछ बनजारा परिवार इस दिन मावली को भैंसा की बलि चढाते हैं।" भैंसों का कलेजा भवानी को चढाते हैं।"[2] इस कथन में सत्यता नहीं है । भारत में कोई भी बंजारा परिवार मावली [बंजारों की देवी] को भैंसा की बली नहीं चढाते, या उसका कलेजा को ।

1· वांकडाते सेविया नायक पमार गाँव - लक्ष्मक्का पल्लि - जि· वरंगल

2· [illegible]

बंजारे दशहरे के दिन गाय की गोबर से लीपकर घर की शुद्दी करते हैं। इस दिन "गावडो पूजणों" (गाय की पूजा करना) और "देवी पूजणों" (देवी की पूजा करना) कार्यक्रम बडे धूम-धाम से मनाया जाता है। दशहरे के दिन महिलाएँ "वेसेरो" (पोशाक पहनावा) पहनती हैं। लडकियाँ रंग-बिरंगे के कपडे पहनती हैं। आन्ध्रा के बंजारे दशहरें के दिन देवी की नई मूरितयाँ बंजारा सुनार से गढाती हैं, इसे (मावलो घडावणों कहते हैं) या पुरानी मूरितयाँ धुलाकर देवी की विशेष पूजा करती हैं। बंजारे इस दिन को बहुत पवित्र मानते हैं। हर प्रकार के हतियारों की पूजा करते है; जैसे - बंदूक, तलवार, ढाल, बरची, कटारी, छुरी दातली, दातला, कोराडी (कुल्हाडी) आदि। बंजारे गोत्रानुसार भी दशहरा पूजते हैं। इस दिन दुर्गा माता की व्रत रखते हुए मावली भी पूजते हैं। आश्विनी शुक्ल दशमी के दिन बकरे की बली चढाकर बडे धूम-धाम से शक्ति पूजा मनायी जाती हैं। दशहरे के दिन बंजारे पटाके जलाते हैं। सेंदी, दारू पीकर खुशियाँ मनाते हैं।

1-11-5 दवाळी (दिवाली)

बंजारे लोग दिवाली को लक्ष्मी देवी, माँ, कहकर संबोधित करते हैं। बंजारे दिवाली को गोवर्धन की पूजा के रूप में मनाते हैं। बंजारे दिवाली त्योहार को दो दिन मनाते हैं। दिवाली से पहला दिन को "कालमस" कहते हैं। इस दिन बंजारे देवी की पूजा करते हैं, और बकरे को बली देकर दावत करते हैं। सेदी, दारू पीकर माँस युक्त भोजन के साथ मस्त रहते हैं। दूसरे दिन दिवाली त्योहार मनाते हैं। इस दिन लक्ष्मी की पूजा करते हैं। सबेरे ही लडके, लडकियाँ जंगल में जाकर तल-पोटली के फूल लाते हैं। गाय के गोबर से उन्डे (गोबर सें गोलाकार मुद्दे) बनाते हैं, और उन उन्डों में तलपोटली के 4, 5 फूल गाड कर

घर के आंगन में रखते हैं । यह फूल की उन्डे 3-3, या 5-5, तीन क्रम में रखते हैं। यह फूल के उन्डे सबेरे से सूर्यास्तमय तक रखते हैं । इसके बाद टांडे के लोग एक मत से "दीयो बाळणो" अर्थात दीप जलाना, की प्रथा है । इस प्रथा से टांडे की एकता मज़बूत होती है, दूसरी ओर अपनी रीति-रिवाज का पालन किया जाता है । बंजारे दिवाली के दिन "गावडी पूजणो" अर्थात गाय की पूजा करना । लडकियाँ गाय की चारों खुरों को धोकर, कुंकुम, हल्दी लगाकर गीत गाती हुई आरती उतारती हैं । देवी की तरह पूजा भी करती हैं । इस प्रकार दिवाली संपन्न होती हैं।

.-11-6 संक्रांति

संक्रांति के दिन गरीब से लेकर अमीर तक नवधान्य की पूजा करते हैं । टांडे के सभी लोग पशुओं को सजाते हैं । गाय और बैलों के सींगों को रंगते हैं । टांडे वाले मिलकर बकरे को बली देकर दावत करते हैं। स्त्री-पुरुष संध्या समय पर गीत गाते हैं और नाचते है । इस प्रकार संक्रांति, मनो उल्लास के साथ संपन्न की जाती हैं।

1-11-7 होळी (होली)

दक्षिण भारत में होली कामदहन के रूप में मनाई जाती हैं । बंजारों का सब से बडा त्योहार है , होली । यह त्योहार बाल, वृध्द, स्त्री-पुरुष सभी लोग हास्य, उल्लास से मनाते हैं । त्योहार के दिन यदि कोई मेहमान घर आजाता है, तो "राम-राम" कहते हैं। फिर बदले में "राम-राम" कहकर अतिथि-मर्यादा के साथ स्वागत करते हैं । दोनों कुशल क्षेम पूछ लेते हैं । बंजारे होली से दस-पन्द्रह दिन पहले ही होली खेलना आरम्भ कर देते हैं । इस त्योहार के अवसर पर बंजारिनों के कंठों से हजारों लोक गीत फूट पडते हैं । होली से चार-पाँच दिन पहले बंजारे नए कपडे पहनकर

आस-पास के गावों में जाते है , और वहाँ के निवासियों से "गोठ वगाते" [होली का इनाम] हैं । गेर के समय बंजारे ढप की थाप पर घुम्कड और तरह-तरह के नाच नाचते हैं । बंजारा पुरुष बाल हो या वृध्द हय, बंजारा और डंडा से भी नाचते हैं । डंडों का नृत्य, गोलाकार से अपने डंडे को साथ के व्यक्ति के डंडे से टकराते हुए, गीत गाते हुए नाचते हैं । डंडों की टकराहट निर्धारित ताल पर होती है । इस नृत्य को बंजारे "डंडा मारनो" कहते हैं । संध्या होते ही टांडे का नायक या टांडे का मुख्य भाग, [जहाँ पर खेलने के लिए सभी के लिए जगा हो । पर जमा होकर नाचना, गाना आरंभ कर देते हैं । साधारणतया होली टांडे के बीच [चौराहे] में जलाई जाती है, जहाँ गर वर्षों से जलती रही है । होली सार्वजनिक रुप से मनाई जाती है,और घर-घर में होली की भोग लगाते हैं । होली के दिन टांडे का नायक और उसकी पत्नी व्रत रखते हैं । होली के दिन बंजारे बकरे काटकर दावत करते हैं । उस दिन मेंदी, दारू पीकर मस्ती करते हैं । होली के दिन बंजारे नाचते, गाते हुए केसुलार रंगेली रमणो" अर्थात टेसू के फूलों से बनाए हुए रंग से एक-दूसरे को रंग कर खेलते हैं । इस खेल में बडों को और मेहमानों को ध्यान में रखते हैं । हँसी, मजाक का रिश्ते वालों को ही रंग डालते हैं । जैसे -- ननद-भाभी, देवर-भाभी, साली-बहनोई, साला-बहनोई, समधी - समधी, समधी - समधन, समधिन - समधिन आदि । एक गोत्र का लडका दूसरे गोत्र की लडकी को रंग सकते हैं । जैसे - पमार गोत्र का लडका, चौहाण, वडत्या और राठोड गोत्र की लडकियों पर रंग डाल सकता है । इसके बाद "डंडा छोडावणो" होली के समापन गीत गाकर [डंडा मारनो गीत] रात 8-9 बजे होली त्योहार संपन्न हो जाती है ।[1]

1·12· जन्म संस्कार

यह संस्कार स्त्री के गर्भ धारण से आरम्भ होता है । गर्भ धारण करने के बाद स्त्री का मन तरह-तरह की चीजें खाने के लिए लालायित होता है । इस अवस्था को बंजारा बोली में "खाये-पीयेन करणो" कहते हैं । स्त्री प्रसव को "जणणो" (जन्म देना) कहते है । बंजारा स्त्री की प्रसव क्रिया पशु के कोठे में या निवास की झोपडी में संपन्न होती है । प्रसव क्रिया जटिल बन जाती है, तो "डाई" (जो स्त्री बच्चा जणवाने की क्रिया को जानती है) को बुलाते है । फिर भी समस्या जटिल हो तो स्त्री को बैल गाडी पर सुलाकर बैल गाडी को दौडाते हैं । इस अवस्था में प्रसविनी का भाग्य ईश्वर के हाथों में दे दिया जाता है । बंजारा समाज में "डाई" की प्रशंसा होती है । उसे "जननी" माना जाता है । प्रसव के बाद डाई को नये वस्त्र, खाद्यान्न, कुछ रुपये, सोने-चांदी के आभूषण भेंट के रूप में दिया जाता है ।

1-12-1 शिशु जन्म

बंजारों की बस्ती (टांडा) में किसी भी परिवार के यहाँ लडका या लडकी का जन्म होता है, तो टांडे की सभी स्त्रियाँ इकत्रित होती हैं। और जन्म के अनुष्ठान को जन्म संस्कार के माध्यम् से बच्चा माँ के पेट से बाहर आते ही बच्चे के साथ रस्सी के आकार की नली (जिसे बंजारा भाषा में "नाळो" कहते हैं) को जो एक ओर गर्भाशय से निकलती है, और दूसरी ओर गर्भस्थ बच्चे की नाभी से जुडी रहती है । डाई उसे पत्थर से काट देती है । घर के आंगन के बाएँ ओर गड्ढा खोदकर उसमें नाळो को गाड दिया जाता है । बंजारों का विश्वास है, कि उस घर के सभी सदस्यों से बालक का स्नेह जीवन भर बना रहता है ।

तीर्थ स्थान पर बंजारे

बालक के जन्म के पांचवे दिन तथा बालिका के तीसरे दिन के पश्चात सुई को आग में तात करके गोत्रानुसार बच्चे के नाभी के ऊपर तथा नीचे या नाभी के चारों ओर "दो या चार" दाग दिये जाते हैं। दाग देने के बाद "सुवाडी" (जच्चा औरत) से "दळ्या धोकेरो" कार्य सम्पन्न किया जाता है।

1-12-2 दळ्या धोकायेर कार्य : (अग्निपूजा)

दळ्या धोकायेरो कार्य बालक के पांचवे दिन तथा बालिका के तीसरे दिन सुवाडी टांड्री या सुवाडी बीर (जच्चा औरत) से सम्पन्न किया जाता है। टांडे की स्त्रियां, बच्चे सभी एकत्रित होते हैं। सुवाडी औरत को चूना, हल्दी, कुंकुम आदि लगाये गये "लोटार बेडो" (एक लोटे पर दूसरा लोटा रखा हुआ) को तीन लडके दो लडकियाँ पानी से भरे लोटों को उठाकर सुवाडी औरत के सिर पर रखते हैं। जच्चा औरत सौभाग्यवती स्त्री के साथ चलती है। जच्चा के पल्ले में "धाणी" (भुने हुए दाने) भूंजे हुए मक्का, ज्वार आदि सात प्रकार के धान्य को रखते हैं। पूजा के स्थान की ओर जाते समय उस धान्य को दायें हाथ से बिखेरती हुई पूजा के स्थान तक पहुँचती है। पूजा का स्थान घर के आंगन में छोटा सा गड्ढा खोदकर बनाया जाता है और उसमें पूजा सम्पन्न की जाती है। और वहाँ पर बेर की डोली भी रखा जाता है। उस गड्ढे में जलती हुई लकडी में, घी, गुड, गेहूँ या ज्वार का आटा मिलाकर मुद्दा बनाते हैं। कटोरे में रखा हुआ उस मुद्दों (गोलाकार से बनाये हुए) पर सात दीपक बनाकर अग्निकुंड के चारों ओर रखकर भोग या धमकार (पूजा) लगाती है।

उसके बाद सुवाडी और्त सौभाग्यवती स्त्रीयों के साथ अपनी संतान के भविष्य के लिए प्रार्थना करके अग्निकुंड की सात बार प्रदीक्षणा करने के बाद वापस लौटती हैं। वापस लौटने के पश्चात उस चूरमा को प्रसाद के रूप में सभी में बांट दिया जाता है।[1]

1-13 विवाह संस्कार

बंजारा समाज में विवाह से पूर्व "सगाई" का अनुष्ठान बडे धूम-धाम से मनाया जाता है।

-13-1 सगाई

सगाई दो प्रकार की होती है।

1. केल्डार सगाई 2. वॉसळीर सगाई

-13-2 केल्डार सगाई

सगाई के समय टांडे के सभी लोग स्त्री, पुरुष, नायक, नायकरण, सगे-सम्बन्धियों, इकीत्रत होते हैं। संगाई के अवसर पर लेने-देने की बात निश्चित होती है। बंजारों में दहेज प्रथा नहीं है। लडके वाले लडकी वालों को "चार" उच्च जाति के "केल्डा" (बछडा) कन्या शुल्क के रूप में देना पडता है। इस सगाई को "केल्डार सगाई" कहते हैं।

---

1. लाकावत बिच्या नाईक गॉव - मादापूर मंडल - देवरूप्पुला
जिला : वरंगल

13-3 वाँसळीर सगाई

किसी वर के पिता के पास केल्डा (बछड़े) उपलब्ध न हो तो चार बछड़ों का मूल्य कन्या शुल्क के रूप में दिया जाता है । इस प्रकार की सगाई को वाँसळीर सगाई कहते है ।

सगाई अनुष्ठान घर में न होकर बागों या अमराइयों में सम्पन्न होता है । सगाई के अतिरिक्त लेन-देन, खाना-पीना और आने-जाने का खर्चा, कपडा आदि का भी विचार किया जाता है ।

3-4 गोळ खापों (सगाई सम्पन्न करना)

विवाह के कम से कम एक वर्ष पूर्व गोळ (गुड) खाने का संस्कार संपन्न किया जाता है । सबसे पहले "बामण्यार गोळ" खायेर कार्यक्रम होता हैं । पांच किलो गुड, पांच नारियाल, एक रुपया (इसे साकेर रुपया कहते है), सेंदो, दारू आदि खर्चा समान रुपसे और वर के पिता को एक रुपया अतिरिक्त भार होता है । क्योंकि यही एक रुपया (साकेर रुपया) को "नावी बंजारा" ने सभी के समक्ष एक रुपया को दिखाते हुए बंजारा बोली में साक लो, साक लो, साक लो ... कहते हुए कन्या पक्ष के नायक को भेंट देता है। जब से "कन्या हमार बोडी या ब्याडी" (हमारी बहु) बन जाती है । इस तरह कन्या और वर दोनों के तरफ से सगाई संपन्न मानते हैं।

14 विवाह

वर के घर पर संपन्न होने वाला यह सब से पहला शुभ कार्य है ।

-14-1 गुरूर दाग देणो

वर के घर पर टांडे के सभी बुजुर्ग लोग इकट्ठा होते हैं । वर को स्नान कराकर नये कपडे पहनाकर दीप जलाते हैं । और टांडे का बुजुर्ग या नायक एक सुई लेकर जलती हुई दीप के ऊपर सुई को तात करते हुए यह गाना गाते हैं--

क्याळी आव क्याळी जाव माँईंच पूजण हार,
माँईंच पूजा माँईंच पादी माँईंच पूजण हार
धोळो घोडो हाँसलो पातळ्या सवार
तल्लीयत्रा डायरो मुंगेयत्रा पाद
श्याम सदा सदार सदार ।

इस गाने को सात बार गाने तक सुई को आग में जलाते रहते हैं। सात बार बोलने के बाद जलती हुई सुंई को वर के बाँए हाथ के कंधे के नीचे भुजा पर एक या दो, या वर को एक और वर के भाई ﴾वर से छोटा﴿ को एक गोत्रानुसार दाग दिया जाता है । यह विवाह का पहला शुभ कार्य है।

.4-2 साडी तापेरो कार्य ﴾वर के घर में टांडे के सभी लोगों को भोजन﴿

साडी ताणेरो, पात मांडणो, वदाई ﴾वदाई गोत्र के अनुसार होता है, सभी गोत्रों में वदाई नहीं होती ।﴿ वेतडू करनो ﴾वर का पहनावा﴿ । आदि ।

1-14-3 वेतड़ु (वर) का पहनाव।

वेतड़ु (वर) का पहनावा इस प्रकार है -- बारह तनी झगा, चूडीदार पाजामा, सिर पर बाँधने सात हाथ लम्बी पगडी (रूमाल), कमर में करधनी (कमर पट्टी), करधनी पर लटकण, फूंदा, कांके में ढाल, भुजा पर बरची, बरची पर क्वाडी, कानों में मर्की, दोनों हाथों में कोल्डा (चांदी का कडा), गले में कंठी (चांदी की माला) कमर पर चांदी के कणदोरो, कणदोरो पर झूंडो, कमर के बगल में तलवार, हाथ के ऊंगलियों में छल्ला, सरापेर कोत्ली (हुक्का तंम्बाकू के लिए), कोत्ली (वर का कपडा आदि सामान रखने के लिए), मोक्या, तपाळेन रुपया (एक रुपये का सिक्का को लाल रिब्बन से बांधकर वर के माते पर बांधते हैं), पैर में रवाल्डा, पांव में तोडा आदि। यह सभी बाहर न दिखने के लिए ऊपर से लाल खोळ (ओढने का रूमाल) ओढ लेते हैं। वेतड़ु तयार होने के बाद वर से मिलाकर कुल पांच लोग शादी के लिए कन्या के घर रवाना हो जाते हैं। टांडे की सभी स्त्रीयाँ आकर वेतड़ुन बार काडणो (वर को घरसेबाहर लाना) कार्य, हेलेर रुपया कार्य, सभी स्त्रीयाँ गाना गाती हुई टांडे के बाहर यह सभी कार्य होने के बाद वेतड़ु को रवाना कर देती हैं।

14-4 विवाह के विविध अनुष्ठान

वर कन्या के घर पहुँचने के पहले टांडे के बाहर बैठकर टांडे के सभी नायकों को हुक्का देता है और सभी टांडे वालों से पहचान कार्यक्रम सम्पन्न होता है। टांडे की लडकियाँ, महिलाएँ छोटे-मोटे सभी लोग आनन्द के साथ वेतड़ु को कन्या के घर गाना गाती हुई पहुँचाती हैं।

कन्या के घर होने वाले विविध अनुष्ठान इस प्रकार है --

1· कोतलो घरेमा लेणो, या वेतडून घरेमा लेणो,

2· सोटा काडणो, टेळो, वाया भांदणो, छ्वारीर ﴾वधू﴿ हंगोळी, वेतडूर हंगोळी, ढोसक्या फोडणो, चोटीरपाणी पीयेर कार्य, सातु सात सोटा मारेर कार्य, कानेन कांकराती दबायेर, छोरीर मातो छोडेर कार्य, डोरण भांदणो ﴾बंधना﴿, वेतडूर डोरण भांदणो, डोरण छोडेर कार्य, मांडा रम्मेर कार्य, क्वाळा खायेर कार्य आदि ।

3· गोट

4· चूडो तीपेर कार्य, ﴾चूडो तीपने के बाद छोरी नवलेरी﴾नव विवाहिता﴿ बन जाती है ।﴿

5· छोरीन बार काडेर कार्य, छोरीन ﴾नवलेरी -- वधू ﴿ बळदेपर या घोडे पर बसारनो कार्य ।

6· तांगडी खाना ﴾विदाई﴿[1] इनका सामान्य विवरण गीत की वस्तु विश्लेषण के साथ किया गया है ।

1-15 अंत्योष्टि संस्कार

बंजारा टांडे में किसी की मृत्यु होती है, तो टांडे के सभी लोग एकीत्र होते हैं । उस दिन कोई भी आदमी या औरत काम पर नहीं जाते है और टांडे के सभी लोग अन्न-पानी को नहीं छूते हैं । इस जाति में

1· वांकडोत लक्पति नाईक गाँव - लक्ष्मक्का पल्ली, मंडल - कोडकण्ड्ला जिला - वरंगल।

वृद्ध स्त्री-पुरूष और विवाहित युवा स्त्री-पुरूष के शव को दाह संस्कार करते हैं । बालक-बालिका और अविवाहित स्त्री-पुरूष के शव को श्मशान में गाडने की प्रथा है । शव यात्रा में बंजारा स्त्री भाग नहीं लेती, केवल पुरूष ही इस संस्कार में भाग लेते हैं । स्त्रीयाँ टाँडे के किनारे तक आकर शव को विदा कर के लौट जाती है ।

मृत्यु के तीसरे दिन "दाडो" ‡कर्म‡ क्रिया संपन्न किया जाता है ।

1·16 निष्कर्ष:-

उपर्युक्त विहंगावलोकन से यह स्पष्ट होता है कि बंजारे एक घुमंतू जाति के रूप मेंग प्रसिद्ध है । उनका विस्तार भारत के प्राय: सभी प्रान्तों में है । ये राजस्थानी मूल के माने जाते हैं । उनका जीवन सरल एवं आजीविका की ओर अन्वेषी है । वे अपने वंश,संस्कार,आदि को याद रखते हैं, तथा सामूहिक जीवन बिताते हैं । प्राय: सभी मिलकर सांस्कृतिक अनुष्ठान -- करते हैं । और संस्कार,त्यौहार, आदि मनाते हैं । इन सभी संदर्भों में गीत गाना उनके जीवन की विशेषता है ।

1· एक बंजारा बुजुर्ग - विकाराबाद

द्वितीय अध्याय

बंजारा साहित्य के प्रकार

द्वितीय अध्याय

बंजारा साहित्य के प्रकार

2·0· प्रस्तावना

बंजारा साहित्य में कहानी, कथा, गाथा, नाटक, गीत आदि पाये जाते हैं। उनमें से कहानी, नाटक एवं गीत, अधिक प्रचलित हैं। कहानियों में कई प्रकार की कहानियाँ बंजारा समाज में मौखिक परंपरा में पायी जाती हैं। उदाहरण के लिए परियों की कहानियाँ, देवी-देवताओं की कहानियाँ, भूत-प्रेतों की कहानियाँ, जानवरों की कहानियाँ, उपदेशात्मक कहानियाँ, धार्मिक कहानियाँ, राजा-महाराजाओं की कहानियाँ, बंजारा वंशावली की कहानियाँ ढाडी-भाटों की कहानियाँ आदि है।

उसी प्रकार से नाटकों में धार्मिक नाटक, उपदेशात्मक नाटक, वीर रस प्रधान नाटक, करुण रस प्रधान नाटक, गीती नाटक, नृत्य नाटक आदि होते हैं। गीतों में विवाह संबन्धित गीत, संस्कार संबन्धित गीत, पर्वों से संबन्धित गीत,

आदि होते हैं । उक्त विवेचन के आधार पर बंजारा साहित्य जो प्रधानता मौखिक परंपरा में प्रसारित साहित्य है, का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है ।

बंजारा साहित्य ------------ { नाटक / कहानी / गीत }

2·1· नाटक

बंजारा साहित्य में मनोरंजन को प्रथम स्थान दिया गया है । बंजारा साहित्य लिखित रुप से न होकर कथित रुप से ही विद्यमान है । इसमें नाटकों का स्थान प्रमुख हैं। बंजारे सभी पर्वों के अवसर पर लोक नाट्य {नाटक} का मंचन करते हैं । इसमें धार्मिक नाटक, देवी-देवताओं से संबंन्धित नाटक, वीर पुरुषों के नाटक, वीर नारियों के नाटक, होळी के नाटक, मेरामा याडी {भवानो} की नाटक, अन्य नाटक होते हैं । बंजारों कीनाटक पध्दति आधुनिक न होकर पारंपरिक हैं जिसमें कथावाचन, गीत, संगीत, नृत्य और वातावरण होता है । टांडे के सभी लोग इकत्रित होकर नाटक में लगभग सभी लोग भाग लेते हैं । अर्थात इनके नाटक को देखनेवाले दर्शक भी वही लोग होते हैं । संभवत: इस प्रकार का मंचन जनपदीय वर्गों में पाया जाता है । विविध प्रकार के नाटकों को सुनी-सुनाई गाथाओं के आधार पर तीज त्योहार के अवसर पर सामूहिक रुप से खेला जाता है । इनमें पौराणिक नाटक प्रमुख होते हैं। बंजारों के अतिरिक्त नाटकों को प्रस्तुत करनेवाले ढाडी और भाट जाति के लोग भी होते हैं । सभी नाटक पौराणिक गाथाओं के आधार पर होते हैं। इनमें मुख्यत: भागवत एवं रामायण की गाथाएँ होती हैं । उदाहरण के लिए श्रीकृष्ण भगवान की एक नाटक इस प्रकार हैं --

मोरया पांखो घालोरे मातेमाओ, वाँसळी झलोरे सतेमाराम
सामळो सामको रे भीया वाते न
वारे वारे वाह
ज्ञान करो रे भीया वाते न
वारे वारे वाह
ज्ञान करो रे भीया वाते न
वारे वारे वाह
कंस मामा र लाडेरी भ्यानडो
वारे वारे वाह
वारे नाम देवकी बाई र
वारे वारे वाह
सगाई कीदो वासु देवे ती
वारे वारे वाह
हाँस कूद न वाया करायो
बोल भाई बोल
बडे गमतेती नाच कूदाडो
बोल भाई बोल
ओ....... बडे हूँसेती करायो वायारो, वाँसळी झलोरे हातेमा राम
मोरया पांखो घालोरे मातेमाओ, वाँसळी झलोरे हात्तेमा राम.
ओ ... देवकी बाईरी तांगडी रवाना
वारे वारे वाह
लाखों दनियामा तांगडी जारी र
वारे वारे वाह
भ्यान-भनोई न रवाना करेलागो

वारे वारे वाह
वोत्त कॉई वो क्लो भीया सामळोरे, वॉसळी झलरे हातेमा राम
मोरया पांखो घालोरे हातेमाओ, वॉसळी झलोरे हातेमा राम
सामळो-सामळो रे भीया वाते न
वारे वारे वाह
तांगडी लार जारोरे कंसूड़
बोल भाई बोल
वोती राम (आकाश) वाते करे लागो
बोल भाई बोल
हे - कंसु, तूंतो तांगडी रवाना कर रोची
वारे वारे वाह
भ्यान-भनोई न रवाना कर रोची
कसे न वेला कर रोची
वारे वारे वाह
तारे वेलामा पाणी पडियरे
देवकी रो बेटा हूव च
वारे वारे वाह
अस्सो बेटा हूव च वोरो रे
बोल भाई बोल
तूतो जगतेमा मोटो वोप र
बोल भाई बोल
तार म्यात वोरी ज हातेमाओ, वॉसळी झलरे हातेमा राम
मोरया पांखो धालोरे मातेमाओ, वॉसळी झलरे हातेमा राम
ओ ... सामळो सामळो रे भीया वाते न
वारे वारे वाह
धन्ने कुंधू कंसू रे मामा न
वारे वारे वाह

कंसु मामा अंगार वेगोर
वारे वारे वाह
काँई करूँ कन केरो रे मने न
वारे वारे वाह
हेट जम्मी ऊपर राम रे
वारे वारे वाह
काँई दोसायेनी कंसू न
वारे वारे वाह
ये जम्मी पर मन कूण मारेवाळो
वारे वारे वाह
अब कोनी कन्नाई हूयेनी
वारे वारे वाह
जगतेरो मोटो म-ज-र
वारे वारे वाह
माती मोटो कूणी छेनी र
मन मारे र केनी वंगदेनी रो, वाँसळी झलोरे हातेमा राम
मारेया पांखो घालोर मातेमाओ, वाँसळी झलोरे हातेमा राम
सामळो सामळो रे भीया वाते न
वारे वारे वाह
कंसु मामा न देखो भीया र
बोल भाई बोल
देवकी बाई न देक न भीया न
बोल भाई बोल
दासु देवे न देक न कंसु न
वारे वारे वाह

अंगार वेजारो जीवडान

वारे वारे वाह

छेटी वेगो रे भीया भ्या नेती

वारे वारे वाह

अब त्यारी वेगेरे भीयारो, वाँसळी झलोरे हातेमा राम

मोरया पांखो घालो रे मातेमाओ, वाँसळी झूलोरे हातेमा राम

धन्ने कूंचू वंसु रे मामा न

वारे वारे वाह

ध्यारो वेगो रे वंसु मामा र

वारे वारे वाह

बात माने न छेनी मामा र

वारे वारे वाह

देवकी री बेटी-बेटा न

वारे वारे वाह

एक-एकीन मारनाकूं केरो र

वारे वारे वाह

भूलगो र भ्याने न भीयारो, वाँसळी झलोर हातेमा राम

मोरया पांखो घालोरे मातेमाओ, वाँसळो झलोरे हातेमा राम

ओ ··· कान करो भीया र वाते न

बोल भाई बोल

नाक साप वेगो रे कंसु र

बोल भाई बोल

वेरी वात माने न छेनी र

वारे वारे वाह

देवकी बाई री मोटी बेटी न

वारे वारे वाह

नल्डी काट नाको रे भीया र
वारे वारे वाह
काँई हड्को वेगोरे मामा र
वारे वारे वाह
एक-एकीने मारो मामा र
वारे वारे वाह
वेनी छोडेन छेनी मामा र
वारे वारे वाह
वेनी छोडेन छेनी मामा र
वारे वारे वाह
भ्यान-भनोई न कोटे मा घालोर
वारे वारे वाह
कूं हूव जूं मारे लागो र
वारे वारे वाह
मत मार भीया र थोक दूंपू रे, वाँसळी झलोरे हातेमा राम
मोरया पांखो घालो रे मातेमाओ, वासळी झलोरे हातेमा राम
सामळो सामळो भीया र वाते न
वारे वारे वाह
ज्ञान करो रे भीया वाते न
वारे वारे वाह
बाई न्वारा कर रीघ भीयारी
वारे वारे वाह
पगू पडरीच भ्यान-भीयारी
वारे वारे वाह
रोये लाग गोर-गोण्णी र

वारे वारे वाह
तरे करे लागरे जीवडान
वारे वारे वाह
दल भीजे न हेनी रे भीया रे, वाँसळी झलोरे हातेमा राम
मोरया पांखो घालोरे मातेमाओ, वाँसळी झलोरे हातेमा राम
ओ ··· सामळो सामळो रे भीया वाते न
वारे वारे वाह
बडो पाप्पी वेगो रे भीया र
वारे वारे वाह
ऑगे-पाचे देक न हेनी रे
वारे वारे वाह
एक-एकीने मारे लागो र
वारे वारे वाह
से बेटी वूँन मारे नाको र
वारे वारे वाह
अब काँई करा बापू जीवडान
वारे वारे वाह
वासु देवेरो वेला देको र
वारे वारे वाह
देवकी बाई री तरे देको र
वारे वारे वाह
काँई करू तो करू बापू र
वारे वारे वाह
वूँ छूट जाव हमारी जीवडान
वारे वारे वाह

कूं टळ जाव हमारो वेला र
वारे वारे वाह
से देवे न धोके लाग र
वारे वारे वाह
मनमी वर लागे र भगवाने न
वारे वारे वाह
तोई छोडेन छेमी रे भीयाओ, वांसळी झलोरे हातेमा राम
मोरया पांखो घालो रे मातेमाओ, वांसळी झलोरे हातेमां राम
सामळो सामळो भीया र वाते न
वारे वारे वाह
ज्ञान करो र भीया वाते न
वारे वारे वाह
परक्न देखो रे वाते न
वारे वारे वाह

x x x x x

x x x x x

किश्ना भगवान जन्म लीदो र
वारे वारे वाह (बहुत जोर से बोलते है)
बाळा कांई आच्यो हूयो र
बोल भाई बोल
अब देकोरे किश्ना बाळा न
बोल भाई बोल
कांई देवतो से माया वेजारो
वारे वारे वाह

वासु देव बाळा न लेतापी
वारे वारे वाह
बार आन पडो रे बापू र
वारे वारे वाह
अब कूं वसू वेलागो देवे न
वारे वारे वाह
भगवान साई वेलागो
वारे वारे वाह
बाळा मोटो वेगो रे बापू रे
वारे वारे वाह
कंसु मामारी हरे देको र
वारे वारे वाह
धूजे लागो कंसू मामा र
वारे वारे वाह
ऊपरे राम टूटे लागो ओरी र
वारे वारे वाह
किशना बाळा मारे न तयार वेगोर
वारे वारे वाह
कंसु मामा न मारे नाको रे, वाँसळी झलोरे हातेमा राम
मोरया पांखो घालोरे मातेमाओ, वाँसळी झलोरे हातेमा राम
जगत सारी सोळो वेगोरे, वाँसळी झलोरे हातेमा राम
मोरया पांखो घालोरे मातेमाओ, वाँसळी झलोरे हातेमा राम ।

नाटक का हिन्दी में सार

उपरोक्त नाटक में भाट बंजारा इस नाटक को प्रस्तुत करते समय सर्व प्रथम भगवान श्रीकृष्ण की स्तुति करता है। उसके पश्चात नगारा बजाते हैं। दूसरा भाट टांडे वालों के बीच में खडे हो जाता है, और नाचने लगता है। पहला भाट सबद कहता है, दूसरा भाट रबाज (रबाब) बजाता है, और तीसरा भाट नृत्य में अपने हाव-भाव दिखा कर दर्शकों को मंत्र मुग्ध करता है। उपरोक्त नाटक में सर्व प्रथम देवकी और वासुदेव का वर्णन होता है। उनके गुण-गान गाये जाते हैं। उसके पश्चात देवकी और वासुदेव के विवाह सम्बन्धी अनुष्ठान का वर्णन है। इस वर्णन में भाट जोर-जोर से किंजरी (एक तारा) बजाता है, तो दूसरा भाट देवकी का अभिनय करता है, मुस्कुराता है, शर्माता है, तब तीसरा भाट उठकर वासुदेव का अभिनय करने लगता है। देवकी-वासुदेव का विवाह संपन्न होने पर टांडे के सभी लोग जय-जय कहते हैं। हाथ जोडकर खडे हो जाते हैं। इस प्रकार से नाटक आगे बढता है, और कंस की सभा दिखाई जाती है, आकाशवाणी का वर्णन भी होता है।

आकाशवाणी कहती है, वासुदेव और देवकी के कोक से जन्म लेने वाला पुत्र तुम्हारा वध करेगा। यह समाचार पाकर कंस वासुदेव और देवकी को कारागार में बंद कर देता है। इस दृश्य को भाट भली भाँती से अभिनय करके दिखाते हैं। उसके पश्चात कृष्ण का जन्म, कंस का वध यह सभी दृश्य बंजारों के मन को मोह लेते हैं। इस नाटक को प्रस्तुत करने वाले ढाडी-भाट गाते हैं, बजाते हैं, इसके अतिरिक्त वे सभी पात्रों का अभिनय भी करते हैं। इस प्रकार के पौराणिक नाटक बंजारा जाति के लग-भग सभी टांडों में संध्या समय में और ग्रीष्म ऋतु में दिन के समय में भी प्रस्तुत करते हैं। कलाकार अनपढ और गवाँर होते हुए भी नाटकों का प्रदर्शन उत्तम रूप से करते हैं।

जिन्हें देखकर टाँडे के लोग खुश होते हैं और उन्हें दान भी देते हैं। दान में धन, धान्य और कपड़े भी देते हैं।

यह गीत नाटक है। इस नाटक का प्रत्येक अंश लय बद्द है। बंजारा ढाडी और भाट एक-एक पद को लोक रंगमंच की विधाओं के अनुसार राग निकालता है। ढाडी, किंगरी, रबाब (रबाब), ताल, आदि संगीत के साधनों की सहायता से गाता है। गायन के आधार पर दूसरा ढाडी-भाट, तीसरा ढाडी-भाट और गाने वाला ढाडी-भाट अभिनय करते हैं। इनका विनय दर्शकों को अर्थात बंजारों को मंत्रमुग्ध कर देता है। यह नाटक परंपरा अति प्राचीन होने के कारण आज भी इस नाटक के बोल परंपरा के अनुसार है। गाने का धुन, गति, राग, ताल, शैली, बीच-बीच में पदों का उच्चारण शास्त्रीय ना होकर भी शास्त्रीय लगते हैं। मानों ऐसा प्रतीत होता है, कि बंजारा ढाडी-भाट किसी प्रशिक्षण संस्था से शिक्षित नहीं हैं, किसी नाटक कंपनी से जुडा नहीं है, या उसे नाट्य संबन्धि ज्ञान किसी शास्त्र से नहीं मिला है, फिर भी बंजारा ढाडी-भाट अपनी नाटक कला का प्रदर्शन शास्त्रीय ढंग से करता है। इनके प्रदर्शन से बंजारा जाति की सांस्कृति झलकती है। इस प्रकार के कई नाटकों को ढाडी-भाट जाति के लोग टाँडों में घूम कर मंचित करते हैं।

---

1. इस नाटक को शोधार्थी ने निम्न लिखित बंजारों के मुँह से सुनकर लिपिबद्द किया है। उनका परिचय इस प्रकार है।
   लाकावत हीरलाल, लाकावत जुमलाल, लाकावत बालू
   गाँव -- नरसमपेट जिला - वरंगल

2·2· कहानी

बंजारा साहित्य में मौखिक परंपरा में आवर्षक रूप में प्रस्तुत की जाने वाली कहानियों का प्रमुख स्थान हैं। कहानियाँ कई प्रकार की होती हैं। जैसे - वीरों की कहानियाँ, परंपरागत कहानियाँ, श्रम से संबंन्धित कहानियाँ, धार्मिक कहानियाँ, पौराणिक कहानियाँ, काल्पनिक कहानियाँ, राजा भोज की कहानी, लदणी के कहानी, सेविया साद की कहानी, हाथी राम बावाजी की कहानी, देवी-देवताओं की कहानी, भूत-प्रेतों की कहानी बीरबल राजा की कहानी आदि।

उपरोक्त कहानियों को बंजारे समय के अनुसार एक-दूसरे को सुनाते हैं। घुमंतु बंजारे एक स्थान से दूसरे स्थान तक यात्रा करते समय रास्ते में थकान से मुक्त होने के लिए कहानियाँ सुनाते हैं। पशुओं को चराते समय किसी झील के किनारे बैठकर सुनी-सुनाई कहानियाँ दूसरे को सुनाने की प्रथा है। कहा जाता है, कि उत्तर भारत से दक्षिण भारत की ओर बंजारा व्यापार के लिए आया करते थे। उस यात्रा में भी बंजारे वीर पुरुषों की कहानियाँ सुनाया करते थे। बंजारा टांडों में रात्री के समय बूढी औरतें भी अपने नाती-पोत्रों के साथ बैठकर बच्चों को कहानियाँ सुनाती हैं। इसके अतिरिक्त ढाडी-भाट जाति के बंजारे टांडों में घूम-शाम कर कहानियाँ सुनाकर अपनी जीविका चलाते हैं। किसी दु:खद घटना के समय भी आगे वाले बंजारे को हिम्मत देने के लिए भी उदाहरण के लिए कहानियाँ सुनाकर उसके दु:ख को दूर करते हैं। विविध प्रकार के कार्यक्रमों में भी बंजारे तरह-तरह की कहानियाँ (साक्तर) सुनाकर पंचों को खुश करते हैं। बंजारा गुरुओं की कहानियाँ इस समाज में बहुत प्रसिद्ध हैं।

बंजारा कथा साहित्य में कई प्रकार की कहानियाँ प्रसिध्द हैं । उनमें से सेविया साद और रायमल कांजी नामक कहानियाँ बंजारा समाज में बहुत ही प्रसिध्द हैं । आन्ध्र प्रदेश के नागार्जुन सागर के पास एक तालाब है । उस तालाब का नाम धरमा वरम तालाब है । सेविया नामक पमार जाति के बंजारा लडका उस तालाब में गाय चराने के लिए आया था । उसकी कहानी इस प्रकार है --

सेविया साद जी की कहानी

आमगोत सेविया पमार जको दाडी गावडी चरायेन जातोतो । एक दाड काँई कीदों कतो शारेती नागार्जुन सागर जायेर वाटे पर इब्रहीम पटनम वजे गामेकन धरमाया तळाओ छ क्चे । वो तळयेमा सेविया जको गावडी चरारो । जन्ना वो तळायेमा एक बूंद पाणी छेनी कच । गावडी जको रामे लागी । कसन कतो गायडीन पीयेन पाणी छेनी । तरसेती भमळाये लागी । अब काँई कर ? वो तळायेर वच्चे बायस तापो बालाजी देवेन हडदेमा लेन डळ-डळ रोये लागो । मारी गावडी से मरजा ! पीयेन पाणी छेनी भगवान बालाजी बपू काँई करूँ ? काँई करस तोई तूंज । से तारीज हातेमा । मार हातेमा काँई छ ? मारस तोई तूंज, बंचाडसतोई तूंज । कन केतापी हाई खागो ।

जन्ना बालाजी देव जको एक बूडो आदमी वेतापी सेविया तू कसन रोरोची ! रोमत । म छूं काँई, तूं काँई हाई मत कर । एसे आचोच वच । इदे येन (सबल जैसा औजार) लेजो, लेजान तळायेर वच्च जोरेती ऊंडो गाडन हाटो काड । तो वोते खाड पडच, तो खाडे माती पाणी संवळन तळाओ भराजा च, तारी गावडीन काँई वेनी । इन्नू केन बालाजी जको माया वेन जारोतो । जन्नाच सेविया साद काँई को कतो भगवान, तूं जारोची पछन में तार लार आऊं छू । तार लार लेजो । करन टांगेमा पडन धोक दीनो कच ।

तो बालाजी बापू कॉई को क्हो, सेविया तूं मार लार आमत, तोन ये जम्मी पर ग्वारूर सेवा करेर रास दाड छ । अबच मार लार आमत, तोन आयेन मार लार वाट छेनी । ग्वारूर सेवा कर कन केन वोतज माया वेओ कच । ढूंदाडती सेविया न सेविया साद, बालाजी अवतार कन केरेच । ग्वारूर देव वेताणी रंगामा गुंडु गामेमा, नलगुंडा जिलामा देवेर गुडी भेंटी च, लाख दनिया देवेर दर्शन कर लेरे च ग्वारून साई वेशे च । आजे तापू ग्वारून से वातेर साई सेरो च ।

कहानी का हिन्दी रूपान्तरण

एक दिन सेविया पमार धरमाया (धरमावरम) तलाब में गाय चरा रहा था । धरमाया नामक तालाब का पानी सूक गया था । पानी न मिलने के कारण गायों को बहुत प्यास लगी । चकरा कर गिरने लगी । इस हृदय विदार दृश्य को देखकर सेविया साद बालाजी भगवान का नाम लेकर रोने लगा । सेविया साद की आवाज सुनकर बालाजी भगवान प्रकट हुए और बालाजी भगवान एक बूढे आदमी के रूप में आये थे । उन्होंने सेविया से पूछा, सेविया तुझे क्या चाहिए ? तब सेविया ने कहा, मुझे कुछ नहीं चाहिए परन्तु इस तालाब में पानी न होने के कारण गाय प्यास से मर रही है, उन्हें बचालीजिए, और तालाब में भरपूर पानी रहे जैसा वरदान दीजिए । बालाजी भगवान प्रसन्न होगए और उन्होंने सेविया को एक लकडी दी । सेविया से कहिए कि इस लकडी को तालाब के बीच में रोप दीजिए, वहाँ से जल की धारा निकलेगी और तालाब भर जाएगा । भगवान ने यह भी कहा कि, तुम जीवन भर बंजारों की सेवा करो, यही तुम्हारे लिए सौभाग्य की बात होगी । इस प्रकार आज्ञा देकर बालाजी अदृश्य होगये । उसके पश्चात सेविया साद ने जीवन भर समाज की सेवा की, अत: उसकी मृत्यु के बाद बंजारे सेविया को सेविया साद, कहने लगे । आज भी नलगोण्डा

जिले में रंगामागुंडू नामक गाँव में सेविया साद का मंदिर है । इस मंदिर के दर्शन के लिए लाखों बंजारे आते हैं । इस प्रकार की कहानियाँ बंजारा साहित्य में कई मिलती हैं ।[1]

2·2·1· रायमल कांजी की कहानी

रायमल कांजी जको ग्यार भाई, वाया न आयो कय । ग्यारूर वाया करनो क्तो दी-दी, तीन-तीन, मीना ला ग । रायमल कांजी जको साडी तापन, वेतडू वेन, छ्यारीन पणेन आयो । अब रायमल कांजीर वायार नोक्ता एकीर लार एक वेरे । नोकतार लार नोक्ता आठु-आठु वायार नोक्ता आयो । ग्यारूर वाया मा तो वेतडून, नवलेरी न, गडत आज रात वायार हंगोळी समी सांज कोरे मालला मा 8 मेल जको सीळो-खक पाणीती हंगोळी करावच । जन्ना कांई कीदो कत्तो, वेतडून जको हंगोळी करेन काकोटी पर लाये । काकोटी पर बेसन हंगोळी करतो करतो, क्तो सेवेन साळी-साळो, टांडेरी नानी-मोटी सेवेन भळन वेतडून हंगोळी करावच कांई तो । जन्ना वेतडून कांई कीदो कोन कांईको ? वेतडू जको तांटरन को, कांई जीवेरो कांई रको, भूत लागो को कांईकीदो को वेतडू जको काकोटी पर हंगोळो करतो करतो मरगो । अब कूंच ? कांई वीय जूं वीय ? कन केताणी वेतडून जको गदभांत वर नाके ।

पांच दाडेर पच दाडो कीदे । जन्ना टांडेर नायक, पै-पामच से बयासन विचार कीदे, कांई कन क्तो, बकरा काटन खाले-पीलेन विचार कीदे । येर खरच से वेतडूर बाप घाल लीदो । वेतडू मरगो, अब छोरीन कूण लेजा, छोरी आद नवलेरो वेगी । वाया आदो वोन आदो वो कोनी । जन्ना वेतडूर बाप कांई को क्तो, बोडी मार, मारो मोटो बेटा मरगोच तो कांई

---

[1] यह कहानी भूक्या अमरसिंह नायक के द्वारा अनुसंधाता को प्राप्त हुई । भूक्या अमरसिंह नायक गाँव - मोंड्राई मंडल - कोडकण्डला, जिला - वरंगल

मार बोडी रॉंड केरावकूं ? मार बोडी रांड कोनी, मार बोडीन मार नानक्या बेटा सेवमल कांजीती वाया करा ले जाऊं कन समनवीती नायक सेन समळायो । वोवडी जको नवलेरी छोरी दोई हातेती मूंडो बूरन डळ-डळ रोयेलाग । वसन क्तो म न वाया करू कन हलकन आयो जको वेतडू मरगो करन ! अब म 8मै8 कांई करू ? हन्नू कन रोये लाग । वो वाडे पर नवलेरी छोरी दोई हातेती मूंडो बूरन कूं रोई छू, आजे तापू नवलेरी छोरी हनूज दोई हाथेती मूंडो बूरन रोय च । जन्ना कांई कीदो क्तो रायमल कांजीर गोप्पीन वोरो भाई सेवमल कांजी वाया कर लीदो । वूंदाडेती भीयार गोप्पीन क्तो भोजाई न देवर वाया कर ले सारू । हनू विचार करन वाया करा लाये । अजी कांई विचार कीदे क्तो देवर-भोजाई दोई वेन वाया करलाचा कन सई कन हूंकारा भरतोज वाया करनो, नतो वाया करेर छेनी कन विचार कीदे क्च ।

बंजारा समाज में बडे भाई की मृत्यु के उपरान्त देवर भाभी के साथ ब्याह रचाने की प्रथा आज भी है । कहा जाता है कि बंजारा बुजुर्गों के अनुसार आज से पाँच सौ वर्ष पूर्व 8 लदणी के समय 8 रायमल कांजी नामक लडके की सगाई एक टांडे में हुई । सगाई के उपरान्त रायमल कांजी के माता-पिता, भाई एवं उनके बिरादरी के लोग बारात लेकर ब्याह रचाने उस टांडे में आये । बंजारों की विवाह प्रथा राजपूतों जैसी होती है । विवाह संपन्न होने के लिए कम से कम दो-तीन मास लगते हैं । प्रत्येक दिन एक एक नुकता अर्थात रस्म किया जाता है । वर को वधू के घरवाले सम्मान सहित घर ले आते हैं । विवाह के रस्मों पर ध्यान देते हुए प्रतिदिन रीति-रिवाज के अनुसार विवाह की पद्धतियों को संपन्न करते हैं । सर्व प्रथम वर को शुद्ध जल से नहलाया जाता है । उसके लिए कुछ नियम हैं । वधु के घरवाले कुम्हार के पास से नई हांडी 8 मिट्टी का घडा 8 लाते हैं । उसमें संध्या के समय नदी से शुद्ध जल लाकर भरते हैं । इस जल से मध्य रात्री के वेळा 8समय8

वर और वधू को काकोटी §लकडी के बर्तन§ पर बिठाकर शीतल जल से नहलाते हैं । इसी प्रथा के अनुसार रायमल कांजी को काकोटी पर बिठाया गया, उसके उपरान्त टांडे के बुजुर्ग और परिवार के सदस्य मिलकर वेतडू §वर§ को नहलाये । सर्दी का मौसम होने के कारण और घट का जल अतिशीतल होने के कारण वेतडू §वर§ के माथे पर जल डालते ही रायमल कांजी का शरीर धीरे-धीरे ठंडा पडने लगा, और संपूर्ण स्नान के पश्चात उसकी नाडी बंद होगई अर्थात वेतडू §वर§ की मृत्यु हो गई । रायमल कांजी की मृत्यु कैसे हुई ? आज तक किसी भी बंजारा बुजुर्ग को यह जानकारी नहीं है । कुछ ही क्षणों में इस बात की चर्चा होने लगी और दोनों पक्ष के लोग रोने लगे, टांडे के नायक लोहे की दरान्ती § काटने का साधन§ लेकर शव के चारों ओर रेखा खींचता है । कहा जाता है, कि किसी लोहे की चीज से शव के चारों ओर रेखा बनाने से भूत-प्रेत नहीं आते । उसके पश्चात दूसरे दिन रायमल कांजी का दहन संस्कार हुआ । पाँच दिन के उपरान्त बंजारा प्रथा के अनुसार कांद्या खाने का अनुष्ठान संपन्न हुआ । इस कार्य का खर्चा वर के पिता ने उठाया । उसके पश्चात टांडे के बाहर बड के पेड के नीचे टांडे के प्रमुख बैठकर नसाब § पंचायत § किये, उसमें यह बात तय हुई कि वधू विवाह से पूर्व ही विधवा बन गई, उसका क्या होगा ? तब वर के पिता ने सनम्र निवेदन करते हुए नायकों से कहा, कि मेरे बडे बेटे को भगवान ने अपने पास बुलालिया, इस धरती से उसकी रोटी-पानी खत्म हो गई । अब रही बात बहु की । वह विधवा नहीं है, क्योंकि मेरे घर में और एक कुंवारा लडका है, जो मृतक का छोटा भाई है, अत: बहु का विवाह मेरे छोटे बेटे से कराया जाय । तब पंचायत के लोगों ने विचार किया और सर्व सम्मति से उस लडकी का विवाह मृतक के छोटे भाई से कमल कांजी से किया । इस प्रकार से तब से आज तक बडे भाई की मृत्यु के पश्चात छोटा भाई अपनी भाभी के साथ विवाह रचाने की प्रथा जारी है ।

कहा जाता है, कि विधवा लडकी अपने होने वाले पति को खोने के कारण दु:ख से अपने दोनों हाथ से मुँह को ढंक कर ढावलो [रोदन] करती है । भाभी के साथ देवर ब्याह करने की छूट इस समाज में होते हुए भी कभी-कभी नहीं भी होती है । यदि देवर की इच्छा न हो, तो या भाभी की इच्छा न हो तो यह दूसरा विवाह नहीं हो सकता । इस प्रकार यह प्रथा चलती आ रही है[2]।

निष्कर्ष

दो कहानियाँ बंजारा समाज की विचारधारा और सेवाधर्मिता की ओर संकेत करती है । इस प्रकार की अनेक कहानियाँ मौखिक परंपरा में है । यहाँ की पहली कहानी में समाज की सुरक्षा के लिए भगवान से भी स्वार्थ से ऊपर उठकर वर मांगने की मानसिकता और दूसरी कहानी में पारिवारिक समरसता एवं सामाजिक आवश्यकता की ओर बंजारों के ध्यान को व्यक्त करती है। इन उदाहरणों से यह कहा जा सकता है, कि बंजारा समाज में सामाजिक व्यवस्था को सुरक्षित और सुदृढ बनाने की ओर सामूहिक प्रयत्न कहानियों के माध्यम् से भी किये गये हैं । इनका अध्ययन बंजारा जाति और उसकी संस्कृति, व्यवस्था आदि को पहचानने के लिए आवश्यक है । यद्यपि कहानी प्रस्तुत अध्ययन का लक्ष्य नहीं है, फिर भी यहाँ संकेत कर किया गया है।

---

2. यह कहानी झरपला भिकोजी नाईक गाँव - देवलाली, नाशिक महाराष्ट्र से प्राप्त हुई है ।

2·3· गीत

बंजारा साहित्य में गीतों का स्थान प्रमुख है, गीत कई प्रकार के होते हैं। भारत का बंजारा भोजन करते समय और नींद लेते समय गीत नहीं गाता, परन्तु जब कभी उसे समय मिलता है, तो गीत गाते ही रहता है। अर्थात श्रम करते समय खेतों में पशुओं को चराते समय, बंजारा स्त्रीयाँ सुदूर प्रान्त से पानी लाते समय, बैल गाडियों में बैठकर दूर प्रान्तों को जाते समय, तीज त्यौहारों के अवसर पर जन्म के अवसर पर, मृत्यु के अवसर पर, विवाह के अवसर पर, बिदाई के अवसर पर, दु:ख में सु:ख में सभी अवसरों पर गीत गाते हैं। बस्ती-बस्ती पर्वत-पर्वत, बंजारा गीत गाता जाता है, उसके पीछे-पीछे लदणी (एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए प्रस्तान करना वह लदणी कहा जाता है) चलते रहती, लदणी के पीछे भी बंजारे गीत गाते हुए दिखाई देते थे। आज भी बंजारों के टांडों में, खेतों में खलियानों में सभी अनुष्ठानों में और सभी त्यौहारों के अवसर पर गीत सुनाई देते रहते हैं। बंजारा समाज में सभी गायक होते हैं।

2·3·1· बंजारा सगे-संबंधी मिलते ही कुशल क्षेम पूछने की पधार (पद्य के रूप में गीत)।

2· लदणीर गीत (एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए प्रस्तान के समय गीत)

3· टांडो टाकेरो गीत (टांडा बसने के लिए अच्छी जगाह के लिए गीत)

2·3·2· 1· शिशु जन्म के गीत

2· दळ्या धोकायरे गीत (तीसरे दिन जच्चा औरत को घर के बाहर लाकर विशेष प्रकार की प्रार्थना करने का संस्कार गीत)

3· बालक को समझाने का गीत।

2·3·3· 1· सगाई / विवाह संबंधी गीत ।

2· गोळ खायेर पचार (सगाई के समय गुड खिलाकर सगाई संपन्न करने का गीत)

3· गरूर दाग (गुरु जी का नाम स्मरण करके वर को दाग देने का गीत)

4· साडी तापेर गीत (लडके को वर बनाने का संस्कार गीत)

5· टेळेर पचार (विवाह भोजन खाने से पहले बोलने का संस्कार गीत)

6· हेलेर रपया – वेतडू खाना (गुरुजी को एक रुपये का सिक्का अर्पित कर शादी के लिए बारात का निकलना)

7· याडीर सीक (माता की ओर से बेटे को सीख देना)

8· हुक्का देर पचार (लडकी के घर को पहुँचते ही टांडे के नायकों को हुक्का देने का गीत)

9· वेतडून घरेमा लेणो (बारात को लडकी के घर में स्वागत करने का गीत)

10· मस्करी करेर गीत (हँसी-मज़ाक के गीत)

11· घोटा (एक प्रकार की पेयजल टांडे वालों को पिलाना)

12· गरतणी छोडेर गीत (लडकी के कुँवारो सूचक आभूषण निकालना)

13· वाया भाँदेर गीत (मूसल और वर संबंधित गीत)

14· वेतडूर हंगोळी (रात में वर का पवित्र स्नान)

15· नवलेरीर हंगोळी (रात में दुल्हन को नहाना)

16· डोरण भांदेर गीत (गले में गांटे वाला दागा बांधना)

17· फेरा-फरेर गीत (फेरे के गीत)

18· वायार हंगोळीर गीत (दिन (मध्याह्न) में वर और दुल्हन को नहलवाना)

19· डोरण छोडेर गीत (गले में बंधे हुए दागा को छोडने का गीत)

20· मांडा रमेर गीत (मांडे का संस्कार गीत)

21· गोटेर पचार / गीत (गोट, विवाह के एक विशेष अनुष्ठान के अवसर पर बकरे काटने से संबंधित गीत)

22· पान-सुपारी पचार / गीत।

23· चूडो तीपेर गीत (भुज दंड में चूडा पहनाने का गीत)

24· छोरीन बार काडेर गीत (बिदाई के लिए दुल्हन को घर से बाहर लाते समय गीत)

25· डोळ्या रो गीत (बछडे पर बिठाके दुल्हन की बिदाई से संबंधित गीत)

26· बापेर नगरी पर गीत (मायके से संबंधित वधू की गीत)

27· लांगडी खाना (दुल्हन की बिदाई के गीत)

28· ढावलो (दु:खात्मक गीत)

29· घूंघरा छोडेर ढावलो (दुल्हन की घूंघर छोडने से दु:खात्मक गीत)

30· नवलेरी एकली (अकेली) विरह गीत /

2·3·4· त्यौहार संबंधी गीत

1· सीतलार गीत (सीतला (बंजारों की देवी) देवी की गीत)

2· भवानीर गीत (सात भवानियों के गीत)

3· तीजेर गीत (तीज के गीत)

4· दवाळीर गीत (दिवाली के गीत)

5· होळीर गीत (होली के गीत)

2·3·5· देवी-देवताओं से संबंधित गीत

1· दादी-दादाऊँर गीत (दादी-दादाओं के गीत)
2· मेरामा याडीर गीत (मरियामा देवी के गीत)
3· सेवा भायार गीत (सेवा भाया महाराज के गीत)
4· सेविया सादेर गीत (सेविया साधू के गीत)
5· हाथी राम बावाजी के गीत
6· श्री सीता-रामचंद्र जी के गीत
7· हनुमान जी के गीत
8· बालाजी (श्री वेंकटेश्वर भगवान) जी के गीत
9· श्रीकृष्ण भगवान जी के गीत

2·3·6· अन्य गीत

इस संबंध में विवरणात्मक सूचनाएँ अनुसंधाता को श्रीमती धीरावत रंगी बाई पति श्रीराम नायक, गाँव-मर्थाला, मंडल - बोम्मल रामाराम, जिला - नलगोण्डा, से प्राप्त हुए ।

निष्कर्ष

उक्त विवेचन से यह विदित होता है, कि बंजारा समाज में प्रख्यात साहित्य का एक खजाना है । इसकी मुख्य विधाएँ, नाटक, कहानी और गीत हैं । समय और संदर्भ के अनुसार बंजारा संस्कृति, विचार, प्रथाएँ, विश्वास, अनुष्ठान, संस्कार आदि इनके द्वारा प्रकाश में आते हैं । इनकी संरचना एवं रूप-विधान, आदि आकर्षक और समस्त टांडे में व्याप्त हैं । इनका गहन स्तर पर अध्ययन अनेक दिशाओं में किया जा सकता है । परन्तु प्रस्तुत अध्ययन बंजारा गीतों की वस्तु, संरचना एवं शिल्प को केन्द्र में रखकर गीतों का सामान्य विवेचन रहा है ।

तृतीय अध्याय

बंजारा लोकगीतों में कथ्य : एक विश्लेषण

3·0· कथ्य : सामान्य विश्लेषण :-

कथ्य को अनेक विद्वानों ने अलग-अलग तरह से परिभाषित करने का प्रयत्न किया है । वैसे वैचारिक दृष्टि से किसी की भी निश्चित परिभाषा देना कठिन कार्य है । कथ्य की परिभाषा निश्चित करने के पूर्व अन्य समीक्षकों एवं लेखकों द्वारा दी गयी परिभाषाओं पर विचार करना समीचीन होगा ।

हिन्दी शब्द सागर में कथ्य के जो विभिन्न अर्थ दिये गये हैं, उनमें एक - " कहने योग्य या कथनीय ।" [1]

डा· रामेश्वरलाल खंडेलवाल ने वस्तु शब्द का प्रयोग करते हुए वर्ण्य, तथ्य और चेतना को उसके समान धर्मी स्वीकार किया है । [2]

1· संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर-संपादक-रामचंद्र वर्मा - पृ·सं-191

2· जयशंकर प्रसाद वस्तु और कला - रामेश्वरलाल खंडेलवाल पृ·सं- 5,6,7,8·

ह्यूरेक की कृति "उपन्यास लेखन शिल्प" में कथ्य को कथातत्व के रूप में स्वीकार किया है ।[3]

प्रो. जगदीश पाण्डेय के अनुसार कथ्य अनुभूत पदार्थ होता है, कथ्य अन्वेषित । कथ्य में जिज्ञासा की पैठ और तर्क परक व्यंग्य की पैनी धार की तेजी रहती है ।[4]

कथ्य अंग्रेजी के plat, content, subject आदि की परिसीमा में समाहित होता है ।

(A Dictionery of Modern Critical Terms) के अनुसार plat in critisism is a term of highly varied status. It can mean just the para phrasable story of a work - the simple narrative line which we can then flesh out by considering charactor and description tone and texture, pattern and myth; forster's 'LOW' 'atavistic' telling.[5]

अर्थात वस्तु कथित सामग्री है, जिसका संबंध वर्णन बुनावट संरचना, मिथक आदि से संबद्ध होता है । कथ्य से संबंधित सभी अंग मिल करके एक रूप संतरित करते हैं । इस प्रकार कथ्य साहित्यिक रचना का मुख्य आधार बनता है । लोक साहित्य में यह जन सामान्य के साथ जुड़कर और प्रभावशाली बनता है ।

---

3. नयी कविता का आत्म संघर्ष - मुक्तिबोध पृ.सं -- 104

4. पारसनाथ मिश्र - मार्क्सवाद और उपन्यासकार - यशपाल पृ.सं-- 07

5. A Dictionery of Modern Critical Terms, Edited by Roger Fowler - page No.145

3.1. बंजारा साहित्य में कथ्य

बंजारा लोक गीतों में कथ्य का महत्वपूर्ण स्थान है । बंजारों का संबंध जिन घटनाओं, व्यापरों और लदणी से होता है । दूसरे शब्दों में कहे तो बंजारा लोक गीत का मेरुदण्ड है, वे सब बंजारा लोक गीतों के माध्यम से समाविष्ट होते हैं । विषय वस्तु के संबंध में एक प्रसंग को लेकर चलनेवाले तथा सम्पूर्ण अनुभूति प्रधान करनेवाले बंजारा लोक गीत है । बंजारा लोक गीतों के कथ्य की परिधि में चिरन्तर प्रभावकारी घटना या क्षणिक महत्व का प्रसंग विश्व जनीन संवेदना, व्यक्ति की मानसिकता, ऊब से भरी स्थितियाँ, आपत्काल की प्रतिक्रिया या जर्जरित परंपराओं की विसंगतियों से लेकर नई आस्थाओं से जन्मे नव्य भाव बोध तक कोई भी संदर्भ बंजारा लोक गीतों का कथ्य संदर्भ बन सकता है । इन्हीं सार्थकताओं के अनुरूप कथ्य पहचान एवं पकड उन्हीं गीतों में समाविष्ट हैं । यद्यपि बंजारा लोक गीतों में कथ्य-चयन, ऐतिहासिक एवं पौराणिक स्त्रोतों से हुआ ।

ये कथ्य संदर्भ निश्चय ही वर्तमान के यथार्थ से साक्षात्कार कराते हैं । मिथकीय गीतों के सहारे उन पौराणिक प्रसंगों को आधुनिक संदर्भों में प्रस्तुत किया है । बंजारे अपने इतिहास, अपनी आस्थाएँ, अपनी परंपरा, तीज-त्यौहार, सगाई-विवाह, उत्सव-पर्व, के कथा वृत्तों से सूक्ष्म रूप में गीतों को लेकर व्यापक भाव बोध के साथ अभिव्यक्त किया है ।

3.2. कथ्य का आधार

आदिकाल में बंजारे व्यापार के लिए घूमा करते थे। कई वर्षों तक एक दूसरे से नहीं मिलते थे। पत्नी को पति की याद, बहन को भाई की याद, माता-पिता को पुत्र की याद और सगे-संबंधियों की याद सताया करती थी। जब कभी वे लंबे अरसे के पश्चात अचानक मिल जाते हैं, तो भाव विभोर हो जाते हैं। स्त्रियाँ कुशल क्षेम में पुरानी बातों को याद दिलाती हुई "ढावलो" (रुदन) करती है। ढावलो करते समय जो शब्द उनके मुँह से निकलते हैं उन सब के भाव उनकी आत्मीयता, स्नेह और जीवन शैली को दर्शाती हैं। बंजारों का जीवन अन्य वर्गों से भिन्न है। बंजारा समाज में लोकरीति-रिवाजों की सीमा है उनका जीवन भी सीमित एवं जीवन के उतार चढ़ाव के समीप रहता है। सुख-दुःख एवं सामाजिक व्यवस्था के नियमों से बंधे होते हैं।

बंजारों के सरल सीमित जीवन से संबद्ध जो भी घटनाएँ, संस्कार व्रत त्यौहार आदि सब का सामूहिक एवं वैयक्तिक पक्ष उनके गीतों के कथ्य के आधार हैं। इस कथ्य की अभिव्यक्ति भी सीधी और सरल मनोवृत्तियों से जुड़ी होती है। इस अध्याय में अध्ययन के लिए चुने गये गीतों के कथ्य का विवेचन अभिप्रेत है। विभिन्न सांदर्भिक गीतों के कथ्य का उद्घाटन एवं विवेचन यहाँ किया जा रहा है।

3·3· बंजारों के संदर्भ : कथ्य

बंजारा समाज में " राजा भोज " को सबसे उच्च स्थान दिया जाता है । कुशल क्षेम पूछते समय बंजारे पंच लोग इकत्र होते समय पद्यात्मक उक्तियाँ (धिघार) कही जाती है । उस पंचायत के पंच लोग या लाखों लोगों के जन समूह को " तीर्थ " कहा गया है और उस सभा को " राजा भोज " की सभा के समान माना गया है । " मन चंगा तो कठौती में गंगा कहकर बंजारे अपने " नायक " को सभी लोगों के तरफ से कुशल क्षेत्र पूछने की प्रथा है ।

बंजारों के कथ्य के आधारों को निम्न वर्गीकरण के अनुसार विश्लेषित किया जा सकता है ।

- कथ्य
  - सामान्य जीवन
    - पड़ाव डालना
    - सार्वजनिक मिलन
    - विशेष संदर्भ में मिलन
    - यात्रा
  - जीवन के संस्कार
    - जन्म संस्कार
    - विवाह संस्कार
    - मृत्यु संस्कार
    - त्यौहार और उत्सव

3·4· सामान्य जीवन से संबंधित गीत और उनका कथ्य

बंजारों का जीवन प्राय: सामूहिक जीवन है। उस जीवन का नियंत्रण उस समूह के नेता " नायक " की देख रेख में होता है। बंजारों का श्रम मूलक घुमन्तु सामान्य जीवन के चार विशेष पक्ष हैं -- 1· पड़ाव डालना 2· सार्वजनिक मिलन 3· विशेष संदर्भ में मिलन 4· पड़ाव उठाना, एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा। पड़ाव डालना और पड़ाव उठाकर दूसरे स्थान पर पड़ाव डालने के बीच में ही बंजारों का सामान्य जीवन, जीवन का सांस्कृतिक पक्ष, सामूहिक व्यवहार तथा पर्व त्यौहारों का जीवन बीतता है। सामान्य जीवन से संबंधित गीतों का कथ्य का स्वरूप भी उतना ही सरल और सीमित होता है, जितना सामान्य बंजारों का समूह जीवन। सामान्य व्यवहार से संबंधित गीतों का जो कथ्य है उसे आगे दर्शाया गया है।

3·4·1· पड़ाव संदर्भ का कथ्य

बंजारे केवल अपनी सीमा में बंधे नहीं है, देश के विभिन्न प्रान्तों में फैले हुए हैं। बंजारे अन्य प्रदेश के बंजारा निवासियों से अपना परिचय कर लेते हैं। उस समय बंजारा लोग एक दूसरे से परिचय होते समय गीत गाकर पड़ाव डालने वाले बंजारों को स्वागत करते हैं और उनको सुविधा के लिए सहायक बनते हैं। बंजारों के लिए वर्षा ऋतु, ग्रीष्म ऋतु आदि सभी ऋतुएँ समान हैं, क्यों कि वे परिवार समेत स्थान-स्थान पर पड़ाव डाल लेते हैं, उसे " लदणी " कहते हैं। इस लदणी गीत (2 और 3) में जो कथ्य है वह इस प्रकार है।

इस गीत शैली में दूर से आने वाला समूह, उनसे आगे जो समूह बसा हुआ है उसके नायक का परिचय देना ﴾ गीत - 02 ﴿, वर्षा होने पर भीगता और परिवार समेत बिदा लेना ﴾ गीत - 3 ﴿ में वर्णन है ।

इस संदर्भ का कथ्य बहुत ही सीधा और सरल है ।

3·4·2· सार्वजनिक मिलन

बंजारे ﴾ लंबाडा ﴿ एक गाँव से दूर जंगलों में, खेत-खलियानों में, पहाडों में, अपना टांडा बसा लेते हैं । पुनर्मिलन के समय उनके भाव देखने वाले तीसरे व्यक्ति को अचंबे में डाल देती है । क्यों कि बिछडे बंजारे एक-दूसरे के गले मिलते हैं । स्त्री-पुरुष मिलकर ढावलो करते हैं । इसमें वे बिछडे समय की वेदना को याद करते हुए, रोते हुए गीत द्वारा प्रकट करते हैं । इस संदर्भ में भी सार्वजनिक मिलन होता है, क्योंकि लदणी में हजारों लोग इकट्ठे रहते हैं । एक लदणी के नायक से दूसरे लदणी के नायक मिलते हैं, तो बहुत बडा सार्वजनिक सम्मेलन होता है ।

विविध प्रकार के अनुष्ठानों में भी सार्वजनिक मिलन होता है । बंजारों में सगाई से लेकर बिदाई तक कई अनुष्ठान होते हैं । प्रत्येक अनुष्ठान में कई टांडे के लोग संप्रदाय के अनुसार मिलते हैं । विवाह के समय अपने सारे कार्यक्रम छोडकर वधु के टांडे में सगे संबंधी और अन्य बंजारे कई दिनों तक वर के साथ रहते हैं । इस अनुष्ठान में मुख्यत: मिलन का संदर्भ विशेष है । सभी अनुष्ठानों में समूह का होना आवश्यक है ।

सार्वजनिक मिलन से संबंधित गीत शैली में किसी एक स्थान पर अलग-अलग प्रान्तों से आए हुए समूह को " कोष्ठक " (क्षेम) पूछना (गीत-01) ही कथ्य है । सगाई के अवसर पर सगे-संबंधियों, समझदारों की पंचायत को " राजा भोज " की सभा के समान मानते हुए उनके सम्मुख सार्वजनिक रूप से एक बंजारा बुजुर्ग द्वारा दोनों समाधियों (लडका का पिता और लडकी का पिता) को सगाई पक्की होने के बाद (गीत-08) में अपनी खानदानी वंश का इज्जत रखने का उपदेश देना ही कथ्य है ।

3·4·2·1· विवाह का प्रथम अनुष्ठान : कथ्य

विवाह का पहला अनुष्ठान गरुर दाग (गोसाई बाबा की पूजा) के अवसर पर टांडे का नायक वर के बाएँ भुजा पर दाग देना (गीत - 10) और (गीत - 11) में अपने दादी दादाओं के नाम स्मरण करना इन गीतों का कथ्य कहलाता है । विवाह के सामूहिक भोजन आरम्भ करने से पहले बंजारा नायक पधार (गीत - 12) में सुनाता है । इस गीत में रोटी, दाल, अन्न की राशी और वहाँ के जन समूह का वर्णन करते हुए, यदि किसी को भोजन में कुछ कम ज्यादा होने पर क्षमा करने के लिए कहना ही कथ्य है ।

वधु के टांडे में वर नायक को हुक्का प्रदान करते समय (गीत - 22) में हुक्का, तम्बाकू और अंगार का वर्णन करना ही कथ्य है । घोटा (पेय पदार्थ) इमली और गुड के पानी में खस-खस, कालीमिर्च और अन्य खाद्य पदार्थ मिलाकर बनाये गये द्रव को घोटा कहते हैं । अनुष्ठान के अवसर पर (गीत - 25) में घोटा फेरना और घोटा का सेवन करना ही कथ्य है ।

3·4·3· विशेष संदर्भ में मिलन

विशेष संदर्भ में सार्वजनिक मिलन शिशु के जन्म के समय, विवाह के समय, विदाई के समय, मृत्यु के समय, त्यौहारों के समय सार्वजनिक मिलन होता है। इसके अतिरिक्त परदेश जाते समय या परदेश से आते समय सार्वजनिक मिलन होता है। जब कोई बंजारा अपराध करता है, तो पंचायत के मिलन में टांडे के बंजारे और अन्य टांडों के बंजारे एकत्रित होते हैं। देवी-देवताओं के मंदिरों में उत्सवों के समय भी विशेष रूप से सभी बंजारे मिलते हैं।

कन्या की विदाई (तांगडी खाना) के अवसर पर कन्या विदाई के कुछ क्षण पहले से विदा करने (गीत - 58 से 63) तक अपने माँ-बाप, भाई-बहन, सगे-संबंधियों, टांडे वालों और अपनी सहेलियों से आँसू बहाना और कन्या की माँ-बाप, समधी-समधिन का रोना ही कथ्य है। दुल्हन ससुराल पहुँचने पर पैरों से घुँघरू उतारना (गीत - 64), बाराती को लौटाते समय ढावलो (रुदन) करना (गीत - 65) ही कथ्य है।

दिवाली त्यौहार के अवसर पर बंजारा समाज में कुवाँरी लडकियाँ सूर्यास्त समय होने पर एक मत से दीप प्रज्वलित करती है। उस दिन लडकियाँ (गीत - 109) घर-घर जाकर अपने बुजुर्गों से आशीर्वाद लेना और (गीत -110) में कुवाँरी लडकियाँ टांडे वालों से रात अंधेरी हो गयी है, लक्ष्मी का दिन आप लोग दीप प्रज्वलित करने के लिए कहना ही कथ्य है।

3.4.4. यात्रा

यायावर बंजारे एक स्थान से दूसरे स्थान तक वन-वन घूमा करते थे। यह बंजारे देश के कोने कोने में अपने व्यवसाय के माध्यम से यात्रा किया करते थे। एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त में पहुँचते समय इन्हें कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था। अतः यात्रा में हजारों लोग इकट्ठे जाया करते थे। यात्रा करते समय इन्हें शत्रुओं का सामना भी करना पड़ता था। चोर डाकू इन्हें लूटने के लिए प्रयत्न किया करते थे। कभी-कभी वे सब मिलकर लुटेरों को भगा देते थे और कभी-कभी वे सब मिलकर लुटेरों को भगा देते थे और कभी-कभी लुट भी जाते थे। जान माल की हानी भी होती थी। इन्होंने मुलतान देश तक का यात्रा की। मुलतान की यात्रा करने वाले बंजारों को मुलतानी बंजारे कहते थे। मुलतानी बंजारों की दंत कथाएँ आज भी बंजारों के वयो वृद्ध नायक सुनाते हैं।

कहा जाता है कि आज से 400 वर्ष पूर्व लाखा बंजारा अपने एक लाख बैलों की लदणी के साथ जा रहा था। उसकी यात्रा में हजारों बंजारे थे। वह उस समय का सबसे बड़ा व्यापारी था। लाखा बंजारा जैसे व्यापारी भारत में यात्रा करते हुए जनता की सेवा करते थे। आज यातायात के साधन अधिक हो गये हैं, अतः बंजारों का व्यापार बंद हो गया। आज कल बंजारे यात्रा कर रहे हैं परन्तु व्यापार के लिए नहीं वे देवी-देवताओं के दर्शन के लिए यात्रा करते हैं। आज भी वे अपनी प्राचीन संस्कृति को नहीं भूले। जब कभी यात्रा के लिए निकलते हैं, तो पवित्र मन से संगीत और नृत्य के साथ पैदल यात्रा करते हैं यही इनकी विशेषता है।

यात्रा से संबंधित गीतों का कथ्य सरल है, इसमें यात्रा करते समय " सेविया साधू (बंजारों का देव) से संबोधित करते हैं, कि साधू जी नीचे धरती ऊपर आकाश इन दोनों के बीच का उजाला ही तुम हो (गीत - 131), (रास्ते पर चलते-चलते) बापू लेते हैं सबसे पहले तेरा (साधू) नाम उसके बाद ही बोलते हैं गीत (गीत - 132), सेवल (साधू) टांडे में आता (गीत - 133) ही कथ्य है ।

देवी-देवताओं के गीत गाकर यात्रा करते हैं । इस गीत में नृसिंह भक्ति गीत, हथिराम बावाजी का गीत भी गाया जाता है । (गीत - 134) में स्वामी नृसिंह को गोर-गरीब लोग पूजा, अर्चना, याचना करना, (गीत - 135) में हथिराम बावाजी को बंजारों का चांद के रूप में पूजा-पाठ करना ही कथ्य है ।

3.5. जीवन के संस्कारों से संबंधित गीत और उनका कथ्य

बंजारा समाज में अन्य समाजों की तरह संस्कारों के अवसर पर वेद मंत्र नहीं पढ़े जाते । परन्तु इस जाति में जन्म संस्कार, विवाह, संस्कार, मृत्यु संस्कारों में मंत्रों का स्थान लोक गीत ले लेते हैं । बंजारा स्त्री-पुरुष लोक गीतों के माध्यम् से ही अपने संस्कारों को दोषादी दूर करके पवित्र कर लेते हैं । इसी तरह बंजारा जाति में जन्म संस्कार से लेकर मृत्यु संस्कार और उत्सव पर्व तक पारंपरिक लोक गीतों से ही संपन्न होते हैं । संस्कारों से संबंधित गीतों का कथ्य का स्वरूप आगे दर्शाया गया है ।

3.5.1. जन्म संस्कार

यह संस्कार " टांड़ी खाये पीयेन करनो " अर्थात स्त्री गर्भ धारण से प्रारम्भ होता है । बाई आमली खाऊँ कन लागरोच (इमली खाने की इच्छा है) आम्बा खाऊँ कन लागरोच (आम खाने की इच्छा है) कोई को खाऊँ-खाऊँ कन लागरोच (और कुछ खाने की इच्छा) मोई खाऊँ कन लागरोच (मिठाई खाने की इच्छा) अर्थात गर्भधारण के पश्चात स्त्री तरह-तरह की चीजें खाने के लिए लालायित होती है ।

प्रसव को बंजारे " जणणो " कहते हैं । बंजारों का टांडा जंगलों में पहाडों में खेत खलियानों में ही नही कभी-कभी बंजारा बच्चे का जन्म भी होता है । बंजारा टांडों में बच्चा जनवाने की क्रिया को जानती है, उसे " डाई " कहते हैं । टांडों में " डाई " ही डाक्टर है और " डाई " ही जननी है ।

शिशु जन्म के उपरान्त बंजारा महिलाएँ देवी की अर्चना करती हैं, उसे " दीक्या धोकावणो " कहते हैं ।

शिशु जन्म से संबंधित गीतों का कथ्य सरल है इसमें शिशु जन्म के उपरान्त बंजारा महिलाएँ देवी की अर्चना करना (गीत - 04), बच्चे को रंग-बिरंगे झंडे को दिखाकर समझाना (गीत - 05), बच्चे को तरह-तरह के नामों से संबोधित करके, माँ अपने शिशु को नींद के घेरे में लाना (गीत - 06) शिशु को तरह-तरह की लोरियाँ सुनाकर सुलाना (गीता - 07) ही कथ्य है ।

3·5·2· विवाह संस्कार

बंजारों (बंजाड़ों) के रक्त में गीत और नृत्य घुले हुए हैं। विवाह के समय वे लोग हर अनुष्ठान में अलग-अलग गीत गाते हैं। गीत और नृत्य के बिना किसी प्रकार का अनुष्ठान इस संदर्भ में पूरा नहीं हो सकता। गायन में स्त्री-पुरुष दोनों ही समान हैं।

साधारणतया बंजारों के विवाह शुक्ल पक्ष में होते हैं। विवाह के प्रथम प्रार्थना गीत " गरुर दाग " (गुरु बाबा की पूजा) से प्रारम्भ होता है, जिसने सभी प्रकार का ज्ञान प्रदान कर आनन्दमय जीवन का पथ-प्रदर्शन किया।[6] बंजारे गुरू की पूजा रविवार या बुधवार का दिन अधिक पसंद किया जाता है। इस अवसर पर " क्वाळी आव क्वाळी जाव " गीत गाते हैं। बंजारों में विवाह एक माह से लेकर छः महीने तक होता है। वर का पहनाव संप्रदाय के अनुसार होता है। यहीं से विवाह लोक गीतों का आरम्भ होता है।

3·5·2·1· सगाई

अन्य समाज की तरह बंजारा समाज में भी सगाई होती है। सगाई पक्की करने के लिए लोग एक घने पेड़ की छाया में या किसी बाग में बैठ जाते हैं। कन्या पक्ष के लोग खड़े होकर वर-पक्ष के लोगों का स्वागत करते हैं। इस समय वर विनय की मूर्ति का रूप धारण करके झुक-झुक कर सभी लोगों के चरण स्पर्श करना वहाँ के लोगों को प्रभावित करता है। सगाई

6· बनजारा जाति, समाज और संस्कृति : यशवन्त जाधव - पृ· 39

पक्की हो जाने के बाद सगे-संबंधियों का अन्त : संबंध सौहार्दपूर्ण होता है और उसे जन्म-जन्मान्तर निभाने की गीतात्मक उक्तियाँ कही जाती है । "मन चंगा तो कठौती में गंगा ।" बंजारा बुद्धिजीवियों ने कोयल की राग को " मोती " से और उस मोती सी " राग " में " राम " के नाम को बताना बहुत सराहनीय है । इसी तरह सोने की थाली, चाँदी की बाटी, उस सोना-चाँदी से भी ज्यादा सगे की छाती को अतिशीतल बताया गया है । सगे को हीरे के अंदर का लाल के समान माना गया है और न्याय-अन्याय का भी उपदेश दिया गया है । वर पक्ष के नायक को कहते हैं, कि भोली-भाली मेरी लड़की को तेरे पल्ले में डाल दिया हूँ, परन्तु उसकी इज्जत तेरी ही है नायक, कहकर सगे-संबंधियो की जमघट में अपना वादा निभाने का विश्वास दिलाता है ।

सगाई से संबंधित गीतों का कथ्य सरल है, इसमें लड़की को देखने दूर से आये हुए मेहमानों से (गीत - 09) कन्या की सहेलियाँ, उन मेहमानों को दूर से देखने के लिए कहना ही कथ्य है ।

3·5·2·2· विवाह

विवाह से संबंधित लोक गीतों का कथ्य सरल हैं, वर विवाह के लिए रवाना होते समय (गीत - 13), माँ अपने बेटे से टांडे का नाम अपना नायक का नाम रखते हुए, क्षेम से जाकर क्षेमी से आने के लिए कहना ही कथ्य है । टांडे की महिलाएँ वर रवाना होते समय (गीत-14) में अपना मंत्र को याद दिलाना ही कथ्य है । माँ अपने पुत्र को विवाह के लिए दूसरी जाति के घर भेजने से दु:खित होना ही कथ्य है (गीत - 15), वर को विवाह के लिए रवाना करते समय टांडे के बाहर गुरु बाबा जी को

एक रुपया भेंट चढाना ही कथ्य है (गीत - 16), टांडे के बाहर वर को रवाना करते समय टांडे की महिलाएँ वर के हथियारों की सराहना करना ही कथ्य है (गीत - 17)। वर को टांडे से बिदा करते समय आगे तेरे सास-ससुरों के समूह, साले-सालियों के झुंड है उन लोगों से मर्यादा-पूर्वक रहने के लिए उपदेश देना (गीत - 18) ही कथ्य है।

विवाह के लिए बाराती को टांडे से बिदा करते समय टांडे की महिलाएँ " राम की सेना " से संबोधित करना ही कथ्य है (गीत 19)। वर टांडे से बिदा होकर वधु के टांडे की ओर प्रस्थान होते समय निडर से रहने के लिए कहना (गीत - 20), पंथी टांडे से बिदा होकर चलने पर, पीछे टांडे की महिलाएँ (गीत - 21) में वर टांडे को सूना करके चला गया कहना ही कथ्य है।

3·5·2·3· कोतलो धरेमा लेणो

विवाह से संबंधित गीतों में वर कन्या की टांडे के बाहर अपना डेरा तान देता है। टांडे के लोग वहाँ आकर स्वागत करना (गीत - 23), स्वागत समारोह में वर टांडे की महिलाओं को मोई (मिठाई) बाँटना, उस समय हँसी-मजाक में वर की माँ को गालियाँ देना (गीत - 24), वर को ससुराल के घर में प्रवेश करना ही कथ्य है।

3.5.2.4. घोटा

विवाह अनुष्ठान से पूर्व आयोजित होने वाले संस्कार को " घोटा " कहते हैं । " घोटा " से संबंधित गीतों में " थाळी भाँदणो, थाळी छोडणो " (पंगत की पंक्ति) में सार्वजनिक भोजन के अवसर पर अंतरंग महिला हँसी-मजाक में पुरुषों को पंगत की पंक्ति बाँधना (सुनाना) (गीत - 26), उस पंगत की पंक्ति का उत्तर देना (गीत - 27) ही कथ्य है ।

3.5.2.5. छोरीन रुपया मानणो

इस गीत में वर के पिता द्वारा वधु को मान-सम्मान से रुपये भेंट करना (गीत - 28) टांडे के नायकों को घोटा (पेय पदार्थ) पिलाकर निंदासूचक हँसी-मजाक करना (गीत - 29), सहेली का घोटा भाईयों को पिलाना (गीत - 30) ही कथ्य है ।

3.5.2.6. हळदीर टीको

दुल्हन अपने भाई से, दूसरी जाति की हल्दी का टीका लगाकर मुझे पराया मत करो कहना (गीत - 31), वधु की गरतणी (पैर की आभूषण) उतारना (गीत - 32) ही कथ्य है ।

3.5.2.7. वधू को नहलाना

विवाह में वधू को नहलाने से पहले वेणी को छोड़ना (गीत - 33), वधू को कठौती पर बिठाकर नहलाना (गीत - 34) ही कथ्य है ।

3.5.2.8. वर को नहलाना

विवाह में वर-वधू के स्नान के दो अवसर होते हैं । पहला स्नान मध्य रात्री को और दूसरा स्नान दूसरे दिन मध्याह्न को । मंडप में नहाने का पीढ़ा रखकर वर की सालियाँ नहाने के लिए स्वागत करना (गीत - 36), स्नान के बाद कच्चे धागे का हार बनाकर वर और वधू के गले में पहनाकर गाँठे बाँधना (गीत - 37) विवाह वेदी बनाना (गीत - 38) ही कथ्य है ।

3.5.2.9. सप्तपदी

सप्तपदी के अवसर पर वधू दुःखित होकर माता-पिता के सामने वर के साथ फेरा फिरना (गीत - 39), वधू वहाँ उपस्थित लोगों से गले मिलाकर रुदन करना (गीत - 40) ही कथ्य है ।

वर को नहलाते समय (दिन में) उसकी सालियाँ सचेत रहने के लिए कहना (गीत - 41), नहलाते समय वर की सालियाँ हँसी मज़ाक से गालियाँ देना (गीत - 42 और 43), स्नान के समय इतना तंग करने पर भी वर की जीत होना (गीत - 44) कथ्य है ।

3·5·2·10· चोटीर पाणी

वर का स्नान के उपरान्त सास जमाई की चोटी का पानी पीना (गीत - 45), विवाह के पहला स्नान के अवसर पर कच्चे धागे से गले में बंधी हुयी गाँठें छोड़ना (गीत - 46), कठौती को माँड से (चावल का पानी) भरकर वर और वधू आमने-सामने बैठकर खेलना (गीत - 47), वर और वधू घर के सामने गोबर पूजा (ढकोल्डी धोकणो) करना (गीत - 48), वर और वधू की सुन्दर जोड़ी को किसी का नजर न लगने के लिए चावल और कुंकुम से आरती उतारना (गीत - 49) कथ्य है।

3·5·2·11· गोट

" गोट " अनुष्ठान में देवी को बकरे की बली चढ़ाकर, सामूहिक भोज आयोजित करना (गीत - 50), सामूहिक भोजन के उपरान्त पान-सुपारी खिलाना (गीत - 51), पिता अपनी नव विवाहिता पुत्री को सीख देना (गीत - 52) ही कथ्य है।

3·5·2·12· चूड़ो तीपणो

विवाह के " चूड़ो तीपणो " अनुष्ठान से संबंधित गीतों में दुल्हन के भुजदण्ड की चूड़ियों में " तीपे " पिरोना (गीत - 53), " चूड़ो तीपणो " कार्य सम्पन्न होने के बाद नव विवाहिता स्त्री अपनी माँ से गले मिलकर रुदन करना (गीत - 54) कथ्य है।

3·5·2·13· बिदाई

दुल्हन चांदनी रात को तनिक बढ़ने के लिए, मुर्गा को ना बोलने (बांगना) की याचना (गीत - 55), दुल्हन माँ-बाप के घर से विदा होने से पहले डोळ्या (बैल) से अपनी जंजीर (रस्सी) को तोडकर भाग जाने के लिए कहना (गीत - 56) दुल्हन बैल की पीठ पर खड़ी होकर अपने माँ-बाप के घर की सराहना करना (गीत - 57) ही कथ्य है । दुल्हन को टांडे से विदा करके बैल गाडी पर ससुराल के घर रवाना कर देते हैं।

3·6· मृत्यु संस्कार

मृत्यु संस्कार संबंधी गीतों का कथ्य सरल है, इसमें रूदन ही रूदन है । स्त्री अपने पति देव के चल बसने से दुःखित होकर अपने बच्चों को गोद में लेकर, कहाँ चला गया बापू, तेरे बच्चों को मैं कैसे संभालू कहना (गीत - 137), माँ की मृत्यु होने से बच्चे गला फाड-फाडकर रोना (गीत - 138), पुत्र की मृत्यु पर माँ रूदन करती है, कि पहाड जैसा मेरा बेटा मुझे छोडकर चला गया कहना (गीत - 139), पुत्री की मृत्यु पर माँ ने, मुझे एक लोटा पानी देने वाली मेरी लाडली पुत्री चली गयी कहकर रूदन करना (गीत - 140) ही कथ्य है ।

3·7: त्यौहार और उत्सव

भारतीय संस्कृति की छाप बंजारा संस्कृति में भी देखी जा सकती है । हमारा देश सदियों से सांस्कृतिक अनुष्ठान में सुसंपन्न है । बंजारों के तीज-त्यौहार, उत्सव अनेक हैं । भवानी पूजणों ⟨देवी की पूजा⟩, सीतला, तीज, गणगौर, दसराओ ⟨दशहरा⟩ दवाळी ⟨दिवाली⟩, होळी ⟨होली⟩, आटम ⟨युगादी⟩ मुख्य हैं । इच्छा उन्नती की पहली सीढी है, जिसे संकल्प शक्ति भी कही जाती है । उसी तरह बंजारे तीज त्यौहार के प्रति इच्छा प्रकट करते हैं । सबसे ज्यादा मनोरंजक त्यौहार है होली । यह स्वीकार किया जा सकता है, कि बंजारों के विभिन्न प्रकार के खेल, नृत्य, नाटक, संगीत, ढप, नंगारा, ढुगुरी आदि का विकास होली त्यौहार से ही हुआ ।

होली के अवसर पर बंजारों के नस-नस में उल्लास थिरक रहा होता है । रंगों का त्यौहार होली को बंजारा समाज में बडे धूम-धाम से मनाया जाता है, कि मानो एक रंग-बिरंग सा वन उडता फिर रहा हो । जीवन में कभी नहीं पाने का उल्लास इस त्यौहार में पाते हैं । ऋतुराज वसन्त जब पूरे यौवन पर होता है, खेत लहलहा रहे होते हैं, बंजारा स्त्रियाँ रंग-बिरंगी पहनाव पहनकर झूम रही होती हैं । बंजारा स्त्रियों, लडकियों के मुँह से कोयल की सी राग मधुर-मधुर सुनाई देती है । इसके साथ-साथ गालियों भरी गीत गाकर बंजारे एक-दूसरे पर रंग छिडकता हुआ हँसी-मजाक से ढप की थाप पर घुम्मड की नाच नाचते हैं । प्रेमि और प्रेमिका में प्रणय की धारा देवर-भाभी के मजाक, साली-बहनोई के हँसी-खुशी समधी-समधिन के मजाक का खेल देखने वालों का मन मोह लेता है ।

होली के अवसर पर बंजारे एक बार गाया हुआ लेंगी गीत दूसरी बार नहीं गाते हैं। इससे पता चलता है कि बंजारों के दिल में कितने प्रकार के लेंगी गीतों मौजूद हैं। यह सारी कथाएँ बंजारों के गर्व का विषय है।

इनके अतिरिक्त बंजारे सेवा भाया, सेविया साद, लोका मसंद, हथी राम बावा, सोमा साद आदि को पूजते हैं। बंजारे साती (सात) भवानी को अपनी कुल देवता मानते हैं। हनुमान, राम, बालाजी, नृसिंह स्वामी, शिव और कृष्ण आदि देवों को भी बंजारे अपना कुल देवता मानते हैं। त्योहार के समय परिवार के सभी सदस्य नये कपड़े पहनते हैं। अपने घर को गाय के गोबर से लीपते हैं, गो मूत्र को घर में छिड़क कर पवित्र बनाते हैं।

त्योहार के दिन विविध प्रकार के भोज्य पदार्थ बनाते हैं और देवी देवताओं के पूजा के पश्चात त्योहार के समय उत्सव भी मनाते हैं। सगे-संबंधियों के साथ बैठकर भोजन करते हैं। उत्सव में सभी बंजारे इकट्ठा होकर नगारे की चोट पर काँसे की थाल बजाकर गीत गाते हैं, और डप बजाते हैं तो टांडे की स्त्रीयाँ गीत गा-गाकर नृत्य करती हैं। यह दृश्य बंजारा संस्कृति को दर्शाती है।

3·7·1· भवानी पूजणो

त्योहार से संबंधित लोक गीतों का कथ्य सरल है इसमें देवी " अंबा " से बंजारे सार्वजनिक रूप से पूजा-अर्चना करते समय, है । माता दुर्गुण सभी दूर करके सभी के मन को एक करने की अर्चना करना (गीत - 66), भवानीर वींती अर्थात सात भवानियों को एक मत से, सोचा गया काम पूरा करने के लिए, खेत में बरकत, बाल-बच्चों, बूढे-बूढियों, जीव-जन्तुओं पर दया करने की अर्चना (गीत - 67), सूरा बंजारा को प्रत्यक्ष होने वाली देवी सातु भवानी को प्रत्येक पूजा करना (गीत - 68, 69), सार्वजनिक रूप से पूजी जानेवाली देवी तोळजा, सीतला के मत पर लोग हजारों दौड़कर आ रहे हैं, यदि आप सो (नींद में) रही हो तो जागने के लिए कहना (गीत - 70, 71) कथ्य है ।

भवानी को अर्चना करते हैं कि देवी तुम जंगल में हो या पहाड़ों में, हम आपके लिए झूला भेज रहे हैं झूलकर आना, पालकी भेज रहे है, बैठकर आना, घोड़ा भेज रहे है माता दौड़कर आने के लिए प्रार्थना करना (गीत - 72), बाट चलने वालों से कहते हैं कि देवियों ने गेहूँ, बाजरा, चना, नारियल, अमरूद, आम और जवार के खेत बोनी है, उस खेत को न खूंदने के लिए कहना (गीत - 73), देवी फूल बीनने के लिए जाना (गीत - 74), देवी की स्वागत करने के लिए जाना (गीत - 75), देवी जै-जै कर टांडे में प्रस्थान होना (गीत - 76), देवी की पूजा संपन्न होने पर देवी से अपनी पूजा-सामग्री उठा लेने के लिए कहना (गीत - 77), देवी की अंतिम गीत में बदला का पौधा की तरह जल्दी चारों तरफ फैलना, नीम का पेड़ की शीतल छाँव की तरह और शीतल रहने के लिए अर्चना करना (गीत - 78) ही कथ्य है ।

सीतला देवी से संबंधित गीतों का कथ्य सरल है, इसमें लाला नायक सीतला माता की मठ पर जाकर छोटे-छोटे पौधों को कटवाकर साफ-सफाई करवाना ﴾ गीत - 79 ﴿, सीतला माता की मठ पर ﴾ जंगल में ﴿ बंजारे जाकर मुर्गे और बकरे की बली चढाकर देवी की मठ के सामने से पशुओं की झुंड भगाकर पूजा करना ﴾ गीत - 80 ﴿ कथ्य है ।

3·7·2· तीज

तीज से संबंधित गीतों का कथ्य सरल है इसमें तीज ﴾ हरियाली ﴿ बुवाने के अवसर पर देवी मरियामा झप, नगारा, बजाती हुई टांडे में आना ﴾ गीत - 81 ﴿, देवी मरियामा के लिए जनगांव जाकर बढई को बुलाकर पीढा बनवाकर उस पीढा पर देवी को बिठाना ﴾ गीत - 82 ﴿, तीज के अवसर पर बंजारों का देव सेवा भाया और डंडीयाडी की देवल में पूजा-अर्चना करना ﴾ गीत - 83 ﴿ तीज लंबी होकर पौधों से शाखा फूटकर, मजबूत होना ﴾ गीत - 84 ﴿, कुंवारी लडकियों की कष्ट-नष्ट की तीज परिपक्व धारण करलेना ﴾ गीत - 85 ﴿, कुंवारी लडकियाँ खेत-खलियानों में से अपनी प्यारी तीज के लिए तुरन्त लौटना ﴾ गीत - 86 ﴿, तीज विसर्जन से पहले " दोना " या " चडकला " खोसणो खेल, भाई-बहनों के बीच होता है । इस खेल में भाई से दोना छीन लेने में कामयाब होना ﴾ गीत - 87 ﴿, तीज के पहला गीत में टांडे में पधारे हुए नायक से तीज के माँ-बाप, भाई-बहन आदि जैसे प्रश्न पूछना साथ-साथ उत्तर भी देना ﴾ गीत - 88, 89 ﴿ कथ्य है ।

3·7·3· गणगौर

गण = पुरुष, गौर = गौरी अर्थात स्त्री-पुरुष के संयुक्त प्रतिमा को नये कपड़े, आभूषण पहनाकर श्रृंगार करना (गीत - 90), तीज के अंतिम दिन हरियाली को उखाड़कर खाली टोकरियों को गंगा (तालाब या नाला) में बहा देते हैं। कुंवारी लड़कियाँ दुःखित होकर उस गंगा के प्रति हमारी तीज की ज्योती ले जाने वाली पावन गंगा, तू कहाँ से आयी कहना (गीत - 91), उखाड़े गये तीज के पौधों को पुरुषों के पगड़ियों में रोपना (गीत - 92) तीज की खाली टोकरियों को तालाब में बहाने के लिए टांडे के लोग झुंड से जाते हुए नानू बाकेविया के नाम से तीज सम्पन्न कराना (गीत - 93), खाली टोकरियों को पानी में बहाकर लौटते समय लड़ाई-झगड़ा नहीं करने के लिए उपदेश देना (गीत - 94) कथ्य है।

3·7·4· होली

होली से संबंधित लोक गीतों का कथ्य सरल है इसमें बाराह महीनों में एक बार आने वाली होली खेलने के लिए लड़कियाँ, दादो-दादियों को गुस्सा नहीं करने को कहना (गीत - 95), मृतक को भी कोट कमीज पहनाने वाली रंग-बिरंग की होली खेलने छोटे-मोटे, बड़े-बूढ़े सभी आने के लिए कहना (गीत - 96), नायक के घर जाकर पाँच-पच्चीस रुपये इनाम लेकर, आशीर्वाद देना ही (गीत - 97), रंगीन होली खेलने के लिए डंडा जोड़कर (डंडे की टकराहट), कदम मिलाकर

खेलने के लिए कहना (गीत - 98), होली का खेल खेलते समय, पगडी वाला, कुर्ता वाला, निक्कर वाले को देखकर डफ को रोकना नहीं डफ चलने दो भाई कहना (गीत - 99) कथ्य है ।

होली अवसर के लेंगी गीत शैली में काम-भावना से, ढोर (पशु) चराती हुई काला बेर खा रही लडकी को संभोग के लिए मनवाना (गीत - 100), इस लेंगी गीत में संभोग की सारी चेष्टाओं को नग्न रूप में अभिव्यक्त करना (गीत - 101), लेंगी गीत शैली में स्त्री की नितंब और पुरुष की जननेंद्रिय का बेहिचक वर्णन करना (गीत - 102) कथ्य है ।

होली के प्रणय गीत शैली में (ननद-भाभी के संवाद (ननद से भाभी पनघट पर बिछुआ, गले का आभूषण (हांसलो) कहाँ गुम हो गया ननद जी, पूछना (गीत - 103), प्रकृति चित्रण संवादात्मक मनोरंजन गीत शैली में टेढे-मेढे जंगल में, बाग में, आम, नीम, नारियल, सीताफल जैसे पेड रहना (गीत - 104), रंगीन होली के दिन बंजारे डफ की थाप पर घुम्मड नाच नाचने से जंगल का मोर टांडे में आना, उस मोर को मारने के लिए प्रयत्न करना (गीत - 105) कथ्य है ।

होली के राम-नाम स्मरण गीत शैली में हेमा साधु जैसे बडा साधु, राम-नाम स्मरण करते हुए टांडे में पधारना (गीत - 106) इस धरती पर राम - लक्ष्मण जैसे दिव्य पुरुष, तेतीस कोटी देवताओं, जोगा नायक, पटनी याडी जैसे कितने महान स्त्री-पुरुषों चले जाने से धरती स्तुति करना (गीत - 107), होली के अंतिम दिन माता-पिता, राम-लक्ष्मण,

हनुमान, बालाजी, सेवाभाया, डुडिया बापु, जोगा नायक, दादा देव, पट्नी याडी आदि स्त्री-पुरुषों का नाम स्मरण करना (गीत - 108) कथ्य है ।

3·7·5· मेरामा याडी - सेवा भाया

मेरामा याडी - सेवा भाया से संबंधित गीतों का कथ्य सरल है, इसमें मरियामा देवी एक वृध्द महिला के रुप में भीमा नायक के टांडे में आना (गीत - 111), मरियामा देवी अपने शरीर के मैले की गोलियाँ धर्मणी बाई को दिया, धर्मणी बाई उस गोलियों को सेवन करने से सेवा-भाया का जन्म होना (गीत - 112), मारियामा देवी पिणापटण से पंच कल्याणी घोडा लेकर पशु चराने वाला चरवाहा के पास आना (गीत - 113), मरियामा देवी चरवाहा के पास आकर, ये पशु की झुंड किसकी है, चरवाह ने भीमा रामावत की झुंड कहना (गीत - 114), मारियामा देवी ने सेवा भाया से भक्ति स्वीकार कर लेने के लिए कहना, सेवा भाया उस भक्ति को अस्वीकार करना (गीत - 115), हटीला सेवा भाया भक्ति अस्वीकार करने से मरियामा देवी उसे गरीब करदेना और उसे खा जाने की धमकी देना (गीत - 116), सेवा भाया, मेरा-मायाडी की भक्ति स्वीकार करना (गीत - 117) मरियामा देवी की भक्ति को देश में फैलाने के लिए सेवा भाया का देशाटन (गीत - 118), अंग्रेजी शासन काल में सेवा भाया के पशुओं को लेजाकर कोंडवाडा में बंद करदेना (गीत - 119), कथ्य है ।

पौराह गढ़ के अंग्रेजी राजा से सेवा भाया पशुओं की झुंड छोड़देने के लिए कहना (गीत - 120), मरियामा देवी विवाह के लिए सेवा भाया को मनवाना सेवा भाया उसे इनकार करदेना (गीत - 121), सेवा भाया-मरियामा देवी के विवाद को स्वर्ग में लाकर भगवान राम से निवेदन करना (गीत - 122), बूली गढ़ में सेवा भाया सांस लेना, पौराह गढ़ में दहन संस्कार करना (गीत - 123) ही कथ्य है ।

हनुमान जी की प्रार्थना गीत में बंजारे सोटा (गदा) लेकर साथ रहने के लिए, बाल-बच्चों, बड़े-बूढ़ों पर दया, कोर-गोरों पर कृपा करने के लिए अर्चना करना (गीत - 124), नगरी में पधारे हुए बलाजी भगवान को स्वागत करना (गीत - 125), बालाजी भगवान की पूजा के अवसर पर बाल-गोपाल सभी लोगों को आमंत्रित करना (गीत - 126, 127), मुरली से गायों को चराने वाला, वासुदेव का बालक, काला-साँवला कहकर प्रेम से संबोधित करना (गीत - 128), पायलों पर छोटा घुंघुरू बांधकर नाच रही गोपियों से, नगारा बजाकर नचालो आनन्द से कहना (गीत - 129) ही कथ्य है । शिव भक्ति गीत शैली में भगवान शिव को, कैलास के अधिकारी, सर्प-देव गले वंटी वाला, पार्वती के पति, हाथ में त्रिशूल मृगछाल की कछौटी वाला कहकर संबोधित करना (गीत - 130) कथ्य है ।

राम-लक्ष्मण से संबंधित लोक गीतों का कथ्य सरल है इसमे शूर्पणखा नाक-कान कटवाकर लंका के राजा रावण को निवेदन करना (गीत - 136) कथ्य है ।

3.B. अन्य लोक गीत

धर्म दर्शन से संबंधित लोक गीतों का कथ्य सरल है, इसमें गुरु से ज्ञान, भक्ति से मोक्ष, कीर्ति से सत्कीर्ति पाना (गीत - 141), जीवन और दुःख संबंधी गीत में इस धरती पर धन-धान्य, घर-बार, पति-पत्नी, गाय-भैंस, मूसल-ऊखल हमारा नहीं सब कुछ सद्गुरु का ही कहना (गीत - 142, 143), ही कथ्य है। काम और व्यवहार के संबंधित गीत मनुष्य को अपना कर्तव्य पालन करने को कहना (गीत - 144), व्यवहारिक ज्ञान-नीति संबंधित विचार करना (गीत - 145), घर की संपत्ति बेचकर रोज दारू-सेंदी पीने वाले पति को पाकर परिवार के दायित्व न निभाने से घरवाली व्यथित होना (गीत - 146) कथ्य है।

प्रेम व्यवहार से संबंधित गीतों का कथ्य सरल है इसमें लड़का टक-टकी लगाकर न देखने के लिए लड़की का कहना (गीत - 147), भाई से अपनी प्यारी बहन बयार (शहर) जाकर नये कपड़े आभूषण लाने के लिए कहना (गीत - 148) ससुराल में व्यवहारिक स्थिति को देखकर नहीं जाने वाली विवाहिता पुत्री को समझाकर ससुराल भेजना (गीत - 149), सारा दिन काम करने के बाद भी पति को न सताने के लिए कहना (गीत - 150), मामा जी से बहू, माँ-बाप के घर वापस भेज देने के लिए कहना (गीत - 151), सपत्नी संदर्भ के गीत में अपने पति से नये वस्त्र, आभूषण दोनों के लिए बराबर (समान) लाने को कहना (गीत - 152), पराया स्त्री से संबंध रखने वाला पति से विस्मृत पत्नी की व्यथा (गीत - 153) चोरी और पुलिस व्यवस्था से संबंधित गीत में चोरी करने से होने वाली स्थिति को सुनाना (गीत - 154) ही कथ्य है।

3.9. निष्कर्ष:-

कथ्य संबंधी विवेचन से यह विदित होता है कि बंजारा गीतों में कथ्य को क्लिष्ट नहीं बनाया है । वस्तु सीधी, विवरण, सरल और गंभीर विवरण से मुक्त है । बंजारों का सरल जीवन और उससे संबंधित झांकियाँ सरल रूप में ही गीतों में मिलती है । त्योहार एवं संस्कारों में बंजारों के जीवन का एक सरल परिचय मिलता है ।

चतुर्थ अध्याय

बंजारा लोकगीत : संरचना

चतुर्थ अध्याय

बंजारा लोक गीत : संरचना

4·0· प्रस्तावना

" संरचना " शब्द का समानार्थी अंग्रेजी शब्द STRUCTURE है। STRUCTURE को परिभाषित करते हुए " राबर्ट लाडो " ने भाषा के संदर्भ में इस प्रकार कहा है --

"Structure: The system of units and patterns of a language. Each language has its own distinct structure. The system of sounds of a language, constitues its phonological structure: the system of morphomes and word formation is its morphological structure, and the patterns of phrases and sentences are its syntactical structure"[1]

---

1. Language Teaching a scientific approch,
Robert LADO - Page No.221

अर्थात संरचना भाषा की इकाईओं और प्रास्पों की व्यवस्था है । हर भाषा की अपनी विशिष्ट संरचना व्यवस्था रहती है । इसके अंतर्गत ध्वनि संरचना, रूपिम संरचना, शब्द संरचना, वाक्य संरचना आदि सब समाहित होते हैं ।

संरचना शब्द को लेकर कई विद्वानों ने अपने-अपने मत व्यक्त किये हैं । डा· सत्यव्रत संरचना शब्द को परिभाषित करते हुए लिखते हैं कि किसी भी वस्तु का यथार्थ स्वरूप जानने के लिए उसकी संरचना का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक होता है ।[2] इसी क्रम को आगे बढाती हुई अवधारणा मिलती है कि " संरचना " तत्व के नैज और अंतरिक गुणों की खोज तथा उनके संबन्धों की ऐक्य पूर्ण आन्विति का ही नाम है । तत्व जब इस संरचना में ढल जाता है, तभी वह काव्य का आलम्बन और गीत काव्य का गेय बन सकता है ।"[3]

गीत रचना को स्पष्ट करते हुए रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं कि " मानव जीवन के विकास में गीत का सर्वाधिक महत्व रहा है । मानव जितना भी स्वार्थी क्यों न हो अपने सुख-दु:खों को दूसरों से बाँटे बिना नहीं रह सकता । मानव के सुख-दु:खों के किसी अनिवार्यता ने गीतों को जन्म दिया ।"[4]

2· हिन्दी भाषा का संरचनात्मक अध्ययन - डा· सत्यव्रत - प्रस्तावना - पृ· 1·

3· तुलसी और त्यागराजू प्रगती काव्य संरचना का तुलनात्मक अध्ययन - कोला कृष्णमूर्ति - पृ· 75·

" शाङ्र्ग देव " ने " संगीत रत्नाकर " में पहली बार " गेय " शब्द का प्रयोग पद के लिए किया है और साथ-साथ पद रचनाकार को वाग्गेयकार कहा है --

> वाङ्मातु रूच्यते गेय धातु रित्य भीधीयते ।
> वाचं गेयंच कुरुतेय: स वाग्गेयकारक: ।। [4]

इसके अनुसार पद के अंतर्गत शब्दों की रचना वाक और संगीत के संतुलित रूप में होने की बात स्पष्ट है । वाक् में गेयत्व (संगीत) को भरने वाले वाग्गेयकार हैं । इसके साथ-साथ इन्होंने पद रचना के लिए आवश्यक निर्देश भी दिया है --

> त्रयं त्रिशय चातुर्थ हृद्यशारीर शालिता ।
> लय ताल कला ज्ञान, विवेकोनेक काकुषु ।।

अर्थात पद के लिए नृत्य, गीत एवं वाद्य तीनों का ज्ञान: सुरीला कण्ठ, लय, ताल और कला का ज्ञान एवं स्वर, काकु आदि के स्वरूप का बोध आवश्यक है । " [5]

---

4. चिन्तामणि - रामचन्द्र शुक्ल - पृ. 116.
5. तेलुगु गेय साहित्य डा. वै.वेंकटरमण राव - पुस्तक : आन्ध्र संस्कृति - पृ. 32।

बंजारा लोक साहित्य में गीत परंपरा का तात्विक विकास कई चरणों में हुआ । वीर गीतों और नाट्य गीतों में बंजारों के सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण देखा जा सकता है । गीत रचना के क्षेत्र में भाषा· मनोलय, शिल्प, प्रादेशिकता, प्रकृति सहचर्य, पारिवारिक संवेदना, शोक, मनोरंजन, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक आदि का चित्रण विशेष रूप में देखा जा सकता है । मुख्यत: बंजारों के होली गीतों में पूर्ण (खुलकर गाना) अभिव्यक्ति पायी जाती है । उस समय गीत सुनने वालों का मन मोह लेता है, क्योंकि गीत का सीधा संबंध गायन की मन:स्थिति से होता है ।

4-1 बंजारा गीत संरचना : चरण

बंजारा गीत तीन चरणों से लेकर इकतालीस चरणों तक के गीत प्राप्त हुए हैं । इकतालीस (41) चरणों का गीत (गीत सं· 08) सगाई का गीत है, जो समारोह प्राय: लम्बे समय तक चलता है । इसमें अनेक प्रकार के अनुष्ठान आदि किये जाते हैं । इसलिए यह गीत कुछ लम्बा बन गया है । सामान्यत: बहु संख्यक गीत चार से लेकर बारह चरणों तक के मिलते हैं । इनके अलावा तेराह और सोलाह के बीच के चरण वाले गीत भी हैं । समय और अनुष्ठान की आवश्यकता के अनुरूप चरणों की संख्या कम-ज्यादा देखी जा सकती है । प्रस्तुत अध्ययन के लिए स्वीकृत 154 गीतों से संबंधित चरण संख्या की तालिका नीचे प्रस्तुत है --

क्र·सं·	चरण	गीत संख्या	कुल गीत संख्या
1	2	3	4
1·	3	125	01
2·	4	16, 24, 29, 40, 48, 53, 57, 79, 100	09
3·	5	7, 19, 30, 49, 52, 69, 111	07
4·	6	27, 31, 35, 41, 44, 45, 82, 128, 129, 131	10
5·	7	2, 3, 6, 15, 26, 58, 91, 95, 140, 143	10
6·	8	1, 9, 17, 25, 28, 37, 38, 43, 46, 47, 55, 70, 71, 83, 84, 101, 105, 109, 113, 117, 118, 133, 141, 144	24
7·	9	4, 10, 13, 20, 21, 33, 42, 50, 60, 61, 62, 65, 66, 92, 112, 147, 151	17
8·	10·	18, 22, 23, 51, 56, 64, 72, 74, 76, 80, 86, 87, 98, 99, 139, 145	16

1	2	3	4
9.	11	5, 78, 94, 96, 106, 120, 123, 135, 138, 150, 154	11
10.	12	12, 14, 34, 36, 54, 85, 88, 89, 93, 103, 115, 116, 119, 130, 132, 142, 152	17
11.	13	39, 114	02
12.	14	32, 63, 68, 73, 75, 77, 81, 107, 137	09
13.	15	59, 127, 148, 149, 153	05
14.	16	11, 90, 102, 104, 110, 122, 125, 136	08
15.	17	97	01
16.	18	67, 108, 124	03
17.	20	121, 134	02
18.	21	146	01
19.	41	8	01
			154

4-2 गीत और टेक

गीत के लिए टेक प्राण है । साधारणतः शास्त्रीय गीतों में टेक पहला चरण के रूप में उपस्थित होती है । टेक हर चरण अथवा हर दो चरण के उपरान्त पुनरुक्त होती है । इसी पर पद के चरणों में तुक भी प्राय: नियोजित होता है । यद्यपि बंजारे गीत किसी संगीत शास्त्र के आधार पर रचे नहीं गये हैं । फिर भी लय, धुन, ताल आदि के लोकाश्रित रूप को अपनाकर चलने वाले हैं । साधारणतः शास्त्रीय गीतों में प्रथम अथवा प्रथम और द्वितीय चरण टेक के रूप में संरचित होते हैं, जो गीत के केन्द्रीय भाव को अपने में गर्भित कर चलते हैं । बंजारा गीतों की संरचना में भी जहाँ जहाँ टेक है वहाँ इसी प्रकार की बात देखी जा सकती है । निम्न लिखित उदाहरण इसके साक्षी हैं---

आये लोलिया क जाय लोलिया
हम गोबर छूंदन आये लोलिया
वकरीन लादो टांडो लोलिया
कूणतो नायकेरो टांडो लोलिया
जोगा तो नायकेरो टांडो लोलिया
फाडो फलादू टांडो लोलिया
खूंटे मोडादू टांडो लोलिया ।

" आने वाले और जाने वाले, हम बहुत दूर से आ रहे हैं । हमें यहाँ पर पडाव डालना है । वह कौनसा नायक का टांडा है । यह जोगा नायक का टांडा है । घोडा फैला देना और वहीं पर खूंटे (जैसे गाय बंधने का खूंटा) रोप लेना ।"

इस गीत में टेक है -- " आये लोलिया क जाय लोलिया ।

निम्न लिखित तालिका अध्ययन के लिए स्वीकृत गीतों में टेक की स्थिति को और स्पष्ट करती है --

4-2-1 एक चरण वाली टेक

क्रम संख्या	चरण	गीत संख्या	कुल गीत संख्या
1	1	2, 4, 6, 7, 11, 12, 13, 18, 19, 20, 21, 26, 27, 30, 41, 43, 45, 48, 49, 53, 55, 57, 58, 66, 67, 72, 73, 75, 76, 80, 82, 87, 88, 89, 91, 93, 94, 97, 98, 101, 105, 107, 109, 111, 121, 122, 124, 125, 126, 128, 129, 130, 131, 132, 135, 138, 139, 140, 144, 148, 149, 152.	62

क्रम संख्या	चरण	गीत संख्या	कुल गीत संख्या

4-2-2 <u>दो चरण वाली टेक</u>

2	2	8, 9, 10, 14, 16, 23, 37, 38, 46, 47, 68, 74, 77, 81, 83, 84, 85, 86, 90, 100, 102, 108, 110, 127, 134, 141, 142, 145, 151·	29

4-2-3 <u>बिना टेक के गीत</u>

3		1, 3, 5, 15, 17, 22, 24, 25, 28, 29, 31, 32, 33, 34, 35, 36, 39, 40, 42, 44, 50, 51, 52, 54, 56, 59, 60, 61, 62, 63, 64, 65, 69, 70, 71, 78, 79, 92, 95, 96, 99; 103, 104, 106, 112, 113, 114, 115, 116, 117, 118, 119, 120, 123, 133, 136, 137, 143, 146, 147, 150, 153, 154·	63

इस से स्पष्ट है कि बंजारे गीतों की संरचना टेक के आधार पर तीन प्रकार की संरचना से युक्त है । 1. एक चरण वाली टेक के गीत 2. दो चरण वाली टेक के गीत और 3. बिना टेक के गीत ।

4-3 कथ्य संरचना

कथ्य गीत में प्रतिपाद्य विषय होता है । यह विषय वस्तु संदर्भ के अनुसार अनुशासित होती है । संदर्भ जिस प्रकार की वस्तु की अपेक्षा रखता है, उसमें से कुछ पहले प्रस्तुत होने वाली हैं । अन्य उसका अनुसरण करने वाले । उदाहरण के लिए गीत (18) वेतइखाना (वरखाना) को देखा जा सकता है --

आंग छ तारे ससरेरो मळाओ
हाता जोडी होक्का देलराए पंचमेरो पंतिया
आंग छ तारे साळ्डूरो मळाओ
हाता जोडी रामी रामी करलराए पंच मेरो पंतिया
आंग छ तारे सासूवूंरो झूरलो
ऊटकी बेसकी करलराए पंच मेरो पंतिया
आंग छ तारे साळ्वूंरो झूरलो
हाता जोडी रामी रामी करलराए पंच मेरो पंतिया
आंग छ ओधी तलावडी, ओमा वर असनाल
धोती धोलराए पंचमेरो पंतिया ।

" आगे है तेरे ससुरों के समूह, हाथ जोड़कर हुक्का प्रदान करना, पंचों के पंथी ।

आगे है तेरी सासों की झुंड, उनसे मर्यादा पूर्वक व्यवहार करना है, पंचों के पंथी ।

आगे है तेरी सालियों की झुंड, उन लोगों से भी सस्नेह पूर्वक राम-राम करलेना है पंचों के पंथी ।

आगे है ओघी 8 बावली का नाम 8 बावली, उसमें स्नान करके धोती धो लेना, पंचों के पंथी । "

यह गीत विवाह के संदर्भ का है । इसमें वर विवाह के लिए वधु के घर की ओर प्रस्तान कर रहा है । वर के साथ अपने भाई बंधुओं का एक समूह भी निकलता है, जिसे बारात कहते हैं । बारात निकलती है, तो बारात के साथ हुक्का का चलना बंजारा समाज में अवश्यक है । वर की यात्रा से संबंधित इस गीत में हुक्का बांटने की प्रक्रिया वर्णित है । इसमें हुक्का बाँटने में बंजारे एक मर्यादा का अनुपालन करते हैं । जब बारात निकलती है तो सबसे पहले ससुरों के समूह को मर्यादा पूर्वक हुक्का पिलाया जाता है । इसके बाद छोटे लोगों का ध्यान रखा जाता है । इस क्रम में ससुरों के बाद सालों की झुंड और उनके बाद सासुओं की झुंड तत्पश्चात सालियों की झुंड का क्रम निर्धारित है । उन सबसे उचित व्यवहार करने की बात कही गयी है । इस तरह गीत में कथ्य संरचना सामाजिक मर्यादा और सांस्कृतिक विरासत को लेकर चलती है । कथ्य का क्रम उसी रूप में रख करके गीत की योजना बनती है ।

4-4 याडो - बापूर मझ्गी (माँ-बाप की हवेली)

वडेला जूं वदेस मारे बापूरी मझ्गी
धूरल जूं फैलेस मारे बापूरी मझ्गी
लींबडा जूं लदेस मारी याडीरी मझ्गी
चारी कोसा हरो भरो रकाडेस मारी बापूरी मझ्गी ।

" बरगद के पेड के समान अल्प अवधी में बहुत ऊँची हो जाना मेरे बापू की हवेली । धुरल के जैसे चारों तरफ फैल जाना मेरे बापू की हवेली ।

नीम की घनी छाँव के समान अति शीतल रहना मेरी माँ की हवेली ।

चारों तरफ हरा-भरा रहना मेरे बापू की हवेली ।"

इस विवाह गीत में दुल्हन बिदाई से पहले अपनी मझ्गी (माँ-बाप की हवेली) की सराहना करती है कि -- " मझ्गी / हवेली कुवाँरेपन के जीवन में मुझे इस घर में कभी किसी चीज की कमी नहीं रही । उसी प्रकार मेरे पिताजी की मझ्गी, तुम बरगत का पेड के समान अल्प अवधि में बहुत ऊँची हो जाना अर्थात धन-धान्य से हरा-भरा रहना । धुरल का पौधा के जैसे चारों तरफ फैल जाना तथा मेरी बापू की मझ्गी नीम की घनी छाँव के समान अति शीतल रहना ।" इस प्रकार दुल्हन अपने माँ-बाप के घर जब भी आये तब बापू की मझ्गी हरी-भरी, सुख-शान्ती से रहने की प्रार्थना करती है ।

इस भाव के अभिव्यक्ति के लिए जो कथ्य की संरचना है उसमें निम्न लिखित बातें क्रम से लिखी गयी है --

1· समान धर्मी उपमान का सृजन करना - इस गीत में बापु के घर को महान वट वृक्ष कहा गया है । इस संकल्पना के साथ अन्य बातें जुडी गयी है ।

2· इसके बाद की संरचना में वट वृक्ष से जुडी समतुल्य उपमानों को रखा गया है, जैसे धुरल का पेड जो विस्तृत होता है और नीम का पेड जो अच्छी छाया देती है ।

3· अंत में गीत समाप्त होता है, हरे भरे रहने और फलने - फूलने की अभिलाशा के अभिव्यक्ति के साथ ।

इस गीत में बंजारों की कल्पना शक्ति और सहज प्राकृतिक प्रतीकों को चुनने की शक्ति देखी जा सकती है । इसमें सहज सृजन शीलता का आधार ले करके अभिव्यक्ति कथ्य की संरचना को प्रौढता प्रदान करती है ।

4-5 भवानीर बींती ‖ देवी की अर्चना करना ‖

उदे उदे नमस्कार उदे उदे नमस्कार
मारी तोळजा याडी, सीतला याडी
हिंगळा याडी, ध्वाळ अंगर याडी
अम्बा भवानी, महूरी याडी, अन जळ्या याडी
साती भवानी साई वीजो मारी याडी साहेबणी
पित्तो काम पत्तो करेस मारी याडी साहेबणी
सेरेमा सवासेर करेस मारी याडी साहेबणी
करतेमा बरक्त देस मारी याडी साहेबणी
करतेमा बरक्त देस मारी याडी साहेबणी
साऊकारेन समणक रकाडेस मारी याडी साहेबणी
बाल बच्चारो साई वेस मारी याडी साहेबणी
डाव-ढंबरेरो साई वेस मारी याडी साहेबणी
डाव-ढंबरेरो साई वेस मारी याडी साहेबणी
कीडी मूंगीरो साई वेस मारी याडी साहेबणी
जीव-जानवरेरो साई वेस मारी याडी साहेबणी
कोट-कचेरीर पायेन फेरेस मारी याडी साहेबणी
धरमीन धनेती धपाडेस मारो याडो साहेबणी
वर्षे दाडेरो पूजा तोन पूपतो रच मारी याडी साहेबणी ।

" नतमस्तक नमस्कार, नतमस्तक नमस्कार
मेरी तोळजा [देवी का नाम] माँ, सीतला माता
हिंगला माता ; ध्वाळ अंगर माता
अंबा माता, मसूरी माता और जळमा माता
सात देवियों दया करें माता, देवी
सोचा गया काम पूरा कर मेरी माता, देवी
सेर को सवासेर करना मेरी माता, देवी
कार्य में बरकत देना मेरी माता, देवी
धार्मिक व्यक्ति को सामने रखना मेरी माता, देवी
बाल-बच्चों पर कृपा कर मेरी माता, देवी
बूढे-बूढियों पर कृपा कर मेरी माता, देवी
जीव-जन्तुओं पर दया कर मेरी माता-देवी
कोर्ट-कचहरी को पीछे कर मेरी माता, देवी
धरमी आदमी को धन से भरपूर कर मेरी माता
साल भर की पूजा तुम्हें पहुँचता ही रहेगा,
मेरी माता देवी ।"

यह गीत बंजारों की देवी की अर्चना के संदर्भ का है । इसमें बंजारे देवी की पूजा, अर्चना करने के लिए घर के सामने गाय की गोबर से लीपकर " च्याको पूरणो " अर्थात हलदी, कुंकुम और आटे से रंगोली बनाते हैं और इस " च्याको " [चौकी] पर देवी की मूर्ती [चाँदी की मूर्ती रहती है] को बिठाया जाता है । बंजारे लोग देवी की सार्वजनिक पूजा करते हैं । इसे " मावली पूजणो ", " भवानी पूजणो " कहते हैं । इस अवसर पर बंजारा लोग देवी के सामने सार्वजनिक रूप से

खडे होकर एकाग्रता, विनम्रता के साथ एक-एक देवियों के नाम लेकर " वींती " (प्रार्थना / अर्चना) करते हैं कि हे ! देवी - नतमस्तक नमस्कार, नतमस्तक नमस्कार, सोचा गया काम पूरा करना माता । खेत-खालियानों में बरकत देना देवी / साहुकार (अमीर / धर्मी) लोगों को सामने रखना माता साहेबणी / बाल-बच्चों पर कृपा करना माँ । बूढे-बूढियों पर दया करना देवी । कीडे - मकुडों पर दया करना माता । जीव-जन्तुओं का भला करना देवी । कोर्ट-कचहरी को पीछे करना माता । धर्मी लोगों को धन से भरपूर करना देवी । यह वर्ष जैसे दिन का पूजा तुमको अर्पित करते हैं माँ साहेबणी । इस प्रकार बंजारे अपने लोगों को ही नहीं कोर (इतर लोग) गोर (बंजारे), बाल-बच्चे, बूढे-बूढियों, कीडे-मकुडे, जीव-जन्तुओं, खेत-खालियानों सभी के लिए देवी से अर्चना करके बंजारे सामाजिक मर्यादा का अनुपालन करते हैं । यहाँ गीत के कथ्य की संरचना में क्रमश: समुदाय, समाज परिवार और यहाँ तक कि अन्य प्राणियों की भलाई की भावना को रखा गया है । इस प्रस्तुति से बंजारों के भावनाओं की सृजनात्मक अभिव्यक्ति स्पष्ट दिखाई देती है । भाव-लहर को बंजारे हृदय लहर से जोडकर कथ्य की संरचना करते हैं। इसका यह एक सुन्दर उदाहरण है ।

4.6 निष्कर्ष:-

बंजारा गीत की संरचना पर ध्यान देने से यह स्पष्ट होता है कि यह गीत चाहे सहज भाषा में रचे गये हों, फिर भी गीत की संरचना तीन (3) चरणों से लेकर इकयालीस (41) चरणों तक में बनी है । प्राय: बंजारे बहु संख्यक गीत चार से लेकर बारह चरणों तक की सीमा में सरंचित है । गीत रचना का प्रमुख अंग टेक होता है । टेक प्रथम चरण के रूप में देखा जा सकता है

जो साधारणत: अनुवर्ती है । और गीत के आधार सूत्र पर टेक बनती है । बंजारा गीतों की रचना में कुछ एक चरण टेक वाले गीत हैं और कुछ दो चरण वाले । अनेक गीत ऐसे भी मिले हैं जिनमें टेक प्रमुख नहीं है । संदर्भानुरूप कथ्य कथन लयात्मक रूप में प्रस्तुत हुआ है । कथ्य संरचना भी प्राय: सरल और संदर्भ के अनुसार अनुशासित मिलती है । जहाँ तक कथ्य संरचना का प्रश्न है संदर्भ अनुसार जिस प्रकार की वस्तु की अपेक्षा रहती है, उसी रूप में प्रस्तुत होकर साधारण कथनात्मक शैली में गीत प्रस्तुत होता है ।

पंचम अध्याय

बंजारा लोकगीत : शिल्पगत विशेषताएँ

पंचम अध्याय

बंजारा लोक गीत : शिल्पगत विशेषताएँ

5·0· प्रस्तावना :

" शिल्प " या " शैली " शब्द का सामानार्थी अंग्रेजी शब्द style है। आक्सफोर्ड डिक्सनरी में शिल्प की परिभाषा इस प्रकार दी गयी है - " कलात्मक कार्य विधि की वह रीति, जो संगीत अथवा चित्रकला में प्राप्य है।"[1] हिन्दी कोश में कहा गया है कि " शिल्प से अभिप्राय: हाथ से कोई वस्तु तैयार करने अथवा दस्तकारी या कारीगरी से है।"[2] डा· मोहन अवस्थी ने काव्य शिल्प की सैद्धान्तिक व्याख्या करते हुए कहा है कि " काव्य-विधान काव्य का विज्ञान है।

1· आक्सफोर्ड डिक्सनरी आफ करंट इंगिलश - पृ·सं· 1258, प्रकाशन - 1956

2· बृहत हिन्दी कोश, कालिका प्रसाद - पृ·सं· 1334·

कविता करने की विधि से लेकर कविता सम्बन्धी गुण - के दोषों का विधिवत्-ज्ञान उसके भीतर आ जाता है और उस ज्ञान का आत्म प्रकाश काव्य-शिल्प है ।"[3]

कैलाश वाजपेयी के अनुसार " काव्य कृति के निर्माण में जिन उपादानों द्वारा काव्य का ढांचा तैयार किया जाता है, वे सब काव्य के शिल्प तत्व कहे जाते हैं । शिल्प-विधि रचना की उन प्रमुखताओं का लेखा-जोखा है, जिनके आधार पर रचना मूर्त हो चुकी है अथवा विशिष्ठ भंगिमा के साथ लेखनी द्वारा अवतरित हुई है ।"[4]

डा· पुष्कर दत्त शर्मा ने काव्य शिल्प और टेकनिक के अन्तर को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि " रूप सर्जन की विशिष्ठ योजना को शिल्प कहते हैं । शिल्प रूपकार का कौशल है, इसे तकनीक भी कह सकते हैं, किन्तु सीमित अर्थ में । यांत्रिक तकनीक से भिन्न तकनीक अर्थात " तकनीक प्रिंसपल " ही शिल्प कहला सकता है ।"[5]

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि " शिल्प " या " टेकनीक " की शाब्दिक व्याख्या से शिल्प का अर्थ ढंग, विधि, रीति अथवा विधान है । गीत शिल्प वस्तुत: गीत की रचनात्मक प्रक्रिया का सम्बन्ध अभिव्यक्ति की प्रणाली से है । बंजारा लोकगीतों में भाव पक्ष एवं कलापक्षों का समान महत्व होता है । कलापक्ष की दृष्टि से गीतों का भी

3· आधुनिक हिन्दी काव्य शिल्प, मोहन अवस्थी - पृ· सं· 6
हिन्दी परिषद विश्वविद्यालय, प्रयाग ।
4· आधुनिक हिन्दी कविता में शिल्प, कैलाश वाजपेयी - पृ· 19,
आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली ।
5· आधुनिक काव्य रूप और शिल्प, पुष्कर दत्त शर्मा - पृ· 6·

अत्यंत महत्व रहता है । गीतों की भाषा-शैली आदि से श्रेष्ठता व्यक्त होती है । शैली की भव्यता के अनुरूप ही बंजारा लोक गीतों को वैशिष्ट्य प्राप्त हुआ है ।

बंजारा गीत शिल्प के अन्य अर्थ सूचक शब्द - जैसे गीत विधान, गीत विधि, रचना कौशल, शिल्प विधान, शिल्प विधि रूप रचना आदि है । बंजारा लोक गीत की रूपाकृति का निर्माण करने वाले सभी तत्व शिल्प के अभिन्न अंग होते हैं ।

5-1 शैली के तत्व :-

बंजारा लोक गीतों के शैली तात्त्विक अनुशीलन से पहले शैली के तत्वों का उद्घाटन और उन तत्वों की भूमिका में बंजारा लोक गीतों का अनुशीलन लोक गीतों की संरचना को समझने के लिए उपयुक्त होगा । अनेक विदेशी एवं देशी विद्वानों ने शैली तत्वों का विस्तृत विवेचन किया है । इसका विस्तृत विवेचन यहाँ आवश्यक तो नहीं किन्तु दिशा, निर्देश के लिए डा· सत्यदेव चौधरी ने अपनी पुस्तक " भारतीय शैली विज्ञान " 6 में काव्य भाषा के शैली तत्वों का जो निरूपण किया है उसका उल्लेख मात्र प्रस्तुत पर्याप्त और समीचीन होगा ।

डा· सत्यदेव चौधरी ने काव्य भाषा शैली के नौ (9) प्रमुख तत्वों का उल्लेख किया है, वे इस प्रकार है --

---

6· भारतीय शैली विज्ञान - डा· सत्यदेव चौधरी - पृ· 272 से 383

7· - वही - पृ· 272·

1· विचयन (विचलन) अथवा अतिक्रमण (उल्लंघन)
(DEVIATION OR VIOLATION)

(क) अक्रमता (DERANGEMENT)

(ख) रजिस्टर का उल्लंघन (VIOLATION OR REGISTER)

2· समानान्तरता (PARALLELISM)

3· अस्पष्टता (AMBIGUITY)

4· असंगतता अथवा विरोधाभास (IRRATIONALITY OR PARADOX)

5· भाषिक संरचना में अन्तर (DIFFERENCE IN LINGUISTIC STRUCTURE)

6· संरचनात्मक संक्षिप्तता (STRUCTURAL ECONOMY)

7· अर्थद्योतक - ध्वनि - प्रयोग, गति, (लय), यति और तुक
(ONOMOTO POEIA, RHYTHM, PAUSE AND RHYME)

8· अप्रस्तुत विधान (NON - CONTEXTUALITY)

9· चयन (CHOICE)

ये सभी काव्य-भाषा-तत्व किसी एक स्थल में अकेले-अकेले भी होते हैं, और इनमें से कुछ मिलकर एकत्र रूप में भी दूसरी स्थिति में ये संकर रूप में भी होते हैं और संश्लिष्ट रूप में भी।" 8

उपर्युक्त तत्वों का सामान्य विवेचन यहाँ प्रस्तुत है।

8· Foreground̶ing: stylistically giving special prominence to part of an utterance.

(Linguistices and literature, Page No.113

5-1-1 विपथन अथवा अतिक्रमण

" रचयिता जब अपने कथ्य में किसी एक अंश को विशेष रूप से उभारना चाहता है तो इसे विशिष्ट बल देना (foregrounding) कहते हैं । [9] इस प्रक्रिया में सामान्य भाषा के नियमों में परिवर्तन देखा जाता है । इस दिशा में सामान्य भाषा के नियमों का अतिक्रमण या उल्लंघन ही विपथन कहा जाता है । सामान्य भाषा में अर्थ या विचार की सपाट अभिव्यक्ति होती है । किन्तु काव्य में अपने अर्थ से भिन्न अर्थ निर्देशित होता है जो प्रभावशाली रूप में रहता है । [10] इस उद्देश्य के पूर्ति के लिए लेखक जिन साधनों का आधार ग्रहण करता है उनमें से एक साधन विपथन है ।

विपथन के चार प्रमुख आधार माने गये हैं --

5-1-1-1 व्याकरण संबन्धी विपथन

भाषा की अपनी व्यवस्था होती है । व्यवस्था के अंतर्गत भाषा प्रयोग के नियम बनते हैं । इन्हीं नियमों को व्याकरणिक नियम कहते हैं। इन नियमों का उल्लंघन या अतिक्रमण व्याकरणिक विपथन कहा जा सकता है ।

---

9. Deviation; Linguistic usage considered to depart from normal expectation of the users of the language.

(Linguistics and literature Page No.113)

10. - - - Deviation from the ordinary idion makes diction more impressive ---

(Aristotle: Rhetorics III 1,8-II-7)

कवि जानबूझकर समकालीन भाषा के व्याकरणिक नियमों को तोडकर अभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाता है । इस प्रकार के विचलन काव्य भाषा में स्वीकार्य हैं ।

5-1-1-2 शब्द की अक्रमता

वाक्य संरचना में सामान्यतः पदक्रम का व्यतिरेक कविता में संभव है । इस प्रकार कवि सम्मत क्रम प्रभावकारी होने पर स्वीकार्य होता है । सामान्य रूप से देखने पर कविता पर शब्द के अक्रमता दिखाई देती है । किन्तु वही कविता के लिए आवश्यक होता है ।

5.1.1.3. अर्थ की अक्रमता

कभी-कभी व्याकरणानुसार व्यवस्थित रचना में शब्द जो अर्थ संप्रेषित करते हैं । उनसे भिन्न अर्थ सांदर्भिक प्रयोग में उभर सकता है । वह एक सशक्त अभिव्यक्ति होती है । जहाँ विशिष्ट सूचक अर्थ प्रमुख होता है । इसे अर्थ की अक्रमता कह सकते हैं ।

5.1.1.4. प्रोक्ति उल्लंघन

भाषा का संबंध विषय के साथ भी जुडकर रहता है । विषय के अनुसार प्रयुक्त भाषा रूप को प्रोक्ति भाषा रूप कहते हैं । काव्य भाषा में कभी-कभी विशिष्ट अभिव्यक्तियों के लिए विशिष्ट प्रोक्ति रूपों का संदर्भ के अनुसार प्रयोग किया जाता है । चाहे इस विचलन में प्रोक्ति का अतिक्रमण दिखाई दे, फिर भी काव्य के क्षेत्र में प्रभावशाली ही होगा तो स्वीकार्य होगा ।

5-1-2· समानान्तरता

समानान्तरता में कथन के किसी अंश को महत्वपूर्ण बनाने उभारने के उद्देश्य से व्याकरण के नियमों का पालन किंचित्, अतिशयता के साथ किया जाता है ।[11] समानान्तरता का आशय है - बाह्य अथवा आन्तरिक आवृत्ति । जिस प्रकार एक-सीध में चली जाती हुई दो समानान्तर रेखाएँ सदा पृथक रहकर आपस में कभी नहीं मिल पातीं, उसी प्रकार किसी काव्य रचना में जब ऐसी स्थिति पायी जाती है तो उसे " समानन्तरता " कहा जाता है, जो कि दो रूपों में सम्भव है - बाह्य और आन्तरिक --

{क} बाह्य समानान्तरता से अभिप्राय है -- एक अथवा अनेक वर्णों, शब्द रूपों { संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया आदि }, वाक्यांशों अथवा वाक्यों की आवृत्ति ।

{ख} आन्तरिक समानान्तरता से अभिप्राय है -- वाच्यार्थ अथवा भावार्थ की आवृत्ति, जो कि सम और विषम दोनों प्रकार की हो सकती है ।

5-1-3· अस्पष्टता

काव्य भाषा के एक रूप का संबन्ध अस्पष्टता से है । इसमें शब्द के स्तर पर तो व्याकरण के नियमों का पालन होता है, पर " अर्थ " के

---

11. --- a type of foregrounding* which is in a sense the opposite of deviation, for it consists in the introduction of extra reqularities, not irregularities, into the language. This is PARALLELISM in the widegt sense of the word.

(A linguistic guide to English poetry Page No.62)

स्तर पर बोधगम्य प्रतीत नहीं होता । यह " अस्पष्टता " अपने-आप में अवगुण है, किन्तु यही काव्य में जब चमत्कार का कारण बन जाती है तो इसे एक विशेषता की मान्यता मिलती है ।

जब एक ही वाक्य एक से अधिक भावों का बोध होने लगता है तो वहाँ " अस्पष्टता " आ जाती है ।[12] अस्पष्टता का एक रूप और भी है - जहाँ श्रवणीयता के स्तर पर अर्थबोध में कठिनाई होती है । ऐसे स्थलों में शब्द होते तो भिन्न-भिन्न हैं, और उनके अर्थ भी भिन्न होते हैं, किन्तु उच्चरित होने पर वे एक-से सुनायी देते हैं, जैसे - sore, soar, gilt (धनराशि), guilt (अपराध) आदि ।[13]

5-1-4· असंगतता तथा विरोधाभास

यह काव्य-भाषा का वह रूप है, जिसमें शब्द (वाक्य-विन्यास) के स्तर पर तो वह व्याकरण के नियमों के अनुकूल होता है, पर अर्थ के स्तर पर असंगत एवं विरोधपूर्ण लगता है ।[14]

5-1-5· भाषिक संरचना में विभिन्नता

सामान्यत: काव्य-भाषा-अर्थात् सामान्य भाषा से भिन्न भाषा - को " शैली " कहा जाता है । इसी प्रसंग में हाकेट का यह कथन उल्लेखनीय है -

---

12· ———— more than one cognitive meaning for the same piece of language
(A linguistic gauide to english poetry P.No.207)

13· भारतीय शैली विज्ञान - डा· सत्यदेव चौधरी - पृ· 309

14· - वही - पृ· 311·

" एक ही भाषा में एक ही विषय पर लिखे अथवा बोले गये दो कथन यदि अपनी-अपनी भाषिक संरचना (बनावट अथवा गठन) के कारण भिन्न हैं तो यह कहा जा सकता है कि उनमें " शैली " की भिन्नता है। x x x तथा किसी एक परिस्थिति में एक शैली उपयुक्त होती है तो एक अन्य स्थिति में दूसरी शैली।"[15]

भारतीय काव्याचार्य आनन्दवर्धन ने भी " संघटना " शैली वैज्ञानिक शब्दावली में कहें तो " संरचना " (Construction of sentences) के प्रयोग के सम्बन्ध में यही प्रतिपादित किया है। इसका प्रयोग निम्नोक्त चार काव्य-तत्वों के औचित्य को लक्ष्य में रखकर करना चाहिए --
1. वक्ता 2. वाच्य 3. विषय और 4. रस।[16]

---

15. The term 'style' is not easy to define precisely roughly speaking two utterances in the same language, which convey approximatly the same information, but which are different is their linguistic structure, can be said to differ in style. xxx stylistic variations within a single language are universal, and in many cases, there are certain special style which are felt to be peculiarly appropriate to certain circumstances.
(A course in modern linguistics P. No. 556)

16. ... तन्नियमे हेतुरौचित्यं वक्तृवाच्ययोः।
विषयाश्रयमप्यन्यदौचित्यं तां नियच्छति।
काव्यप्रभेदाश्रयतः स्थिता भेदवती हि सा॥
रसबन्धोक्त मौचित्यं भाति सर्वत्र संश्रिता।
रचना विषयापेक्षं तत्तु किं चद् विभेदवत्॥

ध्वन्यालोक 3.6, 7, 9

5-2-1 (क) हिन्दी - बंजारा भाषा

हिन्दी के सामान्य वाक्य	बंजारा भाषा में सामान्य वाक्य
तू घर जा	तू घर जो
तुम घर जाओ	तम घर जाओ
आप घर जाइए	तम घर जाओ
मैं खाना खाता हूँ	म धान / दकिया / बाटी खा ऊँ
मैं खाना खा रहा हूँ	म धान / दकिया / बाटी खा रोपूँ
मैं खाना खाता रहता हूँ	म धान / दकिया / बाटी खातो रवूँ
मैं खाना खा सकता हूँ	म धान / दकिया / खा सकूँ
राम मद्रास जाएगा	राम मद्रास जावच
गोपाल काम करता रहेगा	गोपाल काम करतो रच
सीता खाना खाती रहेगी	सीता धान / दकिया / बाटी खाती रच
मैंने आम खाया	म आंबा खा दो
गोपाल ने रोटी खायी	गोपाल बाटी खादो
राधा गाँव गयी है	राधा गाम गीच

5-1-7-3. यति

पदबद्ध रचना के प्रत्येक पाद में यति का विशेष महत्व होता है। यदि किसी पाद में विषम-संख्या (तीन अथवा पांच) में " यम " होती है तो " यति " (विश्राम) सम-संख्या (प्राय: चार) की अपेक्षा कहीं अति स्पष्ट रहती है।

5-1-7-4. तुक

कविता या छंद के चरणों में अंतिम ध्वनियों का मेल जहाँ बिठाया जाता है, वहाँ तुक की स्थिति मानी जाती है। एक प्रकार से यह अंत्यानुप्रास कहा जा सकता है। आधुनिक कविता में खासकर मात्रिक छंदों में चरण के अंत में अंत्यानुप्रास या तुक का समावेश रहता है। मुक्त छंद में भी प्राय: इस ओर कवि ध्यान देते दिखाई देते हैं।

5-1-8. अप्रस्तुत - विधान

प्रस्तुत अथवा उपमेय से तात्पर्य है वर्ण्य विषय से संबंधित अप्रस्तुत अथवा उपमान से अभिप्रेत उनसे है जिनसे वर्ण्य विषय का सादृश्य दिखाया जाता है। प्रस्तुत (उपमेय) के सदृश अप्रस्तुत (उपमान) का निर्देश करना अप्रस्तुतविधान कहलाता है। यह सादृश्य रूप, रंग, आकार, क्रिया आदि बहुविध तत्वों को लक्ष्य में रखकर दिखाया जाता है।[18] इसके अंतर्गत सादृश्य मूलक अलंकार विधान आ जाता है।

---

18. भारतीय शैली विज्ञान डा. सत्यदेव चौधरी - पृ. 344.

5-1-9· चयन

वर्ण्य विषय के अनुकूल शब्दों एवं वाक्यों के प्रयोग को शैली - वैज्ञानिक शब्दावली में " चयन " कहते हैं । " काव्य भाषा " में शैलीगत सभी विशेषताओं का मूल आधार " चयन " ही है । शैली-वैज्ञानिक किसी साहित्यिक रचना की समीक्षा करते समय यह भी देखता है, कि रचयिता ने वर्ण्य विषय के अनुकूल यथेष्ट शब्दों एवं वाक्यों का प्रयोग किया है अथवा नहीं । रचयिता की सफलता का रहस्य उसके द्वारा अनेक पर्यायवाची शब्दों में से एक शब्द का, अथवा अनेक व्याकरणिक रूपों में से एक रूप का, चयन करने में निहित पाया जा सकता है । इससे कथ्य प्रभावशाली, हृदयहारी, सशक्त एवं सफल सिद्ध होता है ।[19]

5-2 बंजारा सामान्य भाषा

बंजारों के गीतों की भाषा शैली पर विचार करने से पहले यहाँ बंजारों की सामान्य भाषा के कुछ रूपों का अवलोकन समीचीन होगा । यद्यपि बंजारा भाषा का सम्यक विश्लेषण अभिप्रेत नहीं है, फिर भी यह आकलन गीतों की भाषा और शैली समझने और शैली तत्वों के विवेचन में सहायक होगा । यहाँ हिन्दी - बंजारा और बंजारा - हिन्दी, के कुछ सामान्य वाक्यों की दो तालिकाएँ प्रस्तुत हैं --

---

19· भारतीय शैली विज्ञान डॉ· सत्यदेव चौधरी - पृ· 356

5-2-1 (क) हिन्दी - बंजारा भाषा

हिन्दी के सामान्य वाक्य	बंजारा भाषा में सामान्य वाक्य
तू घर जा	तू घर जो
तुम घर जाओ	तम घर जाओ
आप घर जाइए	तम घर जाओ
मैं खाना खाता हूँ	म धान / दळिया / बाटी खा ऊँछूँ
मैं खाना खा रहा हूँ	म धान / दळिया / बाटी खा रोछूँ
मैं खाना खाता रहता हूँ	म धान / दळिया / बाटी खातो रैछूँ
मैं खाना खा सकता हूँ	म धान / दळिया / खा सकछूँ
राम मद्रास जाएगा	राम मद्रास जावध
गोपाल काम करता रहेगा	गोपाल काम करतो रघ
सीता खाना खाती रहेगी	सीता धान / दळिया / बाटी खाती रघ
मैंने आम खाया	म आंबा खा दो
गोपाल ने रोटी खायी	गोपाल बाटी खादो
राधा गाँव गयी है	राधा गाम गीच

बच्चे ने फल खाया था	छोरा फळ खा दोतो
गरीब को पानी नहीं- मिला होगा	गरीबेन पाणी मळोकोनी - कांइको
मुखिया ने चोर को जोर से- पीटा होगा	नायक चोरेन जोरेती- मारो कांइको
अगर मुखिया आता तो- यह काम होता	कोई नायक आयोवीयतो ई- काम वेजातो
राम खाना खाकर जंगल जायगा	राम धान / दळिया / बाटी खालेन जंगल जाव च ।
यद्यपि लडका निर्दोष है फिर- भी उसे चोर कहा गया ।	छोरा चोरी कीदो कोनी तोई - चोर केरागो ।

(ख) बंजारा - हिन्दी भाषा

बंजारा भाषा में कुछ प्रचलित सामान्य वाक्य

1.	याडी ! बाटी घाल	माँ रोटी दो
2.	बा वेवडी जारोची	पिताजी कहाँ जा रहे हो ।
3.	भीया वायान जारोच	भैया विवाह के लिए जा रहे है ।
4.	भयानेर सगाई वेरोच	बहन की सगाई हो रही है ।
5.	मन भूख लागरोच	मुझे भूख लग रही है ।

6.	मन चोट लागगी	मुझे चोट लग गयी ।
7.	ई हमारो घर छ	यह हमारा घर है ।
8.	ऊ छोरी नाचरीच	वह लडकी नाच रही है ।
9.	मार पांच छोरा छ	मेरे पांच लडके हैं ।
10.	सेती मोटो छोरा छ	सबसे बडा लडका है ।
11.	नाणकी छोरी	छोटी लडकी ।
12.	रामू गावडी चरायेन गोच	रा– गाय चराने गया ।
13.	याडी क्सेर लगावण रांदी	माँ कौनसी तरकारी बनाई है ।
14.	भीया नागर दून रोच	भैया हल चला रहा है ।
15.	भोजाई खड काटेन गीच	भाभी घांस काटने गयी ।
16.	दरवाणी बाटी कर रीच	देवरानी रोटी बना रही है ।

5-3 भाई-बहन वार्तालाप

1.	कन्नासी आयो भीया	कब आया भैया
2.	अबहाल चलाऊँ चूं बाई	अभी आ रहा हूँ बहन
3.	याडी-बापु से वारू ज छ क	माँ-बाप सभी ठीक हैं
4.	से वारू ज छ बाई	सभी ठीक हैं बहन
5.	काँई काम कर रेचे भीया	क्या काम कर रहे हो भैया
6.	केरा गाडरेचाँ	धान के पौधे रोप रहे हैं ।
7.	काँई कामेन आयो भीया	किस काम के लिए आया है भैया
8.	तमेन बलाएन आयोचूँ	तुम्हें बुलाने के लिए आया हूँ
9.	क्सेन भीया	क्यों भैया
10.	तांडेमा तीज बोरारेच	तांडे में तीज (त्योहार) बुला रहे हैं ।

11·	भेनोई केयडी गोच बाई	बहनोई कहाँ गया बहन।
12·	नसाबेमा बेटोच	पंचायत में बैठा हुआ है।
13·	नसाब केर	पंचायत किसकी
14·	पाक्ती घरेवाळ रातेन- लडाई मारलीदे	बाजू घर वाले, रात में- झगडा कर लिए।
15·	बाई आपण सदरेसी जामा	बई हम जल्दी जाएँगे

5-4 प्रश्नात्मक वाक्य

1·	ए छोरा टांड्रीन कसेन मारो	ये बच्चे औरत को क्यों मारा।
2·	राजू गावडीन कसेन मारो	राजू गाय को क्यों मारा।
3·	तू धान कसेन रांदी कोनी	तू चावल क्यों नहीं पकाई।
4·	हर्जा तू केयडी जारोची	हर्जा तू कहाँ जा रहे हो।
5·	तू रीस कसेन कर रोची	तू गुस्सा क्यों कर रहे हो।
6·	तोन काँई चावच	तुझे क्या चाहिए।
7·	तार गाम कत छ	तुम्हारा गाँव कहाँ है।
8·	तू कूण छ	वह कौन है।
9·	पांड्या तू कसेन धाँसरोची	पांड्या तू क्यों भाग रहा है।
10·	धान गीलो वेगो	चावल गीला हो गया।
11·	गोरली चरायेन कूण गो	भेड़ चराने कौन गया।
12·	तम कतरा भाई छो	आप कितने भाई हैं।
13·	चंपली काँई काम कर रीची	चंपली क्या काम कर रही हो।
14·	बाटी कूण कीदो	रोटी कौन बनाई।
15·	तू गाम कसेन गो	तू गाँव क्यों गया।

5-5 नकारात्मक वाक्य

1.	मन चायेनी	मुझे नहीं चाहिए
2.	म खाऊनी	मैं नहीं खाऊँगा / खाऊँगी
3.	म कोई काम करनी	मैं कोई काम नहीं करूँगा / करूँगी
4.	म जाऊनी	मैं नहीं जाऊँगा / जाऊँगी
5.	लबारी करनी	झूठ नहीं बोलूँगा / बोलूँगी
6.	गीत बोलूनी	गीत नहीं बोलूँगा / बोलूँगी

5-6 उपदेशात्मक वाक्य

1.	सेती भळन चाल	सभी से मिलकर चलना
2.	केती खोटो वेर छेनी	किसी की बुराई ना होनी है ।
3.	मोटेवून राम-राम बोलनो	बड़ों को राम-राम बोलना ।
4.	नानक्या-मोटो देकन चाल	छोटे-बड़ों को देख कर चलना ।
5.	हाथ जोडन राम-राम करनो	हाथ जोड़कर राम-राम करना
6.	याडी-बापुर टांगे धोकणो	माँ-बापु के चरण स्पर्श करना

5-7 बंजारा गीत : शैली के तत्व

इस गीत में अर्थगत अतिक्रमण हुआ है । भारी शब्द का प्रयोग है, किन्तु सामान्य अर्थ से यह भिन्न है । यहाँ भारी शब्द का अर्थ है गौरव, यह अर्थगत विचलन है । इसी प्रकार निम्न शब्दों को भी देखा जा सकता है --

प्रयुक्त शब्द	सामान्य अर्थ	अर्थ विपथन
होकी (13)	बिना वजन का	तुरन्त
आंतडी (61)	पेट की आंतडी	पुत्री
बूडोर पींदेरिया (41)	बूढा पिंजरा	घर
नारळेरो पाणी (45)	नारियल का पानी	पीने का पानी

बंजारा गीतों की भाषा लोक व्यवहार की भाषा होने के कारण साहित्यिक अभिव्यक्तियों में जिस प्रकार की विपथन दिशाएँ मिलती है, उसी प्रकार की दिशाओं के होने की आशा करना असामीचीन होगा ।

5-7-1 समानान्तरता

गीत 57 में बरगद के पेड के कम समय में बढने और बापु के हवेली के बढ़ती कामना में समानता देखी गयी है । यद्यपि यह उप-मानवत है, फिर भी बढने की प्रवृत्ति में समानता देखकर समानान्तर रचना की गयी है । यही धुरल के समान चारों तरफ फैलना और नीम की छाँव की तरह शीतल और हरा भरा होना देखी गयी है । यहाँ ग्रामीण जनता की सृजनात्मकता देखी जा सकती है ।

गीत 141 में दु:ख के संदर्भ में अनेक समानान्तर स्थितियों का बहुत सुन्दर चित्रण मिलता है । इसमें धन, घर, पत्नी, बेटा-बेटी आदि सब के साथ जुडने वाले दु:ख को समानान्तर में सूचित करते हुए जीवन दर्शन का सुन्दर बोध कराया गया है । अंत में चेतना है, कि हमें भगवान बालाजी के दास बनना है । गीत इस प्रकार है --

धन न-र जे नरेन, धन छेमी कन हाई
धन गोळा वे जावतो, गोकेर हाई ।
घर न-र जे नरेन घर छेमी कन हाई
घर मोटो वेजाव तो, लीपे पोतीर हाई ।
ग्वाण्णी न-र जे नरेन, घर कूंर कन हाई
ग्वाण्णी रजेन, दाबेमा रकाडेर हाई ।
बेटी-बेटा न-र जे नरेन, वेल-वतन छेमी कन हाई
बेटी-बेटा रतो, पाळ पोसेर हाई ।
असो हाईमा पड्यो नर, हाईरो ध्यान करतो
भारी आच्यो कोनिके,
भ० विलास बालाजी दास पोसे
सर्व जगति से सर्वसे सदगुरूीर से ।

इसी प्रकार का दर्शन विरोधात्मक संरचनाओं के समानान्तरता में इस प्रकार रखा गया है --

सदा सवाद से ए जीबेन मालम
हाँडीमा फरजे घाटून काँई मालम ।
भली-भूँडी, आघो-बल्ला से कळा न मालन
काळे माँईर जांगडून काँई मालम ।
टेळे टांपळेरो नायकणेन मालम, डाईन मालम
अमरावती क्वारीन काँई मालम ।
कसापटीरो नांद साँडियान मालम, नाँदियान मालम
गाँटया खोदन खाऊ हूरेन काँई मालम ।
पूंगीरो नांद नागेन मालम, सर्पेन मालम
पाणीमा फरजे डींडून काँई मालम ।

इस प्रकार के उदाहरणों में बंजारा सृजक की गहन निरीक्षण और सहज अभिव्यक्तियोजना सराहनीय ही हैं। बंजारा गीतों में प्रधानता दार्शनिक उद्‌गारों में इस शैली का पुट मिलता है। सम्भव है कि बंजारे भारतीय दर्शन से प्रभावित अधिक हैं। बंजारों के घुमंतु होने के नाते लोक का ज्ञान और संघर्षण का परिचय उन्हें इस धरातल पर सोचने की भूमिका देता है।

5-7-2 असंगतता अथवा विरोधाभास

गीत 91 में गंगा को घातन गंगा कह दिया है। वास्तविक रूप में इस तीज {त्योहार} के अवसर पर गंगा में तीज की टोकरियों को बहाते हैं। गंगा या नदी में बहाने पर वह तो ले जाती है, यह शुभ के लिए है। गंगा बहायी गई टोकरियों को लेजाकर शुभ पहुँचाती है, फिर भी यहाँ यह कह दिया गया है कि वह सब की ज्योति ले जा रही है। यहाँ पर वास्तविकता में और कथनी में ऊपर से असंगतता दिखाई देती है किन्तु नहीं है।

गीत 96 में मृतक को कोट पहनाने की बात कही गयी है -- " उतो मूयेन कोट-कमीज पेराव होळी, आवोरे भीयाओ आपण खेला होळी " यहाँ साधारणतः मृतक को तो कोट नहीं पहनाया जाता फिर भी इस असंगतता में जो होली के संदर्भ में प्रस्तुत है। उससे अभिव्यक्ति बहुत सुन्दर बनती है।

असंगतता अथवा विरोधाभास साहित्यिक अभिव्यक्तियों में अधिक आकर्षक और कवि की पहुँच को निर्देशित करने वाला अंग है। यह सामान्य जीवन में प्रयुक्त होने वाली लोकोक्तियों, उलटबासियों आदि में भी देखा जा सकता है। इस रूप में बंजारा गीतों में भी अभिव्यक्ति परक विरोधाभास की स्थिति का होना सहज माना जा सकता है।

5-7-3 संरचनात्मक संक्षिप्तता

गीत 12 में सामूहिक भोजन के अवसर पर परोसी गयी चीजों का वर्णन है, लेकिन बहुत ही उपयुक्त शब्दों के चयन से संक्षिप्त अभिव्यक्ति के रूप में हैं। गीत इस प्रकार है --

सामळोर भाईन-सगे
पंच-पंचात राजा भोजेरो सभा
पधारे लाकन-पधारे सवा लाख
भाईन सगे से पधारे जोगत
अपालकी भाजी रांदे, तूंबडी का तेल
रागी का रोटी बरंकी दाळ
सोने की झारी, फूला वर्णो धान
चांपा वर्णी दाळ, मोती वर्णी घी
कड कडियासो मळाओ ब्याटो
टोकण उतरे एक सो साठ
अन्नेर पडगी रासी, पेटरन पडगी वाट
घोटासेरो नोक्ता वोच
कोडघी कम-जादा, बक्सस करलो नायक।

इस गीत में स्पष्ट है कि जो वाक्य बताते हैं, उनसे कहीं अधिक गहरा अर्थ उभर करके आता है । इतना ही नहीं बंजारों के हृदय को खोलकर रखता है ।

गीत ।17 में सेवाभाया (बंजारों का देव) के देशाटन के बारे में कहा गया है -- " ध्वाळि देवकेति टांडो लादो, देश मळाओ भाया पालो " से संबन्धित बात कही गयी है । इस संदर्भ में साज-सज्जा का वर्णन मात्र ही अधिक है । संक्षेप में कहने पर भी इसके पीछे की कहानी सबके सामने स्पष्ट होती है । संदर्भ का संक्षिप्तीकरण यहाँ देखा जा सकता है । इसमें संरचनात्मक संक्षिप्तता निखरती है ।

इस प्रकार के बंजारा गीतों में जहाँ संदर्भ अनुसार उनके संक्षिप्त होने, अर्थ और भावनाओं को संप्रेषित करने में उपर्युक्त रूप दिखाई देते हैं।

5-7-4 अर्थद्योतक ध्वनि प्रयोग, गति (लय), यति और तुक

आये लोलिया क जाय लोलिया
हम गोबर छूंदन आये लोलिया
वकीरन लादो टांडो लोलिया
कूणतो नायकेरो टांडो लोलिया
जोगा तो नायकेरो टांडो लोलिया
च्याडो फळाद्रू टांडो लोलिया
बूंटे मोडाद्रू टांडो लोलिया ।

उपर्युक्त गीत में यह देखा जा सकता है, कि गीत को गति देने वाली ध्वनियों की आवृत्ति हुई है । यह गीत को गति देती है । लोलिया शब्द की आवृत्ति संगीतात्मकता भर रही है ।

ये माता याडी तूं साई वेस
हाँसती हाँसती वर आयेस
रोती रोती पर जायेस
स्येरो ढेरो पर जायेस
सणेरो ढेरो वर आयेस
येमाता याडी साई वेस
सुई दोरा लेन पर जायेस
सुओ सुतली लेन वर आयेस
ये माता याडी साई वेस ।

इस गीत में देखा जा सकता है कि अंत्यानुप्रास या तुक बहुत सुन्दर ढंग से रखी गयी है । वेस, आयेस, जायेस शब्दों की पुनरावृत्ति में तुक की योजना है । इतना ही नहीं इसमें " ओ " ध्वनि और " र " ध्वनि का प्रयोग में अनुप्रास की छटा दिखायी देती है ।

मेदी पीटी पीसिए कुँवार कनिया
जरा दूरेती देकोरे लोक दनिया
कानेमा घाली सोनेर कनिया
ओन देकेन आयेय आलम दनिया
आन हूबरेगे झगाळो मानिया
जरा दूर तो हट रे पीसाळो मानिया
मेदी पीटी पीसिए कुँवार कनिया
जरा दूरेती देकोरे लोक दनिया ।

इस गीत में कनिया, दनिया, मानिया शब्दों में ध्वन्यात्मक आवृत्ति और तुक, गाते समय अधिक मन भाते हैं ।

इन उदाहरणों से यह विदित होता है कि चाहे बंजारा गीत लोक गीत है, फिर भी तुक, अनुप्रास और लय, ध्वन्यात्मक आवृत्ति, शब्दावृत्ति आदि के द्वारा अपने में अभिव्यक्ति माधुर्य को समेटे हुए हैं। प्राय: सभी गीतों में किसी न किसी स्थर पर इस प्रकार की विशेषता को रेखांकित किया जा सकता है । परिशिष्ट में संग्रहीत गीतों के सामान्य अवलोकन से यह बात और पुष्ट होगी ।

5-7-5- अप्रस्तुत और चयन

बंजारा लोक गीत साधारणत: स्वस्थ और संघर्ष में सामूहिक जीवन में हर्ष उल्लास एवं शोक संदर्भों की देन है । जहाँ एक ओर बंजारे भोले हैं, वहीं दूसरी ओर परिश्रमी एवं सहनशील भी हैं। ये सब उनके गीतों में प्रकट होते हैं । ये गीत अपने सृजन समय में आवेगात्मक एवं सहज मानस के फल हैं । इनमें प्रकृति, जीवन परंपरा आस-पास, विस्तृत सरल दार्शनिक विचार जीवन के अनुभव आदि से प्रभावित होकर गीत बने हैं । इनमें समाए अप्रस्तुत भी इसी भूमिका में स्वीकृत हैं । रचना सरल एवं संवेगात्मक होने के नाते इसमें अन्य श्रेण्य अभिव्यक्तियों के संदर्भों में निहित चयन की स्थितियों को ढूंढना व्यर्थ ही होगा । सहजता और सरलता के बीच उभरे अप्रस्तुतों की एक झांकी निम्न उदाहरणों में पाई जा सकती है --

सामळोर भाईन सगे
पंच-पंचायत राजा भोजेरो सभा
पधारे लाकन पधारे सवा लाख
भाईन-सगे से पधारे जोगत
मन चंगा तो काकोटीजमा गंगा
दम तो धीद-हियामल खात
गोत गंगा न सगेर तीरथ भाईन-सगे
सगे रणत से कोषळ ए क नायक ।

उक्त गोत में बंजारे अपने नायक के साथ शोभित सभा को राजा भोज की सभा से उपमित करते हैं । इस गीत में राजा भोज की सभा अप्रस्तुत है । इस उपमान से यह विदित होता है, कि बंजारे राजा भोज की न्याय व्यवस्था से प्रभावित हो अपने सामूहिक न्याय निर्धारण करते हैं । भारतीय परंपरा में काव्यों में उपमित इन्द्र की सभा, राम की सभा आदि से भिन्न सभा के रूप में राजा भोज की सभा को स्वीकार करना यहाँ महत्वपूर्ण है ।

इसी प्रकार बंजारे प्रकृति के पक्षियों के स्वरों में जो राग और राम को देखते हैं, उन्हें सुन्दर उपमानों से सजाते मिलते हैं । इस गीत की पंक्तियाँ देखिए --

" काळी कोवल मोती भक्यो माई बराज राम
डाई-जमण छोड सगा, तार दर्शन ती काम । " ‡ 8/आ ‡

‡ काली कोयल की मोती सी राग, उस राग में राम, बाएँ-दाएँ छोड सगा, अब तेरा दर्शन से ही काम । ‡

इसमें आगे कहते हैं, सीतल भाई की छाती भी सोने की थाली और चांदी की बाती बताई गई है --

" सोनन की थाळी रुपन की बाती
सीतळ भाई ती छाती, येधी रुगा की छाती ।" ﴾ B/इ ﴿

﴾ सोने की थाली, चांदी की बाती, शीतल भाई की छाती यही है लगा की छाती । ﴿

इस गीत में कल्पनाशील बंजारे को पिट्ठी में भी कस्तूरी की सुगन्ध दिखाई देती है --

" ऋागदेरी छ पूरी माँईच छ कस्तूरी
से जातेन वेजा पूरीज पूरी । " ﴾ B / ऐ ﴿

﴾ पिट्ठी में कस्तूरी की सुगन्ध समाई हुई है, सब जाति में यही परंपरा है । ﴿

भावुक बंजारे मेहंदी रची हुई कन्या को दूर से देखने की कामना करते हैं --

" मेदी पीटी पीसिए कुंवार कीनया
जरा दूरेती देकोरे लोक दीनया
कानेमा थाली सोनेर कीनया
ओन देकेन आयेच आलम दीनया
आन हूबरेगे झाळो मानिया
जरा दूर तो हट रे पीसाळो मानिया
मेदी पीटी पीसिए कुंवार कीनया
जरा दूरेती देकोरे लोक यीनया । " ﴾ 1 ﴿

(मेंहदी रची हुई कुँवारी कन्या, जरा दूर से देखो हे ! मेहमानों । कानों में पहनी हुई है सोने की बाली, उसे देखने के लिए आये हुए हे ! अतिथि । आकर खड़ा हुआ कुर्ता वाला मानिया जरा दूर से देखो हे । पैसे वाले मेहमानों । मेहंदी रची हुई कुँवारी कन्या को जरा दूर से देखो हे ! मेहमानो ।)

इसी प्रकार विवाह के संदर्भ में भारतीय परंपरा में वधु और वर को लक्ष्मी और नारायण के रूप में देखा जाता है । किन्तु बंजारा अपने वर को राम कहता है और उनकी बारात राम की सेना कही गयी है --

" राम निकळो टांडेर बार बाईए
रामेरो सेनारवाना कराँ बाईए
वेतडू निकळो वाया न बाईए
पंतियार सेनारवाना करॉं बाईए ।" (17)

(राम निकला है टांडे के बाहर बाईयों । राम की सेना को रवाना करेंगे बाईयों । वर निकला है विवाह के लिए बाईयों पंथी की सेना को रवाना करेंगे बाईयों ।)

बंजारों के विवाह संस्कार के अंतर्गत डोर बाँधने की जो परंपरा है, उसमें चाहे कोई भी डोर बाँधे फिर भी उसे रायमल कांजी के हाथ की डोरी ही कहा जाता है । यह एक परंपरित उपमान है, जो संस्कार संबंधित गीत में अवश्य समाया हुआ है --

" रायमल कांजीरी हातेरि बादो डोरणो
अब भंदो लाडा, अब भंदो लाडा
रायमल कांजीरी हातेरि बादो डोरणो
अब भंदो लाडी, अब भंदो लाडी ।
तारे भीयारी हातेरी बादो डोरणो
अब भंदो लाडी अब भंदो लाडी
आजिये रातेरो, समीये सांजेरो बादो डोरणो
कूं भंदे लाडी कूं भंदे लाडी । (37)

(रायमल कांजी के हाथ की डोरी अब बाँध रहा है लाडा अब बाँध रहा है लाडा । रायमल कांजी के हाथ की डोरी अब बाँध रहा है लाडी अब बाँध रहा है, लाडी (नव विवाहित स्त्री) / तेरे बड़े भाई के हाथ की डोरी अब बाँध रहा है लाडी अब बाँध रहा है लाडी । मध्य रात्री, सायंकाल की डोरी कैसे बाँधे लाडी, कैसे बाँधे लाडी ।)

शादी के बाद जो फेरा होता है, उसमें जीवन को नव लाख का जीवन कहकर बंजारे की जीवन के प्रति मूल्य भावना व्यक्त की गयी है --

" याडी देके - बापू देके
नव लाकेरो जीवडा
वराणे पंतियारे हातेमा घालन
डूबरेगी भावजो अहियाँ ।
हातेमा हात कडी घालदेन
टांगेमा बेडी घालन
तमासो देकजूं देक-देक
डूबरेगी याडियो आहियाँ ।

तमारी झूरले माँईती मन
एकलीन टाळदेन पराये
पंतियारे हातेमा हात झला देन
कोसा ती कोसा भांद देन
तम से डूबरेगी याडियों आहियाँ ।" § 39 §

§ माँ के सामने, पिता के सामने नव लाख का जीवन पराये पंथी के हाथों में डालकर खड़ी होगई भाभियों हीं हीं । हाथों में हथकड़ी, पैरों में बेड़ी पहनाकर तमाशा देखती खड़ी हो गयी माँ हीं हीं । तुम्हारी झुंड में से मुझे अकेली को टालकर पराये पंथी के हाथ में हाथ पकड़वाकर, छोर से छोर बाँधकर तुम सभी खड़ी हो गयी माँ हीं हीं । §

यही स्थिति " छोरी मळणो " में कन्या की जीवन को फूल की पंखुड़ी और कागज से उपमित किया गया है --

" फूलडारो पोसो
कागदेरो वासो जीवडा
बे फगरेरो जीवडा
फगरेमा मत घालो भावजो ।" § 40 §

§ फूल की पंखुड़ी, कागज़ जैसा मेरा जीवन बे फिक्र का जीवन फिक्र में मत डालो भाभियों । §

इन कतिपय उदाहरणों से यह विदित होता है, कि बंजारे जहाँ सरल भाषा में अपने अभिव्यक्ति करते हैं, वहीं भावुक स्थलों में प्रकृति अथवा सामान्य जीवन से संबद्ध अनेक अप्रस्तुतों को स्वीकार कर गीत को भावुक और अर्थवान भी बनाते हैं । उक्त उदाहरणों में यह भी देखा जा सकता है, कि जहाँ तक गीत भाषा का संबंध है वह सरल और सपाट है । क्लिस्ट एवं मिश्रित वाक्य संरचना बंजारा गीतों में न के बराबर है ।

5-8- निष्कर्ष :-

इस उपर्युक्त अध्ययन से यह विदित होता है कि बंजारा गीतों में जहाँ तक भाषा शैली का संबंध है सरल एवं जन प्रचलित शब्दों से युक्त है। शैली के तत्व जो सामान्यत: विद्वानों के द्वारा निर्धारित हैं, उनको तो पहचाना जा सकता है। किन्तु उनका अन्वेषण हमें सहज अभिव्यक्ति की ओर ही ले जाता है। बंजारों के उपमान भी सरल और सामान्य प्रकृति और जीवन से संबंन्धित है। इसीलिए बंजारे गीतों में प्राप्त होने वाले अप्रस्तुत गीत वहीं भाव और अभिव्यक्ति की क्लिष्टता की ओर श्रोता को नहीं ले जाते, पर समग्र रूप में गीत भाव के धरातल पर प्रभावशाली अवश्य है।

उपसंहार

उपसंहार

भारत एक विशाल देश है । समतल प्रान्तों में वास करने वाले भारतीय समुदायों के साथ-साथ इस भूखंड में अनेक वन्य जातियों के लोग, घूमन्तू समुदाय आदि रहते हैं । भारतीय संविधान में प्रस्तावित सामासिक संस्कृति की अवधारणा के लिए इन सब की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य का आकलन एक सम-सामयिक आवश्यकता है । बंजारा जाति एवं संस्कृति का एक ऐतिहासिक परिदृश्य एक आकर्षक अंश बनता है ।

बंजारा शब्द की उत्पत्ति के संबंध में अनेक विचार है । कई वर्षों से व्यापार करने वाली एक घूमंतू जाति के लोगों को बंजारा कहा गया । ग्रियर्सन ने बंजारा शब्द का संबंध - विकास की दृष्टि से इस प्रकार देखा है --

(संस्कृत) वाणिज्यकार=(प्राकृत) बानिज्जआरो=(हिन्दी) बंजारा।"बंजारा अनाज लाने ले जाने वाली प्रसिद्ध खाना बदोश जाति है ।" राजस्थान में वाणिज्य का तद्भव रूप बिणज प्रचलित है । विणजना, बिणजना का तात्पर्य है, व्यापार करना ।

बंजारा लोग भारत के विभिन्न प्रान्तों में ही नहीं दूसरे देशों में भी जाया करते थे । बंजारे अपने आपको राजस्थानी मूल के मानते हैं । इस वर्ग के कई समुदाय रोजी रोटी के लिए राजस्थान छोडकर देश में दूर-दूर तक चले गये हैं । कहा जाता है कि बंजर शब्द से भी बंजारा शब्द की उत्पत्ति हुई । बंजर भूमि को जोतने वाला, सींचने वाला, वनों में घूमने वाला बंजर भूमि का मालिक बंजारा कहलाया ।

बंजारा आन्ध्र प्रदेश में 'लम्बाडा' के नाम से प्रसिद्ध हैं । कहा जाता है, कि अंग्रेजों के शासन काल में लम्बे कद के इस जाति के पुरुषों को देखकर अंग्रेजों ने इन्हें "लम्बाम्यान" (LONG MAN) कहकर पुकारा । लम्बाम्यान से व्यवहृत पदबन्ध ही कालान्तर में "लम्बाडा" हो गया ।इस शब्द की उत्पत्ति के सम्बन्ध में यह भी कहा जाता है, कि इस जाति के लोग मुगलों की सेना में लाम्बा ताना करते थे । अर्थात "तम्बू" तानने का

कार्य किया करते थे । अत: इन लोगों को "लाम्बा वाला" नाम पडा और बाद में लाम्बा वाला= लम्बाडा हो गया । भारत के विभिन्न प्रान्तों में निवास करने वाले बंजारा समुदायों के भिन्न-भिन्न नाम इस प्रकार हैं ---

बंजारा, गोर बंजारा, लम्बाडा, लम्बाडी, लभान, सुगाली, सिर्की बंजारा, ढालिया, डपडिया, ढाडी, भाट, नाई, सनार, जांगड, अठरादेसिया, ओसरिया, जाट बंजारा, धनकूटे बंजारा, कंगी-बंजारा, कापडी बंजारा, ग्वारिया, गुजरिया, घुगरिया, चांदेसिया, चारण बंजारा, मथुरिया, बामणिया, गुर्की, रोमा बंजारा, मारू बंजारा, लदेणिया, सेंभाडिया, फनाडी, रोहिदास, ढोरक्या, नौदेसिया, बकदिया, बिंजारी, लमानी बंजारा ।

इन नामों से पता चलता है, कि -- उनके कुछ प्रचलित नाम इस प्रकार बने है --

व्यापार के कारण = बंजारा

ढोर चराने के कारण = ढोरक्या

मथुरा में वास करने के कारण = मथुरिया

बंजारा जन-जाति एक यायावर या घुमंतु जाति होने के कारण उसकी संस्कृति उन लोगों की मानवता को विशेषता प्रदान करती है । बंजारा जन मानस को विशिष्ट बनाने वाले उसकी परंपराएँ और मान्यताएँ हैं-- राम-राम [कुशल मंगल पूछना], पडाव डालना, लदणी, रहन-सहन भोजन करना[खान-पान] वेश-भूषा, सगाई-विवाह, तीज-त्यौहार और विविध संस्कार आदि उसकी परंपरा या संस्कृति के परिधि में आ जाते हैं । यहाँ राम-राम[कुशल मंगल पूछने] की ऐतिहासिक परंपरा इस प्रकार है ---

बंजारा समाज में जब कभी अथिति घर आते हैं, तो सर्व प्रथम एक-दूसरे को मर्यादा पूर्वक राम-राम कहते हैं । यह प्रथा सदियों से चली आ रही है । राम-राम रूपी नमस्कार के पश्चात बाहर से आया हुआ व्यक्ति से अपने सगे "तम से आईजाद छो काई" [आप सब लोग कुशल मंगल है क्या] तब अथिति उस परिवार के प्रमुख से उत्तर देता है,

"हाँ हम से आईजाद छाँ" [हम सब कुशल मंगल हैं] फिर कहता है, "तम से आईजाद छो काँई नायक" अर्थात आपके परिवार के सभी लोग कुशल मंगल होंगे । इस प्रकार से एक दूसरे की कुशल समाचार के पश्चात अथिति को पीतल या काँसे के लोटे में जल देते हैं । अथिति कहता है कि पाणी लोनी ! हाँ ल नायक पाणी ल, कहकर संबोधित किया जाता है । अर्थात पानी पीजिए । इस प्रकार से बंजारा समाज में अथिति के आगमन पर कुशल क्षेम के पश्चात् जल देकर स्वागत करने की संस्कृति परंपरा चली आ रही है । बंजारा साहित्य में कहानी, कथा, गाथा, नाटक, गीत आदि पाये जाते हैं । उनमें से कहानी, नाटक एवं गीत अधिक प्रचलित हैं । कहानियों में कई प्रकार की कहानियाँ बंजारा समाज में मौखिक परंपरा में पायी जाती हैं । उदाहरण के लिए परियों की कहानियाँ, देवी-देवताओं की कहानियाँ, भूत-प्रेतों की कहानियाँ, जानवरों की कहानियाँ, उपदेशात्मक कहानियाँ, धार्मिक कहानियाँ, राजा-महाराजाओं की कहानियाँ, बंजारा वंशावली की कहानियाँ, ढाडी-भाटों की कहानियाँ आदि हैं ।

उसी प्रकार से नाटकों में धार्मिक नाटक, उपदेशात्मक नाटक, वीर रस प्रधान नाटक, करूण रस प्रधान नाटक, गीती नाटक, नृत्य नाटक आदि होते हैं । गीतों में विवाह संबंधित गीत, संस्कार संबंधित गीत, पर्वों से संबंधित गीत, आदि होते हैं ।

बंजारा समाज में ख्यात साहित्य का एक खजाना है । इसकी मुख्य विधाएँ, नाटक कहानी और गीत हैं । समय और संदर्भ के अनुसार बंजारा संस्कृति, विचार, प्रथाएँ, विश्वास, अनुष्ठान, संस्कार आदि इनके द्वारा प्रकाश में आते हैं । इनकी संरचना एवं रूप-विधान, आदि आकर्षक और समस्त टाँडे में व्याप्त हैं । प्रस्तुत अध्ययन बंजारा गीतों की वस्तु संरचना एवं शिल्प को केन्द्र में रखकर गीतों का एक सामान्य विवेचन रहा है ।

कथ्य को अनेक विद्वानों ने अलग-अलग तरह से परिभाषित करने का प्रयत्न किया है । वैसे वैचारिक दृष्टि से किसी की भी निश्चित परिभाषा देना कठिन कार्य है । हिन्दी शब्द सागर में कथ्य के जो विभिन्न अर्थ दिये गये हैं, उनमें एक --"कहने योग्य या कथनीय" ।

डॉ॰ रामेश्वर लाल खंडेलवाल ने वस्तु शब्द का प्रयोग करते हुए वर्ण्य, कथ्य और चेतना को उसके समान धर्मी स्वीकार किया है । वस्तु कथित सामग्री है, जिसका संबंध वर्णन बुनावट संरचना, मिथक आदि से संबद्ध होता है । कथ्य से संबंधित सभी अंग मिल करके एक रूप संतरित करते हैं । इस प्रकार कथ्य साहित्यिक रचना का मुख्य आधार बनता है । लोक साहित्य में यह जन सामान्य के साथ जुड़कर और प्रभाव शाली बनता है । बंजारा लोक गीतों में कथ्य का महत्वपूर्ण स्थान है । बंजारों का संबंध घटनाओं, व्यापारों और लदणी से होता है । दूसरे शब्दों में कहे तो बंजारा लोक गीत का मेरुदण्ड है, वे सब बंजारा लोक गीतों के माध्यम से समाविष्ट होते हैं । विषयवस्तु के संबंध में एक प्रसंग को लेकर चलने वाले तथा सम्पूर्ण अनुभूति प्रदान करने वाले बंजारा लोक गीत है ।

बंजारा समाज में "राजा भोज" को सबसे उच्च स्थान दिया जाता है । कुशल क्षेम पूछते समय बंजारे पंच लोग इकत्रित होते समय पद्यात्मक उक्तियाँ ‖पचार‖ कही जाती हैं । उस पंचायत के पंच लोग या लाखों लोगों के जन समूह को "तीर्थ" कहा गया है और उस सभा को "राजा भोज" की सभा के समान माना गया है ।

विवाह का पहला अनुष्ठान गरूर दाग ‖गोसाई बाबा की पूजा‖ के अवसर पर टाँडे का नायक वर के बाएँ भुजा पर दाग देना ‖गीत-10‖ और ‖गीत-11‖ में अपने दादी दादाओं के नाम स्मरण करना इन गीतों का कथ्य कहलाता है । बंजारों का जीवन अन्य वर्गों से भिन्न है । बंजारा समाज में तो रीति-रिवाजों की सीमा है उनका जीवन भी सीमित एवं जीवन के उतार चढ़ाव के समीप रहता है । सुख-दुख एवं सामाजिक व्यवस्था के नियमों से बंधे होते हैं । बंजारों के सरल सीमित जीवन से संबद्ध जो भी घटनाएँ, संस्कार, व्रत, त्यौहार आदि सब का सामूहिक एवं वैयक्तिक पक्ष उनके गीतों के कथ्य के आधार हैं । इस कथ्य की अभिव्यक्ति भी सीधी और सरल मनोवृत्तियों से जुड़ी होती है ।

बंजारे ﴾लंबाडा﴿ एक गाँव से दूर जंगलों में, खेत-खलियानों में, पहाडों में, अपना टाँडा बसा लेते हैं । पुनर्मिलन के समय उनके भाव देखने वाले तीसरे व्यक्ति को अचंबे में डाल देती है । क्योंकि बिछडे बंजारे एक-दूसरे के गले मिलते है । स्त्री-पुरूष मिलकर ढावलो करते हैं । वे बिछडे समय की वेदना को याद करते हुए, रोते हुए गीत द्वारा प्रकट करते हैं ।

बंजारा समाज में अन्य समाजों की तरह संस्कारों के अवसर पर वेद मंत्र नहीं पढ़े जाते । परन्तु इस जाति में जन्म संस्कार, विवाह संस्कार, मृत्यु संस्कारों में मंत्रों का स्थान लोक गीत ले लेते हैं । बंजारा स्त्री-पुरूष लोक गीतों के माध्यम से ही अपने संस्कारों को दोषादी दूर करके पवित्र कर लेते हैं । इसी तरह बंजारा जाति में जन्म संस्कार से लेकर मृत्यू संस्कार और उत्सव पर्व तक पारंपरिक लोक गीतों से ही संपन्न होते हैं । उन संदर्भों के रीति-रिवाज परंपराएँ आदि कथ्य के रूप में अवतरित होते हैं ।

किसी भी वस्तु का यथार्थ स्वरूप जानने के लिए उसकी संरचना का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक होता है । इसी क्रम को आगे बढाती हुई अवधारणा मिलती है कि "सरंचना" तत्व के नैज और अंतरिक गुणों की खोज तथा उनके संबंधों की ऐक्य पूर्ण आन्विति का ही नाम है । तत्व जब इस सरंचना में ढल जाता है, तभी वह काव्य का आलम्बन और गीत काव्य का गेय बन कसता है ।

बंजारा गीत की संरचना पर ध्यान देने से यह स्पष्ट होता है कि यह गीत चाहे सहज भाषा में रचे गये हों, फिर भी गीत की सरंचना तीन﴾3﴿ चरणों से लेकर इक्यालीस ﴾41﴿ चरणों तक में बनी है । प्राय: बंजारे बहू संख्यक गीत चार से लेकर बारह चरणों तक की सीमा में सरंचित है । गीत रचना का प्रमुख अंग टेक होता है ।

टेक प्रथम चरण के रूप में देखा जा सकता है जो साधारणत: अनुवर्ती है । और गीत के आधार सूत्र पर टेक बनती है । बंजारा गीतों की रचना में कुछ एक चरण टेक वाले गीत हैं और कुछ दो चरण वाले । अनेक गीत ऐसे भी मिले हैं जिनमें टेक प्रमुख नहीं है । संदर्भानुरूप कथ्य कथन लयात्मक रूप में प्रस्तुत हुआ है । कथ्य संरचना भी प्राय: सरल और संदर्भ के अनुसार अनुशासित मिलती है ।   जहाँ तक कथ्य सरंचना का प्रश्न है संदर्भ अनुसार जिस प्रकार की वस्तु की अपेक्षा रहती है, उसी रूप में प्रस्तुत होकर साधारण कथनात्मक शैली में गीत प्रस्तुत होता है ।

संदर्भ की विस्तृति के अनुसार संस्कृतिक अंशों का भी समावेश इन गीतों में कथ्य की सरंचना की विशेषता है । भावना जगत में बंजारे अपनी कल्पना से सहज प्रतीकों को भी चुनते दिखाई पडते हैं । सहज सृजनशीलता का आधार बंजारे गीत की संरचना को कुछ प्रौढता प्रदान करती हैं । इस प्रकार संरचनात्मक स्थिति में एक ओर समुदाय समाज और परिवार का सहज रूप कथ्य संरचनामें देखा जा कसता है, तो दूसरी ओर उनकी सृजनात्मकता और भाव लहर के साथ गीत की संरचना को कथ्य के धरातल पर भी सुन्दर रूप से उभरते पाते हैं ।

बंजारे जहाँ सरल भाषा में अपने अभिव्यक्ति करते हैं, वहीं भावुक स्थलों में प्रकृति अथवा सामान्य जीवन से संबद्ध अनेक अप्रस्तुतों को स्वीकार कर गीत को भावुक और अर्थवान भी बनाते हैं । जहाँ तक गीत भाषा का संबंध है वह सरल और सपाट है । क्लिष्ट एवं मिश्रित वाक्य सरंचना बंजारा गीतों में न के बराबर है । बंजारे गीतों में जहाँ तक भाषा शैली का संबंध है सरल एवं जन प्रचलित शब्दों से युक्त हैं । शैली के तत्व जो सामान्यत: विद्वानों के द्वारा निर्धारित है, उनको तो पहचाना जा सकता है, किन्तु उनका अन्वेषण हमें सहज अभिव्यक्ति की ओर ही ले जाता है । बंजारों के उपमान भी सरल और सामान्य प्राकृतिक जीवन से संबंधित है । इसीलिए बंजारे गीतों में प्राप्त

होने वाले अप्रस्तुत कहीं भाव और अभिव्यक्ति की क्लिष्टता की ओर श्रोता को नहीं ले जाते, पर समग्र रूप में गीत भाव के धरातल पर प्रभावशाली अवश्य है ।

इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन से यह रेखांकित होता है कि बंजारे गीतों का कथ्य, संरचना एवं भाषा शैली चाहे साहित्यिक एवं शास्त्रीय मानदंडों पर खरे न उतरे फिर भी सहज साहित्यिक अभिव्यक्ति की कोटी में उभरते हैं, साथ-साथ संस्कृति जीवन एवं सामान्य भाषा की सहजता से युक्त होकर आकर्षक बनते हैं ।

परिशिष्ट

बंजारा गीत संकलन

गीतानुक्रमणिका

ठेठेर चाल (प्रथा)

1. राम-राम (कुशल मंगल पूछना)
2. टाँडो ढाळणो (पडाव)
3. लदपीर गीत (लदनी के गीत)

शिशु जन्म

4. दळया धोकावणो (देवी की अर्चना)
5. छोरान समझायेर गीत (बच्चे को समझाने का गीत)
6. छोरान सवारेर गीत (बच्चे को सुलझाने का गीत)
7. छोरान सवारनो (बच्चे को सुलझाना)

सगाई

8. गोळ खायेर पचार (गुड/मिठाई खाते समय की पचार/गीत)
9. छोरीन देकणो (कन्या दिखावन)

वाया (विवाह)

10. गरूर दाग (गोसाईं बाबा की पूजा)
11. दादी-दादाजन धोकणो (दादी-दादाओं को पूजना)
12. टेळो (सामूहिक भोजन)

13. याडीर सीक (माँ की सीख)

14. मंडवडो (मंडप)

15. याडीर झुरणो (माँ झुरना)

16. हेलेर रपया (एक रूपये का सिक्का)

17. तारी ढाले वेराजीरे (ढाल की सराहना)

18. वेतडू रवाना (वर रवाना)

19. वेतडून वाट लगावणो (वर को टाँडे से बिदा करना)

20. वेतडू तू धमकेस मत (वर तू डरना नहीं)

21. पंतिथा चलो चालो (पंथी चला जा रहा है)

22. हुक्कार पचार (हुक्का की पचार/गीत)

23. कोळो घरेमा लेणो (बाराती को स्वागत करना)

24. फीकी मोई (फीकी मिठाई)

घोटा

25. घोटार पचार (घोटा अनुष्ठान का पचार/गीत)

26. थाळी मांडणो (पंगत की पंक्ति)

27. थाळी छोडणो (पंगत की पंक्ति का उत्तर)

28. छोरीन रपया मानणो (कन्या को रूपये भेंट करना)

29. छोरीर घोटा काडणो (घोटा बनाना)

30. घोटा फेरणो (घोटा फेरना)

31. हळदीर टीको (हल्दी का टीका)

32. गरतणी छोडणो (पैर की आभूषण छोडना)

33. नवलेरीर मातो छोडणो (कन्या की वेणी को छोडना)

34. छोरीर हंगोळी (रात): कन्या को नहलाना (रात)

35. वेतडूर हंगोळी (रात): वर को नहलाना (रात)

36. वेतडून हंगोळी - वर को नहलाते समय गीत

37. डोरण भांदणो (डोरी बांधना)

38. जाग मापे कूण (विवाह वेदी)

39. फेरा फरणो (सप्तपदी)

40. छोरी मळणो (कन्या की रूदन

41. वेतडूर हंगोळी (दोप्पेरे): वर को नहलाना (दिन में)

42. वेतडून भांडणो (वर को गालियां देना)

43. वही वही

44. वेतडू जीतगो (वर जीत गया)

45. घोटीर पाणी (घोटी का पानी)

46. डोरण छोडणो (डोरी छोडना)

47. मांड रमणो (मांड से खेलना)

48. वकोल्डी धोकणो (गोबर पूजा)

49. पाळ वारणो (आरती उतारना)

गोट

50. गोटेर पचार §गोट पचार/गीत§

51. पान-सपारीर पचार §पान-सुपारी का पचार या गीत§

52. बापूर सीक §पिता का सीख§

53. चूडो तीपणो §भुजदंड की चूडियों में "तीपे" पिरोना§

54. नवलेरी वेगी §दुल्हन, नव विवाहिता स्त्री§

55. चांदणी रात §चांदनी रात§

56. छोरीन बार काडणो §घर से कन्या की बिदाई§

57. याडी-बापूर मडगी §माँ-बाप की हवेली§

तांगडी रवाना

58. तांगडी रवाना करनो §कन्या की बिदाई§

59. बापून मळणो §पिता से गले मिलकर रुदन करना§

60. वीरेणान मळणो §भाई से गले मिलकर रुदन करना§

61. समदण-समदण मळणो §समधिन-समधिन गले मिलकर रुदन करना§

62. समदण-समधीन मळणो §समधिन-समधी से गले मिलकर रुदन करना§

63. नवलेरी रोवणो §दुलहन रोना §

64. घूगरा छोडणो §घुंघरू उतारना§

65. तांगडी वाळेन हाटो वाट लगाणो §बराती को लौटाना§

त्यौहार

66. भवानी पूजणो (देवी की पूजा करना)

67. भवानीर वींती (देवी की अर्चना करना)

68. मेरामा याडी (मरियामा देवी)

69. सांतु भवानी (सातु देवी)

70. तोळजा भवानी (तोळजा देवी)

71. सीतला भवानी (सीतला देवी)

72. भवानीर गीत (देवी की मनोरंजन गीत)

73. वही वही

74. वही वही

75. वही वही

76. वही वही

77. भवानीर अकाडो पाडणो (देवी की पूजा सामग्री का उठावन

78. अकाडो पाडेर वींती (देवी की अंतिम गीत)

सीतला

79. सीतला (सीतल देवी)

80. सीतलार गीत (सीतला देवी की गीत)

तीज

81. तीज बोवणो (तीज बुवाना)

82. तीज (तीज की तयारी)

83. सेवा भाया (बंजारों का देव)

84. तीजेन पाणी घालनो (तीज में पानी डालना)

85. तीज मोटियार (तीज की परिपक्वता)

86. ओडली (तीज)

87. दोना या घडकला

88. तीज (पहेली गीत)

89. तीज (पहेली गीत)

गणगोर

90. गणगोर (गणगौर)

91. तीज ओकडणो (तीज उखाडना)

92. तीज वैंटनो (तीज बाँटना)

93. तीज की समाप्ति

94. वोल्डी वेरावणो (टोकरी विसर्जन)

होळी (होली)

95. होळी रमणो (होली खेल)

96. वही वही

97. गेरू वगावणो (होली का इनाम)

98. रंगेर होळी (रंगीन होली)

99. डपडा वाळो ‖डफ वाले‖

100. छूटो गीत

101. छूटो गीत

102. काम भावना का संयोग

103. नणद-भोजाई ‖ननद भाभी संवाद‖

104. होळीर गीत ‖संवादात्मक मनोरंजन गीत‖

105. मोर मारनो ‖मोर मारना‖

106. राम ‖राम नाम स्मरण‖

107. जम्मी याडी ‖धरती स्तुति‖

108. दाडी-परबाती भजन ‖प्रतिदिन भजन का विवरण‖

दवाळी ‖दिवाली‖

109. दवाळीर गीत ‖दिवाली‖

110. दीये बाळणो ‖दीप प्रज्ज्वलित करना‖

मेरामायाडी-सेवा भाया

111. मेरामायाडी-सेवाभाया ‖मरियामा देवी-सेवा भाया‖

112. संतान प्राप्ति के लिए प्रार्थना

113. पिणापटणमेती आयी मेरामा ‖पिणापटण से आयी मरियामा देवी‖

114. भक्ति का प्रस्ताव

115. सेवाभाया और देवी का विवाद

116• गरीब सेवाभाया

117• भक्ति की शर्तें

118• सेवाभाया-देशाटन

119• अत्याचारों का वर्णन गीत

120• अंग्रेजी शासन का अत्याचार गीत

121• विवाह के लिए मनवाना

122• सेवा भाया और देवी का विवाद

123• स्वर्गवासी सेवा भाया पर गीत

124• हनमान वींती ‖हनुमान जी की प्रार्थना‖

125• बालाजी का स्वागत समाचार गीत

126• बालाजी वींती ‖बालाजी की प्रार्थना‖

127• वही वही

128• कृष्ण भक्ति गीत

129• श्री कृष्ण

130• शिव भक्ति गीत

131• सेविया साद ‖सेविया साधु‖

132• भजन

133• साद आयो ‖साधु आया‖

134• नृसिंह भक्ति गीत-उत्सव के अवसर पर

135• हथीराम बावाजी

136• श्रीराम - लक्ष्मण : शूर्पणखा वृत्तान्त

मृत्यु संस्कार

137• पति की मृत्यु पर शोक

138• माँ की मृत्यु पर शोक

139• पुत्र की मृत्यु पर माँ का शोक

140• पुत्री की मृत्यु पर माँ का शोक

अन्य लोक गीत

141• धर्मवर्णन संबंधी गीत

142• जीवन और दु:ख ‖परिकल्पना‖

143• जीवन दर्शन - भौतिक स्थिति पर व्याख्या

144• काम और व्यवहार

145• व्यवहारिक ज्ञान - नीति

146• परिवार के दायित्व ना निभाने वाले पति पाकर घर वाली की व्यथा

147• प्रेम व्यवहार और जीवन की वास्तविकता

148• भाई - बहन दुनियादारी

149• बंजारा समाज: ससुराल व्यवहारिक स्थिति

150• गृहणी की व्यथा

151. ससुराल में बहू की स्थिति

152. सपत्नी संदर्भ

153. पति से विस्मृत पत्नी की व्यथा

154. चोरी और पुलिस व्यवस्था

गीत संग्रह के सहायक : आभार प्रदर्शन

अपने शोध के लिए मैने 154 गीतों के संकलन का आधार बनाया है । इन गीतों को सही रूप में संग्रह करने के लिए अधोसूचित (गीत के नीचे) 8 बुजुर्गों से मुझे सहायता मिली है । मैं उनका आभार प्रकट करता हूँ ।

ठेटर चाल (प्रथा)

(1)

राम - राम (कुशल मंगल पूछना)

बंजारा समाज में जब कभी अथिति घर आते हैं, तो सर्व प्रथम एक-दूसरे को मर्यादा पूर्वक राम-राम कहते हैं । यह प्रथा सदियों से चली आ रही है । राम-राम रूपी नमस्कार के पश्चात बाहर से आया हुआ व्यक्ति से अपने सगे " तम से आई जाद छो काँई " (आप सब लोग कुशल मंगल है क्या), तब अथिति ने उस परिवार का प्रमुख उत्तर देता है, " हाँ हम से आईजाद छाँ " (हम सब कुशल मंगल हैं) । फिर कहता है, "तम से आईजाद छो काँई नायक अर्थात आपके परिवार के सभी लोग कुशल मंगल होंगे । इस प्रकार से एक दूसरे की कुशल समाचार के पश्चात अथिति को पीतल या काँसे के लोटे में जल देते हैं । अथिति कहता है कि पाणी लोनी ! हाँ ल नायक पाणी ल, कहकर संबोधित किया जाता है । अर्थात पानी पीजिए । इस प्रकार से बंजारा समाज में अथिति के आगमन पर कुशल क्षेम के पश्चात जल देकर स्वागत करते हैं ।

बंजारों में पुरुषों को नायक के रूप में संबोधित किया जाता है और पंच लोग इकत्रित होने पर पद्य गीत के माध्यम से कुशल मंगल पूछते हैं - गीत इस प्रकार है --

सामळोर भाईन-सगे
पंच-पंच्यात राजा भोजेरे सभा
पधारे लाकन पधारे सवालाख
भाईन-सगे से पधारे जोगत
मन चंगातो काकोटीमा गंगा
दम तो धौद-हियामला खात
गोत गंगा न सगेर तीरथ भाईन-सगे
सगे रपत से कोषळ छ क नायक ।

' सुनो भाईयों और सगे
पचों की पंचायत सभा राजा भोज की सभा के समान है
एक लाख हो अथवा सवालाख सब पधारते हैं
इसमें भाईयों और सगे सभी पधार सकते हैं
मन चंगा तो कठौती में गंगा
यह हरा भरा जगाह है
यह सगे और भाईयों का तीर्थ है
सभी लोग कुशल-मंगल है, क्या नायक ।"

---

1. घुगुलोत किष्टू नायक - गाँव : मदनतुर्ती मंडल - नेल्लीकुदुर
जिला - वरंगल

(2)

टांडो टाळणो (पड़ाव)

बंजारा घुमन्तू है । स्थान-स्थान पर पड़ाव डाल लेते हैं । पड़ाव डालते समय गीत भी गाते हैं।

आये लोलिया क जाय लोलिया
हम गोबर छूंदन आये लोलिया
वकीरन लादो टांडो लोलिया
कूणतो नायकेरो टांडो लोलिया
जोगा तो नायकेरो टांडो लोलिया
च्वाडो फळाडू टांडो लोलिया
खूंटे मोडाडू टांडो लोलिया ।

" आने वाले और जाने वाले
हम बहुत दूर से आ रहे हैं
हमें यहाँ पर पड़ाव डालना है
वह कौनसा-नायक का टांडा है
यह जोगा नायक का टांडा है
चोड़ा फैला देना और वहीं पर खूंटे (जैसे गाय बांधने का खूंटा)
रोप लेना । "

§ 3 §

लदणीर गीत § लदनी के गीत §

सूवा भीजे सूतलीरे, भीजे टाट पलाण
सूवा भीजे सूतली बापू भीजे मळायेमा
याडी भीजे झूरलेमा
नू कूं भीजूं बाई एकली
सोबत छ्यारो जा
मारच पाणा पचेरी
खाडू भडकोजा । [2]

- सूवा भीगे, सुतली भीगे और टाट-पलाण भी भीग गये हैं
सूवा सुतली भीग गये
बापू भीग रहे है पंचायत में और माँ भीग रही है झुंड में
ऐसा क्यूँ भीगना बाई अकेली
साथी चला जा रहा है
बारिश हो रही है
परिवार समेत हम बिदा ले रहे हैं। "

2· धीरावत रंगी बाई - बोम्मल रामारम - जिला - नलगोण्डा

शिशु जन्म

§ ५ §

दळ्या धोकावणो § देवी की अर्चना §

शिशु जन्म के पश्चात बंजारा महिलाएँ § दीळ्या धोकावणो § देवी की अर्चना करती हैं । इस अवसर पर यह गीत गाती है ।

ये माता याडी तूं साई वेस
हांसती हांसती वर आयेस
रोती रोती पर जायेस
स्येरो डेरो पर जायेस
सणेरो डेरो वर आयेस
ये माता याडी साई वेस ।
सुई दोरा लेन पर जायेस
सुओ सुतली लेन वर आयेस
ये माता याडी साई वेस याडी ।

" हे ! माता, देवी तू दया कर
हँसती-हँसती इधर आना
रोती-रोती उधर जाना
कपास का डेरा दूर जाओ
सन का डेरा इधर आओ
हे ! देवी कृपा कर
सुई-धागा लेकर दूर जाना
सुवा-सुतली लेकर इधर आना
हे ! देवी कृपा कर ।"

(5)

छोरान समझायेर गीत (बच्चे को समझाने का गीत)

झर मर झर मर पाणी पडये
झर मरियासो झंडा झूले
नाणीक्यासो बाळा
झोकीमा करतो प्याळा
झर मर झर मर पाणी पडये
झर मरियासो झंडा झूले
बाईरो लाडेरो बाळा
बापूति करतो प्याळा
झर मर झर मर पाणी पडये
मारो हूँसेरो बाळा
याडीती करतो प्याळा ।

"रिम-झिम वर्षा हो रही है
रंग-बिरंग का झंडा झूल रहा है
उस झंडे को देख कर नन्हा खेल रहा है
रिम-झिम वर्षा हो रही है
रंग बिरंग का झंडा झूल रहा है
बाई का लाडला पुत्र अपने पिता से प्यार कर रहा है
रिम-झिम वर्षा हो रही है
मेरा प्यारा बालक अपनी माँ से तमाशा कर रहा है ।"

§ 6 §

छोरान सोवारेर गीत §बच्चे को सुलझाने का गीत§

सोजो सोजोरिया, हालो हालोरिया
बापूरो मामा कोमटया । हररररर ··· हालो ···
बाईये कुणसी बाईरो बाळा रोरोचे
बाईये नीला बाईरो बाळा रोरोचे ।
बाईये ताई संत्रा बागेमा घाली घोरी झोळी
बाईये बाळार कापे बार्या रकाडी
बाईये बाळा समजेनी, बार्या कूरेनी ।[3]

"सोजो सोजोरिया, हालो हालोरिया §यहाँ सोजोरिया,
और हालोरिया बच्चे का नाम है"§
बालक का मामा बनिया है । हररर ··· हालो ······
दीदी कौनसी बाई का बालक रो रहा है
नीला बाई का बालक रो रहा है
बाई । संत्रा की बाग में बालक के लिए झूला बाँधकर
नौकर को नियुक्त किया है
परन्तु बालक नहीं समझ रहा है अब नौकर की कोई
आवश्यकता नहीं है ।

3· धीरावत रंगो बाई - बोम्मल रामारम, जिला - नलगोण्डा

(7)

छोरान सवारनो (बच्चे को सुलाना)

हालो हालो कर गी
सोजो सोजो कर गी
बाळा न सवार गी
काँई दगो देगी
बाळा न बाई ए ।[4]

* हालो-हालो करके चली गयी
सोजा-सोजा करके चली गयी
बालक को सुलाकर चली गयी
क्या दगा करके चली गयी
बालक को बाई ।

---

4. धीरावत रंगी बाई बोम्मल रामारम जिला - नलगोण्डा ।

सगाई

§ 8 §

गोळ खायेर पचार §गुड/मिठाई खाते समय की पचार/गीत§

बंजारा समाज में विवाह से पहले सगाई अनुष्ठान होती है । सगाई के अवसर पर सगे-संबंधियों की जमघट सभा सुशोभित है । यह सभा टांडे के बाहर वट वृक्ष या किसी बाग में गोळ खाने के लिए अर्थात सगाई पक्की करने के लिए इकत्रित होते हैं । इस समय जो पद्यात्मक उक्तियाँ कही जाती हैं, वह इस प्रकार हैं --

सामळोर भाईन-सगा, पंच पंचायत राजा भोजेरो सभा, पचारे लाकन पचारे सवा लाख । भाईन-सगे से पचारे जोगत ।

§अ§ मन चंगा तो काकोटीजमा गंगा - और नायक
अजी काँई कूं ? केतीज जो नायक !

§आ§ काळी कोबल मोती भक्यो माई बराज राम, डाई-जमण छोड सगा,
तार दर्शन ती काम - और नायक
अजी काँई कूं ? केतीज जो ।

§इ§ सोनन की थाळी रुपन की बाती सीतळ भाई की छाती, येयी सगा की
छाती - और नायक
फेर काँई कूं ? केतीज जो !

§ई§ गढ कोटा में गढ कांकरा, हातीज पर अमेरी ढाल, अस्सो मारो सगा
तो हीराज माँईरो लाल - और सगा
अजी काँई कूं ? केतीज जो नायकम !

(उ) तल्मापेती आयो हाती, ऊँबर छ लाल मोती और नायक
फेर काँई कूँ ? केतीज जो नायक ?

(ऊ) जगत मंडो चाँदन-सूरत चाल चमातोती - और नायक
अजी काँई कूँ ? केतीज जो नायकण !

(ए) सेक लगाईन ऊँ धे काँटा, माँईच छ दूदाडा, दूद कूँ मडूं
मळ्यो सेगासण - और नायक
अजी काँई कूँ ? केतीज जो !

(ऐ) कागदेरी छ पूरी माँईच छ कस्तूरी, से जातेन वेजा पूरीज पूरी - और नायक
अजी काँई कूँ ? केतीज जो !

(ओ) लगा माती करमत दगा, हाटो फरन भाटा मत बगा. और नायक
अजी काँई कूँ ? केतीज जो !

(औ) घोडेर कान दोई बराबर, सेगासण दोई बराबर और नायक
फेर काँईकूँ ? केतीज जो !

(क) हरी टोपी दवाको झगा, दूर देशेती आयो मार लगा, अस्सो लगा
आयोतो, हीराज माँईरो लाल हात्या-सेगासण - और नायक
फेर- काँई कूँ ? केतीज जो !

(ख) काँई किया नायक गोरूर छाँ, सण-सुतली खिल्ला, क्यास्या मटीकला,
पवनेरी मारी मटडीर पड्जा, सण सुतली रेजा नायक ।

(ग) माटीर सो वाटे, खाटेर एकज वाट और नायक
अजी कोंई कूं ? केतीज जो ।

(घ) जाग-जम्मीर टस्सा नायकूर येज पस्सा नायक, थाळी दीने-कोचक
दीने वार दीने बेटी सगे न, सग-मल्ला कत्तीज न कीरयाँ खोटी ।

(च) आँगे घालूं गोळ लार घालूं खंड, से मीटोज-मीटो आँगेर जलम कूण
दीटो - और नायक
अजी कोंई कूं ? केतीज जो नायकण ।

(छ) हाँस मीरयाँ तो धाँस मीरया, पूर मीरयाँ तो वाँस मीरयाँ,
मरद मीरयाँ तो नेकीन-बद्दी दीज नायक ।

(ज) वर्ली आँतर पर गुंताई, वर्ली आँतर वर गुंताई भोळ-ढाळ तार
ख्वाळ घालोपूँ, येर सरम तार ब नायक
आचकी ।[5]

" सुनो भाईयों और सगे ! पंचों की पंचायत सभा राजा भोज की
सभा के समान है
एक लाख हो अथवा सवा लाख, सब पधारते हैं
इसमें भाईयों और सगे सभी पधार सकते हैं ।

5· करमटोत हीरया नायक - मक्काराजी पेट - जिला : मेदक

(अ) मन चंगा तो कठौती में गंगा - और नायक
और क्या कहूँ ? -- कहते रहना नायक

(आ) काली कोयल की मोती सी राग, उस राग में राम, बाएँ-दाएँ
छोड सगा, अब तेरा दर्शन से ही काम - और नायक
और क्या कहूँ ? कहती जो

(इ) सोने की थाली, चाँदी की बाती, शीतल भाई की छाती
यही है सगा की छाती और नायक
फिर क्या कहूँ ? कहती जो

(ई) राज महल का हीरा, हात में अमेरी ढाल, ऐसा है मेरा सगा जैसे हीरे
के अंदर का लाल हो - और नायक
और क्या कहूँ ? कहती जो नायकिन

(उ) जगत (देश) का उद्भव-विकास चाँद और सूर्य से ही चला आ रहा है -
और नायक
और क्या कहूँ ? कहती जो नायकिन

(ए) पंचों के समक्ष सगाई निश्चित की है, ऊँचे - ऊँचे पेड पर लंबे-लंबे
काँटा, पेडों के भीतर से ही आ रही है दूद (मेंदी) की धार,
जैसे दही जमती है, उसी तरह मिलना है सगा - और नायक
और क्या कहूँ ? कहती जो

(ऐ) चिट्ठी में कस्तूरी की सुगन्ध समाई हुई है, सब जाति में यही
परंपरा - और नायक
और क्या कहूँ ? कहती जो ।

(ओ) सगा मुझसे मत कर दगा, लौटकर पत्थर मत फैंकना और नायक
और क्या कहूँ ? कहती जो ।

(औ) घोडे का कान दोनों बराबर, सगे दोनों ही बराबर और नायक
फिर क्या कहूँ ? कहती जो ।

(क) हरे रंग की टोपी-सफेद कुर्ता, दूर देश से आया मेरा सगा
ऐसा है मेरा सगा जैसे हीरे के अंदर का लाल,पक्का सगा
फिर क्या कहूँ ? कहती जो ।

(ख) क्या कहना है नायक बंजारे (गोर) हैं, सन-सुतली किला,
कोर (बंजारा ना हो) लोगों में मटकिला, गरमी में मटडी (गंजा)
झड जाती है, सन सुतली रह जाती है नायक ।

(ग) मनुष्य के सौ रास्ते, खाट का एक ही रास्ता और नायक
और क्या कहूँ ? कहती जो ।

(घ) जगाह-जमीन नायकों के भी यही प्रथा है नायक, थाली दिये कटोरा दिये,
दे दिये बेटी सगे को, कहीं भी नहीं करेंगे खोट ।

(च) पहले डालू गुड और बाद में डालू खाँड सब मीठा ही मीठा, आने वाला
भविष्य कौन देखा - और नायक
और क्या कहूँ ? कहती जो नायकिन

(छ) हँस मरेंगे तो भाग मरेंगे, गरीब मरेंगे तो बाँस मरेंगे, मर्द मरेंगे तो
अच्छा और बुरा दो ही है नायक ।

(ज) इधर की आँतडियाँ उधर और उधर की आँतडियाँ इधर गूँथी गई हैं,
भोली-भाली को तेरे पल्ले बाँध दिया हूँ, इसकी शरम तेरी ही है नायक
अच्छा कही । "

॥ १ ॥

छोरीन देकणो ॥ कन्या दिखावन ॥

मेदी पीटी पीसिए कुँवार कीनया
जरा दूरेती देकोरे लोक दीनया
कानेमा घाली सोनेर कीनया
ओन देकेन आयेच आलम दीनया
आन हूबरेगे झगाळो मानिया
जरा दूर तो हट रे पीसाळो मानिया
मेदी पीटी पीसिए कुँवार कीनया
जरा दूरेती देकोरे लोक दीनया । [6]

" मेहंदी रची हुई कुँवारी कन्या
जरा दूर से देखो हे ! मेहमानों
कानों में पहनी हुई है सोने की बाली
उसे देखने के लिए आये हुए है ! अतिथि
आकर खडा हुआ कुर्ता वाला मानिया
जरा दूर से देखो हे ! पैसे वाले मेहमान
मेहंदी रची हुई कुवाँरी कन्या
जरा दूर से देखो हे ! मेहमानों ।"

6· वांकडोत कमला बाई- नाचारम - जिला - रंगा रेड्डी

वाया (विवाह)

(10)

गरुर दाग (गोसाई बाबा की पूजा)

इस गीत में वर को उसकी वंशावली के अनुसार सुई को दीप के ऊपर गरम करते हुए इन पंक्तियों को सात बार बोलने के बाद गोसाई बाबा के नाम से बांए भुजा पर दाग देते हैं। रास्ते में पातळ्या जैसे भूत-पिशाच आदि से बचने के लिए इस प्रकार से दाग दिया जाता है, गीत इस प्रकार है--

क्याळी आव क्याळी जाव
क्याळीर माई जग समाव
माईच पूजा माईच पाती
माईच पूजण हार
धोळो घोडो हांसलो
पातळ्या सवार
मुंगे अवडा मोगरा
तल्ली अतरा भार
गोसाई बाबा सदार सदार

"बार बार आता है और चला जाता है
घुड सवार से ही फिरता रहता है
वह घोडे पर ही पूजा
घोडे पर ही पाती और वहीं पर भोजन
घोडा सफेद है, नाम है हांसला
पातळ्या नामक सवार करता है
पातळ्या के पास मूंग के जैसे तत्व साधन "मोगरा" है
उसे बहुत बडा भार सौंपा गया है
गुरु बाबा सदा अमर रहे।

॥ 11 ॥

दादी-दादाऊन धोकणो ॥ दादी-दादाओं को पूजना ॥

जे बोलो दादी-दादा हमार देवता साई वीजो
या कलान पत्तर दादा तू लेस
या ररर्रा भोजु दादा तू लेस
या खीमा दादा तू लेस
या लक्का दादा तू लेस
या कसना दादा तू लेस
या कोका दादा तू लेस
या पाँडा दादा तू लेस
या रामा दादा तू लेस
या रामचन्द्र दादा तू लेस
या जोगा दादा तू लेस
या कपूरी दादी तू लेस
या धमडी दादी तू लेस
या हाँसकी दादी तू लेस
या सामणी याडी तू लेस
या पट्नी याडी तू लेस[7]

जै बोलो दादी-दादा हमारे देवी-देवता, कृपा कीजिए
हमारा पूजा
अर्चना स्वीकार कीजिए ।

---

7. वाँकडोत तार्या नायक - गाँव लक्ष्मक्का पल्ली जिला - वरंगल

" या कलान पत्तार दादा तू स्वीकार कर
या एररी भोजु दादा तू स्वीकार कर
या खीमा दादा तू स्वीकार कर
या लक्का दादा तू स्वीकार कर
या कसना दादा तू स्वीकार कर
या कोका दादा तू स्वीकार कर
या रामा दादा तू स्वीकार कर
या रामचन्द्र दादा तू स्वीकार कर
या जोगा दादा तू स्वीकार कर
या कपूरी दादी तू स्वीकार कर
या धमडी दादी तू स्वीकार कर
या हँस्की दादी तू स्वीकार कर
या सामणी याडी (माँ) तू स्वीकार कर
या पटूनी याडी (माँ) तू स्वीकार कर ।"

§ 12 §

टेळो § सामूहिक भोजन §

विवाह के अवसर पर वर के घर सामूहिक भोजन आरम्भ करने से पहले यह गीत §पचार§ सुनाया जाता है ।

सामळोर भाईन-सगे
पंच-पंचात राजा भोजेरो सभा, पधारे लाकन-पधारे सवा लाख
भाईन सगे से पधारे जोगत
अपालकी भाजी रांदे, तूंबडी का तेल, रागी का रोटी,
बरंकी दाळ
सोने की झारी, फू ला वण्णेधान, चांपा वण्णी दाळ,
मोती वण्णी घी
कडकडियासो मळावो ब्याटो
टोक्ण उतरे एक सो सात
अन्नेर पडगि रासी, फे रन पड्गी वाट
घोटासेरो नोक्ता वोचे
कोडियी कम-जादा, बक्सिस करलो नायक [8]

" सुनो भाईयों और सगे
पंचों की पंचायत सभा राजा भोज की सभा के समान है,
एक लाख हो अथवा सवा लाख सब पधारते हैं

8· वाँकडोत साम्या नायक गाँव – लक्ष्मक्का पल्ली जिला – वरंगल

इसमें भाईयों और सगे सभी पधार सकते हैं
अपालकी भाजी, अच्छा तेल, महुआ की रोटी, तुवर की दाल
पकाए गये हैं
सोने की झारी, पकाये हुए चावल, अच्छी पकी हुई दाल
और घी, स्त्री-पुरुषों की सभा बैठी हुई है
पकाये गये चावल के एक सौ साठ घड़े हैं,
अन्न की ढेर (राशि) को फेरते - फेरते बनगई बाट
छोटा सा अनुष्ठान हो रहा है,
यदी इनमें चम्मच कम-ज्यादा हो तो क्षमा करके
भोजन आरम्भ कीजिए ।"

§ 13 §

याडीर सीख § माँ की सीख §

बेटा भारी वेन बेसेस
होळी वेन ऊटेस
बेटा बापेतीर नाम रकाडेस
केनी पांच आंगळी मत दिकाळेस
केनी हाँसन दाँत मत दिकाळेस
कोषळेती जान कोषळेती आयेस
बेटा आपण टांडेर नाम रकाडेस
आपण नायकेर नाम रकाडेस
बेटा हाँसी खुशीती जान आयेस बेटा ।

" बेटा गौरवप्रद से बैठना
मेहमान लोग आते ही तुरन्त उठकर खड़ा हो जाना
बेटा बापू जी के नाम रखना
किसी को पांच उंगलियाँ मत दिखाना
किसी को हाँसकर दाँत मत दिखाना
क्षेम से जाकर क्षेमी से आना
बेटा अपने टांडे का सम्मान रखना
अपना नायक का नाम रखना
बेटा हाँसी-खुशी से जाकर आना बेटा ।"

(14)

मंडवडो (मंडप)

तारो बापू केरो मंड वडो
हरेकिया केरो मंड वडो
तार याडी केरी मंड वडो
हरेकिया केरो मंड वडो
तारो काका केरो मंड वडो
हरेकिया केरो मंड वडो
तारो दादा केरो मंड वडो
हरेकिया केरो मंडवडो
तारो भीया केरो मंड वडो
हरेकिया केरो मंडवडो
तारो गुपिया केरो मंड वडो
हरेकिया केरो मंड वडो ।

तुम्हारे बापू का मंडप हरा भरा है
हर एक आदमी कह रहा है
तुम्हारी माँ की मंडप हरा भरा है
हर एक आदमी कह रहा है
तुम्हारे काका की मंडप हरा भरा है
हर एक आदमी कह रहा है
तुम्हारे दादा के मंडप हरा भरा है
हर एक आदमी कह रहा है
तुम्हारे बडे भाई का मंडप हरा भरा है
हर एक आदमी कह रहा है
तुम्हें चाहने वाले का मंडप हरा भरा है
हर एक आदमी कह रहा है

याडीर झुरणो § माँ झुरना §

लडकारे ! बेफगरेरो जीवडा
फगरेमा पडगो
पीलारे ! तो न कन्नाई कोनी साँसी
आजेती साँस दीनी
तोन जातेरी घर मेली
बेटा रे ! हडदेन काटो
करलेन जान आजो पीला

" हे ! लडका, बे फिक्र का जीवन
फिक्र में पडगया
बेटा ! तुझे कभी दु:ख नहीं दिया
परन्तु आज से दु:ख में डाल दिया
तुझे दूसरी जाति के घर रवाना कर रही हूँ
बेटा ! हिम्मत से जाकर खुशी से आना । "

§ 16 §

हेलेर रुपया § एक रुपये का सिक्का §

बाबा "हेलेर रुपया" लगटेपर अर्थात विवाहित चार व्यक्ति मिलकर वर के उपरनी को जमीन पर बिछाते हैं और एक रुपये का सिक्का उपरनी पर बीच में रखते हैं। और बाबा को अर्चना करते हैं।

बाबा हेलेर रुपिया लगटेपर
बाबा हेलेर रुपिया लगटेपर ।
बाबा हेलेर रुपिया मोळ्या पर
बाबा हेलेर रुपिया मोळ्या पर ।

"बाबा जी हेलेर रुपये सभी लोगों के समक्ष में हैं
बाबा जी हेलेर रुपया उपरनी पर बीच में रखा गया है।"

॥ 17 ॥

तारी ढाले बेराजीरे ॥ ढाल की सराहना ॥

तारी ढाले वेराजीरे
पंतिया चलो चालो
तारी ढाले वेराजी रे
पंतिया डगरे चालो
वेतडू चलो चालो
वेतडू डगरे चालो
धूलो संदाणी मेली
चालो रे पंतिया डगरे चालो ।

" तेरी ढाल विजयी रहे
वर तुम चला जा रहे हो
तेरी ढाल विजयी रहे
वर जा रहे हो, वर चला जा रहा है
पंथी आगे बड रहा है
आगे उनकी ॥विवाह॥ तयारियाँ पूरी हो गयी है
बड रहा है, पंतिया ॥पंथी॥ आगे बड रहा है
तेरी ढाल विजयी रहे
वर चला जा रहा है ।"

§ 18 §

वेतडू रवाना § वर रवाना §

आंग छ तारे ससरेरो मळाओ
हाता जोडी होक्का देलराए पंचमेरो पंतिया
आंग छ तारे साळेंरो मळाओ
हाता जोडी रामी रामी करलराए पंच मेरो पंतिया
आंग छ तारे सासुवूंरो झूरलो
ऊटकी बेसकी करलराए पंचमेरो पंतिया
आंग छ तारे साळिऊंरो झूरलो
हाता जोडी रामी रामी करलराए पंच मेरो पंतिया
आंग छ ओची तलावडी, ओमा कर असनाल
धोती धोलराए पंचमेरो पंतिया ।

" आगे है तेरे ससुरों के समूह, हाथ जोडकर हुक्का प्रधान करना,
पंचों के पंथी
आगे है तेरे सालों के झुंड, हाथ जोडकर राम-राम करलेना है
पंचों के पंथी
आगे है तेरी सासों की झुंड, उनसे मर्यादा पूर्वक व्यवहार
करना है, पंचों के पंथी
आगे है तेरी सालियों की झुंड, उन लोगों से भी सस्नेह
पूर्वक राम-राम करलेना है पंचों के पंथी
आगे है ओची ﴾बावली का नाम﴿ बावली, उसमें स्नान
करके धोती धोलेना, पंचों के पंथी ।"

§ 19 §

वेतडून वाट लगावणो § वर को टांडे से बिदा करना §

राम निकळो टांडेर बार बाईए
रामेरो सेना रवाना करॉं बाईए
वेतडू निकळो वायान बाईए
वेतडूर सेना रवाना करॉं बाईए
पंतियार सेना रवाना करॉं बाईए ।

" राम निकला है टांडे के बाहर बाईयों
राम की सेना को रवाना करेंगे बाईयों
वर निकला है विवाह के लिए बाईयों
वर की सेना को रवाना करेंगे बाईयों
पंथी की सेना को रवाना करेंगे बाईयों ।"

(20)

वेलड़ तू घमकेस मत (पर तू डरना नहीं)

तू घमकेस मतरे भोळेकिया
तू डरेस मतरे भोळे किया
तार लारे तारे भीयावूँरो
मळाओ घलो आवघ
तू घमकेस मतरे भोळेकिया
तार लारे काकावूँरो
मळाओ घलो आवघ
तार लारे दादावूँरो
मळाओ घलो आवघ ।

" तू घबराना नहीं भोला-भाला,
तू डरना भी नहीं
तेरे साथ तेरे भाईयों का झुंड आ रहा है
तू घबराना नहीं बालक
तेरे साथ तेरे काकाओं का समूह आ रहा है
तेरे पीछे तेरे दादाओं का समूह भी आ रहा है ।"

§ 21 §

पंतिया चलो धालो § पंथी चला जा रहा है §

पंतिया चलो धालो कोडला भूली चालो
वोरे कोडला पर दम खिंचाई चालो
वोरे नंगरी पर धूम नचाई चालो
पंतिया चलो चालो बरची भूली चालो
वोरे बरची पर दम खिंचाई चालो ।
वोरे नंगरी पर धूम नचाई चालो ।
पंतिया चलो चालो कमदोरो भूली चालो
वोरे कमदोरे पर दम खिंचाई चालो
वोरे नंगरी पर धूम नचाई चालो । [1]

" पंथी चला जा रहा है, उसका कटा भूल जा रहा है,
उनके कटे पर दिल खींच रहा है
उनके तांडे को सूना करके जा रहा है
पंथी चला जा रहा है, उसका त्रिशूल भूल जा रहा है,
उसके त्रिशूल पर दिल खींच रहा है
वह टांडे को सूना करके आगे बड़ रहा है
पंथी चला जा रहा है
उसका कम्मर पट्टी भूल जा रहा है
उनके टांडे को नाथ नचाकर चला जा रहा है ।"

---

1. आमगोत सुक्की, नरसम पेट, जिला - वरंगल

§ 22 §

हुक्कार पधार § हुक्का की पधार/गीत §

यह गीत §पधार§ वधू के टांडे में नायक को हुक्का प्रधान करते समय गाते हैं । पधार इस प्रकार है ---

सामळोर भाईन सगे
पंच-पंचात, राजा भोजेरो सभा
पधारे लाकन पधारे सवा लाख
भाईन-सगे, सेन पधारे जोगत,
हेट गम, ऊँपर तम्ब,
तम्बेपर अमेरी,
अमेरी मा कस्तूरी,
कस्तूरी मा लाल,
क्वारमा घुट्टा ग्वारमा हुक्का
लो नायक हुक्का । [10]

" सुनो भाईयों और सगे
पंचों की पंचायत सभा राजा भोज की सभा के समान है
एक लाख हो अथवा सवा लाख सब पधारते हैं
इसमें भाईयों और सगे सभी पधार सकते हैं
नीचे नली, ऊपर स्तूप,
स्तूप के ऊपर हुक्का,
हुक्का में तम्बाकू,
तम्बाकू में अंगार,
इतर §कोर§ लोगों में घुट्टा, §देशी सिगार§ बजारों में हुक्का,
लीजिए नायक हुक्का । "

10· कुरसोत सूर्या नायक - खम्मम

§ 23 §

कोतळो धरेमा लेणो § बराती को स्वागत करना §

" जोगा नायकेरो टांडो हरियों
अम्बराईरो आम्बा मोरियो ।"

झण्गारिया लाल ख्याळ धालिसतो
ब्यासियाँ मारो लाल
झण्गारियो लाल बाई बाई कीसतो
ब्यासियाँ मारो लाल
झण्गारियों लाल पगला पडियतो
ब्यासियाँ मारो लाल
झण्गारिया लाल धोकूं धोकूं कीसतो
ब्यासियाँ मारो लाल ।

" जोगा नायक का टांडा है, हरिया
टांडा हरा भरा है ।"

झण्गारिया लाल § वर को तरह तरह के नामों से उसकी
सालियाँ बुलाती है § ओढनी बिछाने से हम बैठेंगे लाल
झण्गारिया लाल बाई बाई § दीदी-दीदी § कहने से हम बैठेंगे लाल
झण्गारिया लाल पैर छूने से बैठेंगे लाल
झण्गारिया लाल हाथ जोड़कर नमस्कार करने से बैठेंगे लाल ।"

§ 24 §

फीकी मोई § फीकी मिठाई §

इस गीत में " मोई " § मिठाई, जो चावल के आटे में घी, गुड, लौंग, इलायची आदि डाल कर बनाते हैं, उसे मोई कहते हैं § इस मोई को वर की माँ भेजती है । इस मोई पर स्त्रीयों की प्रतिक्रिया है, कि मोई में पर्याप्त मात्रा में गुड नहीं है, यह फीकी है । इस प्रकार वर के सम्मुख उसकी माँ को गालियाँ भरी गीत गाती हुई छिड़ाती हैं । गीत इस प्रकार है --[1]

फीकी मोई देमेलिये, मारी स्वाक अमरिये
मोयीमा गोळ कोनी घालिये वडाळ
गामेर कोमटियान धणी कॉई कीदिये वडाळ
मारो कॉई परीचाओं दीटिये छंदाळ ।

" फीकी मोई § मिठाई § भेजी है, मेरी सौतेली अमरी
मोई में गुड नहीं डाली है
गाँव के बनिया को पति करलेना था, गुड के लिए
मेरी क्या परीक्षा देखी है, हे ! छिनाल ।"

---

[1] घुगुलोत खीरी बाई गाँव - मदनतुर्ती, मंडल - नेल्लीकुदुर
जिला - वरंगल

घोटा

§ 25 §

घोटार पचार § घोटा अनुष्ठान का पचार / गीत §

यह गीत § पचार § "घोटा" § पेय पदार्थ § अनुष्ठान के अवसर पर बोला जाता है ।

सामळोर भाईन-सगे
पंच-पंचात राजा भो जेरो सभा
पचारे लाकन-पचारे सवा लाख भाईन सगे
सेन पचारे जोगत
रत्तांजनेरो सोटा, घसन काडे घोटा
पचास माटीन सवा सो लोटा
वेतडू डुबो आनेती
घोटा फ़रे मानेती लो नायक घोटा ।[12]

"सुनो भाईयो और सगे
पंचों की पंचायत सभा राजा भोज की सभा के समान है
एक लाख हो अथवा सवा लाख सब पचारते हैं
इसमें भाईयों और सगे सभी पचार सकते हैं
चंदन के मूसल से घसकर बनाये हैं घोटा
पचास पुरुषों को सवा सौ लोटा
वर खड़ा हुआ है गौरव प्रद से,
घोटा को फेर रहे हैं मर्यादा पूर्वक, लोनायक घोटा ।"

12· माळोत चंद्रु नायक गाँव - इनुगुर्ती, जिला - वरंगल

(26)

थाळी भाँदणो (पंगत की पंक्ति)

यह पहेली " टेळो " (सार्वजनिक भोज) के अवसर पर टांडे की एक महिला खाने की थाली, पानी पीने की झारी बैठने का पाट, मन की बातें पंगत की पंक्ति में पुरुषों को भोजन करने से पहले सुनाती है । पुरुषों को पहेली का जवाब पहेलो में ही देना है ।

खाने की थाळी भाँदू
पीने की झारी भाँदू
बेसेर पीडिया भाँदू
सर-सगट का मोळ्या भाँदू
मन मनेरी वाते भाँदू
येर वहोह केदर नायक
पच भोजन खाले ।

" खाने की थाली बाँधू
पीने की झारी बाँधू
बैठने का पीढा बाँधू
पंचों के समक्ष, मन की बातें बाँधू
इस पहेली का अर्थ देकर बाद में भोजन कर लेना । "

§ 27 §

थाळी छोडणो § पंगत की पंक्ति का उत्तर §

मंगाळा क म हेट बेटो
टोक्णो क म ऊपर बेटो
अंगार क म हेट बेटो
पाँची पक्वान नरम कर बेटो
मत भांद नायकण पंचूरी थाळी
ई भोजन मार मंडेती छूटो ।

" मंगाळा § चूल्हा, तीन पत्थर § में जमीन पर बैठा
टोकणो § घडा § में पत्थरों पर बैठा
अंगार § अग्नि § में मंगाळा के बीच में बैठा
यह पाँच अर्थात तीन पत्थर, एक घडा और अंगार, पंचों मिलकर
चावल को पकाये हैं
मत बाँध नायिकन पंचों में थाली
यह भोजन मेरे मुँह से छूट जाएगा ।"

§ 28 §

छोरीन रुपया मानणो § कन्या को रुपये भेंट करना §

वर के पिता के द्वारा वधू को मान-सम्मान से रुपये भेंट करने की एक प्रक्रिया है । इस अवसर पर वधू की सहेलियों की जमघट होती है, और गीत गाती हैं । गीत इस प्रकार है --

फाटीसि कोतळीमा खोटोसो रीपया
रीपया माने न आयो बुडो डोकरा
तारे रीपया न द्दू कोनी मान
रीपया छळो छळो जा
रीपया माने न आयो
मुचाळो डोकरा
तारे रीपया न मारू एक हात
रीपया माने वाळो रोतो रोतो जा ।

"फटी हुई जेब में एक ही रुपया
रुपया भेंट करने आया बूढा
तेरे रुपये को मान नहीं देंगे
रुपया छलक नीचे गिर जायेगा
रुपया भेंट करने आया मूँछ वाला बूढा § डोकरा §
तेरे रुपये को मारूँ एक थप्पड
रुपया भेंट करने वाला रोते हुए चला जाना ।"

§ 27 §

छोरीर घोटा काडणो §घोटा बनाना §

प्रस्तुत गीत में टांडे के नायकों को " घोटा " §पेय पदार्थ §घोलने के लिए और घोटा घोलकर पीने के लिए निंदासूचक हँसी-मज़ाक से यह गीत गाती है, गीत इस प्रकार है --

चारों नायक चाकम ब्याटे
आवो नायक घोटा घोळो
घस घस घोटा घोळो
लोट लोटा भी पीओ ।

" चारों नायक एक स्थान पर बैठे है
आओ नायक घोटा घोलो
घस-घस के घोटा घोलकर
लोटा-लोटा भी पीयो ।"

§ 30 §

घोटा पे,रणो § घोटा पे,रना §

बाईये सातपूर काडरे घोटा
बाईये भीयावून पे,ररे लोटा
बाईये मळायेमा, झूरलेमा फ,ररे लोटा
बाईये सातपूर काडरे घोटा
बाईये भीयावून फ,ररे लोटा ।

" बाईयों §बहनों§ सहेली की " घोटा " अनुष्ठान के
अवसर पर घोटा बना रहे हैं
बहनों, भाई लोगों को पिला रहे हैं लोटा से
बाई पुरुषों के समूह में और महिलाओं के झुंड में फिर रहे है लोटा
बाई सहेली के विवाह का घोटा बडे भाईयों को फिर रहे हैं लोटा । "

§ 31 §

हळदीर टीको § हल्दी का टीका §

भीया रे हळदीर टीको
मन कोनी छाजे
चांदणेरो टीको मन च्याये
वीरेषा रे आपणे बापूरो लेको छोडन
वराणे पंतियारो लेको मत झलाओ
तमारी भेनडेन वराण मत करो वीरषा ।

" भैया ! दूसरी जाति का टीका मुझे नहीं चाहिए
चंदन का टीका मुझे चाहिए
भाई रे अपने बापू का घर छोडकर
दूसरे पंथी का घर मत हवाले करो
तुम्हारी बहन को पराया मत करो भाई । "

§ 32 §

गरतणी छोडणो § पैर की आभूषण छोडना §

लडकी को दुल्हन बनाने से पहले " गरतणी " § लालडी से पिरोकर पैर की एडी पर बांधती है § को उतार दिया जाता है । जब उनकी सहेलियाँ गरतणी उतारते समय वधू रोती हुई सहेलियों से " ढावलो " § रुदन § करती है ।

जावेणो आहियाँ, आजे जे मारी गरतणी तोडन
वूमेसी भ्यानडेन भांदा करेन छोडरीचो जावणो
मुंगा-मोलाई, दाम चुकाई गरतणी तम मत
तोडो जावणो आहियाँ
मारी गरतणी छूटीन तम से जनमेती छूटी
मारी हूंसणे जावणो आहियाँ
मारे हूंसी भीयार हातेरी गरतणी
सोने चांदीती मूंगी मत छोडो जावणो आहियाँ
जावेणो तमारी गरतणी टूट जायेतो फ रेन
पोरोलेन भांदलीयो पणेन, मारी
गरतणी टूट जायेतो कुण पोरोन भांदीये जावणो
मारे मारेवाडी वीरेणारी हातेरी गरतणी जावणो
मारी कुंवारी पणेरी गरतणी कना पोरोन
पेरीयूं जावणो आहियाँ । [13]

13· नूणावत धम्पली घेवेल्ला - जिला - रंगा रेड्डी

" सखी ! हीं हीं, आज मेरी गरतणी तोडकर
कौनसी बहन को बाँधने के लिए छोड रही है,
बहनों, उसे मोल करके, दाम चुकाई गयी गरतणी तुम लोग मत
छोडो बहनों हीं हीं
मेरी गरतणी छूट गई तो, तुम लोग भी मुझसे जन्म भर छूट
जाओगी मेरी प्यारी सहेलियों हीं हीं
मेरे प्यारे भाई के हाथ की गरतणी
सोना-चाँदी से भी महंगी, मत छोडो सहेलियाँ हीं हीं
सखी तुम्हारी गरतणी टूट जायेगी तो फिर पिरोकर बाँध लोगी
परन्तु मेरी गरतणी टूट जायेगी तो कौन पिरोकर बाँध सकती है
सखी ।"

❘ 33 ❘

नवलेरीर मातो छोडणो ❘ कन्या की वेणी को छोडना ❘

याडीयेजे मारी कुँवारी पणेरी
गुँती–गुँताई हूँसेरी पटणी
मत छोडो याडियो आहियाँ ।
भावेजे मारी याडीवूर हातेरी
मेरकीन पटणी मत छोडो भावजो ।
मारी भावेजे हूँसे–मंडेती
लटा–लटा न सदारन वणासी
पटणीन तम छोडन मन
फ़गरेमा मत घालो भावजो आहियाँ ।

"माता, मेरी कुँवारीपन की गूँथी हुई
प्यारी वेणी को मत छोडो माता हीं हीं
भाभियों मेरी माँ की हाथ से गूँथी गई
वेणियों को मत छोडो भाभियों
मेरी भाभियों ने प्यार से एक–एक बाल को सवाँरकर गूँथी
इस वेणी को छोडकर
मुझे फ़िक्र में मत डालना भाभियों हीं हीं ।"

(34)

छोरीर हंगोळी (रात) : कन्या को नहलाना (रात)

छोरी वेतीति जन्ना
हड हड - खंड खंड
करतीति चल छोरीये
काकोटी चढ ब्याटी
छोरी वेतीति जन्ना
दाँतयान मसिया
लगाडतीति चल छोरीये
गोडिया दाबे ब्याटी
छोरी वेतीति जन्ना
गटला गटला, भाटा भाटा
कूदतीति चल छोरीये
काकोटी चड ब्याटी ।

" कुवाँरी थी जब हड-हड
खड-खड
करती थी
हे ! वधू अब कठौती पर चढकर बैठी
कुवाँरी थी
जब दाँतों पर कोयला
लगाकर घिसती थी ।
हे ! वधू अब घुटना दबाकर बैठी
कुवाँरी थी
जब पत्थर पत्थर
पहाड-पहाड फिरती थी
हे ! कन्या अब कठौती चढकर बैठी ।"

वेतडूर हंगोळी §रात§ वर को नहलाना §रात§

मंडप में नहाने का पीढा रख कर वर की सालियाँ और टांडे की लडकियाँ वेतडू §वर§ को छिडाती हुई नहाने के लिए उठाती हैं । हंसी-मज़ाक में यह गीत गाती हैं --

ऊ टराये गोबरेरो पोट्टा
गाँगिलरो बेटा, टूरिया
हंगोळी करले
ऊ टराये गुंटकारो मोट्टु
गुजरीरो लडका, टूरिया
हंगोळी करले ।

"उठ हे ! गोबर का पोट्टा
गाँगलो के पुत्र टूरिया, स्नान करले
उठ हे ! लकडी का ठूसा
गुजरी का लडका टूरिया
स्नान करले ।"

§ 36 §

वेतहून हंगोळो - वर को नहलाते समय गीत

छोरा वेतोतो जन्ना
हड-हड खड-खड
करतो तो चल छोरा रे
काकोटी चडे ब्याटो
छोरा वेतोतो जन्ना
गट्ला-गट्ला भाटा-भाटा
कूदतो तो चल छोरा रे
गोडिया दाबे ब्याटो
छोरा वेतोतो जन्ना
गोडा-गोडा वाड-वाड
थांस तो तो चल छोरा रे
गोडिया दाबे ब्याटो

" कुवाँरा था
जब हड-हड, खड़-खड, करता था
हे ! वर अब कलौती चढकर बैठा
कुँवारा था,
जब पत्थर-पत्थर, पहाड-पहाड कूदता था
हे ! वर अब घुटना दबाकर बैठा
कुवाँरा था
जब दीवार-दीवार, इधर-उधर फिरता था
हे ! वर अब घुटना दबाकर बैठा ।"

डोरण भांदणो § डोरी बांधना §

विवाह में वर-वधू के स्नान के दो अवसर होते हैं। पहला स्नान मध्य रात्री और दूसरा स्नान मध्याहन को । रात के स्नान के बाद वर और वधू को, कच्चे दागे का हार बनाकर वर और वधू के गले में पहनाते हैं, और उस दागे में गांठे बांधते हैं । इसे " डोरण बांधणो " कहते हैं । इस अवसर पर यह गीत गाया जाता है --

रायमल कांजीरी हातेरि बादो डोरणो
अब भंदो लाडा, अब भंदो ला--डा
रायमल कांजीरी हातेरि बादो डोरणो
अब भंदो लाडी, अब भंदो लाडी ।
तारे भीयारी हातेरी बादो डोरणो
अब भंदो लाडी अब भंदो ला डी ।
आजिये रातेरो, समीये सांजेरो बादो डोरणो
कूं भंदे लाडी कूं भंदे लाडी ।

" रायमल कांजी के हाथ की डोरी
अब बांध रहा है, लाडा अब बांध रहा है, लाडा
राय मल कांजी के हाथ की डोरी
अब बांध रहा है लाडी
अब बांध रहा है, लाडी § नव विवाहित स्त्री §
तेरे बडे भाई के हाथ की डोरी
अब बांध रहा है लाडी अब बांध रहा है लाडी
मध्य रात्रो, सायंकाल की डोरी कैसे बांधे लाडी, कैसे बांधे लाडी ।

(38)

जाग मापेकूण (विवाह वेदी)

जाग मापो कूण, मपायो कूण
आडो भींत वलांडो कूण
वाया भांदो कूण भंदायो कूण
आडो भींत वलांडो कूण
डोरण भांदो कूण, भंदायो कूण
आडो भींत वलांडो कूण
डोरण छोडो कूण, छोडायो कूण
आडो भींत वलांडो कूण ।

"जगह (विवाह वेदी) नापे कौन, नपाने वाला कौन
इधर-उधर चक्कर लगाने वाला कौन
विवाह बांधे कौन, बंधाने वाला कौन
इधर-उधर चक्कर लगाने वाला कौन
डोरी बांधे कौन, बंधाने वाला कौन
इधर-उधर चक्कर काटने वाला कौन
डोरी छोडने वाला कौन, छुडाने वाला कौन
इधर-उधर चक्कर लगाने वाला कौन ।"

§ 39 §

फेरा फरणो § सप्तपदी §

"फेरा-फरणो" अर्थात सप्तपदी । वधू इस समय टावलो §रुदन§ करती है, कि इस भारी सभा में मेरे माता-पिता के सामने फेरा - फिरने से मैं लज्जित हूँ । समाज की मान्यताओं को आधार बनाकर मेरे हाथों में हथकडी और पैरों में जंजीरें पहना कर पराये पथिक के साथ भेजने की कोशिश कर रहे हो, कहकर वधू यह गीत गाती है--

याडी देके - बापू देके
नव लाकेरो जीवडा
पराणे पंतियारे हातेमा घालन
डूबरेगी भावजो आहियाँ ।
हातेमा हात कडी घालदेन
टांगेमा बेडी घाल न
तमासो देकूँ देक-देक
डूबरेगी याडियो आहियाँ ।
तमारो झूरले माँईती मन
एकलीन टाळदेन पराणे
पंतियारे हाते मा हात झला देन
कोसा ती कोसा भांद देन
तम से डूबरेगी याडियो आहियाँ ।

" माँ के सामने, पिता के सामने
नव लाख का जीवन पराये पंथी के हाथों में डालकर
खड़ी होगई भाभियाँ हीं हीं
हाथों में हथकड़ी, पैरों में बेड़ी पहनाकर
तमाशा देखती खड़ी हो गयी माँ हीं हीं
तुम्हारी झुंड में से मुझे अकेली को टालकर
पराये पंथी के हाथ में हाथ पकड़वाकर
छोर से छोर बाँधकर तुम सभी खड़ी हो गयी माँ हीं हीं ।"

§ 40 §

छोरी मळणो § कन्या की रुदन §

फूलडारो पोसो
कागदेरो वातो जीवडा
बेफगरेरो जीवडा
फगरेमा मत घालो भावजो ।

"फूल की पंखडी,
कागज जैसा मेरा जीवन
बे फिक्र का जीवन
फिक्र में मत डालो भाभियों ।"

§ 41 §

वेतडूर हंगोळी §दोप्पेर§ : वर को नहलाना § दिन में §

बूडोरे पींदेरिया कम्मर काटो कसलरे
बूडोरे पींदेरिया कपोटी काटो घाललरे ।
वेतडूरी टांगे हेट गंगा वाईजा
गंगा माईरी मिटकी टर्राटा पाडीजा ।
वेतडूरी बाई कांदा खो देन जा
पोर लारे सांडिया हलान चलेजा ।

" बूढा पिंजरा कम्मर मज़बूत करले
बूढा पिंजरा कछोटी मजबूत करले
वर की पैरों के नीचे से गंगा § जल § बह रही है
गंगा में मेंढक टर्राऊं § मेंढक का शब्द § करती हुई बह रही है
वर की बहन प्याज खोदने जा रही है
उसके पीछे सांड हिलता हुआ चला जा रहा है ।"

§ 42 §

वेतडून भाँडणो § वर को गालियाँ देना §

वेतडू तार छवाळ कूण्ज रंगो
वेतडू तारि याडी मलौंडियान ग्वार कीदी
वोईरि रंगो ।
वेतडू तार ओचेर जांग्या कूणरे सीडो
वेतडू तारि याडी रंगारडान ग्वार कीदी
वोईरि सीडो ।
वेतडू तार ओचेर खाल्टा कूण्ज सीडो
वेतडू तारि याडी मोचडान ग्वार कीदी
वोईरि सीडो ।

* वर तेरे उपरनी को कौन रंगा
वर ! तेरी माँ ने मलौंडया को पति बनाई उसी ने रंगा है
वर तेरा पाजामा कौन सीना-पिरोना किया
वर ! तेरी माँ ने भटराज को पति बनाई उसी ने सीना-पिरोना किया
वर तेरे जूते को कौन बनाया
वर ! तेरी माँ मोची को पति बनाई उसी ने बनाया ।

§ 43 §

वेतडून भांडणो § वर को गालियाँ देना §

वेतडू खावे कांदा कांदा
वोरी याडी मरावार सांदा सांदा ।
यातडू खावे लसण लसण
वोरी बाई मरावार ठेसण ठेसण ।
यातडू खावे धीण्या 'धीण्या
वोरी भ्याने मरावार मीण्या मीण्या ।
वेतडू खावे तोरी तोरी
वोरी भोजाई मरावार खोरी खोरी ।

* वर खाता है प्याज-प्याज
उसकी माँ मराती है सांदा-सांदा §गर्दन-गर्दन§
वर खाता है, लहसन लहसन
उसकी बडी बहन मराती है स्टेशन-स्टेशन
वर खाता है धनिया-धनिया
उसकी बहन मराती है जोड-जोड
वर खाता है तुरई-तुरई
उसकी भाभी मराती है खोरी-खोरी ।

(44)

वेतडू जीतगो (वर जीत गया)

बादरीरो दळ्या खाऊ
अब जीतगो घडी जीतगो
आंबडीरी भाजी खाऊ
अब जीतगो, अब जीतगो
मक्कारो दळ्या खाऊ
अब जीतगो ।[14]

" बाजरा की खिचडी (दाळ्या) खाने वाला
अब जीत गया, फिर जीत गया
बीलू की भाजी खाने वाला
अब जीत गया, अब जीत गया
मक्ई का दळ्या खाने वाला
अब जीत गया ।"

---

14. आडे पींपळी बाई - भैंसा - आदिलाबाद

§ 45 §

चोटीर पाणी § चोटी का पानी §

पीले याडी पीले नारकेरो पाणी
फेर कोनी मळे नारकेरो पाणी
पीले याडी पीले चोटीरो पाणी
फेर कोनी मळे चोटीरो पाणी
सात वणा पीले चोटीरो पाणी
सात वणा पीले नारकेरो पाणी ।

"पीले माँ ! पीले नारियल का पानी
फिर नहीं मिलेगा नारियल का पानी
पीले माँ ! पीले चोटी का पानी
फिर नहीं मिलेगा चोटी का पानी
सात बार पीले चोटी का पानी
सात बार पीले नारियल का पानी ।"

॥ 46 ॥

डोरण छोडणो ॥ डोरी छोडना ॥

इस गीत में डोरी छोडने का वर्णन है, जो वर ओर वधू के गले में डोरण बांधी हुई है ।

आजिये रातेरो, समीये सांजेरो बादो डोरणो
कूं छूटे लाडी कूं छूटे लाडी ।
तारी ससरे हातेरी बादो डोरणो
कूं छूटे लाडी, कूं छूटे लाडी ।
रायमल कांजीरी हातेरी बादो डोरणो
कूं छूटे लाडी कूं छूटे लाडी ।
तारे साळेरी हातेरी बादो डोरणो
कूं छूटे लाडा, कूं छूटे लाडा ।

" मध्यरात्री की कच्चे दागे की डोरी
कैसे छूटेगी लाडी, कैसे छूटती है लाडी
तेरे ससुर के हाथ की डोरी
कैसे छूटेगी लाडी, कैसे छूटेमी लाडी
रायमल कांजी के हाथ की डोरी
कैसे छूट सकती हैं लाडी, कैसे छूट सकती हैं लाडो
तेरे साले के हाथ की बांधी गयी डोरी
कैसे छूट सकती हैं लाडा कैसे छूट सकती हैं लाडा ।"

§ 47 §

माँडा रमणो §माँड से खेलना §

वर और वधू माँड §चावल का पानी § से खेलते समय यह गीत गाते हैं --

लाड कर कर मांडा रमी
सोटा रंगीलो लाडी ।
लाड कर कर रीपया रमी
सोटा रंगीलो लाडी, सोटा रंगीलो लाडी ।
ट्वाले कर कर मांडा रमी
सोटा रंगीलो लाडी
मसकरी कर कर मांडा रमी
सोटा रंगीलो लाडी ।

" लाड करती हुई माँड खेल रही है,
प्रेम में लिप्त होकर लाडी
लाड कर-कर रुपया खेली, प्रेम से लिप्त होकर लाडी,
प्रेम से लिप्त होकर लाडी
प्यार करती-करती माँड खेली, प्रेम में लिप्त होकर लाडी
हँसी-दिल्लगी से माँड खेल रही हो,प्रेम में लिप्त होकर लाडी ।"

वकोल्डी धोक्णो § गोबर पूजा §

वर और वधू गोबर पूजा करने की परंपरा है। इस पूजा को "वकोल्डी धोक्णो" कहते हैं। वकोल्डी अर्थात गोबर के ढेर, की पूजा के अवसर पर यह गीत गाती है --

वकोलडी धोकेन चालिये नाजुकेरी नाज
ब्याटी पणन धोकी कोनिये नाजुकेरी नाज
मेदी पीटी लगाडेन ब्याटीये नाजुकेरी नाज
ब्याटी पणन लगाडी कोनिये नाजुकेरी नाज।

"गोबर के ढेर को पूजने के लिए चली, नाजुक कन्या
बैठी, परन्तु पूजा नहीं कर पाई नाजुक कन्या
मेहंदी रचने के लिए बैठी, नाजुक कन्या
बैठी है, परन्तु नहीं रच पाई नाजुक कन्या।"

चावळ वारणो § आरती उतारना §

चावल और कुंकुम से वर-वधू की सुन्दर जोडी को किसी का नज़र न लगने के लिए बच्चों से आरती उतारी जाती हैं। इस अवसर पर यह गीत गाया जाता है। गीत इस प्रकार है --

चावळ वारूँ क कुंकुम वारूँ
चांदी वारूँ क सोनो वारूँ
जो हम वारां ऊ थोडा
याडी राम घरेरो जोडा
बाई सोने सरीको जोडा ।[15]

" चावल फिराना या कुंकुम फिराना
चांदी फिराना या सोना फिराना
जो हम फिराव करेंगे वह थोडा है
माँ राम घर का जोडा है
बाई सोना जैसा जोडा है ।"

15· लाकावत सोना बाई मौला-अली हैदराबाद

गोट

गोटेर पधार §गोट पधार / गीत §

"गोट" अनुष्ठान में देवी को बकरे की बली चढाकर अर्चना करते हैं, का पधार §गीत§ --

सामळोर भाईन-सगे
पंच-पंचात राजा भो जेरो सभा
पधारे लाकन-पधारे सवा लाख
भाईन-सगे सेन पधारे जोगत
अगल-बगल गाम-गोटेर वच्चे छ नँगर कोट,
वोमा दीनो वेतडू गोट
पांचेरी गोट, पच्चीसेरी गोट
हल हल का बोकडा, मन मदारी घागरा
वेतडू हूवो आनेती लो नायक गोट मानेती ।[16]

"सुनो भाईयों और सगे । पंचों की पंचायत सभा राजा
भोज की सभा के समान हैं
एक लाख हो अथवा सवा लाख सब पधारते हैं
इसमें भाईयों और सगे सभी पधार सकते हैं
अगल-बगल गाँव और टांडे के बीच यह टांडा है
इसमें वर दिया गोट
पंचों की गोट, पच्चीसों की गोट
मजबूत मुर्गा, मन लगा हुआ इस सभा में
वर खडा हुआ है गौरव प्रद से
लो नायक गोट सम्मान से ।"

---

16. जाटोत गोरीसिंग नायक - मानीकेश्वरी नगर - हैदराबाद

§ 51 §

पान-सपारीर पधार § पान सुपारी का पधार या गीत §

सामळोर भाईन सगे
पंच पंच्यात राजा भोजेरो सभा
पधारे लाक अन पधारे सवा लाख
भाईन सगे, से पधारे जोगत
कच्ची सपारी, पक्के पान
नपनारी बडी बत्तीसा रंग
कुरलो नाति संग, रंग हमारी हाथ
चुन्नो पर्को, काचो पर्को
लूंग छ बडी मूंग
वेतडू डूबो आनेती, लो नायक रंग मानेती ।[17]

" सुनों भाईयों और सगे
पंचों की पंचायत सभा, राजा भोज की सभा के समान हैं
एक लाख हो अथवा सवा लाख सब पधारते हैं
इसमें भाईयों और सगे सभी पधार सक्ते हैं
कच्ची सुपारी, पके पान
अच्छो तरह चुने गये रंग, राशी है पान की रंग हमारे हाथ में है
चूना परकी, अच्छा परकी
लौंग है बहुत मेहूँगा
वर खडा हुआ है गौरव प्रद से
लो नायक रंग §पान§ सम्मान से । "

---

17. जाटोत गोरीसिंग नायक मानिक्येश्वरी नगर, हैदराबाद

§ 52 §

बापूर सीख § पिता का सीख §

सीख द सीख द रे बा !
तारी सीकेन स्वट भाँदु
स्वट भाँदु, फेरन रेशम डोरेती भाँदु बा ।
बापूरे तमार नाम लूँतो नामू नारळ वकाा
बापूरे तमार नाम लूँतो नधलाक तल गाणो धूजे ।

" सीख देना बापू § पिता § सीख देना
तुम्हारी सीख को एक छोर पर बाँध लेती हूँ
और एक छोर पर बाँध लेती हूँ
फिर रेशम पाठ डोरी से बाँध लेती हूँ
बापू तुम्हारा नाम लेने से खोटा नारियल भी
बिकजाता है
बापू तुम्हारा नाम लेने से नौ लाख लोग काँपते हैं "।

§ 53 §

चूडो तीपणो § भुजदंड की चूडियों में "तीपे" पिरोना §

भुजदंड में पहनने की चूडियों § बलिया § को "चूडो" कहते हैं। उन बलियाओं § चूडियाँ § में पिरोने का गहनों को "तीपे" कहते हैं। इस अवसर पर गीत गाते हैं, गीत इस प्रकार है --

होळ्यांक्न तीपोरे सोनेरो बेटा
तारी तीपे गडघरे सोनेरो बेटा ।
होळ्यांक्न तीपोरे सनारेरो बेटा
तारी तीपे गडघरे हूँसेरो बेटा ।

"धीरे से "तीपे" पिरोना, सोने का बेटा
तुम्हारी "तीपे" चुबजाती है, सोने का बेटा
धीरे से, तीपे, पिरोना सुनार का बेटा
तुम्हारी तीपे चुबजाती है प्यारा बेटा ।"

(54)

नवलेरी वेगी (दुलहन, नव विवाहिता स्त्री)

याडीये जे आहियाँ, मारे बाळपणेरो सोबा
काडलेन पराणे घरेर सोबा मन कोनी
च्याटे मारी याडियो आहियाँ ।
मत घालो याडी छूमरीरो लोल अन
मत घालो याडी घोटला-टोपलो मन
चूडो तीपन तीपे कूँ सके जू मारे बाळ
पणेन मत सकेदो याडियो आहियाँ ।
पराणे घर मन रवाना करन तम से
छूटी वे जामा करेन वेरीयो काँई याडियो आहियाँ ।
मारी याडी भावेजेरी हातेरी गुंताई गूंतो मातो
छोडन दीनयारो वेस मन कोनी च्यावे
याडियो आहियाँ ।

"माँ ! हीं हीं, मेरी कुवाँरीपन की शोभा निकालकर
पराये घर की शोभा मुझे नहीं चाहिए माँ हीं हीं
मत डालो माँ, छूमरी, टोपली और घोटला
मुझे यह गहना पहनाकर
"तीपे" वैसे सक गया है, वैसे ही मैं सक जाऊँगी माँ हीं हीं
पराये घर मुझे रवाना करके
तुम सभी छुट्टी लेना चाहती हो क्या माँ हीं हीं
मेरी माँ और भाभियों के हाथ से गूँथी हुई इस वेणी को मत छोडना
पराया वेश मुझे नहीं चाहिए माँ हीं हीं हीं ।"

§ 55 §

चाँदणी रात §चाँदनी रात §

घीडयेक वदेस चांदीण्यो रात
टूँ वदीसतो, मारे बापेरो गोदो भरन सोईयूँ रात
घीडयेक मत बोलेसरे मारे बापूरो कुक्डो
टू न बोलीसतो मारी याडी रो गोदो भरन सोईयूँ रे कुक्डो
टूँ न बोलीसतो तारे बांगेन सोनो मंडाडू
रुपो ढोळाडू रे कुकडो
एक घडी मत बोलेसरे
मारे बापूरो पाळो पोसो नंगरोरो कुकडो ।

" तीनक लम्बी बडना चाँदनी रात
टू बडेगी तो मेरे बापू के गोद में लेटूँगी रात
जरा मत बोल मेरे बापू का मुर्गा
टू नहीं बोलने से, मेरी माँ की गोद भर लेट जाऊँगी मुर्गा
टू नहीं बोलने से तेरी बाँग को सोने से मंड देती हूँ
चाँदी से भर देती हूँ मुर्गा
जरा मत बोल हे ! मेरे बापू के पाला-पोसा टांडे का मुर्गा ।"

§ 56 §

छोरीन बार काडणो §घर से कन्या की बिदाई§

" छोरीन बार काडणो " अर्थात दुल्हन को घर से बाहर लाना या घर से बिदा करना । घर के आंगन में डोळ्या §बैल§ की पीठ पर खड़ी होकर अपने माँ-बाप के घर की सराहना करती है ।

डोळ्या रे !
ताती छूटो मारे बापूरो ध्वाळो खाड़
माती छूटो मारी सात पूरी सोनेरो झूरलो
डोळ्या रे !
सोनेरी सांकळी, स्पेरी रासडी
तोडलेन धांसजो डोळ्या
झामरी झोलेरो खड खा लेन
दूदिया तळायेरो पाणी पीले डोळ्या
मारो मोटो भीया हाँक मारियतो
गटला चढ जायेस डोळ्या ।

" डोळ्या §बैल§ रे !
तुम से छूट रहा है मेरे बापू के धोळो §सफेद§ पशुओं के समूह
मुझसे छूट रहा है मेरी सहेलियों की सोना जैसी झुंड
डोळ्या रे !
सोने की जंजीर, चाँदी की रस्सी
तोडकर भागजा डोळ्या
घना जंगल का घाँस खा लेना
दूदिया §दूध जैसा पानी§ तालाब का पानी पीलेना डोळ्या
मेरे बडे भाई पुकारेंगे तुझे
तुम पहाड चढ जाना डोळ्या ।"

§ 57 §

याडी-बापूर मडगी § माँ-बाप की हवेली §

वडेला ज़ूं वदेस मारे बापूरी मडगी
घूरल ज़ूं फैलेस मारे बापूरी मडगी
लींबडा ज़ूं लदेस मारी याडीरी मडगी
चारी कोसा हरो भरो रकाडेस मारी बापूरी मडगी ।

" बरगद के पेड के समान अल्प अवधी में बहुत ऊँची हो जाना
मेरे बापू की हवेली
घूरल के जैसे चारों तरफ फैल जाना मेरे बापू की हवेली
नीम की घनी छाँव के समान अति शीतल रहना मेरी माँ की हवेली
चारों तरफ हरा-भरा रहना मेरे बापू की हवेली ।"

तांगडी रवाना

§ 58 §

तांगडी रवाना करनो § कन्या की बिदाई §

बिदाई के दिन कन्या दिन भर रोती रहती है । इस गीत में कन्या बिदाई के कुछ क्षण पहले अपनी माँ-बाप, भाई-बहन, सगे-संबंधियों, टांडे वालों और अपनी सहेलियों से आँसू की नदी बहाती हुई दावलो §रूदन§ करती है ।

याडिये जे आहियाँ
काळिया कूंडेमा हियाँ
झिमेरा जाळ नाक्तो हियाँ
वो जाळेमा नानी-मोटी माछळी हियाँ
कूं फंदाव जूं तारी बेटी हियाँ
आजे जे हियाँ, पराणे पंतिया रे लार
फंदागी याडियो आहियाँ ।[18]

"माँ ! हीं हीं
काले कुंड §सागर, तालाब§ में
मछुआ ने जाल फेंकने से हीं हीं
उस जाल में छोटी-मोटी, मछली कैसे फंस जाती है
तुम्हारी बेटी आज से
पराये पंथी के साथ फंस गयी माँ हीं हीं ।"

18· पेमावत सामणी - हनमकोण्डा

§ 59 §

बापून मळणो § पिता से गले मिलकर रुदन करना §

बापूवोरे आहियाँ
आजे जे तारी बेटी न
केर लार मेलू करे न
रवाना कर रोधी बापू आहियाँ ।
बापूओरे मन कनाई कोनी
साँसो पणेन आजे जे
साँस देन वशणे घरेन
मेलू करेन तारे छाती न
काटो करलीदो बापू आहियाँ ।
बापूवोरे एक दस दाड क्ती
पामण जायेन छूटी दीनो कोनी जको
आजे जे जनमेरी छूटी देदे न
वराणे पंतियारे लार हात झलादेन
झोलो देन लार रेजाऊँ केरो
हूँसी बापू आहियाँ ।

" बापू जी ! हीं हीं ।
आज से तेरी बेटी को किसके हवाले करने के लिए
रवाना कर रहे हो पिता जी
बापू मुझे कभी नहीं दूर किया
परन्तु आज दूर करके पराये घर में रवाना करने के लिए

तेरी छाती को दृढ करलिया बापू हीं हीं
बापू एक दस दिन वहीं रिश्तेदार के घर जाने का
छुट्टी दिया नहीं
किन्तु आज से जन्म भर की छुट्टी देकर
पराये पंथी के साथ हाथ पकडाकर
बिदा देकर पीछे हटजाऊँ कह रहे हो प्यारे बापू हीं हीं ।"

§ 60 §

वीरेणा न मळणो § भाई से गले मिलकर रुदन करना §

वीरेणा रे आहियाँ
आजेजे मन मेल देन
तूँ एकेलो हूबरेगोची पणेन
वाळो वाटेन सूद वाट करलेन
सो कोसे न कोस समझलेन
तारी भेनडेन देकेन सात
समंदर पार करलेन तारी
भेन छ करेन मारी खबर
लेतो रेसे वीरणा आहियाँ

• प्यारे भाई ! हीं हीं
आज ही मुझे रवाना करके
तूं अकेला खडा होगया
परन्तु टेडी बाट को सीधी बनाकर
सौ कोस को एक कोस समझकर
तेरी बहन को देखने
सात समुन्दर को पार करके
तेरी बहन है कहकर
मेरी खबर लेते रहना प्यारे भाई हीं हीं

§ 61 §

समदण-समदण मळणो § समधिन-समधिन, गले मिलकर रुदन करना §

कन्या की माँ ने बिदाई के अवसर पर अपनी समधिन से गले मिलकर रुदन करती है --

याडी ये जे मार लाडेरी
नाणकीसी नवलाके लडकीन
तमारी हातेमा घाल देरीयूँ पणेन
मारी लडकी कतराकी गुणा करलीयतोई
तमारी बेटी वेलेन तमारी पेटेमा
घाल लीजो याडियो आहियाँ
मारी पेटेमारी आंतर काडन
तमारी पेटेमा घाल दीनीयूँ
याडियो आहियाँ ।

" माँ जी मेरी लाडली
छोटी सी नौ लाख कीमती लडकी को
तुम्हारी हाथों में डाल रही हूँ
परन्तु मेरी लडकी कितनी ही गुनाह करने पर
तुम्हारी बेटी समझकर
तुम्हारे हृदय में छुपा लेना माँ जी हीं हीं
मेरी पेट की आंतडी निकालकर
तुम्हारे पेट में, डाल रही हूँ, माँ जी हीं हीं हीं ।"

(62)

समदण-समधीन मळणो (समधिन-समधी से गले मिलकर रुदन करना)

कन्या की माँ ने बिदाई के कुछ क्षण पहले अपने समधी से गले मिलकर ढावलो (रुदन) करती है ।

बापूवो रे आजे जे
मारी लडकी न सौंस देन
तमारे लार रवाना कररीधू पणन
मारी बेटी अनकळता काम करलीयतो
तमारी पेटेमा घालतेन
समंदर करलीजो बापू आहियाँ
मारी लडकी न तमारी लडकी वेलेन
तमारी पेटेमा घालन
गोकलीजो बापुदो आहियाँ ।

" बापू रे ! आज से
मेरी लाडली को त्याग कर
तुम्हारे साथ रवाना कर रही हूँ
परन्तु मेरी बेटी गुनाह करने से
तुम्हारी पेट में रखकर
समुन्दर करलेना बापू जी हीं हीं
मेरी लडकी को तुम्हारी लडकी समझकर
तुम्हारी पेट में डालकर
छुपालेना बापू जी हीं हीं हीं ।"

(63)

न्वलेरी रोवणो (दुल्हन रोना)

याडीयो एक पगेला आंगेसी आवो
मारी हूंसण याडियो आहियाँ ।
मन एकलीन छोडदेन तम से लार
डूबरेन झोलो देलागी जावणो आहियाँ ।
वीरेणा तारी भेनडेन छोडदेन लार
रेताणी कूणसी भेनडेन सोबत रकाडेधी वीरणा ।
भावेजे आजे जे तारी जावणेन घराणे
पतियारे घर रवाना कर देन छेलेमा
एकेलो जाऊँ करेन लार रेगी काँई भावजो आहियाँ ।
भीयावो रे एके पगेला आंगेसी आन
तारी भेनडेती एक बोली बोलेन
आजो भीया आहियाँ ।
आजेती मारे याडी बापुओरी मडेगी
छूट घाली याडियो आहियाँ ।

"माँ ! एक पग आगे बढ़िये प्यारी माताओं हीं हीं
मुझे अकेली को छोड़कर
तुम सभी पीछे खड़ी होकर
झूला दे रही हो सहेलियाँ हीं हीं
प्यारे भाई, तेरी बहन को छोड़कर
पीछे रहकर कौनसी बहन को साथ रखते हो भाई
भाभी आज से तेरी ननद को
पराये पंथी के घर रवाना करके
खेत में अकेली जाना करके
पीछे रह गयी क्या भाभी हीं हीं
भैया ! एक पग आगे बढ़कर
तेरी बहन से एक बोली बोलने के लिए
आजाओ भैया हीं हीं
आज से मेरी माँ-बापू की हवेली
छूट गयी माँ हीं हीं हीं ।"

(64)

घूगरा छोडणो (घुँघरू उतारना)

कन्या को विदा करके उसकी ससुराल भेज देते हैं। वहाँ पर कन्या के पैरों में घुँघरू छोडने का अंतिम कार्य होता है। इस अवसर पर घुँघरू छोडने वाले अपने भाईयों से गले मिलकर कन्या ढावलो (रुदन) करती है, रुदन इस प्रकार है --

भीयाओ रे घूगरा छोडलेन
कूणसी भयाने न भाँदू करेन केरोधीरे भीया आहियाँ
सोनेरी ताकडी, रुपेरी डांडीती तोलाई तूले घूगरा
मारे मोटे भीयारी हातेरी परकी घूगरा
दनियारी छोरी गुँताटे, सण-सूतलीमा
मैं हूंसण गुँताई रेशम पाटेर दोरामा
अंदारी रातेमा दीयो जळान गुँताई घूगरा
बाळ पणेर-भोळ पणेर घूगरा भीयाओ आहियाँ
वीरेणा कूणसो बाको वाळो खींचरो करेन
मारे घूगरा छोडेलागो वीरा-आहियाँ।

"भाईयों! घुँघरू छोडकर
कौनसी बहन को बाँधने जा रहे हो भाईयों हीं हीं
सोने की तराजू, चाँदी की डांडी से तोले हुए घुँघरू
मेरे बडे भाई के हाथ से परकी घुँघरू
पर घर की लडकियाँ बुनाई सन-सुतली से
मैं प्यारी बुनाई रेशम-पाट धागे से
अंधेरी रात में दीप जलाकर बुनाई घुँघरू
बालपन-भोलापन के घुँघरू भाईयों हीं हीं
भाई! कौनसा कर्ज वाला खींच रहा है तुझे
मेरे घुँघरू को छोड रहे हो भाई हीं हीं हीं।"

(65)

तांगडी वाळेन हाटो वाट लगाणो : (बराती को लौटाना)

कन्या को ससुराल छोडकर बराती लौटती हैं। इसे "तांगडी वाळेन हाटो वाट लगाणो" कहते हैं। इस अवसर पर कन्या अकेली रुदन करती है।

याडीये जे आहियाँ, मन पाळी पोसी
मारी याडी आजे जे घर एकेली कांई
झूर रीयको, मन एकलीन सांस देन
दीनयारे लार हात झलादेन एकेली
बेसगी याडियो। मारी याडीरी झूरलेमा
चांदेसेरो वजाळो वेन हांस बोलन फ रतीती
जकोण मारी याडीरी महगीमा कूण हांस बेलन
फ राए मारो, मारो बापू अडवीरो मोर कूं
झूर जूं झूर रोचे याडियो आहियाँ।

"माँ! हीं हीं, मुझे पाल-पोसकर
मेरी माँ आज घर में अकेली झूर रही होगी
मुझे अकेली को त्याग कर
पराया के हाथ पकडाकर
अकेली बैठ गयी माँ
मेरी माँ के झुंड में चाँद जैसा उजाला होकर
हँसती हुई-बोलती हुई फिरती थी
किन्तु मेरी माँ की हवेली में कौन हँस बोलकर फिरेगी
मेरे बापू जंगल का मोर कैसे झूरता है
वैसे ही झूर रहा है माँ हीं हीं।"

---

19. घुगुलोत दूली बाई - नेल्लीकुदुर - जिला वरंगल

त्योहार

भवानी पूजणो : (देवी की पूजा करना)

(66)

भवानीर वींती (देवी की प्रार्थना गीत)

बंजारे मुख्य रूप से देवी के उपासक हैं। विभिन्न प्रान्तों में बसे हुए बंजारे मेरामा याडी (मरियामा देवी) की पूजा करते हैं। कुछ देवियाँ टांडों में पूजी जाती हैं और कुछ देवियाँ जंगलों में या खेत-खलियानों में पूजी जाती हैं। देवी (मावली) को व्यक्तिगत रूप से भी पूजते हैं और सार्वजनिक रूप से भी। यह देवियों के प्रथम प्रार्थना गीत हैं।

अंबा अंबा भारत माता भवानी आनी
सत्य लोकेन छोडन आनो,
च्यार भाईन ज्ञानम केनी
सेर मनेन एवज करनी
सेरो साई वेनी आनी
दुर्गुण से दूर करले माता
भंदो गुलाम से तोन छ माता
भक्त बणाले सेन हूँ माता
भजन कराले तारोज माता।

" अंबा - अंबा (देवी) भारत माता, भवानी आईए

देवलोक को छोडकर आईए

बंजारा भाईयों को ज्ञान देना,

सभी के मन को एक करना

सभी के ऊपर कृपा करना

दुर्गुण सभी दूर करदेना

बंधा हुआ गुलाम सभी तेरा ही है

भक्त बनालो सभी को तू माता

भजन करवाले तेरी ही माता ।"

§ 67 §

भवानीर वींती § देवी की अर्चना करना §

उदे उदे नमस्कार उदे उदे नमस्कार
मारी तोळजा याडी, सीतला याडी
हिंगळा याडी, धवाळ अंगर याडी
अम्बा भवानी, महूरी याडी, अन जळपा याडी
साती भवानी साई वीजो मारी याडी साहेबणी
घित्तो काम पत्तो करेस मारी याडी साहेबणी
सेरेमा सवासेर करेस मारी याडी साहेबणी
करतेमा बरकत देस मारी याडी साहेबणी
करतेमा बरकत देस मारी याडी साहेबणी
साऊ कारेन समणक रकाडेस मारी याडी साहेबणी
बाल बच्चारो साई वेस मारी याडी साहेबणी
डाव-डंबरेरो साई वेस मारी याडी साहेबणी
कीडी-मूंगीरो साई वेस मारी याडी साहेबणी
जीव-जनावरेरो साई वेस मारी याडी साहेबणी
कोट-कचेरीर पाधेन फेरेस मारी याडी साहेबणी
धरमीन धनेती धपाडेस मारी याडी साहेबणी
वर्षे दाडेरो पूजा तोन पूघतो रच मारी याडी
साहेबणी ।

" नतमस्तक नमस्कार, नतमस्तक नमस्कार
मेरी तोळजा [देवी का नाम] माँ, सीतला माता
हिंगला माता, ध्याळ अंगर माता
अंबा माता, मसूरी माता और जळपा माता
सात देवियों दया करें माता, देवी
सोचा गया काम पूरा कर मेरी माता, देवी
सेर को सवासेर करना मेरी माता, देवी
कार्य में बरकत देना मेरी माता, देवी
धार्मिक व्यक्ति को सामने रखना मेरी माता, देवी
बाल-बच्चों पर कृपा कर मेरी माता देवी
बूढे-बूढियों पर कृपा कर मेरी माता, देवी
जीव-जन्तुओं पर दया कर मेरी माता, देवी
कोर्ट-कचहरी को पीछे कर मेरी माता, देवी
धरमी आदमी को धन से भरपूर कर मेरी माता, देवी
साल भर की पूजा तुम्हें पहुँचता ही रहेगा, मेरी माता देवी ।"

§ 68 §

मेरामा याडी § मरियामा देवी §

खीर कढई भायान देति
खीर कढई भाया न देति
हाजर बकरा लेति
ग्यारूरो साई वेति
सई ये मेरामा माई
तार सेवा भाया अवतारी
पूरिये मेरामा माई
तार सुखा भाया पूजारी ··· राम ।
भीमारी नायकण जनमी तोन
अदल मेरामा वलमी
सई ये मेरामा माये
तार सेवा भाया अवतारी
पूरिये मेरामा माई
तार सुका भाया पूजारी ··· राम राम ।

" खीर निकालकर (खाद्य पदार्थ / मिठाई) भाया
(बंजारों का देव सेवा भाया) को देती
खीर निकालकर भाया को देती
मज़बूत बकरा लेती बंजारों पर कृपा करती थी
सही है, मरियामा माई
तेरा सेवा भाया अवतारी
पूरा नायक है मरियामा माँई
तेरा सुखा भाया पूजारी राम
भीमा नायक की धर्म पत्नी जन्म दिया तुझे
कृपा किया मरियामा देवी ने
सही है मेरामा माँई
तेरा सेवा भाया अवतारी
पूरा नायक है, मरियामा देवी
तेरा सुखा भाया पूजारी - राम राम ।"

§ 69 §

साटू भवानी § साटू देवी §

साटूर मायेर सूरा संगत हूयिर,
लक लक परवाना सूरा, बाधा कागद भेजो,
वलटीर सलामी सूरा तमी कीयोर,
मसगेर भांदेर सूरा कूयो राकेर
नंगारा न्बगान सूरा गपत घोरेर ।

साटू भवानी §देवी § सूरा के साथ रही
लिख-लिख कर परेशान से सूरा को बाधा §राजा§ ने कागज
§चिट्टी§ भिजवाए
एक बार सूरा के लिए तुम भी प्रार्थना करो
दरवाजे के सामने बाँध दिये, सूरा लटक गया
नगारा बजाकर सूरा खडा हो गया ।"

§ 70 §

तोळ्जा भवानी § तोळ्जा देवी §

सूतीक जागि मारी तोळ्जा भवानी
तोपर पांडिया हजार दोडेयाव
पचास हलकेयाव
पांडा तारी पामणीन पाणि भराडूँ
पांडा र लोटियाओ डोराडूँ र
देदे नंगारा रणजीतर, पाँडा लादो भवानी
पांडा लादो जार भोळा ढळतो जा,
रंग चूवतो जाव र ।

" सो रही हो या जाग रही हो ! मेरी " तोळ्जा देवी ।
तुम्हारे मन पर पांडा नायक और हजारों दौड आ रहे हैं
पचासों मनोरंजन से आ रहे हैं
पांडा तेरे रिश्तेदारों को पानी भराकर देदूँ
पांडिया लोटों से डोर कर दे देता हूँ
जै जै कर नगारा बजाकर जीत रहे हैं
पांडा लद रहा है, देवी पांडा लदकर जा रहा है
भोला चला जा रहा है, मनोरंजन से नाचते जा रहे हैं ।"

§ 71 §

सीतला भवानी § सीतला देवी §

सूतीक जागि मारी सीतला भवानी
तोपर पांडिया हजार दोडेयाव
पचास हलवेयाव
पांडा तारी पामणीन पाणि भरादूँ
पांडा र लोटियाओ डोरादूँ डर
देदे नंगारा रण जीतर, पांडा लादो भवानी
पांडा लादो जा र भोळा ढळतो जा,
रंग चूवतो जाव र ।

" सो रही हो या जाग रही हो मेरी सीतला माता
तुम्हारे मत पर पांडा नायक और हजारों दौड आ रहे है
पचासों मनोरंजन से आ रहे हैं
पांडा तेरे रिश्तेदारों को पानी भराकर देदूँ
पांडिया लोटों से डोरकर दे देती हूँ
जै जै कर नगारा बजाकर जीत रहे हैं
पांडा लद रहा है, देवी, पांडा लदकर जा रहा है
भोला चला जा रहा है, मनोरंजन से नाचते जा रहे हैं । "

भूक्या अमरसिंह नाईक गाँव - मोन्ड्राई - मंडल - कोडकण्डला
जिला - वरंगल

§ 72 §

भवानीर गीत § देवी की मनोरंजन गीत §

हींदळो देमेलूं जळ्मा, हींधने आजो
पालणो देमेलू याडी, ब्यासने आजो
घोडलो देमेलू याडी, भीडने आजो
आवति याडीने, आवुकारो दीजो
पीडिया पलंग याडीन, ब्यालेन दीजो
झारिया झोकाळो हिंळा न, लोटा पाणिरो दीजो
आंगणो खोळन याडीन, ओडे पेरेने दीजो
चंदण चीरन बाई न, दांतण दीजो
वणकारा वणय सीतला, पाटेरो पटोळो दीजो
पाटेरो पटोळो याडीन, घिरमा कोरेरो दीजो ।

" झूला भेज रहे हैं, जळ्मा §देवी§ झूलकर आना
पालकी भेज रहे हैं, माता बैठकर आना
घोडा भेज रहे हैं, माता दौडकर आना
आते ही देवी को स्वागत करना
पीढा-पलंग माता के लिए बैठने दीजिए
झारी में हिंगळा को लोटा पानी भर दीजिए
टांगडी §कपडे रखने का बोरा§ खोल के माता को ओढने-पहनने को दीजिए
चंदन चीरकर देवी को दांतन दीजिए
कपडा बुनती है सीतला, रेशम पाट-धागा दीजिए
रेशम पाट माता के लिए घिरमा छोर का दीजिए । "

§ 73 §

भवानीर गीत §देवी की मनोरंजन गीत§

तोळजा याडी बोई ये गेहूंलारो खेतर,
वाट चालू पंतिया खूंदो मत खेतर,
मारी हिंगळा बोई ये बादरारो खेतर
वाट चालू भीयाओ खूंदो मत खेतर
मारी जळजा बोईये चणारो खेतर
वाट चालू बाईओ खूंदो मत खेतर
मारी मसूरी बोईये नारळेरो खेतर
वाट चालू पंतिया खूंदो मत खेतर
मारी अंबा बोईये नारंगीरो खेतर
वाट चालू बाईओ खूंदो मत खेतर
मारी द्वाळ अंगर बोईये अंबुडारो खेतर
वाट चालू भीयाओ खूंदो मत खेतर
मारी सीतला बोईये जारेरो खेतर
वाट चालू याडिओ खूंदो मत खेतर ।

" तोळजा देवी बोनी गेहूँ के खेत
राह चलने वाला राहगिर खूँदना नहीं खेत
मेरी हिंगळा माता बोनी बाजरा के खेत
राह चलने वाले भाईयों खूँदना नहीं खेत
मेरी जळपा देवी बोनी चना के खेत
राह चलने वाली बहनों खूँदना नहीं खेत
मेरी मसूरी माता बोनी नारियल के खेत
बाट चालू पंथी खूँदना नहीं खेत
मेरी अंबा देवी बोनी उमरूद के खेत
बाट चलने वाली दादियों खूँदना नहीं खेत
मेरी ध्वाळ अंगर देवी बोनी आम के खेत
राह चलने वाले भाईयों खूँदना नहीं खेत
मेरी सीतला माता बोनी जवार के खेत
बाट चलने वाली माँ खूँदना नहीं खेत ।"

§ 74 §

भवानीर गीत § देवी की मनोरंजन गीत §

मारी तोळजा चालिये फूलेडा वीणे न
फूलडाये वीणतून वोडलीन भरतू
पगलाये पाडतू वोत पड्जाय मोजण रात
पीळो रंग फूलडा सोरले हेमाई
लालो रंग फूलडाओ समेटले हेमाई ।
मारी हिंगळा चालिये फूलेडा वीणे न
फूलडाये वीणतू न वोडलीन भरतू
पगलाये पाडतू वोत पड्जाय मोजण रात
सोना रंग फूलेडा सोरले हेमाई
गोलाल रंग फूलेडा समेटले हेमाई ।

" मेरी तोळजा §देवी§ चली फूल बीनने के लिए
फूल बीनकर टोकरी भरकर लौटने तक
वहाँ हो जाएगी अंधेरी रात
पीला रंग फूल इकट्ठा करले देवी
लाल रंग फूल समेटले तोळजा माँई
मेरी हिंगळा चली फूल बीनने के लिए
फूल बीनकर, टोकरी भरकर लौटने तक
वहाँ हो जाएगी अंधेरी रात
सोना रंग फूल इकट्ठा करले हिंगळा माँई
गुलाल रंग फूल समेटले माता । "

(75)

भवानीर गीत (देवी की मनोरंजन गीत)

वर गटलारी परगट माया तोळजा हडप
वोत वागेडा घोरे मन ड रे लागप
वर गटलारी परगट माया हिंगला हडप
वोत कूकडो बोल मन डरे लागप
वर गटलारी परगट माया मसूरी हडप
वोत सांडया डाडे मन डरे लागप
वर गटलारी परगट माया सीतला हडप
वोत सूरेडा बोल मन डरे लागप
वर गटलारी परगट माया ध्वाळंगर हडप
वोत मोरेडा बोल मन डरे लागप
वर गटलारी परगट माया जळ्मा हडप
वोत गीदया घोर मन डरे लागप
वरगटलारी परगट माया अंबा हडप
वोत रींचडा घोर मन डरे लागप ।

" इस पहाड की उस तरफ तोळजा (देवी) हडक रही है
वहाँ बाघ घूर रहा है, मुझे डर लगता है
इस पहाड की उस तरफ हिंगळा हडक रही है
वहाँ मुर्गा कुहुक कर रहा है, मुझे डर लगता है
इस पहाड की उस तरफ मसूरी हडक रही है
वहाँ सांड बोल रहा है, मुझे डर लगता है
इस पहाड की उस तरफ सीतला हडक रही है
वहाँ सुअर चिल्ला रहा है, मुझे डर लगता है
इस पहाड के उस तरफ एकवळ अंगर हडक रही है
वहाँ मोर चिल्ला रहा है, मुझे डर लगता है
इस पहाड की उस तरफ जळपा हडक रही है
वहाँ चीता घूर रहा है, मुझे डर लगता है
इस पहाड के उस तरफ अंबा हडक रही है
वहाँ रीछ घूर रहा है, मुझे डर लगता है ।"

(76)

भवानीर गीत (देवी की मनोरंजन गीत)

वटलीन सटली गंगा वेयीयाव
माँई ब्याटी जळ्पा याडी जे जे करती याव
जे जे करती याव याडी जवाब देती याव ।
वटलीन सटली गंगा वेयीयाव
माँई ब्याटी तोळजा याडी जे जे करती याव
जे जे करती याव याडी पाट पटोळो पेरीयाव ।
पाट पटोळो पेरीयाव, पीळी दरियायी ओडीयाव
वटलीन सटली गंगा वेयीयाव
माँई ब्याटी सीतला याडी जेजे करती याव
जे जे करती याव याडी हंकारो देती याव ।

" उलट-पलट गंगा बहती आ रही है
उसमें बैठी जळ्पा देवी जै-जै करती आ रही है
जै-जै करती आ रही है देवी, जवाब देती आ रही है
उलट-पलट गंगा बहती आ रही है
उसमें बैठी तोळजा देवी जै-जै करती आ रही है
जै-जै करती आ रही है देवी, पाट-पट्टोला पहनी आ रही है
पाट-पट्टोला पहनी देवी पीली ओढनी ओढकर आ रही है
उलट-पलट गंगा बहती आ रही है
उसमें बैठी सीतला देवी जै-जै करती आ रही है
जै-जै करती आ रही है, देवी हँकार देती आ रही है ।"

§ 77 §

भवानीर अकाडो पाडणो §देवी की पूजा सामग्री का उठावन §

आडेती दाडो तोळजा दाडो चाडीयायो
दाडो घडीयायो याडी पाडले अकाडो
आडेती दाडो जळमा दाडो घडीयायो
दाडो घडीयायो याडी पाडले अकाडो ।
आडेती दाडो हिंगळा दाडो घडीयायो
दाडो घडीयायो याडी पाडले अकाडो ।
आडेती दाडो अंबा दाडो घडीयायो
दाडो घडीयायो याडी पाडले अकाडो ।
आडेती दाडो मसूरी दाडो घडीयायो
दाडो घडीयायो याडी पाडले अकाडो ।
आडेती दाडो सीतला दाडो घडीयायो
दाडो घडीयायो याडी पाडले अकाडो ।
आडेती दाडो ध्वाळ अंगर दाडो घडीयायो
दाडो घडीयायो याडी पाडले अकाडो ।

" छिप-छिपकर सूर्य देव , तोळजा देवी आगे बड रहा है
सूर्य आगे बड रहा है देवी उठाले अपनी पूजा सामग्री
छिप-छिपकर सूर्य देव , जळमा माँ आगे बड रहा है
सूर्य आगे बड रहा है देवी उठाले अपनी पूजा सामग्री
छिप-छिपकर सूर्य देव , हिंगळा देवी आगे बड रहा है
सूर्य आगे बड रहा है देवी उठाले अपनी पूजा सामग्री
छिप-छिपकर सूर्य देव , अंबा देवी आगे बड रहा है
सूर्य आगे बड रहा है देवी उठाले अपनी पूजा सामग्री
छिप-छिपकर सूर्य देव, मसूरी माता आगे बड रहा है
सूर्य आगे बड रहा है देवी उठाले अपनी पूजा सामग्री
छिप-छिपकर सूर्य देव, सीतला देवी आगे बड रहा है
सूर्य आगे बड रहा है देवी उठाले अपनी पूजा सामग्री
छिप-छिपकर ध्वाळ अंगर देवी आगे बड रहा है
सूर्य आगे बड रहा है, देवी उठाले अपनी पूजा सामग्री ।

(78)

अकाडो पाडेर वींती (देवी की अंतिम गीत)

आवु कारण, सावु कारण
धच्चा धारण, च्याको पूरण
क्याकी पडान, हडका पडान
कूपसी मायी मोटीर कोळे तारण
तोळ्या मोटीर कोळे तारण
वडेलासू वदजो
धूरलेसू पेलजो
लींबेडासू लदजो
साई वेस मारी याडी
साती भवानी साई वेस
ई पूजा तोन पूंच करियाँ, मारी याडी भवानी

लाकावत हांजी बाई, लाकावत मन्नी बाई, लाकावत सत्ती बाई, लाकावत रामी बाई, लाकावत कमला बाई और लाकावत पद्मा बाई - गाँव - बंडारामारम, मंडल - तुंगातुर्ती - जिला - नलगोण्डा

यहाँ आकर, साथ रहकर
प्रत्यक्ष होकर च्याको (गेहूँ या जवार के आटे से देवी की मूरत के सामने गोलाकार से एक चिह्न बनाते हैं उसे च्याको पूरना कहते हैं) पूरकर
खीर-मिठाई रखकर, पकायी गयी हाँडियाँ रखकर
कौनसी देवी बडी है माँई
तोळजा देवी बडी है माँई
बदला का पौधा की तरह जल्दी ऊँचा हो जाना
घुलर के पेड की तरह जल्दी चारों तरफ फैलजाना
नीम के पेड की शीतल छाँह की तरह हमारा घर अति शीतल रहना
कृपा करना हमारी देवी
सात देवियों, दया कीजिए
यह पूजा तुम्हें पहुँचता ही रहेगा मेरी माता देवी ।

सीतला
----

§ 79 §

सीतला §सीतला देवी §

सीतला §चेचक की देवी§ बंजारों का त्योहार है । टांडे के लोग सामूहिक रूप से सीतला माता की पूजा के एक दिन पहले टांडे के बाहर सीतला मनाने का जगाह पर जाकर वहाँ के छोटे-छोटे पौधों को निकालकर साफ-सफाई करते हैं । इस अवसर पर टांडे की महिलाएँ, कुँवारी लड़कियाँ सभी मिलकर बहुत उत्साह से यह पहला गीत गाती हैं ।

लाला ढाकोडी कटान वाडेदर
लाला बारेई कोसे पर मय्या खाडू भडक
लाला केसेपरे र चूँदेळियो
लाला बारे कोसे पर मयूँ बाळेदा भूकदी ।

" लाला नायक छोटे-छोटे पौधों को कटवाकर वहाँ
पौडा करवादेना
लाला बाराह कोस तक अपने पशुओं के झुंड को भगाते हैं
लाला वहाँ पर कुशल मंगल रहना
लाला बाराह कोस तक हम पशुओं के झुंड को भगाने
में कोई कठिनाई ना हो ।"

§ 80 §

सीतलार गीत §सीतला देवी की गीत §

बावा अरास्टे लागी सस्पारी
बावा सीतला कर तारी मस्टेपर
बावा झूरलो नाचे तारी मस्टेपर
बावा बाळदा भडके तारी मस्टेपर
बावा बोकड कटे तारी मस्टेपर
बावा मळाओ ब्याटे तारी मस्टेपर
बावा साईडा घौरे तारी मस्टेपर
बावा अरास्टे लागी सस्पारी
बावा झूरलो नाचे तारी मस्टेपर
बावा मळाओ ब्यास तारी मस्टेपर ।

" माता पूजा करेंगे तेरे मठ पर
माता झुंड नाचेंगे तेरे मठ पर
माता पशुओं की झुंड भागती हैं तेरे मठ पर
माता मुर्गी कटते हैं तेरे मठ पर
देवी स्त्री-पुरुषों के झुंड बैठते हैं तेरे मठ पर
माता नगारा बजाते हैं तेरे मठ पर
देवी झुंड नाचते हैं तेरे मठ पर
देवी स्त्री-पुरुषों की झुंड बैठती हैं तेरे मठ पर ।"

वाँकडोत भीकी बाई, वाँकडोत केळी बाई, गाँव - लक्ष्मक्का पल्ली
जिला - वरंगल

(8)

तीज बोवणो (तीज बुवाना)

साई संसा बागेती आई सोनकी
तारो मोयेनारो दल भीजगो ।
डूरलो नयावती आई सोनकी
तारो मोयेनारो दल भीजगो ।
सायेडा घोरावती आई सोनकी
तारो मोयेनारो दल भीजगो ।
भीयाडूंरो मळाओ लाई सोनकी
तारो मोयेनारो दल भीजगो ।
याडीदूंरो डूरलो लाई सोनकी
तारो मोयेनारो दल भीजगो ।
सातपूर डूरलो लाई सोनकी
तारो मोयेनारो दल भीजगो ।
रमती-रमाडती आई सोनकी
तारो मोयेनारो दल भीजगो ।

साईं संसा बाग से आयी है देवी
तेरा मन प्रसन्न हुआ है
नचाती हुई झुंड के साथ आयी देवी
तेरा मन प्रसन्न हुआ है
नगारा बजाती हुई आयी माता
तेरे दिल को संतुष्ट हुआ
भाईयों के झुंड ले आयी देवी
तेरा दिल संतुष्ट हुआ
माताओं की झुंड ले आयी माता
तेरा दिल संतुष्ट हुआ
सहेलियों की झुंड ले आयी देवी
तेरा मन प्रसन्न हुआ
खेलती हुई और खेलाती हुई आयी देवी
तेरा मन प्रसन्न हुआ ।"

(82)

तीज (तीज की तयारी)

नव दाडेरी नवसेर हार, बाईरो पालेणा
जनगामेती खाती न बलान, बाईरो पालेणा
सोने रो पीढ्ढअ घडान, बाईरो पालेणा
रुपेरो नीक्सा बेसारन, बाईरो पालेणा
ओ पीडीयापर बाईन बेसारन, बाईरो पालेणा
नव दाडेरी हूँसप तीज, बाईरो पालेणा।

"नौ दिन के नौ सौ क्तार, देवी की पूजा के लिए
जनगाँव से बढ़ई को बुलाकर, देवी की अर्चना के लिए
सोने का पीढा बनवाकर, देवी की पूजा के लिए
चाँदी की मूर्ति बनवाकर, देवी की पूजा के लिए
उस पीढा पर देवी को बिठाकर, देवी की पूजा के लिए
नौ दिन के प्यारी तीज, देवी की पूजा के लिए।"

§ 83 §

सेवा भाया § बंजारों का देव §

सेवा भाया बेटोये सोनेरी पालेकीमा
तीज बोईयो ओरी देवळेमा
डंडी याडी ब्याटीये सोनेरी पालेकीमा
ढाक्को मांडियो ओरी देवळेमा
सेवा भाया ब्याटोये ध्वाळो घोडलेपर
भोग लागियो ओरी देवळेमा
डंडी याडी ब्याटीये सोनेरी पालेकीमा
बोकड कीटये ओरी देवळेमा ।

" सेवाभाया बैठे हैं, सोने की पालकी में
तीज बुवाए हैं उसके देवल में
मेरामा माँई बैठी है, सोने की पालकी में
चबूतरा बनाये है उसके देवल में
सेवा भाया बैठे हैं सफेद घोडे पर
भोग §पूजा§ कर रहे हैं, उसके देवल में
डंडीयाडी बैठी है, सोने की पालकी में
मुर्गा कट रहे हैं, उसके देवल में ।"

(84)

तीजेन पाणी घालनो (तीज में पानी डालना)

लांबी लांबीये लांबडी वेगेरिया
लांबी लांबीये लांबडी वेगेरिया
फांका फाोडये लांबडी वेगेरिया
गंटा मारिये लांबडी वेगेरिया
दळ लेरिये लांबडी वेगेरिया
लांबी लांबीये लांबडी वेगेरिया
लेरा लेरिये लांबडी वेगेरिया
लांबी लांबीये लांबडी वेगेरिया ।

लंबी-लंबी है हरियाली मरियामा देवी
लंबी-लंबी है हरियाली मरियामा देवी
शाखा फूट रही हैं पौधों से मरियामा देवी
मज़बूत हो रही है तीज मरियामा देवी
बडी हो गयी हैं हरियाली मरियामा देवी
लंबी लंबी हैं हरियाली मरियामा देवी
मज़बूत बन गयी हैं तीज मरियामा देवी ।

(85)

तीज मोटियार (तीज की परिपक्वता)

मारी पते-पाणीरी ए तीज
मोटियार छुंगला राळेलीदी ।
मारी वेला-भावेटीरी ए तीज
मोटियार छुंगला राळेलीदी ।
मारे सोने-रुपेरी ए तीज
मोटियार छुंगला राळेलीदी ।
मारी भाजी-पालेरिए तीज
मोटियार छुंगला राळेलीदी ।
मारी सातपूरी ए तीज
मोटियार छुंगला घालेलीदी ।
मारी झरलूँर हूँसण तीज
मोटियार छुंगला राळेलीदी ।

"हमारी स्वच्छ पानी से इस तीज ने परिपक्वता धारण करली हैं
हमारी कष्ट-नष्ट की इस तीज ने परिपक्वता धारण कर ली हैं
हमारी सोने-चाँदी के इस तीज ने परिपक्वता धारण कर ली हैं
हमारी भाजी-पान के इस तीज ने परिपक्वता धारण कर ली हैं
हमारी सहेलियों की इस तीज ने परिप दता धारण करली हैं
हमारी झुंड के इस तीज ने परिपक्वता धारण कर ली हैं।"

§ 86 §

ओडली § तीज §

म लकडीन जाऊँ तो हलकन
आऊँ ए ओडली वेगेरिया ।
म छणा न जाऊँ तो हलकन
आऊँ ए ओडली वेगेरिया ।
म खडेन जाऊँ तो हलकन
आऊँ ए ओडली वेगेरिया ।
म खेतेन जाऊँ तो हलकन
आऊँ ए ओडली वेगेरिया ।
म कूणसी कामेन जाऊँ तो
हलकन आऊँ ए ओडली वेगेरिया ।

" मैं लकडी बीनने जाऊँ तो प्यार से तुरन्त आती थी मरियामा देवी
मैं कंडा बीनने जाऊँ तो प्रेम से तुरन्त आती थी मेरी प्यारी तीज
मैं घांस काटने जाऊँ तो प्यार से तुरन्त आती थी देवी
मैं खेत-खलियानों में जाऊँ तो प्रेम से तुरन्त आती थी मरियामा
मैं किसी काम के लिए जाऊँ तो प्यार से तुरन्त आती थी मेरी
प्यारी तीज ।"

(87)

दोना या चडकला

दोना द रे वीरणा दोना द
नव दाडेरी भूकी रे भीया
तरसी रे भीया, दोना दरे दोना द
मारो हूँसेरो वीरा रे दोना द
तोन धोक दीयूँ रे वीरा दोना दरे दोना द
तोन घडी दरादी यूँ रे वीरा दोना द
भूक लागीरे वीराणा दोना दरे दोना द
चडकूला दरे भीया चडकला द
नव दाडेरी भूकी रे भीया, तरसी रे वीरा
चडकूला दरे चडकूला द ।

" दोना (पलाश के पत्ते में गेहूँ और चना बोते हैं, इसे
दोना या चडकूला कहते हैं) दे भाई दोना दे
नौ दिन से भूखी भैया प्यासी
दोना दे भाई, दोना दे
मेरे प्यारे भाई दोना दे
तुझे नमस्कार करती हूँ भाई दोना दे, दोना दे
तुझे घडो दिलादेती हूँ, भाई चडकूला दे
भूख लग रही है भाई दोना दे, दोना दे
चडकूला दे भाई, चडकूला दे
नौ दिन से भूखी भैया, प्यासी रे भाई
चडकूला दे, चडकूला दे ।"

(88)

तीज (पहेली गीत)

तीजेर बापे नाम कांई हो नायका
वोरो सरस वोन केदीजो नायका
तीजेर बापे नाम गंगाजळ राजा हो नायका
तीजेरी याडी नाम कांई हो नायका
वोरो सरस वोन केदीजो नायका
तीजेरी याडी नाम माजाळ राणी हो नायका ।
तीजेरी भाई नाम कांई हो नायका
वोरो सरस वोन केदीजो नायका
तीजेर भाई नाम हांसला न खवला ।
तीजेरी भैने नाम कांई हो नायका
वोरो सरस वोन केदीजो नायका
तीजेरी भैने नाम अवरी न गवरी (गौरी) ।

"तीज के बाप का नाम क्या है नायक ? उसका जवाब उसको कह देना नायक !

तीज के बाप का नाम गंगाजल राजा है नायक।

तीज की माँ का नाम क्या है नायक ? उसका जवाब उसको कह देना नायक ! तीज की माँ का नाम मजाळ रानी है नायक। तीज के भाईयों के नाम क्या है नायक ? उसका जवाब उसको कह देना नायक ! तीज के भाईयों के नाम हांसला और खवला।

तीज के बहनों के नाम क्या है नायक ? उसका जवाब उसको कह देना नायक ! तीज के बहनों के नाम अवरी और गवरी (गौरी)।"

(87)

तीज (पहेली गीत)

हेटाले मलकेनी आयो हो नायका
जेरो नसाब जेन छाण्दो नायका ।
बगर टांगेरो काँई हो नायका
बगर टांगेरो सरप हो नायका ।
बगर फूलेरो काँई हो नायका
बगर फूलेरो घूरल हो नायका ।
बगर बिजारो काँई हो नायका
बगर बिजारो गाज हो नायका ।
बगर डांडीरो काँई हो नायका
बगर डांडीरो इंडा हो नायका ।
बना जडेरो झाड कूणसो नायका
बना जडेरो अमरेल्डी रे नायका ।

" पूरब देश से आया है ! नायक
जिसका अर्थ जिसको कहना है नायक
बिना पैर का क्या है नायक ? बिना पैर का सर्प है नायक
बिना फूल का क्या है नायक ? बिना फूल का घुलर है नायक
बिना बीज का क्या है नायक ? बिना बीज का कुकुरमुत्ता है नायक
बिना डांडी का क्या है नायक ? बिना डाँडी का अंडा है नायक
बिना जड़ का क्या है नायक ? बिना जड़ का अमर बेल है नायक ।"

§ १० §

गणगौर § गणगौर §

मारी ऊजळी गणगौर सोबत राळिये
झर मर झोलो ले मारी झोलो ले ।
मारी पीळे पाटेरी गणगौर सोबत राळिये
झर मर झोलो ले डोळा ले हिंडोळो ले ।
तोन काचे घाल सदारियो --
झर मर झालो ले मारी झोलो ले ।
तोन लट्टा घालन सदारियो --
झर मर झोलो ले झमरको ले डोळा ले हिंडोळो ले ।
तोन टूकरी ओडान, घूंगटो घलान सदारिये
झर मर झोलो ले हिंडोळो ले ।
तोन फेटिया पेरान सदारिये --
झर मर झोलो ले झमरको ले, डोळा ले हिंडोळो ले ।
तोन बालिया घालन सदारिये
झर मर झोलो ले मारी झोलो ले ।
तोन टोपली घालन सदारियो
झर मर झोलो ले झमरको ले डोळा ले हिंदोळो ले ।

" मेरी ऊजली गणगौर (गण का अर्थ है पुरुष और गौर का अर्थ है गौरी अर्थात स्त्री-पुरुष की संयुक्त प्रतिमा गणगौर कहलाती है) साथ रही है

रिम-झिम झूला ले हमारी हिंडोला ले
मेरी पीला पाट की गणगौर साथ रही है
रिम-झिम झूला ले हमारे हिंडोला ले
तुझे काचे (शीशा) डालकर सवाँरी
रिमझिम झूला ले हमारे झूला ले
तुझे केश डालकर सवाँरी
रिम-झिम झूला ले, डोला ले हिडोला ले
तुझे ओढनो पहनाकर, घुँघट से तय्यार किये हैं
रिम-झिम झूला ले हमारे हिंडोला ले
तुझे लेंहगा पहनाकर तय्यार किये हैं
रिम-झिम झूला ले डोला ले, हिंडोला ले
तुझे चूड़ियाँ पहनाकर तय्यार किये हैं
रिम-झिम झूला ले हमारो झूला ले
तुझे टोपली (आभूषण) पहनाकर तय्यार किये हैं,
रिम-झिम झूला ले, डोला ले, हिंडोला ले।"

§ 91 §

तीज ओवडनो § तीज उखाडना §

तूं क्रोती आयी ये धातण गंगा
मारी ओडलीरो जोत लेई चालीए डगरे चाली
तूं क्रोती आयी ये व्यारण गंगा
मारी ओडलीरो जोत लेई चालीए डगरे चाली
तूं क्रोती आयी ये सात मोट वावडी
मारी सातपूरो जोत लेई चालीये डगरे चाली
मारी झूरलोर जोत लेई चालीये डगरे चाली ।

" तू कहाँ से आयी है ! धातन गंगा
मेरी तीज की ज्योती ले चली, चली जा रही हो
तू कहाँ से आयी हे ! धातन गंगा
मेरी टोकरियों की ज्योती ले चली, चली जा रही हो
तू कहाँ से आयी है साथ ! हे ! बडी बावली
मेरी सहेलियों की ज्योती लेचली, चली जा रही हो
मेरी झुंड की ज्योती ले चली, चली जा रही हो ।"

§ 92 §

तीज वेंटनो §तीज बाँटना §

अंदेडी बंदेडीमा बंदेडी बोरेडी
सेवा भाया भांदोये टेडी पाकेडी
पाकेडीमा रोळो ये तीजेरो झूंगला
अंदेडी बंदेडीमा बंदेडी बोरेडी
सुका भाया भांदोये टेडी पाकेडी
पाकेडीमा रोळ्ये पाटेरो झूंगला
अंदेडी बंदेडीमा बंदेडी बोरेडी
बापू भांदोये टेडी पाकेडी
पाकेडीमा रोळोये तीजेरो झूंगला ।

" भारी झुंड में चाँद जैसे
"सेवा भाया" बाँधा हुआ है, टेडी पगडी
पगडी में रोपा गया है तीज के पौधें
भारी झुंड में, चाँद जैसे
सुका भाया बाँधा हुआ है, टेडी पगडी
पगडी में पसारे हैं, पाट जैसी तीज
भारी झुंड में, चाँद जैसे
बापू बाँधा हुआ है, टेडी पगडी
पगडी में रोपा गया है तीज के पौधें ।"

(13)

तीज की समाप्ती

यह सीतला त्योहार से लेकर तीज की समाप्ती तक विविध अनुष्ठानों का सराहना करती हुई यह अंतिम गीत गाती है । यहाँ पर सभी अनुष्ठानों को नानू बाळीक्या के नाम से संबोधित किया गया है । गीत इस प्रकार है --

नानू बाळीक्या सीतला करान गो
नानू बाळीक्या मळाओ भरान गो
नानू बाळीक्या नंगरीमा रोळ गो
नानू बाळीक्या घँऊ (गेहूं) गळान गो
नानू बाळीक्या वोल्डी गुंतान गो
नानू बाळीक्या डाकळो घलान गो
नानू बाळीक्या डुरलो नचान गो
नानू बाळीक्या रमती रमाड गो
नानू बाळीक्या दमोळी करान गो
नानू बाळीक्या गणगोर करान गो
नानू बाळीक्या डुंगलामा रोळ गो
नानू बाळीक्या तीज वेरान गो ।

" नानू बाळीक्या सीतला संपूर्ण करा गये हैं
नानू बाळीक्या झुंड बिठाकर गये हैं
नानू बाळीक्या टांडे में घूमकर गये हैं
नानू बाळीक्या गेहूं गलाकर गये हैं
नानू बाळीक्या टोकरीयां गुंथवाकर गये हैं
नानू बाळीक्या चबूतरा बनवाकर गये हैं
नानू बाळीक्या झुंड को नचाकर गये हैं
नानू बाळीक्या धमोळी संपूर्ण कराकर गये हैं
नानू बाळीक्या गणगौर संपूर्ण कराकर गये हैं
नानू बाळीक्या तीज संपन्न कराकर गये हैं ।

(१५)

वोल्डी वेरावणो (टोकरी विसर्जन)

आवो ये सातणो
जावो ये सातणो ।
कोई लडीजो मत
कोई फोडीजो मत ।
रात अंदारिये
कोई लडीजो मत
कोई फोडीजो मत ।
आवो ये सातणो
जावो ये सातणो
कोई लीडजो मत
कोई फोडीजो मत ।

"आओ हे ! साथी
जाओ हे ! साथी
कोई लडना नहीं
कोई फोडना नहीं
रात अंधेरी है
कोई लडना नहीं
कोई फोडना नहीं
आओ हे ! साथी
जाओ हे ! साथी
कोई लडना नहीं
कोई फोडना नहीं ।"

वांकडोत दूली बाई, वांकडोत रंगी बाई, वांकडोत चिन्नी बाई,
वांकडोत अमाली बाई, वांकडोत मंकी बाई, वांकडोत भद्री बाई
गांव - लक्ष्मक्का पल्ली मंडल - कोडकण्डला जिला - वरंगल

होळी ऽहोलीऽ

ऽ 95 ऽ

होळी रमणो ऽहोली खेलऽ

प्रस्तुत गीत में होली त्यौहार को टांडे के बाल-वृध्द, स्त्री-पुरुष सभी लोग मिलकर हास्य उल्लास से खेल आरम्भ करते हुए यह गीत गाते हैं। गीत इस प्रकार है --

बारे रे मीनामा आयी र होळी
काकी दादी रींस मत करीजो
हम खेलाचा होळी
हेट नगारा ऊपर ट्वाळी
गरजन आयी होळी
होळी ये बम्मर भोळी
सब दुनियारी होळी ।

" बाराह महीनों के बाद आयी है होली
काकी, दादी गुस्सा नहीं करना
हम खेलते हैं होली
नीचे नगारा ऊपर ठोळी ऽनगारा बजाने का डंडा ऽ
गरजकर आयी है होली
होली है यह बम्मर भोली
सब लोगों की होली । "

§ 96 §

होळी रमणो § होली खेल §

आवोरे हाव-साण
आपण खेला होळी
आइरे होळी ठम्मक ठोळी
रंगेरी होळी
नान मोट, ड्व साण
धांसन आव-अपण रम्मा होळी
जीवते रीयाँतो पेर खेला होळी
उतो मूयेन कोट-कमीस
पेराव होळी
आवोरे भीयाओ
आपण खेला होळी ।

" आओ हे ! बाल-वृध्द
हाम खेलेंगे होली
आयी है होली, ठम्मक ठोली
रंग-बिरंग की होली
छोटे-मोटे, बडे-वृध्द
भागकर आओ, हम खेलेंगे होली
जीवित रहेंगे तो फिर खेलेंगे होली
वह तो मृतक को भी कोट-कमीज़
पहनाती है होली
आओ हे ! भाईयों
हम खेलते हैं, होली ।"

§ 97 §

गेरू वगावणो § होली का इनाम §

बोल भाई बोलेडा बोलरे तू
तारि वाँसळिरो मूँडो छोडरे तू
बोलरे कोबलिया बोल रे तू
बोलतो कूँ नईरे
बीसाओ द पचीसरे तू
तारी गेरणीति मतरो लाणलरे
बोलरे कोबलिया बोलरे तू
बोलतो कूँ नईरे ।
पाँच पचीस देणो र क नाईलो र
हमेन पांच पचीस देणो र क नाईलो र
तार बेळेर छोरा हूयर क नाईलो र
आवती होळीर आयाँ र क नाईलो र
हमेन पाँच पचीस दोनो र क नाईलो र ।
हुकारी मारो रे हुकारी मारो ....
आवती होळीर नायकेर बेळो र बेळो र होई....
हमेन पाँच पचीस दीनो र दीनो र होई....
आवती होळी ताणू हरो भरो रेणो र होई.... ।

" बोल भाई बोलडा {राम} बोलना है तू
तेरे मुँह को सीधा करके बोलना, तू
बोल कोबलिया {काले रंग वाला} बोलना है तू
बोलता क्यूँ नहीं
पैसे देना पच्चीस तू
तेरी धर्म पत्नी से विचार करलेना
बोल कोबलिया बोलना तू
बोलता क्यूँ नहीं
पाँच, पच्चीस देना है नायक
हमें पाँच पच्चीस देना ही है नायक
तेरा जुड़वा बच्चे पैदा होंगे नायक
फिर आने वाली होली के दिन आयेंगे नायक
हमें पाँच पच्चीस दिया है नायक
नायक का नाम लेकर आशीर्वाद देते हुए जोर से पुकारते हैं।

आने वाली होली तक नायक के जुड़वा हे ! जुड़वा होई ... ।
हमें पाँच पच्चीस दिया है नायक दिया रे होई ... ।
आने वाली होली तक नायक का घर हरा-भरा रहना रे होई ... ।"

(98)

रंगेर होळी (रंगीन होली)

डंडा मारो मारो र सीर भोळा रसिया
रंगेति आयी रंगी वाँसेळी, आयी झुंडी वाँसेळी
डंडा जोडो जोडो र सीर भोळा रसिया
रंगेति आयी रंगी वाँसेळी, झुंडी वाँसेळी
अड्गु भेळो भेळो र सीर भोळा रसिया
रंगेति आयी रंगी वाँसेळी, आयी झुंडी वाँसेळी
होळी रम्मो रम्मो र सीर भोळा रसिया
रंगेति आयी रंगी वाँसेळी, आयी झुंडी वाँसेळी
होळी कूदो कूदो र सीर भोळा रसिया
रंगेति आयी रंगी वाँसेळी, आयी झुंडी वाँसेळी ।

" डंडा मारो, मारो (डंडे की टकराहट) हे ! सीर भोला रसिक
रंग-बिरंग से आयी है रंगीन होली, आयी झुंड लेकर होली
डंडा जोड, जोड है ! सीर भोला रसिक
रंग-बिरंग से आयी है रंगीन होली आयी झुंड लेकर होली
कदम, मिलाओ, मिलाओ हे ! सीर भोला रसिक
रंग-बिरंग से आयी है रंगीन होली, आयी झुंड लेकर होली
होली खेल-खेलना है सीर भोला रसिक
रंग-बिरंग से आयी है रंगीन होली, आयी झुंड लेकर होली
होली कूद-कूदना है सीर भोला रसिक
रंग-बिरंग से आयी है रंगीन होली
आयी है झुंड लेकर होली । "

§ ११ §

डफडा वाळो § डफ वाले §

असी डफे वालेकु टेडी टेडी पाकेडी
ओरी पाकेडीन देक चालचे रीसयो
डफे चालेदो, भई भई रे डफे चालेदो ।
असी डफे वालेकु लांबे लांबे झलपा
ओरी झलपा देक न चालचे रीसयो
डफे चालेदो भई भई रे डफे चालेदो ।
असी डफे वालेकु गोडा गोडा जांगिया
ओरी जांगिया देक हालचे रीसयो
डफे चालेदो भई रे डफे चालेदो
भई भई रे डफे चालेदो ।

" इस डफ वाले की टेडी-टेडी पगडी
उस पगडी को देखकर चलते हैं रसिक
डफ चलने दो, भई रे डफ चलने दो
इस डफ वाले का लंबा-लंबा कुर्ता
उस कुर्ते को देखकर चलते हैं रसिक
डफ चलने दो, भई भई रे डफ चलने दो
इस डफ वाले का घुटना-घुटना निक्कर
उस निक्कर को देखकर चलते हैं रसिक
डफ चलने दो, भई रे डफ चलने दो
भई भई रे डफ चलने दो ।"

(100)

छूटो गीत

चब्बर चब्बर कीदी छोरी
चाबी काळ्या बोर
चोदे देचीके, कोनीए छोरी
घरेन जारे ढोर ।

" बक बक कर रही है लडकी
चाब रही है काला बेर
चोदने देती, या नहीं, है ! लडकी
घर जा रही हैं पशु की झुंड ।

(101)

छूटो गीत

अंगे पाचे हालो जन्ना
खयो झलन मारो जन्ना
खिचिया झड्गो देवरियो
मोटियारो दाडो ।
ऊंडी ऊँडी दारिमा
मूँडो घूमो जहत
फूली खोगी देवरियो
मोटियारो दाडो ।

" आगे-पीछे हिलते समय
भुजा पकडकर मारते समय
खिचिया (पट्टा) झड गया देवर
जवानी का दिन ।
गहरी गहरी खाई में
मुँह घूमते समय
फूली (नाक की आभूषण) गुम हो गई देवर
जवानी का दिन । "

§ 102 §

काम भावना का संयोग

लैंगी गीत में स्त्री की नितंब और पुरुष की जननेंद्रिय का बीहपक वर्णन हुआ है --

गोलाल रंग पेटियामा
गोरदीचे गांड रे
लांबी लांबी धोती मा
घेरी वाळो आंड रे
भोसी रांद रीचे धान
भोल्डो काड रोचे कान
भोसी रींसाने जा
भोल्डो मनायेन जा
भोसी ढूंगो मोडेन जा
भोल्डो मांई घालेन जा
फाटे-फूटे पेटियामा
पटोळी सी गांड रे
लांबी लांबी धोतीमा
घेरी वाळो आंड रे
लाय करती भोसी मूंडो फाडी
हंसतो हंसतो भोल्डो मांई घालो ।

विध्या नायक - यूनानी अस्पताल - हैदराबाद

" गुलाल रंग लहँगा में
गोरी सी गाँड रे
लम्बी लम्बी धोती में
बाल वाला लंड रे
नितंब राँध रही है धान {चावल}
लंड, निकाल रहा है कान
नितंब नाराज होकर जा रही है
लंड मनवाने जा रहा है
नितंब {झूला} कमर मोड रही है
लंड अंदर डालने जा रहा है
फटे - फुटे लहंगा में
पटोल जैसी गाँड रे
लंबी लंबी धोती में
बाल वाला लंड रे
लज्जित होती हुई नितंब मुँह फाडती है
हँसता हँसता लंड अंदर डालता है ।"

§ 103 §

नणद-भोजाई § ननद भाभी संवाद §

ब्याटी वूवलेपर मूंट्याओ घसरी
थोरी चूंडयापर नंबरे हमारियो
पणियारी भई रे पणियारी भई-भई रे ।
टाँगेवेरी घटकी वरे खोई नणदो
आन खडे गेरिया खोस लेगे घटकी
पाणारी घाटेपर भई रे पाणारी घाटेपर ।
गळकेरो हाँसले वरे खोई नाणदो
आन खडे गेरिया न खोसलेगे हाँस लो
झोलुमा भई रे झोलुमा भई भई रे झोलुमा ।
येडलेपर बेडलो, थोरी बेडलेपर झारी
थोरी झारी पर नंबर हमारियो पणियारी
भई भई रे पणियारी ।

" बैठी कुएँ के पास, चूडियों की सफाई कर रही है
उस चूडियों को देख-देख कर बैठी है पनघट पर
भई रे पनघट पर भई भई रे
पैर की उंगलियों के बिछुआ कहाँ गुम हो गया ननद जी
आकर खडे होगये चोर और छीन लिया बिछुआ
पनघट पर भई रे पनघट पर
गले का हाँसलो (गले का आभूषण) कहाँ गुम होगया ननद जी
आकर खडे होगये चोर और छीन लिया हाँसलो
जंगल में, भई रे जंगल में भई भई रे जगल में
घडे के ऊपर घडा (बेडलो) उस बेडलो पर झारी
लेकर आरही है पनघट से
भई रे पनघट से । "

§ 104 §

होळीर गीत § संवादात्मक मनोरंजन गीत §

आडी टेडी झोलेमा
झाड वसेरो गेरियो
ऊ तो झाड अंबारो गेरियो
बागेमा भई रे बागेमा ।
आडी टेडी झोलेमा
झाड वसेरो गेरियो
ऊ तो झाड लींबेरो गेरियो
बागेमा भई रे बागेमा ।
आडो टेडी झोलूमा
झाड वसेरो गेरियो
ऊ तो झाड नारळेरो गेरियो
बागेमा भई रे बागेमा ।
आडी टेडी झोलेमा
झाड वसेरो गेरियो
ऊ तो झाड सीतापळेरो गेरियो
बागेमा भई रे बागेमा ।

वाँकडोत साम्या नाईक, वाँकडोत ठाकुरू नाईक, वाँकडोत सेवू नाईक, वाँकडोत पूलसिंह नाईक, वाँकडोत रेड्या नाईक गाँव - लक्ष्मक्का पल्ली मंडल - कोडवगडला, जिला - वरंगल

" टेढ़े-मेढ़े जंगल में
पेड कौनसा है नायक
वह पेड आम का है नायक
बाग में भई रे बाग में
टेढ़े-मेढे जंगल में
पेड कौनसा है नायक
वह पेड नीम का है नायक
बाग में भई रे बाग में
टेढ़े-मेढे जंगल में
पेड कौनसा है नायक
वह पेड नारियल का है नायक
बाग में भई रे बाग में
टेढे-मेढे जंगल में
पेड कौनसा है नायक
वह पेड सीताफल का है नायक
बाग में भई रे बाग में ।"

§ 105 §

मोर मारनो § मोर मारना §

रळीये गळीमा मोरया रगतो न घगतो
ऊ तो मोटि गळीमा मोरया गपत हूयो
मोरया मारा र भई रे मोरया मारा र,
इवालेती मोरया मारा र समसेति
मारो मारो मोरया कूवले पर झम्मरको
रतन कूओ हेली थांको मूंडो सांवडो
ऊ तो पेटियारी डोरेती डोर भांदीरे
पाणी, कूवले पर भई रे कूवले पर ।

" छोटी सी गली में मोर छिपकर आया
वह बडी गली में छिपगया
मोर मारेंगे रे भाई मोर मारेंगे
तरीके से मारेंगे मोर, समझदारी से
मारो-मारो, मोर कुँए पर छलांग मारदिया
रतन कुआँ का मुँह साँकडा है
वे लेहंगे की डोरी से डोरी बाँधकर
प्यास बुझाने, कुएँ के पास
भई रे कुएँ के पास । "

§ 106 §

राम § राम नाम स्मरण §

आप कळाति नंगारा घोरायो राम
तारी नंगारान लागी चंदर जोत
हेमा साद मोटो बावा
आयो भगवान तोन परगटो
परको परको रे अग्गनेरी जोत
हेमा साद मोटो बावा
आयो भगवान तोन परगटो
आप कळाती टांडो लदायो राम
तारी टांडेन लागी चंदर जोत
हेमा साद मोटो बावा
आयो भगवान तोन परगटो ।

" आप की कला से नगारा बजायो राम
तेरे नगारा को लगी चाँद जैसी ज्योती
हेमा साधू बडा साधू है
आया भगवान तुझे परकने
परक करो परक करो अग्नि की ज्योती
हेमा साधू बडा साधू है
आया भगवान तुझे परकने,
आप रहकर टांडा लदाव किये राम
तेरे टांडे को लगी चाँद जैसी ज्योती
हेमा साधू बडा साधू है
आया भगवान तुझे परकने ।"

खोला खूषिया नायक नरसापूर, जिला- मेदक

§ 107 §

जम्मी याडी § धरती स्तुति §

असी धरती पर कूण-कूण चलेगे
असी धरती पर रामन लछमण चलेगे ।
ओरी संगत चालीरे नायेकी, चालीर सीता माता
भई रे सीता माता, भई भई रे सीता माता ।
असी धरती पर कूण कूण चलेगे
असी धरती पर तेतीस कोट चलेगे ।
ओरी नायेकी चालीरे धरती माता भई रे
धरती तो पर, भई भई रे धरती तो पर ।
असी धरती पर कूण कूण चलेगे
असी धरती पर जोगा नायक चलोगो ।
असी धरती पर कूण कूण चलेगे
असी धरती पर पटनी याडी चलीगी ।
ओरी नायेकी चालीरे धरती तो पर भईरे
धरती तो पर भई भई रे धरती तो पर ।

"इस धरती पर कौन कौन चले गये हैं
इस धरती पर राम और लक्ष्मण चले गये हैं ।
उनके राज चला है, इस धरती पर, चली सीता देवी उनके साथ
भई रे सीता माता, भई भई रे सीता माता ।
इस धरती पर कौन कौन चले गये हैं
इस धरती पर तैंतीस करोड चले गये हैं ।
उनके राज चला है इस धरती पर
भई रे धरती पर, भई-भई रे धरती पर ।
इस धरती पर कौन कौन चले गये हैं
इस धरती पर जोगा नायक चला गया ।
इस धरती पर कौन कौन चले गये
इस धरती पर पटनी याडी चली गयी ।
उनकी राज चला है इस धरती पर भई रे
धरती पर, भई भई रे इस धरती पर ।"

§ 108 §

दाडी-परबाती भजन § प्रतिदिन भजन का विवरण §

ऊ टेरे परेबाती याडी-बापेन भूझूँ रोईत
ऊ टेरे परेबाती याडी-बापेन भूझूँ हरदो परेबाती ।
ऊ टेरे परेबाती सरी रामेन भूझूँ रोईत
सरी रामेन भूझूँ, हरदो परेबाती ।
ऊ टेरे परेबाती बालाजी देवेन भूझूँ रोईत
बालाजी देवेन भूझूँ हरदो परेबाती ।
ऊ टेरे परेबाती सेवा-भाया न भूझूँ रोईत
सेवा-भाया न भूझूँ हरदो परेबाती ।
ऊ टेरे परेबाती बुडिया बापु न भूझूँ रोईत
बुडिया बापु न भूझूँ हरदो परेबाती ।
ऊ टेरे परेबाती जोगा दादानभूझूँ रोईत
जोगा दादा न भूझूँ हरदो परेबाती ।
ऊ टेरे परेबाती दादा देवे न भूझूँ रोईत
दादा देवे न भूझूँ हरदो परेबाती ।
ऊ टेरे परेबाती हनुमाने न भूझूँ रोईत
हनुमाने भूझूँ हरदो परेबाती ।
ऊ टेरे परेबाती पट्नी याडी न भूझूँ रोईत
पट्नी याडी न भूझूँ हरदो परेबाती ।

---

27. मेराजोत कसना नायक गोपन पल्ली - रंगारेड्डी जिला

" उठते ही सबेरे माता-पिता का भजन करता हूँ
उठते ही सबेरे माता-पिता का भजन करूँगा, हरदिन सबेरे
उठते ही सबेरे श्री राम जी का भजन करता हूँ
श्री राम का भजन करूँगा हर दिन सबेरे
उठते ही सबेरे बालाजी भगवान का भजन करता हूँ.
बालाजी भगवान का भजन करूँगा हर दिन सबेरे
उठते ही सबेरे सेवा भाया का भजन करता हूँ
सेवा भाया का भजन करूँगा हर दिन सबेरे
उठते ही सबेरे बुडिया बापू का भजन करता हूँ
बुडिया बापू का भजन करूँगा हर दिन सबेरे
उठते ही सबेरे जोगा दादा का भजन करता हूँ
जोगा दादा का भजन करूँगा हर दिन सबेरे
उठते ही सबेरे दादा देव का भजन करता हूँ
दादा देव का भजन करूँगा हर दिन सबेरे
उठते ही सबेरे हनुमान जी का भजनकरता हूँ
हनुमान जी का भजन करूँगा हर दिन सबेरे
उठते ही सबेरा पट्नी याडी का भजन करता हूँ
पट्नी याडी का भजन करूँगा हर दिन सबेरे ।"

दवाळी (दिवाली)

(109)

दवाळीर गीत (दिवाली)

बंजारा समाज में दिवाली के पहले दिन को " काळमस " कहते हैं। इस दिन कुंवारी लडकियाँ घर-घर जाकर अपने बुजुर्गों से आशीर्वाद लेती हैं। दिवाली के दिन बंजारे " दवाळीर दीयो बाळणो " " गावडी पूजणो " अर्थात दिवाली के दिन दीपक प्रज्वलित करना और गऊ पूजा करना। लडकियाँ दिवाली को याडी (माँ) कहकर संबोधित करती हुई लक्ष्मी देवी की पूजा करती हैं। सूर्यास्तमय होने पर लडकियाँ एक मत से दीप प्रज्वलित करती हैं। गीत इस प्रकार है ---

वरस दाडेरी कोट दवाळो बापु तोन मेरिया
आटेरी आटेरी कोट दवाळी याडी तोन मेरिया
वरस दाडेरी कोट दवाळी भीया तोन मेरिया
आटेरी आटेरी कोट दवाळी भावज तोन मेरिया
वरस दाडेरी कोट दवाळी काका तोन मेरिया
आटेरी आटेरी कोट दवाळी काकी तोन मेरिया
वरस दाडेरी कोट दवाळी दादा तोन मेरिया
आटेरी आटेरी कोट दवाळी दादी तोन मेरिया।

" वर्ष दिन की कोटि दिवाली, बापू तुझे आशीर्वाद देगा
प्यारी-प्रेमी कोटि दिवाली, माँ तुझे आशीर्वाद देगी
बरस दिन की कोटि दिवाली, भैया तुझे आशीर्वाद देगा
प्यारी-प्रेमी कोटि दिवाली, भाभी तुझे आशीर्वाद देगी
बरस दिन की कोटि दिवाली, काका तुझे आशीर्वाद देगा
प्यारी-प्रेमी कोटि दिवाली, काकी तुझे आशीर्वाद देगी
वर्ष दिन की कोटि दिवाली, दादा तुझे आशीर्वाद देगा
प्यारी-प्रेमी कोटि दिवाली, दादी तुझे आशीर्वाद देगी ।

§ 110 §

दीयो बाळणो § दीप प्रज्ज्वलित करना §

रात अंदारीये
दीवलो बाळे लीजो
दवाळीरो दाडो ए
दीवलो बाळे लीजो
लचमीरो दाडो ए
दीवलो बाळे लीजो
तेलेरो तोटो ए
दीवलो बाळे लीजो
रूपरी कमी ए
दीवलो बाळे लीजो
रात अंदारीये
दीवलो बाळे लीजो
रात अदारी रे वीरा
दीवलो बाळ लीजो
रात अदारीये
दीवलो बाळ लीजो ।

---

28. हरकावत खीरी बाई, नेल्लीकुदुरु - वरंगल

" रात अंधेरी है
दीप प्रज्वलित कर लेना
दिवाली का दिन है
दीप प्रज्वलित कर लेना
लक्ष्मी का दिन है
दीप प्रज्वलित कर लेना
तेल की कमी ना हो
दीप प्रज्वलित कर लेना
कपास की बाती कमी ना हो
दीप प्रज्वलित कर लेना
रात अंधेरी है
दीप प्रज्वलित कर लेना
रात अंधेरी है
भाई दीप प्रज्वलित कर लेना
रात अंधेरी है
भैया दीप प्रज्वलित कर लेना
रात अंधेरी है
दीप प्रज्वलित कर लेना ।"

§ III §

मेरामायाडी - सेवा भाया § मरियामा देवी-सेवा भाया §

बंजारा जाति मुख्य रूप से देवी की पूजा करती हैं। बंजारा समाज में सेवा भाया को देवी-देवताओं से भी बड़ा मानते हैं। सेवा भाया के जन्म के संबंध में इस अनुश्रुति के अनुसार --

भीमा नायक धर्मणी बाई निस्सन्तान को देखकर मेरामा याडी §मरियामा देवी§ बनजारा समाज में भक्त की परंपरा स्थापित करने का निर्णय लेकर सन्तान प्रधान करने के लिए उस टांडे में एक वृध्द महिला के रूप में आयी। इस अवसर पर यह गीत गाया जाता है --

मातेपर पोटली
हातेमा लकडी
टेक्ती टेक्ती आयी मेरामा
भीमा नायकेरी
टांडेन।

" सिर पर गठरी
हाथ में लकडी
टेक्ती टेक्ती §लकडी का सहारा लेना §
आयी है, मरियामा देवी
भीमा नायक के टांडे में।"

§ 118 §

संतान प्राप्ती के लिए प्रार्थना

मेरामा याडी वाटे पर असनाल कीदी
मेल काडन गोळी बणाई
वो गोळीन लेन भीमा नायकेर घरेन आयी याडी
डोकरी वेन केरी धर्मणी बाई न
ये गोळीन तूं खाले बाई
वो गोळीन धर्मणी बाई पचाई
नव मीना नवदाड पेटेमा समाई
जल्म लीदो सेवा भाया
वजाळो लाई मेरामा माँई ।

" मेरामा देवी रास्ते में स्नान करके
शरीर के मैले की बारीक-बारीक गोलियाँ बनायी
उस गोलियों को लेकर भीमा नायक के घर आयी देवी
वृध्द महिला की रूप धारण करके
कह रही है धर्मणी बाई से
इस गोली को खा लेना बाई
उस गोली को धर्मणी बाई सेवन कर ली
नौ महीने और नौ दिन के बाद जन्म लिया है सेवा भाया
उजाला लाई मेरामा माँई । "

§ 113 §

पिणपटणमेती आयी मेरामा § पिणपटण से आयी मरियामा देवी §

पिणापटणमेती मेरामा घोडो भीडी
पंचे कल्याणीरो याडीरो घोडो वीये
चौसट जोगणेन मेरामा मेनत कीदी
वोर सोपत लूंकडेन लीदी
टांडे-टांडेमा मेरामा लारो लेरी
सुणले लूंकड मारी वाचा सुणले
वोई खाडू केरो वीय रे
जान पूँच आजो गवालियार नाम काँई वीयरे ।

" पिणपटण से मरियामा घोडा लेकर
पंच कल्याणी, माता का घोडा होगा
चौसट पिशाचियों को मेहनत कर
उसके साथ लूंकड §सहायक§ को लेकर
टांडे-टांडे में मरियामा खबर ले रही है
सुनो सहायक मेरी वचन सुनो
वह पशु की झुंड किसकी होगी
जाकर पूछ के आना, चरवाहा का नाम क्या है ।"

§ 114 §

भक्ति का प्रस्ताव

सोपले गवालिया तारो नाम काँई
एई खड्डू केरो वीये !
सोपले लूंकड मारी वाचा सुणले
एई खाड्डू भीमा रामावतेरो वीये
मारो नाम सेवल वीयरे ।
सांजे पड्तू खाड्डू घरेन आव
छीडया घरेमा सेवक सूतो वेरो
लींबेरी झाडे हेट मेरामा ऊबी वेरी
सूतेरी सपनेमा मेरामा काँई बोल ?
सोपले सेवा मारी भक्ती करले र !
सोपले माया तारी क्तापेरी भक्ति
मन कोनी चाये तारी भक्ती
मारे सरीक मनक्या घणे वीये माँ ।

" सुनो चरवाहा तेरा नाम क्या है
यह पशु की झुंड किसकी है
सुनो लूंकड §सहायक§ मेरे वचन सुनो
यह पशु की झुंड भीमा रामावत की है
मेरा नाम सेवल है
शाम को पशु की झुंड घर आ गयी है
कोने के घर में सेवल सो रहा है
नीम के पेड की छाँव में मरियामा खडी हुई है
सेवल के सपनों में मरियामा क्या कह रही है ?
सुनो सेवा मेरी भक्ति करले ।
सुनो माया तेरी कहाँ की भक्ति
मुझे नहीं चाहिए तेरी भक्ति
मेरे जैसे पुरुष बहुत है माँ । "

§ 115 §

सेवा भाया और देवी का विवाद

सोणले भाया मारो केणो सोणले
तोन भक्ती देदूं, तोन मुक्ती देदूं
घरे आंग गरसिया सांड देदूं
अन्न देदूं तोन धन देदूं र ।
मारी भक्ती करले र सेवा भाया ।
तारो अन्न चायेनी, तारो धन चायेनी
घरे आंग गरसिया सांड चायेनी
तारी भक्ती कोनी करू मेरामा मायी ।
पेलो समारो तारे भाई न मारूं
माले मत्ता, कंकर पत्थर करूं
सात खाडूर सात गावडी रकाडू
बोदी जारेर तोमा गरीबी घालूँ र ।

"सुनो भाया मेरा कहना सुनो
तुझे भक्ति देती हूं, तुझे मुक्ति देती हूं
घर के सामने गरसिया सांड देती हूं
अन्न देती हूं और तुझे धन देती हूं
मेरी भक्ति स्वीकार करले सेवा भाया
तेरा अन्न नहीं चाहिए, तेरा धन नहीं चाहिए
घर के सामने गरसिया सांड भी नहीं चाहिए
तेरी भक्ति नहीं करूंगा मेरामा मायी
पाला-पोसा तेरे भाई को मारडालूंगी
माल-मत्ता कंकड-पत्थर करूंगी
पशुओं के सात झुंड में से सात गायों को रखूंगी
कीडे पडे हुये जवार की, तुझे गरीबी डालूंगी ।"

§ 116 §

गरीब सेवा भाया

हाते माँई दातला भाया खडेन जारो
खड मझूरियारो टापो काटो
घटकी आंगळी कटान
धर-धर लोईरो धार धाले
झाडेरी आड-आड मेरामा डूबी वेरी
दे क मेरामा गद-गद हाँस लेरी
अब करलेनी रे हटीलो भक्ती
तारो भक्ती म कोनी करूँ मेरामा मायी
विकराल रूप अवतार लीदी मायी
धरती आसमान मेरामा मूँडो फाडी
गल जाऊँ र सेवा तोन गळजाऊँ
अबी करलेनी र मारी भक्ती ।

"हाथ में दरांती भाया घाँस काटने जा रहा है
घाँस मझूर के §बडा घाँस§ काट रहा है
हाथ की छोटी उँगली कटकर
धर-धर रक्त स्राव हो रहा है
पेड की आड में मरियामा खडी हुई
देखकर मरियामा ने गद-गद हँस रही है
अब करले हटीला भक्ति
तेरी भक्ति मैं नहीं करूँगा मेरामा मायी
विकराल रूप धारण कर लिया मायीं ने
धरती से आसमान तक, मरियामा मुँह फाडकर
गल जाती हूँ सेवा तुझे, गल जाती हूँ
अभी तो करले मेरी भक्ति ।"

§ 117 §

भक्ति की शर्तें

सोपले मेरामा मारो केणो सोपले
बोलूं बचन अंबर वेणो
सात अन सात चवदे पीढी ताणी
मारी भक्ती रेणो
घरे आंगे गरसिया सांड रेणो
पेलो-समारो मारो भाई रेणो
अन्न रेणो, धन रेणो मेरामा मायी
मारो टांडो हरो भरो रेणो मेरामा मायी ।

" सुनो मीरयामा देवी मेरा कहना सुन
बोलू वचन पूरा हो जाना
सात और सात चौदाह पीढी तक
मेरी भक्ति रहना
घर के सामने गरसिया सांड रहना
पाला-पोसा गया मेरा भाई रहना
अन्न रहना, धन रहना, मीरयामा मायी
मेरा टांडा हरा भरा रहना मेरामा मायी ।"

§ 118 §

सेवा भाया - देशाटन

धवाळि देवळेति टांडो लादो
देश मळाओ भाया घालो
डुडु नगारा गपती गूंज
गरसियान भीड लावोरे
घाल गरसिया चारी पाम चाँदीसु मंडे
दोई सींग सोनेसु मंडे
ऊपरियाथी पाल मोतीरो झूला
झुलाये मेरामा माई ।

" सफेद देवल से टांडा लदकर
देश में, झुंड के साथ भाया निकले हैं
डुंडु (ध्वनी) नगारा गुम गुम कर गूंज रहा है
गरसिया सांड को पकड ले आना
चल गरसिया चारों पाँव चाँदी से सजा देता हूँ
दोनों सींग सोने से सजा देता हूँ
ऊपर पाल-मोती के झूला
झुलाए मरियामा माँ यों ।"

॥ ११७ ॥

अत्याचारों का वर्णन गीत

गरीसयारो गोबर लान
मोतीरो च्याको पुराले
खीर परसाद याडिरो भोग लगाले
साया नेलायतेरो च्यारे आये
कटका नंदी भरपूर आये
जेन परली पाळ कूण लंगाय
कूण लंगाय मेरामा मायी ।
म कटका नंदी लंगन लाली पालोर
डेरा तापदीने सेवा लाल
मसूरेन चालो भीमया फ रेंगिरो जमा ना
खाडून लेजान भांदेर दोइडीमा घाल दीने
गरीसयान पकडन चारी पामें भांद दीने र ।

" गरीसया सॉड के गोबर लाकर

मोती के जैसे च्याको ﴾गेहूं या ज्वार के आटे से गोलाकार रंगना ﴿

बनाले

खीर, प्रसाद से माता की पूजा करले

साया नेलावत से युद्ध होगा

कटक नदी भरपूर बहने वाली है

उसे पार कौन करा सकते हैं

कौन पार करा सकते हैं मरियामा मायीं

मैं ﴾सेवा भाया﴿ कटक नदी पार कर

उस तरफ डेरा तान दिया सेवालाल

मैसूर के तरफ चला है सेवा भाया

अंग्रेजी का जमाना था, पशु को झुंड को भगाकर ले गये

ले जाकर कोंडवाडा में बंद कर दिये

गरीसया सॉड को पकडकर चारों पैर बांध दिये हैं ।"

§ 120 §

अंग्रेजी शासन का अत्याचार गीत

सोणले राजा मारो केणो
मारी सलामी तोन चायेनी
काळे भाटा न सलामी करतो
दी टोकडा फू ट जाय
मारे गरीसयान, मारे खाडून छोड देनी
सीळो सीळो तो हवा लगाडीयूँ
लोई केरो खाळ्या चलायूँ
चार मनक्याती खाट वटायूँ
मारी वातेन सुणो सुणर
पोरिया गडेरो अंगरेजी बाबाओं
जीत लीयूँ र डली देशो न ।

" सुनो राजा मेरा कहना
मेरी सलामी तुझे नहीं चाहिए
काला पत्थर को सलाम करने से
दो टुकड़ा फू ट जाता है
मेरे गरीसया सॉंड को
मेरे पशुओं की झुंड को छोड देना
ठंडी-ठंडी हवा लगा सकता हूँ
रक्त की नदी बहा सकता हूँ
चार पुरुषों से खाट उठवाऊँ गा
मेरी बात सुनले
पौरा गढ के अंग्रेजी राजा
जीत लूँगा तेरे देश को ।"

॥ 121 ॥

विवाह के लिए मनवाना

कोरू-गोरू माँ भाया वेगो
कीडी-मुंगी माँ भाया वेगो
अब तूं वाया करलरे सेवा भाया ।
सोपले भाया मारो केणो
तूई वाया करलरे सेवा भाया ।
छत्तरेरो छाया सोने सरीकी माया
सोनेरो काया तूई वाया करलरे सेवा भाया
छत्तरेरो छाया सोनेरो भाया
मकोनी करूँ वाया
सेवा करनो तोळाराम
ध्वाळ अंगर गरसिया साँड
अगनी जोत मे रामा मायीं
शंकर सेवा लाल म कोनी
वाया करू मेरामा मायीं ।

x x x x
x x x x

गोर-कोर कण मन भाया
केर सोबत म करूँ वाया ?

सुणले भाया मारी वाया
राम घरेती परी बलाऊँ
तारो वाया हूँसेती कराऊँ
वाया करलरे सेवा भाया ।

"कोर (इतर लोग) में, गोर (बंजारे) में ब्रह्मचारी हो गया
कीड़े-मकोड़ों में भी ब्रह्मचारी बन गया
अब तू विवाह करले सेवा भाया
सुनो भाया मेरा कहना
तू विवाह करलेना सेवा भाया
शीतल पेड़ की छाँव, सोने की जैसी कन्या
सोना जैसा तेरा काया (शरीर)
तू विवाह करलेना भाया
शीतल छाँव, सोने की जैसी कन्या
सोना जैसा भाया मैं नहीं करूँगा ब्याह
सेवा करना श्रीराम
देवी की, गरसिया साँड, अग्नि ज्योति मरियामा मायी
भगवान शंकर जी सेवा लाल
मैं नहीं करूँगा विवाह मरियामा मायी ।

x x x x

x x x x

बंजारे लोग, इतर लोग कहते हैं मुझे भाया
किसके साथ करू मैं विवाह ? सुनो भाया मेरी वचन
राम घर से परी को बुलाऊँ
विवाह करले सेवा भाया ।"

§ 122 §

सेवा भाया और देवी का विवाद

आप मेरामा सरगू चडी
स्या पौर याडी रामेती लडी
सोणले राम मारो कोणो
ये भाया न भक्ति दीनी
मारो केणो मानेनी
वाया करेनी र भगवान जी
सोणले भाया मारो केणो
वाया कसेन करेसनी ?
सोपले राम मारो केणो
साहु ससर चरणे लागे
बेटी केरी पणूरे भगवान !
ग्वार वटेमा देवस्थानों,
कोनी करूँ वाया भगवान जी
सुणले माता मारो केणो
ये भाया न पूरो हूँ
भगवान बणाले मेरामा मायी ।

" आप मरियामा स्वर्ग में गई
सवा पीर माता राम से लडी
सुनो राम मेरा कहना
इस भाया को भक्ति प्रधान की
परन्तु मेरा कहना नहीं मानते
विवाह नहीं कर रहा है भगवान जी
सुनो भाया मेरा कहना
विवाह क्यों नहीं कर रहे हो ? सुनो राम मेरा कहना
सास-ससुर चरण लगे हैं
बेटी किसकी है विवाह के लिए भगवान
बंजारा जाति में यह देवस्थान जैसे हैं
नहीं करूँगा विवाह भगवान जी
सुनो माता मेरा कहना
इस भाया को तुम
भगवान बनाले मरियामा मायीं ।"

(123)

स्वर्गवासी सेवा भाया पर गीत

सेवा भाया समस लीदो
लींब चंदणेरो लकडा कटान
डोली घडाले सुका भाया
हापा बद्दू डोली सदा र
पूरा नायक गोलाल फें क
धूली गढेमा समस लीदो
पोरिया गढेमा जाग दीने
सत्र शांकडा धरम हूयो
सेवा भाया बरमाचारी रामावतारीर
सेवा लालेरी कीर्ती भारत देशेमा
फैल गीरे बापू सेवा लालेरो नाम ।

लाकावत धर्मसिंह नाईक गाँव - मादापुर, मंडल - देवरुप्पला
जिला - वरंगल

" सेवा भाया साँस ले लिया
नीम, चंदन की लकडी कटाकर खाट बनाये सुका भाया ने
हापा और बद्दू खाट को सजावट किया
पूरा नायक गुलाबी फेंक रहा है
रूली गढ में साँस लिया
पोहरा गढ में जगह दिये
सत्राह सौ रुपये धरम हुए हैं
सेवा भाया ब्रह्मचारी, राम अवतारी
सेवालाल की कीर्ती भारत देश में
फैल गयी, बापू सेवालाल का नाम ।"

§ 124 §

हनमान वींती - § हनुमान जी की प्रार्थना §

जे बोलो हनमान, जे बोलो हनमान
बाच्यामारा देवुता
सोटा लेन सोबत रेस
बाच्यामारा देवुता
बाल बच्यारो साई वेस
बाच्यामारा देवु ता
कोटी-डोइडीर साई वेस
बाच्यामारा देवु त्ता
एक दाणान सात दाणा करेस
बाच्यामारा देवुता
कोरू-गोरून साई वेस
बाच्यामारा देवु त्ता
सावुकारेन समपक रकाडेस
बाच्यामारा देवुता
बधेरीर पाच्येन फे रेस
बच्यामारा देवुता
ई पूजा तोन पूधाऊँ घ करीयाँ
बाच्यामारा देवुता

" जै बोलो हनुमान, जै बोलो हनुमान
बचन देने वाला देव
मूसल लेकर साथ रहना
साथ रहने वाला भगवान
बाल-बच्चों पर दया करना
दया करने वाला भगवान
कोठी-मवेशीखाना पर दया करना
बचन देने वाला भगवान
एक दाने को सात दाने करना
कृपा करने वाला भगवान
चोर और गोर लोगों पर दया करना
साथ रहने वाला देव
धार्मिक लोगों को सामने रखना
धरम करने वाला देव
थाने को पीछे करना
बचन देने वाला भगवान
यह पूजा तुम्हें पहुँचती ही रहेगी
कृपा करने वाला भगवान ।"

§ 125 §

बालाजी का स्वागत समाचार गीत

सात पाडेती आयोची
लक्खी दप्तर लायोची
ये नंगरीन आयोचीं
राजी छी, बालाजी छी र ।
भूकियारो व्यापारी छी
पम्मारेरो गरू छी
बडेतियारो साई छी
राजी छी, बालाजी छी र ।
कांके झोळी वाळो छी
टांगे तोडा वाळो छी
घ्वाळो घोडो भीड न
ये नंगरीन आयोची
राजी छी बालाजी छी र ।
वेळा वक्तेरो मालिक साई वेरो रे राम
ये नंगरीन आयोची
राजी छी बालाजी छी र ।

" सात पहाड़ से आया है
कलम कागज़ लाया है
इस नगरी में आया है
राजी है , बालाजी है
भूक्या {गोत्र} के व्यापारी है
पमार के गुरू है
वडतिया के साँई है
राजी है, बालाजी है
काँके झूला वाला है
टाँगे तोडा {पैर का आभूषण} वाला है
सफेद घोडे पर इस नगरी में आया है
राजी है बालाजी है
वेला-वक्त के मालिक है
दया कर रहा है राम
इस नगरी में आया है
राजी है बालाजी है ।"

§ 126 §

बालाजी वींती § बालाजी की प्रार्थना §

इस गीत में भगवान बालाजी के पूजा के समय घर का नायक या पूजा करने वालों में से एक धरी §पूजा करने का स्थान पर गड्ढा करते हैं उसे धरी कहते हैं § के पास से टांडे के तरफ मुँह करके जोर से नीचे दिया गया उक्ति को तीन बार बोलते हैं । गीत इस प्रकार है --

बालाजी रो भंडारो वेरोचे
सणो सामळो संगत भाई
बाळ-गोपाळ से आव-जाव रोईत

§ तीन बार जोर से बोलते हैं §

" बालाजी भगवान की पूजा हो रहा है
सुनो सुनो संगत भाई
बाल-गोपाल सभी आकर जाओ रोई ... त ।"

§ तीन बार जोर से कहते हैं §

§ 127 §

बालाजी वींती §बालाजी की प्रार्थना§

जे बोलो बालाजी जे बोलो बालाजी
बाच्यामारा देवुता
वर्षोमा बरक्त देस बाच्या मारा देवुता
जीव-जिनिगीरो साई वेस
बाच्यामारा देवु ता
बाल-बच्यारो साई वेस
बाच्यामारा देवु ता
सावुकारेन समणक रकाडेस
बाच्यामारा देवुता
कोरू गोरू न साई वेस
बाच्यामारा देवुता
कमाईमा बरक्त देस
बाच्यामारा देवुता
वर्षोर दाडेर पूजा तोन पूंच करांचा
बाच्यामारा देवुता ।

"जै बोलो बालाजी, जै बोलो बालाजी
बचन देने वाला देव
कार्य में बरक्त दें बचन देने वाला देव
जीव-जानवरों पर कृपा करना
कृपा करने वाला देव
बाल-बच्चों पर दया कर
दया करने वाला देव
धार्मिक व्यक्ति को सामने रख
बचन देने वाला देव
कीड़े-मकोड़ों पर कृपा कर
कृपा करने वाला देव
कोर और गोर लोगों पर दया कर
बचन देने वाला देव
सेर लेकर सवा सेर देना
साथ रहने वाला देव
कमाई में बरक्त देना
बचन देने वाला देव
यह बरस दिन का पूजा अर्पित करते हैं भगवान।"

§ 128 §

कृष्ण भक्ति गीत

काळो सामळो काळो किसन देवा
नंदुलाला वासु देवेरो बाळा
रेपल्लेमा घीये-दूदेरो ख्याळा
मुरळीती गोऊन चराये वाळो
काळो-काळो काळो किसन देवा
गोपीन नंगारा पर नचाये वाळो ।

" काला-सांवला, काला-किशन देव
नंदलाल वासुदेव का बालक
रेपल्ले में घी-दूध से खेल
मुरली से गायों को चराने वाला
काला काला, काला किशन देव
गोपिकाओं को नगारा पर नचाने वाला । "

॥ 129 ॥

श्री कृष्ण

गोपी कांतीति खेल करने आ कसन जीरे
गोला वापणीती खेल करन आ कसन जीरे
गोपी से तारी सोबत रच-नाच नचाले रे
पायले बार छमक्या घूगरा भांदन
नाचरी गोपीरे
तू नंगारा मार नचाले आनंदेती रे ।

" गोपिकाओं से खेल करने आ कृष्ण जी रे
ग्वालिन से खेल करने आ कृष्ण जी रे
गोपी सभी तेरे साथ रहती है नाच नचाले रे
पायलों पर छोटा घुँघुरू बाँधकर नाच रही है गोपी रे
तू नगारा बजाकर नचाले आनन्द से रे । "

§ 130 §

शिव भक्ति गीत

बंजारा समाज में भगवान शिव को दु:ख निवारक देव के रूप में पूजते हैं ।

जय जय शंकर, जय जय शंकर
शंभो महादेव जी, गुरू देव जी
कैलासेरो अधिकारी रे जी
सरप देव गळ कंठी वाळो
महादेव जी, गुरू देव जी
पार्वतीरो पति रे जी
गंगाने जट्टेमा गोवो जी
हाते शूळा वाळो शंकर
कामळेरी कधोटी वाळो
महादेव जी - गुरू देव जी
जय जय शंकर जय जय शंकर
शंभो शंकर महादेव जी ।

" जय जय शंकर, जय जय शंकर
शंभो महादेव जी, गुरु देव जी
कैलास के अधिकारी रे जी
सर्प देव गले कंठी वाला
महादेव जी, गुरुदेव जी
पार्वती के पति रे जी
गंगा को जटा में छिपाने वाला
हाथ में त्रिशूल वाला शंकर
मृगछाल के कछौटी वाला
महादेव जी, गुरुदेव जी
जय जय शंकर, जय जय शंकर
शंभो शंकर महादेव जी ।"

§ 131 §

<u>सेविया साद : सेविया साधु</u>

हेट धरती ऊपर राम चांदेरो वजाळो
सेवल तारी देवळेमा कसेरो वजाळो
सेवल तारी देवळेमा भोगेरो वजाळो
हेट धरती ऊपर राम चांदेरो वजाळो
बुडिया तारी देवळेमा कसेरो वजाळो
बुडिया तारी देवळेमा भोगेरो वजाळो ।

" नीचे धरती, ऊपर आकाश के बीच चाँद का उजाला है
सेवल §साधु§ तेरी देवल में किसका उजाला है
सेवल तेरी देवल में भोग " § पूजा के स्थान पर एक गड्ढा खोदकर उसमें चावल और दाल पकाते हैं । चावल, दाल मिलाकर घी के साथ उस अग्नि में डालते हैं । जब उस अग्नि से तुरन्त ज्वाला उठती है उस ज्वाला को भोग कहते हैं § का उजाला है ।
नीचे धरती, ऊपर आकाश के बीच चाँद का उजाला है
बुडिया §सेविया साद§ तेरी देवल में किसका उजाला है
बुडिया तेरी देवल में "भोग" का उजाला है ।"

§ 132 §

भजन

हमें लीयाँ सेवा सादेरो नाम
जेर पघ बोलियाँ गीदे हमें लीयाँ
बुडिया बापेरो नाम ।
हमें लीयाँ बालाजी रो नाम
जेर पघ बोलियाँ गीदे हमें लीयाँ
हथी रामेरो नाम ।
हमे लीयाँ दादा देवेरो नाम
जेर पघ बोलियाँ गीदे हमें लीयाँ
सेवा भाया रो नाम ।
हमे लीयाँ जोगा नायकेरो नाम
जेर पघ बोलियाँ गीदे हमें लीयाँ
पट्नी याडी रो नाम ।

" हम लेते हैं सेवा साद (सेवा साधु) के नाम
उसके बाद बोलते हैं गीत, हम लेते हैं
बुढ़िया बापू के नाम
हम लेते हैं बालाजी के नाम
उसके बाद बोलते हैं गीत, हम लेते हैं
हथी राम जी के नाम
हम लेते हैं दादा देव के नाम
उसके बाद बोलते हैं गीत, हम लेते हैं
सेवा भाया जी के नाम
हम लेते हैं जोगा नायक जी के नाम
उसके बाद बोलते हैं गीत, हम लेते हैं
पट्नी याडी जी के नाम ।"

(133)

साद आयो (साधु आया)

मारो सेवल आयो रे मलवेती मन
मालेम छेनी, मालास्म रीवतो
मालेम रीवतो जोडियारे नारळ ले ओत
ढूबरेती मन मालास्म छेनी ।
मारो बुडिया बापू आयो रे देवलेती मन
मालेम छेनी, मालास्म रीवतो
मालेम रीवतो हातेमा ऊदबत्ती ले ओ त
ढूबरेती मन मालास्म छेनी ।

" मेरा सेवल आया है दूर से
मुझे मालूम नहीं
मालूम होता तो, जोडा के नारियल लेकर
वहाँ खडी होती । मुझे मालूम नहीं
मेरा बुडिया बापू आया है देवल से
मुझे मालूम नहीं मालूम होता तो, मालूम होता तो,
हाथ में अगरबत्ती लेकर वहाँ
खडी होती । मुझे मालूम नहीं ।"

§ 134 §

नृसिंह भक्ति गीत - उत्सव के अवसर पर

नरेसीमा सामीरे वाजा ने गाजा
वाजा गाजाओ सारी रातरे ओ नरेसीमा सामी
नरेसीमा सामीरे बंडी फरीये
बंडी फराए सारी रातरे ओ नरेसीमा सामी
नरेसीमा सामीरे बकरा कटरे
बकरा कटाए सारी रातरे ओ नरेसीमा सामी
नरेसीमा सामिरे बोकड कटरे
बोकड कटाए सारी रात रे ओ नरेसीमा सामी
नरेसीमा सामीरे नारळा फूटरे
नारळ फूटाए सारी रातरे ओ नरेसीमा सामी
नरेसीमा सामीरे नंगारा घोर रे
नंगारा घोराए सारी रात रे ओ नरेसीमा सामी
नरेसीमा सामीरे डफडा वाजरे
डफडा वाजए सारी रातरे ओ नरेसीमा सामी
नरेसीमा सामीरे वींती कररे
वींती कराए सारी रातरे ओ नरेसीमा सामी
नरेसीमा सामी ने वाँजुअ धोकरे
वाँजुवारो गोदो भरेसरे ओ नरेसीमा सामी
नरेसीमा सामी ने गोर-गरीब धोकरे
गरीबेरो साई वेसरे ओ नरेसीमा सामी ।

" नरसिंह स्वामी के मंदिर में हर्ष से शोर मचा रहे हैं
हर्ष, गाजना, पूरी रात भर, हे ! नरसिंह स्वामी
नरसिंह स्वामी की, बैल गाडी फिर रही है
गाडियाँ फिर रही हैं पूरी रात भर, हे ! नरसिंह स्वामी
नरसिंह स्वामी के बकरा कट रहे हैं
बकरे कटते हैं पूरी रात भर, हे ! नरसिंह स्वामी
नरसिंह स्वामी के मुर्गा कट रहे हैं
मुर्गा कटते हैं, पूरी रात भर, ओ ! नरसिंह स्वामी
नरसिंह स्वामी के नारियल फूट रहे हैं
नारियल फूटते हैं, पूरी रात भर, ओ ! नरसिंह स्वामी
नरसिंह स्वामी के नगारा बज रहे हैं
नगारा बजते हैं पूरी रात भर, ओ ! नरसिंह स्वामी
नरसिंह स्वामी के डफ बज रहे हैं
डफ बजते हैं, पूरी रात भर, है ! नरसिंह स्वामी
नरसिंह स्वामी की पूजा कर रहे हैं
पूजा करते हैं पूरी रात भर हे ! नरसिंह स्वामी
नरसिंह स्वामी को बाँझ प्रार्थना कर रही है
बाँझ का गोद भर देना हे ! नरसिंह स्वामी
नरसिंह स्वामी को गोर-गरीब नमस्कार कर रहे हैं
गरीबों का नमस्कार स्वीकार करना हे ! नरसिंह स्वामी ।"

§ 135 §

हथीराम बावाजी

सात पाडेरो हातीरामे बावाजी
बार गोत पमारेमा विश्लावते बावाजी
सात पाडेती हातीराम जी सोबत रेरोची
गोर गरीब ग्यात्मा चांद वेरोधी
साई वेजो रे हातीराम जी ग्यार से धारेच
हाँक मारातो बापू हाँक पूचेनी
सात पाडेमा बेटोची बापू सोबत रेजोनी
कोरू-गोरूमा, कीडी-मुंगीमा साई वेजोनी
बालाजी बापूती हातीराम प्याला कर रोच
बालाजी बापूती हातीराम अजी ऊ पर बेटोच
सात पाडेती हातीराम जी साई वेरो च ।

" सात पहाड के हथी राम साधु
"बारा गोत्र पमार" (बंजारा जाति के एक गोत्र का नाम है)
में विस्लावत हैं साधु
सात पहाड से हथी राम जी साथ दे रहा है
गोर-गरीब, बंजारों में चाँद हो रहा है
कृपा कर हे ! हथी राम जी बंजारे सब प्रार्थना कर रहे हैं
हाँक मारने से बापू हाँक नहीं पहुँचती
सात पहाड में बैठा है , बापू साथ रहजाना
कोर-गोर लोगों को, कीडे-मकोडों पर दया करना
बालाजी बापू से हथी राम खेल कर रहा है
बालाजी बापू से हथी राम और ऊपर बैठा है
सात पहाड से हथी राम जी कृपा कर रहा है ।"

§ 136 §

श्रीराम - लक्ष्मण : सूर्पणखा वृत्तान्त

राम न लचमण दोई भाई
काँई वेराळू रे भीया काँई वेराळू र
सूर्पणाका र नाक कान दोई काट नाकन
वोरे भीया कन मेल दीने र
लंका रो राजा वोरो भीया
वोन जान पकारी भ्यान
काँदो बाई काँई गति ई

कूण कीदो अस्तो काम
लंकारो रामणा अंगार वेगो
दशरते र बेटाओ कच
दोई भाई वेरीया वताळ
नाक न कान काटे नाके भीया
दोई भाई विजळीरो पूळे
वो दोई भाई केरो आपटेनी
दोई भाई वेराळू कच
सीक देन आजो ढूँढ़न सीक देन आजो भीया ।

---

30. वड़त्या मोतीलाल विकाराबाद ।

" राम और लक्ष्मण दोनों भाई
कितना उजाला है, रे भैया, कितना उजाला है
सूर्पणखा के नाक-कान दोनों काटकर
उसके भैया के पास भेज दिये
लंका के राजा उसके भैया
उसको जाकर निवेदन किया बहन ने
क्या हुआ बहन ? क्या स्थिति है।
कौन किया यह काम
लंका के रावण क्रोधित हो गया
दशरथ के पुत्र कहे जाने वाले
दोनो भाई मिलकर नाक और कान काट दिये भैया
दोनों भाई बिजली की तरह
वह दोनों भाई किसी को झुकने वाला नहीं
दोनो भाई शक्ति शाली कहते हैं
सबक सिखाकर आना भैया
उन भाईयों को सबक सिखाकर आजाना भैया ।

‖ 137 ‖

पति की मृत्यु पर शोक

स्त्री अपने पति देव की अंतिम साँस पर क्रंदन भरे स्वर से शव के ऊपर सिर पटक-पटक कर रोती है ।

बापूओ रे आहिंया
हमेन छोडन कोसी चलोगो बापू
तार उमर अतरामाई सो वरस
पूरो वेगे काँई बापू हिंया ।
तारे पीली-पीलाओंन कूँकेन
समझान रकाडूँ बापू हिंया ।
मारो बापू कत करेन पूचतो
म काँई जबाब दूरे मारो
तारे नानक्यासे बाल-बच्याने
कूण समझाने आँसू पूसे बापू ।
जलमी भरो हमेन सेन छोडदेन
चलोगो बापू हिंया ।
तारे पीली-पीला बा करेन
कना हाँकारीय बापू ।

" बापू हीं हीं
हमें छोडकर कहाँ चलागया बापू
तेरा उमर इतना जल्दी सौ बरस
पूरा हो गया क्या बापू हीं हीं हीं
तेरे बाल-बच्चों को कैसे
समझाकर रखना बापू हीं हीं
मेरे बापू कहाँ कहकर पूछेंगे तो
मैं क्या जवाबदूँमेरे बापू
तेरे छोटे से बाल-बच्चों को
कौन समझाकर आँसू पोंछता है बापू
जन्म भर हम सबको छोडकर
चला गया बापू हीं हीं
तेरे बाल-बच्चे, पिताजी कहकर
कब हाँक मारते हैं बापू ।"

§ 138 §

माँ की मृत्यु पर शोक

ऐ याडी ! केथडी गी याडी
हमेन छोडन कत चलीगी याडी ।
हम तोन अतरामा कुडी लागे काँई याडी
हमेन बाटी कूण घाल याडी हीं हीं ।
हमेन सेन साँसन आरगी काँई याडी
"बा" न एकलेन छोडदेन चलीगी याडी
तारो मूंडो कन्ना देकियाँ याडी
जलमेती हमाती छुटकारो लेन
चलीगी याडी हीं हीं हीं ।
काळे वाजकेमा जान बेसगी याडी
एक बोली बोलन जो मारी याडी ।

" हे माँ ! कहाँ चली गयी माँ
हमें छोडकर कहाँ चली गयी माँ
हम तुझे इतना जल्दी ही खट्टे हो गये क्या माँ
हमें रोटी कौन देगीहैमाँ, हीं हीं हीं
हम सब को साँसकर चली गयी क्या माँ
पिता जी को अकेला छोडकर चली गयी माँ
तेरा मुँह कब देखने को मिलेगा माँ
जन्म भर हमसे छुटकारा लेकर
चली गयी माँ हीं हीं हीं
काले बादल में जाकर बैठ गयी माँ
हमें एक बोली बोलकर जाना माँ हीं हीं ।"

§ 139 §

पुत्र की मृत्यु पर माँ का शोक

केवडी चलोगो पीला हीं हीं हीं ।
गटला अवडा मारो लडका केवडी गो बापू
एक वणा तारो मूंडो दीकाळरे बापू
ऐ पीला तारे याडी बापू न कूणसी
खाडेमा घालगो रे बापू हीं हीं
मारो धीरया न ढूंडलाओ बापू
तारे याडी बापू न कांई हाई मा घालगो बापू
मोटियार माल बेटा न कूं भूलूं बापू
अतरामा ए जम्मी पर तारी बाटी
खूटगी कांई रे पीला हीं हीं ।

" कहाँ चलागया लडका हीं हीं हीं
पहाड जैसा मेरा लडका, कहाँ गया बापू
एक बार तेरा मुँह दिखाना बापू
हे ! बेटा तेरे माँ बापू को कौन से
खड्डे में डालकर चलागया बापू हीं हीं
मेरे राजा को ढूंढकर लाओ बापू
जवान बेटा को कैसे भूलूं बापू
इतना जल्दी इस पृथ्वी पर तेरी रोटी
खत्म होगयी क्या बेटा हीं हीं ।"

§ 140 §

पुत्री की मृत्यु पर माँ का शोक

ये लडकी केंदडी चलीगी पीली हीं हीं
तू एकली क्त चलीगी बाई हीं हीं
मन एक लोटा पाणी कूण द लडकी
कूणसी कामेर आसरो छेनी याडी
तोन क्त जान ढूँढू लडकी
गोबरे पोटार आसरो छेनी पीली
एक बोली बोलन जोये पीली ।

" हे लडकी ! कहाँ चली गयी बेटी हीं हीं
तू अकेली कहाँ चली गयी बाई हीं हीं
मुझे एक लोटा पानी कौन देगी लडकी
किसी भी काम के सहारा नहीं है लाडली
तुझे कहाँ जाकर ढूँढना लडकी
गोबर उठाने का सहारा भी नहीं है लडकी ।"

---

30. बांडावत पींपळी बाई - जोगीपेट - मेदक

अन्य लोक गीत

§ 141 §

धर्म वर्णन सम्बन्धी गीत

ज्ञान चावणो क्तो गरु सेवणो पण
अनाडी वेन पड़रतो कूँ आवे ज्ञान
भक्ति चावणो क्तो मुक्ति करणो पण
मूर्ख वेन पड़रतो कूँ मळे मुक्ति
कीर्ति चावणो क्तो सत कीर्ति करणो
अपकीर्ति करतो कूँ आवे कीर्ति
धन चावणो क्तो धरम करणो पण
दनियान लूटतो कूँ मळे धन ।

" ज्ञान चाहिए, तो गुरु का आश्रय लेना
परन्तु अनारी होकर पडा रहने से कैसे मिलेगा ज्ञान
भक्ति चाहिए तो मोक्ष प्राप्त करना
किन्तु मूर्ख होकर पडा रहने से कैसे मिलेगा मुक्ति
कीर्ती चाहिए, तो सत कीर्ती करना है
परन्तु अपकीर्ती करने से कैसे मिलेगा कीर्ती
धन चाहिए, तो धरम करना है
किन्तु दूसरों को लूटने से कैसे मिलेगा धन ।"

(142)

जीवन और दुःख (परिकल्पना)

धन न-र जे नरेन, धन छेनी कन हाई
धन गोळा वे जावतो, गोकेर हाई ।
घर न-र जे नरेन, घर छेनी कन हाई
घर मोटो वे जावतो, लीपे पोतीर हाई ।
ग्वापुणी न-र जे नरेन घर कूँ र कन हाई
ग्वापुणी रजेन दाबेमा, रकाडेर हाई ।
बेटी-बेटा न-र जे नरेन, वेल-वतन छेनी कन हाई
बेटी-बेटा रतो, पाळ पोसेर हाई ।
असो हाईमा पड्यो नर, हाईरो ध्यान करतो
भारि आच्यो कोनिके,
भो विलास बालाजी दास पोसे
सर्व जगति से सर्वसे सदगुरुीर से ।

" धन नहीं है जिस नर को, धन ना रहने का दु:ख
धन इकट्ठा हो जाने से सुरक्षित रखने का दु:ख
घर नहीं है, जिस नर को, घर ना रहने का दु:ख
घर बडा हो जाने से, लीपा-पोती का दु:ख
पत्नी नहीं है जिस नर को, पत्नी ना रहने का दु:ख
पत्नी मिल जाने से, दाब में रखने का दु:ख
बेटी-बेटा नहीं है जिस नर को, वेल-वतन ना रहने का दु:ख
बेटी-बेटा रहने से पाल-पोसने का दु:ख
ऐसी दु:ख में पड़गया नर
दु:ख का ध्यान रखना बहुत अच्छा है न
भव विलास बालाजी दास पोसे ।
सर्व जगति, सब कुछ सद्गुरू की है सब ।"

§ 143 §

जीवन दर्शन - भौतिक स्थिति पर व्याख्या

घर मारो बार मारो, सारी संसार मारो
ग्लापूणी मार, बाण्णी मार, सोटा-उकळी
गावडी-भ्यांसी, बंडी-बळद से मारो
मारो - मारो कन केरो नर
मारो कोनी श्री रामेरो केणो - भारि आच्यो कोनिवे
भक्त विलास बालाजी दास पोसे
सर्व जगति से सर्वसे सद्गुरुरि से ।

" घर मेरा-बार मेरा, पूरा परिवार मेरा
पत्नी मेरी, झाडू मेरा, मूसल-ऊखल
गाय-भैंस, बैल गाडी-बैल, सब मेरा ही है
मेरा-मेरा कह रहा है नर
मेरा नहीं भगवान श्री राम का कहना बहुत अच्छा है न
भक्त विलास बालाजी दास पोसे
सर्व जगति, सब-कुछ, सद्गुरु की है सब । "

(144)

काम और व्यवहार

सोगळीन पेदास करेरो सर्वेसरो वंतु
पन्नू वसूल करेरो प्रभुरो वंतु ।
बेटीन मोटियार करेरो मा-बापेरो वंतु
जोविनियामा जमाईरो वंतु ।
परकटन करचे वाते कविरो वंतु
पकड़ लेजायेरो यमुरो वंतु ।
धन भारी कमान गोकेरो मूर्खेरो वंतु
काड ले जायेरो चोरेरो वंतु ।

" हर एक को पैदा करना ईश्वर का काम
कर वसूल करना राजा का काम
बेटी को यौवन करना माँ-बाप का काम
जवानी में जमाई का काम
परख कर करता है बात कवि का काम
पकड़ ले जाना यमराज का काम
धन बहुत इकट्ठा करना मूर्ख का काम
निकाल ले जाना चोर का काम ।"

सदा सवाद से ए जीबेन मालम
हाँडीमा फरजे चाटून काँई मालम ।
भली-भूँडी, आचो-बल्ला से वळाट न मालम
काळे माँईर जांगडून काँई मालम ।
टेळे टांपळेरो नायकणेन मालम, डाईन मालम
अमरावती क्वारीन काँई मालम ।
क्सापटीरो नांद सांडियान मालम, नांदियान मालम
गींट्या खोदन खाऊ हूरेन काँई मालम ।
पूंगीरो नांद नागेन मालम, सर्पेन मालम
पाणीमा फरजे डींडून काँई मालम ।

" सदा स्वाद सब इस जीभ को मालूम
घडा में फिरने वाला चम्मच को क्या मालूम
भली-भांती अच्छा-बुरा सब ज्ञानी को मालूम
दरिद्र अज्ञानी को क्या मालूम
पंचों के गौरव रखना स्वामिनी को मालूम, परीक्या नायिका को मालूम,
अज्ञान स्त्री को क्या मालूम
गले की घंटी का नाद साँड को मालूम, नंदी (बैल) को मालूम
कंद खोदकर खाने वाले सुअर को क्या मालूम
बीन का नाद नागिन को मालूम, सर्प को मालूम
पानी में फिरने वाला डिंडिभ को क्या मालूम ।"

---

32. लाकावत धनसिंह नाईक गाँव - मादापुर मंडल - देवरुप्पला
जिला - वरंगल ।

§ 146 §

परिवार के दायित्व ना निभाने वाले पति पाकर घर वाली की व्यथा

काँई करूँ याडी मारो जीवडा
धणी मारो ऊतो दाडी दारू पीय च
हूँ करन सदारू बाई मारो घर बार
कठा जान ढूँढू बाई मारो परिवार
धणी मारो जारो बाई सींदी पीयेन
दूतो लेजारो बाई गामेन साळ वेचेन
छेली वेचो, गोरली वेचो
वेचो गावडी भ्याँ सी
फाटेड-फाटेड नसीब मारो
वेगी ढेडी म बाई
हूँ भूले बाई दू दारू पीयेरो
घर भरन छिध्यापर वेगे
कूँ कन पाळन पोसू बाई
घरेवाळो ए जको घर छोडन जारो
ग्याणी-छिध्यापर ध्यायेनी वोन
वोन ध्यावध दारून-सींदी ।
कूँ सदारू बाई मारे घरेन ।
पीलेन बकध बाई ऊतो, मार अडा कोई छेनी कर न
मूधे परियाँ थायो पेर टांडेरो नायक म वेताणी ।
हातेली छातीन मार मोटियार म वेताणी ।
परबाती ऊटतो मूँडो दिकाळेनी वेनी ।

" क्या करू माँ, मेरा जीवन
पति है मेरा वह तो रोज दारू पीता है
कैसे संभालूं बाई मेरा घर-बार
कहाँ जाकर खोजना बाई मेरा परिवार
पति मेरा जा रहा है बाई सेंदी (ताडी) पीने के लिए
वह तो ले जारहा है बाई गाँव को धान बेचने के लिए
बकरी बेच दिया, भेड बेच दिया
बेच दिये हैं गाय - भैंस
तोड-फोड नसीब मेरा
हो गयी पागल मैं बाई
कैसे भूलता है बाई वह दारू पीना
घर भर बच्चें हैं
कैसे पालन-पोषण करना बाई
पति है जो घर छोडकर जा रहा है
पत्नी, बच्चे नहीं चाहिए उसको
उसको चाहिए दारू-सेंदी
कैसे संभालू बाई मेरा घर
पीकर बकता है बाई वह तो, मेरा जैसा कोई नहीं कह कर
मूँछ पर हाथ फेरते हुए कहते हैं, टांडे का नायक हूँ मैं
हाथ से छाती को मारते हुए कहते हैं, युवा हूँ मैं
सबेरे उठते ही मुँह नहीं दिखाते है किसी को ।"

§ 147 §

प्रेम, व्यवहार और जीवन की वास्तविकता

भूक्या रो छोरा काँई टक-मक देकरो
टक्मक देकेरो भूल जोरे
मारो घागरो धोयेरो सीक्जो र ।
जाटोतेरो छोरा काँई टक्मक देकरो
टक्मक देकेरो भूल जोरे
मार फेटीया धोयेरो सीक्जोर ।
बाणोतेरो छोरा काँई टक्मक देकरो
टक मक देकेरो भूल जोरे
मार टूकरी धोयेरो सीक्जो र ।

"भूक्या §गोत्र§ का लडका, क्या टक टकी लगाकर देख रहा है
टक टकी लगाकर देखना भूल जा
मेरे घाँघरा धोना सीखजा
जाटोत का लडका क्या टक टकी लगाकर देख रहा है
टक टकी लगाकर देखना भूलजा
मेरे लेंहगा धोना सीखजा
बाणोत का लडका क्या टक-टकी लगाकर देख रहा है
टक टकी लगाकर देखना भूलजा
मेरी ओढनी धोना सीखजा ।"

§ 148 §

भाई - बहन दुनिया दारी

भीया श्यारेन जोरे सोनेरि गीळ
भीया हाँसलो लारे गळेन भारि
भीया टीकी लारे तपाळेन भारि
भीया टोपली लारे गालेन भारि
भीया कीनया लारे कानेन भारि
भीया फूली लारे नाकेन भारि
भीया भूरिया लारे नाकेन भारि

भीया श्यारेन जोरे सोनेरि गीळ
भीया लोंवया लारे मातेन भारि
भीया बाजूडा लारे कूणीने भारि
भीया मूटिया लारे हातेन भारि
भीया काँचळी लारे जीवेन भारि
भीया खीवया लारे खवेन भारि
भीया फेटिया लारे कडेन भारि
भीया श्यारेन जोरे सोनेरि गीळ ।

" भैया हैदराबाद जाओ, सोने की गली में
भैया हाँसलो (गले का आभूषण) लाना, गले में भारी
भैया टीकी (माथे का आभूषण) लाना माथे पर भारी
भैया टोपली लाना, गालों पर भारी
भैया कनिया लाना, कानों में भारी
भैया फूली लाना, नाक में भारी
भैया भूरिया लाना नाक में भारी
भैया हैदराबाद जाओ, सोने की गली में
भैया लोंविया लाना, माथे पर भारी
भैया बाजूडा लाना कोहनी को भारी
भैया मूटिया लाना हाथों में भारी
भैया काँचली (चोली) लाना छाती पर भारी
भैया खींविया लाना भुजाओं पर भारी
भैया लेहंगा लाना कमर पर भारी
भैया हैदराबाद जाओ सोने की गली में ।"

(149)

बंजारा समाज : ससुराल व्यवहारिक स्थिति

जोनि बेटी ससरेमा जाणो लागो तो न
कोनी जाऊँ याडी ससरेमा वेला छय म न
जावूनी क जेर पचे बलमी वसेन
ससरो मुधाळो याडी पेटेमाई काळो
हाते टांगे दाबू जन्ना पेट्याँ गोडो वाळो
सासू हतणी याडी घालमेली काळो
हाते टांगे दाबू जन्ना पेट्याँ गोडो वा ळो
नणद कुवाँरी याडी भांद मेली साडी
भांद मेली साडी ऊ तो लगाडचे चाडी
काँई कूये याडी म नणदेरो खून
जटाणी खावचे याडी गंदला तळ न
जेट पीयचे याडी सींदीये दारू
गंदला हूंडून याडी रस पाणी म न
काँई कूये याडी जेट जटाणीरो खून
जोनी बेटी ससरेमा जाणो लागो तो न ।

---

33. लाकावत सोना बाई - मादापुरम - वरंगल जिला

" जाना है बेटी ससुराल में, जाना ही होगा तुझे
नहीं जाऊँगी माँ ससुराल में, कष्ट है मुझे
जाऊँगी नहीं, कहने पर भी जबरदस्ती क्यों
ससुर मुँह वाला है माँ, पेट में है कपट
हाथ पैर दबाते समय पेट में घुटना छुपाते हैं
सास बेईमानी है माँ, हृदय से कपटी
हाथ पैर दबाते समय, पेट में घुटना छुपाती है
ननद कुँआरी है माँ, पहनती है साड़ी
पहनती है साड़ी वह तो कहती है चुगली
क्या कहूँ माँ, मैं ननद की निंदा
जेठानी खाती है माँ, मछली तलकर
जेठ पीता है माँ सेंदी और दारू
माँस उसे माँ और रस पानी मुझे
क्या कहूँ माँ जेठ-जेठानी पर निंदा
जाना है बेटी ससुराल में,जाना ही होगा तुझे ।"

§ 150 §

गृहणी की व्यथा

सारो दाडो नारे गाडी सांजे आने धान रांदी
धान गीलो वेगो कन बोली मत बोलरे
पोरिया तारा रे पोरिया तारा ।
सारो दाडो साळ काटि सांजे आने बाटी कीदी
बाटी बळगी कन बोली मत बोलरे
पोरिया तारा रे घेरीवाळो छोरा
बोली बोलीसतो सागुनारि झाडे हेट
स्वाकन खोरागुँरे पोरिया तारा रे घेरीवाळो छोरा ।
सारो दाडो खड काटी सांज आन नोंगाण रांदी
नोंगाण बळगो कन बोली मत बोलरे
पोरिया तारा रे मुछेवाळो छोरा ।

" सारा दिन धान रोपकर, शाम आकर चावल पकाई
चावल गीला होगया कहकर बोली मत बोल
पोरिया तारा §पति§ हे, पोरिया तारा
सारा दिन धान काटकर, शाम आकर रोटी बनाई
रोटी जलगयी कहकर, बोली मत बोल
पोरिया तारा हे ! माँग वाला पति
बोली बोलने से सागवान पेड के नीचे
सोगंध कराती हूँ हे ! माँग वाला पति
सारा दिन घाँस काटकर, शाम आकर सालन पकाई
सालन जलगया कहकर बोली मत बोलरे
पोरिया तारा हे ! मूँछ वाला पति ।"

‖ 151 ‖

ससुराल में बहू की स्थिति

मोटे मामारी बेटी
मोटे मामारी बेटी
लारे रेगीरे मामो मन मेलिया जामा
मक्कारो दळ्या भ्याँ सीरो घोळ्या
मन वातम मामो मन मेलिया जामा
दुकानेरे चावळ अंबाडीरी भाजी
मन हिंजरेनी मामो मन मेलिया जामा
बादरीरो दळ्या खाटी आमलीरो पळ्ळू
कुडी लागरे मामो मन मेलिया जामा ।

" बडे मामा की बेटी
बडे मामा की बेटी
पीछे रह गयी मामा, मुझे भेज देना मामा
मकई का खिचडी, बहिंस का छाज
मुझे वातरोग मामा, मुझे भेज देना मामा
दुकान का चावल बीलु का भाजी
मुझे हजम नहीं होता मामा, मुझे भेज देना मामा
बाजरा की खिचडी खट्टी इमली का सूप
खट्टा लगता है मामा, मुझे भेजदेना मामा ।"

॥ 152 ॥

सपत्नी संदर्भ

इर मरेरी टूकरी लारे ला
लावसतो दोईन बरा बर ला ।
इर मरेरी वांचळी लारे ला
लावसतो दोईन बराबर ला ।
ऊँ पाले मलवेरो पेािटया लारे ला
लावसतो दोईन बराबर ला ।
पोरीया गडेती हाँसलो लारे ला
लावसतो दोईन बराबर ला ।
हेटाले मलवेती भूरिया लारे ला
लावसतो दोईन बराबर ला ।
इर मरेरो वेसे रो लारे ला
लावसतो दोईन बराबर ला ।

" रंग-बिरंगी ओढनी ले आना
लाना है तो दोनों को बराबर लाना
रंग-बिरंगी चुनरी ले आना
लाना है तो दोनों को बराबर लाना
पश्चिम से लहँगा ले आना
लाना है तो दोनों को बराबर लाना
पोहरा गढ से हाँसलो (गले का आभूषण) ले आना
लाना है तो दोनों को बराबर लाना
पूरब से भूरिया (नाक की आभूषण) ले आना
लाना है तो दोनों को बराबर लाना
रंग-बिरंगी लहँगा ले आना
लाना है तो दोनों को बराबर लाना ।"

§ 153 §

पति से विस्मृत पत्नी की व्यथा

जनगाम गो जांबू जोऊ तारी वाटर
भूरिया घाली भूलणीरो सीक मानगो
मन भूलगो बाई ए ।
ब्रोधन गो जांबू जोऊ तारी वाटर
कूणसी रांडेरो सीक मानगोको
मन भूलगो बाई ए ।
भूंडगार गो जांबू जोऊ तारी वाट र
जटाणी रांडेरो सीक मानगो
मन भूलगो बाई ए ।
लोंधिया ला क्लो लायेज वाळो
लाध कीदी लोंधनीरो सीक मानगे ।
मन भूलगो बाई ए
ब न्लिया लाक्लो लायेज वाळो
कूणसी स्याकेरो सीक मानगोको
मन भूलगो बाई ए ।

---

34 वेंकूत घम्सी बाई , नरसमपेट - वरंगल

" जनगाँव गया था, मैं जोह रही हूँ तेरी बाट
भूँरया (नाक की आभूषण) पहनी भूलने वाली की सीक मानलिया
मुझे भूलगया बाई
बोधन गया था, मैं जोह रही हूँ तेरी बाट
कौनसी राँड की सीक मानलिया
मुझे भूलगया बाई
भोनगिर गया था, मै जोह रही हूँ तेरी बाट
जेठानी राँड की सीकमान लिया
मुझे भूलगया बाई
लोविया मंगवाने से लाने वाला ही था
लाज करने वाली लोचनी की सीक मान लिया
मुझे भूल गया बाई
चूडियाँ मंगवाने से, लाने वाला ही था
कौन सी सौत की सीक मान लिया है
मुझे भूल गया बाई ।"

§ 154 §

चोरी और पुलिस व्यवस्था

चोरी चोट्टा चोरी कीरये
सरकारी डंडा वाजियरो
बंगला कोटम रेणो ।
चोरी चोट्टा चोरी कीरये
घरे मुणाके एकच मोरी
सरकारी डंडा वाजियरो
बंगला कोटम रेणो ।
पगे माईं बेडी चोरी
हाते माईं हातकडी
डोरी डोरी हींडियरो
बंगला कोटम रेणो ।

---

35 पमार तार्या नाईक, जोग्या तंडा – वरंगल जिला

"चोर चोट्टा चोरी करने से
पुलिस (सरकार) डंडा बजाएगा
थाना में रहना पड़ेगा
चोर चोट्टा चोरी करने से
घर के सामने एक ही गाय बचेगी
पुलिस डंडा बजाएगा
थाना में रहना पड़ेगा
पैर में बेड़ी उसका
हाथ में हथकड़ी
इधर-उधर फिरते रहेंगे
थाना में रहना पड़ेगा।"

बंजारा गीत : शब्दार्थ

बंजारा शब्द-कोश

(यहाँ बंजारे गीतों में आये कतिपय बंजारे शब्दों के हिन्दी अर्थ दिये गये हैं। आरंभिक संख्या गीत संख्या का सूचक है।)

गीत संख्या

1. कोषक= क्षेम : तीरथ = तीर्थ ; साम्ळो=सुनो।
2. खूँटे= खूँटे (पशुओं को बाँधने का खूँटा); चवाडो=चौड़ा टाँडो=तांडा
3. एकली=अकेली खाडू=पशुओं का झुंड; बापु=पिता; भडकोजा=चलाजाना,डगरजाना मळाथेमा=पंचायत में; याडी=माँ, माता।
4. आयेस=आना; तू=तुम ; पर=उधर, उस तरफ, रू=क्यात; सप=सन साई वेस=दया कर,कृपा कर; सूई-दोरा=सुई और धागा।
5. चवाळा=बालक हाथ पैर हिलाकर खेलना; झोळी=झूला; नाणकियासो=छोटा सा ; पाणी=पानी; मारो=मेरा।
6. कुणसी=किसकी; कोमटिया=बनिया(वैश्य) बाँया=नौकर।
7. सवारगी= सुलाकर चली गयी।
8. आंतर=अंतडी; गोळ=गुड; डाई-जमण=दाएँ और बाएँ; दीटो=देखा, दोई=दोनों फेरकाई कूँ=और क्या कहूँ; बगा=फैंकना; भाटा=पत्थर; लार=पीछे।
9. मेदीपीटी=मैंहदी।
10. धोळो=सफ़ेद; माईं=अंदर; हांसलो=बंजारिन गले में पहनने का आभूषण।
11. जे बोलो=जै बोलो; हमार=हमारा।
12. कोडपी=बडा चम्मच; तूंबडी=कद्दू; धान=चावल; टोक्णो=काँसे का घडा ; मळाओ=पंचायत।

13· आँगळी=उंगली; आपण=अपना; जान=जाकर।

14· केरी=कह रही है; भीया=बडा भाई (भैया)

15· आजेती=आज से; कन्नाई=कभी; पँतिया=वर।

16· रपिया=रुपया।

17· डगरे चालो= चलागया; वेतडू=वर।

18· असनान =स्नान; आँग=आगे; छ=है; तलावडी=छोटा तालाब।

19· वायान=विवाह के लिए।

20· चले आवय=आरहे हैं; तू=तुम; भोळेकिया=भोला।

21· कोडला (कोल्डा)=कडा; बरची=त्रिशूल; वोर=उसका।

22· कस्तूरी=तम्बाकू; लाल=अंगार; हेट=नीचे।

23· छ्वाक=दुपट्टा; ड्यासियाँ=बैठेंगे।

24· धणी=पति; मोई=मिठाई; स्वाक=सौतेली।

25· सेन=सबको; सोटा=मूसल; घोटा=पेय पदार्थ।

26 थाळी=थाली; पीडा=बैठने का पीढा; वाते=बातें।

27· टोकणो= काँसे का घडा; मंगाळा=चूल्हा के पत्थर; मूँडेती=मुँह से।

28· डोकरा=बूढा; मुघाळो=मूँछ वाला।

29· ड्याटे=बैठे हैं; घोळो=घोलना।

30· भीयावून=बडे भाईयों को।

31· टीको=टीका; तमारी=तुम्हारी; वराणो=पराया।

32· गरतणी=पैर के आभूषण; भळन=मिलकर।

33· भावज=भाभी।

34· ड्याटी=बैठी; वकोल्डी=गोबर डालने का खड्डा।

35· हंगोळी=स्नान।

36. काकोटी=कठौती; गोडिया=घुटना; छोरी=लड़की ।

37. डोरण=डोरी; लाडा=दूल्हा ।

38. कूण=कौन ; जाग=जगाह ।

39. कोसा=छोर; टांगिमा=पैरों में; बना=बिना; मन=मुझे ।

40. फगरेमा=फिक्र में; मत घालो= मत डालना ।

41. काटो= मजबूत; कांदा=प्याज; मिटकी=मेंढक; सांडिया=सांड ।

42. जांगया=निक्कर; वोई=वही ।

43. भोजाई=भाभी, लसण=लहसन ।

44. अंबाडी भाजी=बीलू की भाजी; बाद्‌री=बाजरा मक्का=मकई ।

45. सातवणा=सात बार ।

46. तारी=तुम्हारी; लाडी=वधु(दुल्हन) ।

47. मसकरी=मजाक; रमी=खेली; सोटा=मूसल ।

48. नाजुकेरी नाज=नाजुक कन्या ।

49. धाका=धान; सोने सरीको=सोना जैसा ।

50. बोकड=मुर्गे; दीनो=दिया; वोमा=उसमें; सेन=सभी को ।

51. मूंगो=महंगा; सपारी=सुपारी; हूबो=खड़ा हुआ ।

52. बा=पिता; वकजा=बिकजाना; सीकदे=सीख देना ।

53. गडच=चुबना; होळियांकन=धीरे से ।

54. काडलेन=निकालकर; मन=मुझे; वराणो=पराया ।

55. वदेस=बडना ।

56. गटला=पहाड; डोळया=बैल; ताती=तुमसे; धांसजो=भागजा, माती=मुझसे
रासडी=रस्सी; सांकळी=जंजीर ।

57• मड़गी= हवेली, रकाड़ेस=रखना ।

58• जाळ=जाल; झीमरा=मछली पकड़ने वाला; माळी=मछली ।

59• झोलो=बिदाई का संकेत; दस दाड़=दस दिन ।

60• सूदो=सीधा; वाळी=टेडी; वीरेणा=छोटा भाई ।

61• कतरा=कितना; काडन=निकालकर; नाणकी=छोटी ।

62• अनकळता=अनजान; तमारी=तुम्हारी ।

63• एक पगला=एक पग; हूँसण याड़ियो=प्यारी माताएँ

64• ताकड़ी=तराजू; दीयो=दीपक ।

65• मारी याडी=मेरी माँ; वजाको=उजाला; साँसना=त्यागदेना ।

66• तारो=तुम्हारा; साई=दया, कृपा; सेर=सभी का ।

67• अन=और; याडी=माता; साऊकार=धनवान ।

68• गवार=बंजारे; भाया=ब्रहमचारी; नायकण=नायकिन ।

69• कागद भेजो=चिट्टी भिजवाया ।

70• सूतीक जागी=सो रही हो या जाग रही हो ।

71• लादो=लदकर ।

72• आवुकार=स्वागत; पालणो=पालकी; हींचन=झूलकर; हींदोळो=झूला ।

73• नारंगी=अमरूद; बोई=बोनी; वाट=बाट{रास्ता} ।

74. वीपेन=बीनने के लिए; वोत=वहाँ; वोडली=टोकरी ।

75. कूकड़ो=मुर्गा; गटला=पहाड; वर=इधर ।

76. वटलीन सटली=उलट-पलट ।

77. अकाडो=पूजा सामग्री; दाडो=सूरज ।

78. कूणसी=कौनसी; हडका=हड्डियाँ ।

79. खाडू=पशुओं के झुंड ।

80. बावा=साधू; मकाओ=पंचायत ।

81. दल=दिल, लाई=लेकर आयी ।

82. खाती=बढ़ई; नव=नौ; रूपो=चाँदी; हूँसण=प्यारी ।

83. डाकलो=चबूतरा; वोरी=उसके ।

84. फांका=शाखा; लांबी=लंबी; लांबडी=हरियाली ।

85. मोटियार=परिपक्वता; राकेलीदी=धारण करली ।

86. खड=घास; छणा=कंडा; म=मैं ।

87. वीरणा=छोटा भाई ।

88. वोरो=उसका ।

89. आयो=आया; बगर=बिना; हेटाल=पूर्व दिशा ।

90. काचे=शीशा; बलिया=चूडियाँ; लटटा=केश॥बाल॥ ।

91. कोती=कहाँसे; लेई चाली= ले चली; वावडी=बावली ।

92. तीज=गेहूँ के पौधें; रोळे=रोपना ॥पसारना॥ ।

93· घऊँ=गेहूँ; झुरलो=झुंड ।

94· अंदारी रात=अँधेरी रात; सातणो=साथी ।

95· ट्वाळी=नगारा बजाने का डंडा; मीनामा=महीनों में; रींस=क्रोध ।

96· धाँसन=दौडकर; मूयो=मृतक; रम्मा=खेलना ।

97· गेरणी=पत्नी; तुकारी=पुकार; देणो=देना; केळो=जुड़वा; मतरो=विचार ।

98· रसिया=रसिक ।

99· गोडा=घुटना; पाकेडी=पगडी ।

100· काळ्या बोर=काला बेर; छोरी=लडकी;
खवो=भुजा; फूली=नाक की आभूषण ।

101· फेटिया=लहँगा; भोसी=नितंब; भोल्डो=पुरुष की जननेंद्रिय; लाप=लज्जित ।

102· कूवलो=कुआँ (छोटी बावली); घटकी=बिछुआ; वोरी=उसकी ।

103· अंबा=आम; गेरिया=पुरुष; झाड=पेड ।

104· इवालेती=तरीके से; समसेती=समझदारी से ।

105· जोत=ज्योती; साद=साधु ।

106· कूण-कूण=कौन-कौन; चलेगे= चले गयें ।

107· परबाती=सबेरे; याडी-बाप=माता-पिता ।

108· दवाळी=दिवाली; मेरिया=आशीर्वाद ।

109· दाडो=दिन; दीवलो=दीप ।

110· पोटली=गठरी; मातेपर=सिर पर ।

111· असनान=स्नान; डोकरी=वृद्ध महिला; पचाई=सेवन करना; वजाळो=उजाला।

112· गवालिया=चरवाहा; लूंक्ड=सहायक।

113· जान=जाकर; नाम काई=क्या नाम; मनक्या=आदमी; सांज=शाम; ढूबी वेरी=खड़ी हुई।

114· कोनी करूं=नहीं करूंगा; गावडी=गाय; चायेनी=नहीं चाहिए।

115· आंगळी=उंगली; दातला=दरांती; लोई=रक्त।

116· केणो=कहना; मारी=मेरी; रेणो=रहना।

117· धवाक=सफेद; लादो=लदना ﴾लदणी﴿।

118· भोग=पूजा; व्यार=युद्ध।

119· तोन=तुझको; दी=दो; वाळ=हवा; सीळी-सीळी= ठंडी-ठंडी।

120· भाया=ब्रह्मचारी; वाया=विवाह; वाचा=वचन।

121· केर=किसका; कसेन=क्यों; पूरो=पूरा।

122· शांकड़ा=सौ; समसलीदो=स्वर्गवास।

123· जे बोलो=जय बोलो; लेन=लेकर।

124· सात पाडेती=सात पहाड से।

125· आव-जाव=आना-जाना; भंडारो वेरोच=पूजा हो रहा है; से=सभी।

126· देस=देना; समणक=सामने।

127· काळो=काला; किसन=कृष्ण; सामणो﴾सांवलो﴿=सांवला।

128· छमक्या घूघरा=छोटे घुंघरू; भांदन=बांधकर; तारी=तुम्हारी।

129· कैलासेरो=कैलास के; कामळेरी क्योटी= मृगछाल की कछौटी; सूळा=त्रिशूल।

130· कसेरो=किसका; देवळेमा=देवल में; रुमाल=पगडी; हेट=नीचे।

131• बेर पच=उसके बाद; लीयाँ=लेते हैं।

132• मलकेती=दूर से; मालम छेनी=मालूम नहीं।

133• वाँजुवा=निस्संतान स्त्री; सारी रात=रात भर।

134• अजी=और; हाँक=पुकार।

135• अस्सोकाम=ऐसा काम; कादो=क्या हुआ; कूण कीदो=कौन किया; दोई=दोनों।

136• कतेसी=कहाँ तक; कनुना=कब; छोडन=छोडकर; चलोगो=चलागया।

137• अतरामा=इतना जल्दी; केवडी गी=कहाँ गयी।

138• एकवणा=एकबार; जम्मी=धरती।

139• आसरो=सहारा; छेनी=नहीं है।

140• अनाडी=अनारी; चावणो=चाहिए; दनिया=पराया।

141• असो=ऐसा; गोळा=इकट्ठा; गवाण्णी=पत्नी; मोटो=बडा; हाई=फ़िक्र।

142• केणो=कहना; बंडी=बैल गाडी; बळद=बैल; बाण्णी=झाडू; मारोकोनी=मेरा नहीं;
सै=सभी।

143• गोकना=छुपाना; वाते=बातें; सोगळीन=सभी को।

144• कसापटी=गले की घंटी; गंटिया=बंद; हाँडी=घडा।

145• केताणी=कहकर; कूँ=कैसे; जीवडा=बदन; धणी=पति;
वेचेन=बेचने के लिए; वैंडी=पागल।

146• टूकरी=चूनरी; फेटिया=लँहगा; सीकजो=सीखलेना।

147• कूपी=कोहनी; तपाळो=माथा।

148. तोन=तुझको; वेला=कष्ट; हूँदून=उन लोगों को ।

149. गीलो=गीला; कळगी= जलगई; सारो दाडो=सारा दिन; स्वाकन=कसम ।

150. घोळिया=छाज; दळिया=खिचडी; भ्यांसी=बहिंस; रेगी=रह गयी ।

151. कांचळी=चोली; दोईन=दोनों को ।

152. कूणसी=कौनसी; जटाणी=जेठानी; भूलगो=भूलगया ।

153. स्वाक=सौतेली ।

154. बंगला कोटम=पुलीस थाना(जेल); रेणो=रहना ।

सहायक ग्रंथ सूची

सहायक ग्रन्थ

हिन्दी

1. ओझा, गौरीशंकर हीराचन्द - राजपूताने का इतिहास (जिल्द पहली) द्वितीय संस्करण - 1973, लेखक द्वारा प्रकाशित, प्रथम संस्करण - 1993, वि.सं.

2. कोता कृष्णमूर्ती - तुलसी और त्यागराजु प्रगति काव्य संरचना का तुलनात्मक अध्ययन, मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद, संस्करण - 1990

3. कैलाश वाजपेयी - आधुनिक हिन्दी कविता में शिल्प, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, प्रथम संस्करण सन् 1965

4. टाड, जेम्स (कर्नल) - अनल्स ऐंड एंटीक्वरीज आफ राजस्थान, हिन्दी अनुवाद राजपूतों का इतिहास, अनुवादक - केशव कुमार ठाकुर, प्रकाशक - आदर्श हिन्दी पुस्तकालय, इलाहाबाद, 1962 ई.।

5. डॉ. पाण्डु, एल - बंजारा जाति, भाषा और लोक साहित्य, हैदराबाद विश्वविद्यालय (टंकित शोध प्रबन्ध)

6. पारसनाथ मिश्र - मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल, प्रकाशक - लोक भारती प्रकाशन, 15 - ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद।

7. बलिराम हीरामन पाटिल - गोर बंजारा लोकांचा इतिहास, प्र.सं. - 1936, पुनर्मुद्रण - 1973, प्रकाशक - सुधाकर नाईक, अध्यक्ष कै. बलिराम पाटिल स्मारक समिति, यवतमाल।

8. मुक्तिबोध - नयी कविता का आत्म संघर्ष एक अन्य निबन्ध, द्वितीय संस्करण - 1977 प्रकाशक - विश्व भारती प्रकाशन, धनवटे, नागपुर - 12.

9. डॉ. मोहन अवस्थी - आधुनिक हिन्दी काव्य शिल्प, हिन्दी परिषद विश्व विद्यालय, प्रयाग, प्र.सं. - सन् 1962

10. डॉ. यशवन्त जाधव - बंजारा जाति, समाज और संस्कृति, वाणी प्रकाशन, दरिया गंज, नयी दिल्ली, संस्करण - 1992

11. रामेश्वर लाल खंडेलवाल - जयशंकर प्रसाद वस्तु और कला ।

12. रामचंद्र शुक्ल - चिन्तामणी, इंडियन प्रेस, प्रैवेट लिमिटेड, प्रयाग - 1969

13. रामचंद्र वर्मा - संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर, प्रकाशक - नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।

14. आन्ध्र संस्कृति (तेलुगु, भाषा, लिपि, वाङ्मय, आदान प्रदान एवं कलाएँ) आन्ध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी हैदराबाद - 1989.
(डॉ. वै.वेंकटरमण राव, तेलुगु गेय साहित्य)

15. डॉ. सत्यदेव चौधरी - भारतीय शैली विज्ञान, अलंकार प्रकाशन, 666 झील, दिल्ली - 110 051, सं. 1979.

16. डॉ. सत्यव्रत - हिन्दी भाषा का संरचनात्मक अध्ययन, मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद ।

17. डॉ. श्री राम शर्मा - बंजारा समाज, दक्षिण प्रकाशन, हैदराबाद, प्र.सं.1983

तेलुगु

1. गोपाल राव नाईक वी - ना जोविता - चरित्रा, इंडस्ट्रीयल प्रिंटर्स, मौला अली, हैदराबाद, 1989

2. वीनिया नाईक बी - बंजारा चरित्रा (संस्कृति प्रगति) श्री स्थीराम बावाजी पब्लिशर्स अरविंद नगर, अनंतपुरम - 1998.

3. नुन्सावत जीवला नाईक - बंजारा (लंबाडी) वंशावली, गाँधी जी, सुगाली (लंबाडी सेवक संघम) पिडुगुराल्ला, 1990.

अंग्रेजी

1. राबर्ट लाडो - लांग्वेज टीचिंग ए सैटिफिक अप्रोच आक्सफोर्ड डिक्शनरी आफ करंट इंग्लिश, प्रकाशन - 1956

2. केतावत सोम्ला - ए सोशियो - पोलिटिकल एनालिसिस आफ बंजारास इन आन्ध्र प्रदेश : ए केस स्टडी आफ भोनगिर मंडल (टंकित प्रबन्ध, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद)

3. कोमहानसर, डब्लू : दो पोलिटिक्स आफ मास सोसाइटी, लंदन, रौतलैड्ज अण्ड केगन पौल, 1965

4. ग्रियर्सन, जी.ए. - लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इंडिया, खंड 9, भाग - 3, प्रथम संस्करण, 1907 ई. । पुन: प्रकाशन - मोतीलाल बनारसीदास, 1968 ई. ।

5. रोज़र फ़ोलर : ए डिक्शनरी आफ मॉडर्न क्रिटिकल टर्म्स, रौतलैड्ज अण्ड केगन पौल, लंदन - 1973.

6. हैमनडार्फ, क्रिस्टोफ वान, फ्यूरर - ट्राइबल हैदराबाद, (चार विवरण), प्रकाशक - रेवेन्यू डिपार्टमेंट, गवर्नमेंट आफ एच.इ.एच.द निजाम, हैदराबाद, 1945 ई. ।

कोश

1. ज्योति हिन्दी - तेलुगु कोष ﴾ वेलगा राम कोटय्या चौधरी, वी.जी.एस. प्रकाशन, अमलापुरम, तृतीय संस्करण - 1990.

2. राजपाल, हिन्दी शब्द कोश ﴾ डा. हरदेव बाहरी ﴿ नया संस्करण, 1995, कश्मीरी गेट, दिल्ली ।

3. राजपाल अंग्रेजी - हिन्दी शब्द कोश, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, डा. हरदेव बाहरी, आठवाँ संस्करण 1994.

4. हिन्दी शब्द सागर - काशी नागरी प्रचारिणी सभा, नवीन संस्करण, 1965 ई. ।